ललित साहित्य माला का प्रथम पुष्पः—

संगीतिका



गीतकार—

उपाध्याय श्री० अमरचन्द्र जी महाराज "कविरत्न"



स्वरकार—

पं० विश्वम्भरनाथ भट्ट, एम. ए., एल-एल. बी.
(संगीत विशारद)



प्रकाशक—

सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा

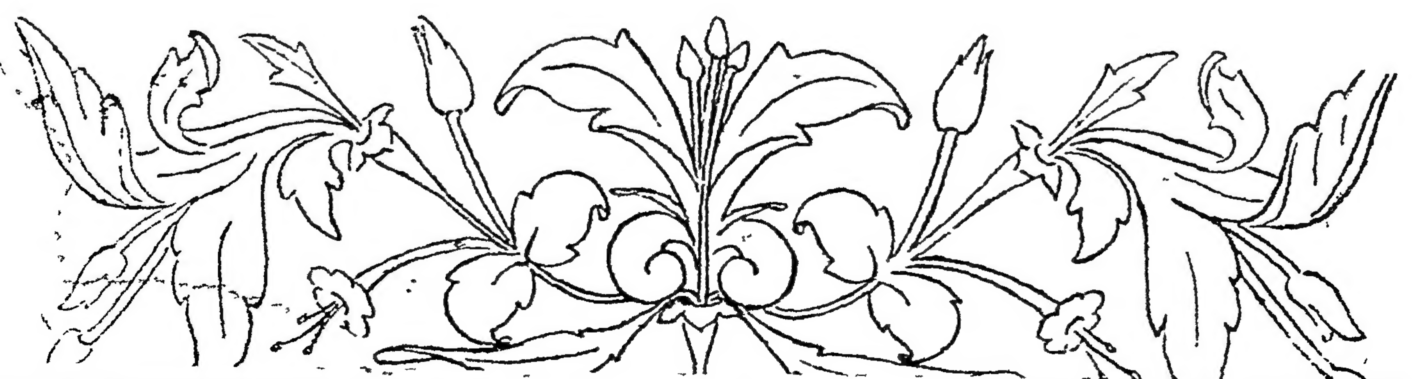


वीर सम्वत् २५०६

प्रथम संस्करण



अगस्त १९४९



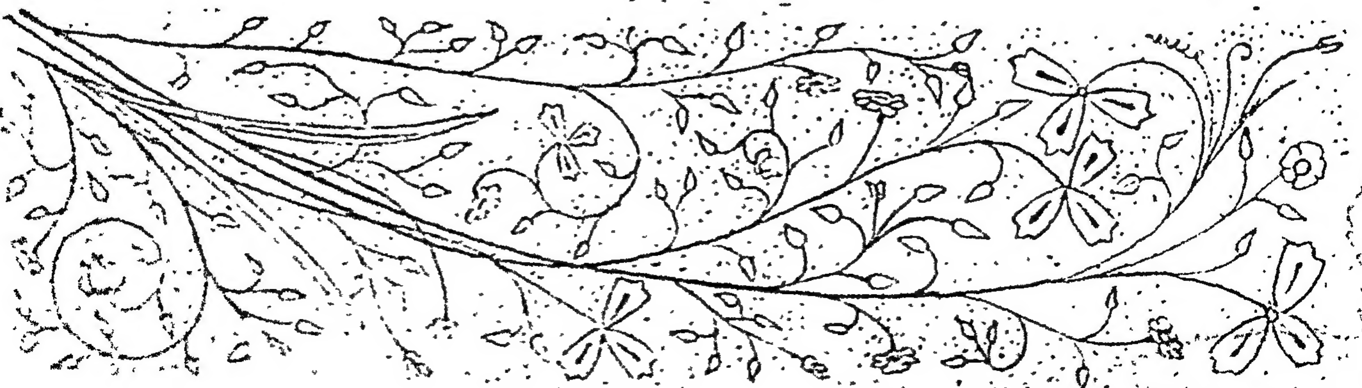


प्रकाशक—
सेठ रतनलाल जैन मीतल
मंत्री, श्री सन्मति ज्ञानपीठ
लोहामंडी, आगरा।

मूल्य

राज संस्करण	[illegible]
साधारण संस्करण	[illegible]

मुद्रक—
प्रभूलाल गर्ग
संगीत प्रेस, हाथरस।





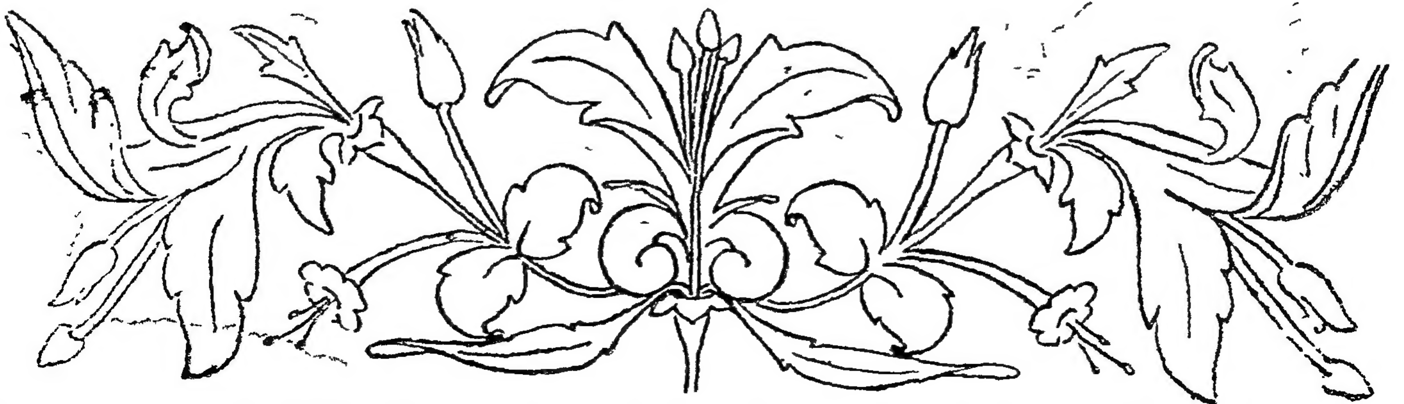
दो शब्द !

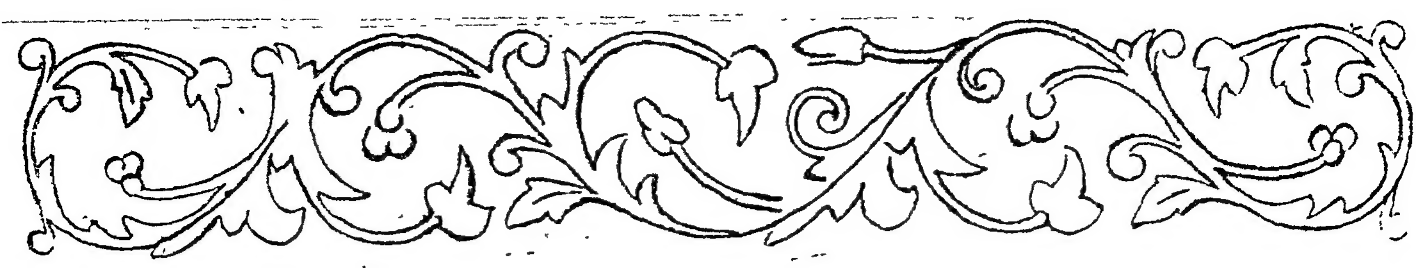
संगीत को छोड़कर कला-जगत में अन्य कोई ऐसा साधन नहीं है, जो मानव को आत्म-विस्मृति के सुरम्य क्षेत्र में लेजा कर एक अपूर्व एवं अवर्णनीय शान्ति प्रदान करा सके।

संगीत के माध्यम से प्रेरित गंभीर से गंभीर दार्शनिक विचार धारा भी मानव हृदय पर सहसा एवं चिरस्थायी प्रभाव डालती है। मैं कोई अत्युक्ति नहीं करूँगा, यदि यह कह दूँ कि इस दृष्टि से गीतों की भावनाओं का महत्व बहुत अधिक बढ़ जाता है।

आजकल सिनेमा के गीतों का प्रचार अत्यधिक हो रहा है, परन्तु संगीत के इस तामसी प्रचार ने आत्मकल्याण की अमर प्रेरणा प्रदान करने की अपेक्षा, जिन विनाशकारी दुर्भावनाओं को प्रोत्साहन दिया है, वह किस विचारशील व्यक्ति से छिपा हुआ है? सिनेमा के अधिकांश गीत नीतिशून्य नग्न शृङ्गारिक भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। दुर्भाग्य से ये ही गीत आजकल हमारे भविष्यकालीन देश निर्माता बालक, बालिकाओं और युवक—युवतियों के कंठहार हो रहे हैं। मानव जीवन के इस आवेश काल में मन स्वभावतः ही चंचल होता है, और ये सिनेमा गीत तो सचमुच उसे इतना विचलित कर देते हैं कि किसी साधारण प्रलोभन का त्याग भी ऐसे निर्बल मन के लिये दुष्कर हो जाता है।

इन्हीं भावनाओं से प्रेरित होकर मैंने अपने परम स्नेही मित्र श्री० विश्वम्भर नाथ भट्ट से, श्रद्धेय कविरत्न उपाध्याय श्री अमर चन्द्र जी महाराज के आध्यात्मिक





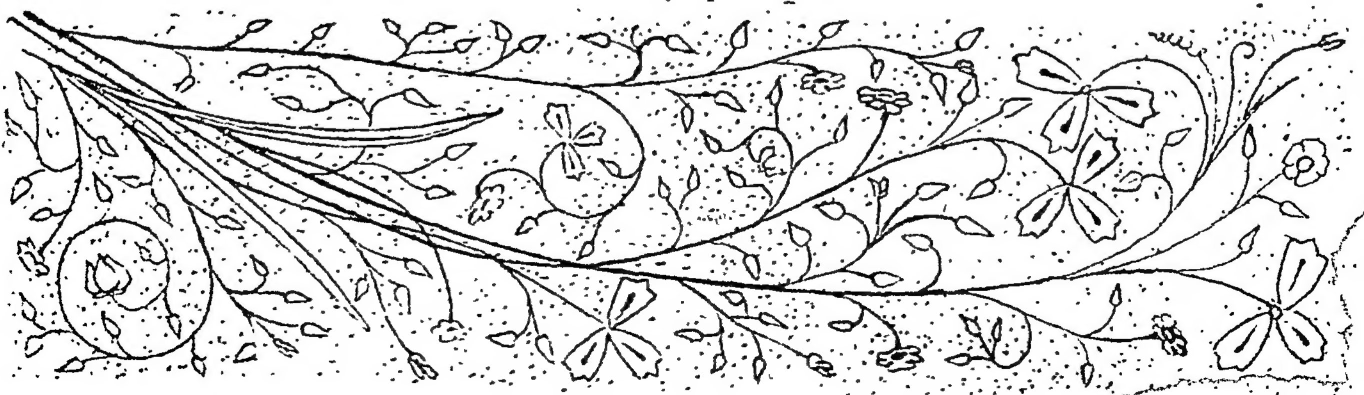
गीतों की स्वरलिपियां तैयार करने का आग्रह किया। मुझे हर्ष है कि कार्य भार अधिक होने पर भी समय निकाल कर जिस लगन, उत्साह और शीघ्रता से भट्ट जी ने इस कार्य को पूर्ण किया है, वह अवश्य ही सराहनीय है परन्तु इसके लिये धन्यवाद देना तो साधारण शिष्टाचार की बात होगी। मेरे और उनके बीच आत्मीयता की जो धारा इतने वर्षों से प्रवाहित हो रही है, उसके कारण यह उचित भी प्रतीत नहीं होता, मेरी हृदय से यह शुभकामना है कि वे अपने क्षेत्र में और भी अधिक यशस्वी बनें।

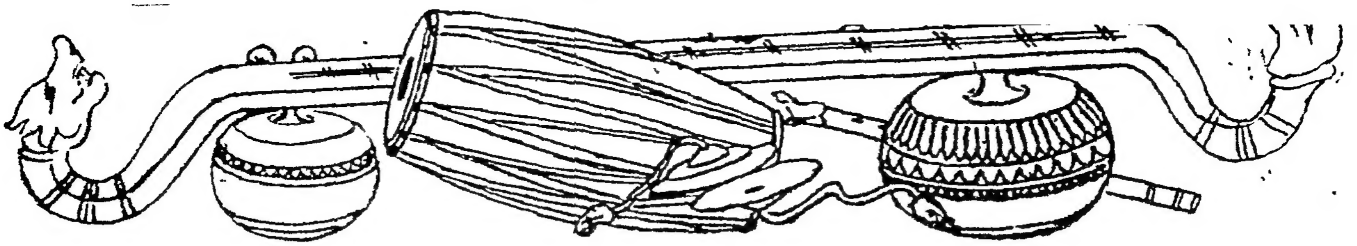
मेरा अनुमान है कि 'सङ्गीतिका' के गीतों की स्वरलिपियां जैन-समाज के द्वारा अवश्य ही समादरित होंगी। आशा है उत्तम भावपूर्ण गीतों को परिचित 'ट्यूनों' (तर्जों) में देख कर हमारा नवयुवक समाज उन गीतों की उपेक्षा नहीं करेगा। हमारे बालक और बालिकाओं के संगीत के अध्ययन में इन गीतों को स्थान मिलने से निश्चय ही उनके हृदय में आत्म-कल्याण की अमर भावना जागृत होगी। संक्षेप में 'संगीतिका' का यही मूल उद्देश्य है और यही इसके जन्म की कहानी भी है। अधिक क्या ?

'रतन निवास'
लोहामंडी
आगरा
१ जून १९४९

(सेठ) रतनलाल जैन मीतल
प्रधान—मन्त्री—
'सन्मति ज्ञान-पीठ'

———

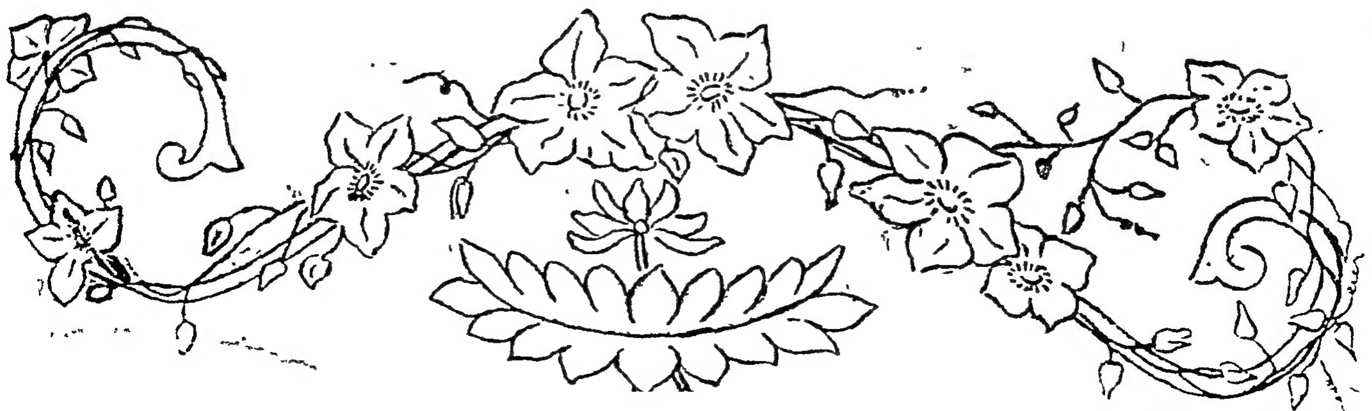




अपनी बात !

'संगीतिका' की सृष्टि में ऐसी कोई विशेष बात नहीं है, जिसे मैं अपनी कह सकूँ। गीत श्रद्धेय उपाध्याय कविरत्न श्री० अमरचन्द्र जी महाराज द्वारा प्रणीत हैं और इन गीतों को स्वरलिपि का रूप देने की मधुर प्रेरणा मिली है मुझे समादरणीय श्री रतनलालजी जैन (मीतल) की ओर से। उन्हीं के आग्रह से मैंने कवि श्रीजी के गीतों को परिचित धुनों, अथवा रागों में लिपिबद्ध करने का यह लघुतम प्रयास किया है। अब ये स्वरलिपियां जैसी भी हैं, आपके समक्ष हैं, इनकी रोचकता, सरसता और शास्त्रीयता का निर्णय आप सहृदय पाठक यथावसर कर ही लेंगे।

इन स्वरलिपियों में से आधी से अधिक स्वरलिपियां ऐसी हैं; जिनकी रचना लोकप्रिय 'सिनेमा-गीतों' के आधार पर हुई हैं। कुछ गीत ऐसे भी हैं, जिन्हें शास्त्रीय संगीत के दरबारी, गौड़मल्हार, शंकरा, आसावरी इत्यादि प्रचलित रागों के स्वरों में तालबद्ध कर दिया गया है। शेष गीत या तो ग़ज़ल अथवा भजन इत्यादि की उस साधारण शैली के अनुरूप लिपिबद्ध हुए हैं जिनमें उन गीतों को गाए जाने का पहले से ही प्रचार होगया है अथवा रागदारी संगीत एवं प्रचलित 'सिनेता गीतों' के समन्वय से उन्हें किसी नवीन धुन का रूप दे दिया गया है। इस प्रकार मैंने इन गीतों को विभिन्न पाठकों की रुचि के अनुकूल बनाने की चेष्टा की है। प्रस्तुत संग्रह में उन लोगों की रुचि के अनुकूल भी गीत हैं, जिन्हें केवल रागदारी ही प्रिय है, साथ ही उन लोगों के मनोरंजन का भी ध्यान रखा गया है, जो केवल 'सिनेमा गीतों' या चलती हुई धुनों को पसन्द करते हैं। जिस गीत की स्वरलिपि किसी राग विशेष के आधार पर निर्मित है, उस स्वरलिपि पर उस राग का नाम दे दिया गया है तथा जो गीत 'सिनेमा गीतों' के आधार पर लिपिबद्ध हुए हैं उन्हें पाठक पहिचान ही लेंगे कि इसकी धुन कौनसे फिल्म गीत से मिलती है। जिन गीतों के आरम्भ या अन्त में कोई संकेत नहीं है, वे गीत या तो उन स्वरों की बन्दिश में हैं जिनमें उन्हें गाये जाने का प्रचार हो गया है, अथवा उन्हें किसी मिश्रित नवीन धुन का रूप दे दिया गया है।





'सङ्गीतिका' के गीतों में आध्यात्मिक पक्ष का प्राधान्य है। कहीं-कहीं सामाजिक भावना भी इन गीतों का अङ्ग बन गई है, परन्तु उसका स्थान गौण ही रहा है। आध्यात्मिक भावना के अनुसार ये गीत दया, क्षमा, सन्तोष, मौनसत्य तथा परमात्म तत्व के अमूर्त स्वरूप को स्वीकार करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं, तथा सामाजिक भावना के अनुसार इन गीतों में समदृष्टि तथा वैयक्तिक साधना का कल्याणकारी उपदेश निहित है, गीति काव्य वस्तुतः ऐसी रचना है, जो प्रायः आकार में छोटी और कवि के आत्मगत भावों से ओत-प्रोत होती है। गीत काव्य अन्तर्जगत का काव्य है, इसी कारण यह भावात्मक, व्यक्ति प्रधान अथवा पूर्णतया आत्माभिव्यञ्जक होता है। विज्ञ पाठकों को कवि श्रीजी के सभी गीतों में ये विशेषतायें दृष्टिगोचर होंगी।

स्वरलिपियां बनाते समय मैंने मूल गीतों की भाषा में कहीं-कहीं थोड़ा सा परिवर्तन कर दिया है। अपनी इस धृष्टता के लिये मैं कवि श्रीजी से क्षमा प्रार्थी हूँ। स्वरलिपियों में प्रत्येक अक्षर को स्वर और ताल के सांचे में ढालते समय कहीं-कहीं ऐसा करना अतीव आवश्यक हो गया था, इसीलिये यह मार्ग अपनाया गया है।

इन स्वरलिपियों की पांडुलिपि तैयार करने में मुझे चि० सोहनलाल नागर (सं० विशारद), चि० गजानन नागर (सं० विशारद) तथा चि० मदन याज्ञिक ने बड़ी सहायता दी है, अतः मेरा उन्हें हृदय से आशीर्वाद है।

संगीत-निकेतन
बलकाबस्ती, आगरा
१ जून १९४९

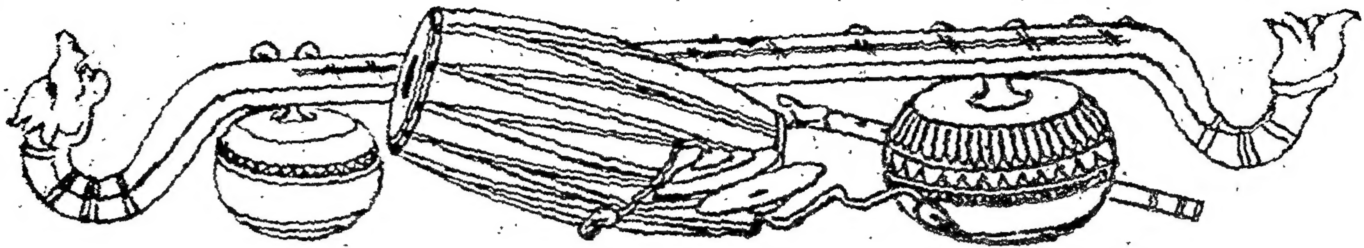
विश्वम्भरनाथ भट्ट
(सम्पादक "संगीत" हाथरस)





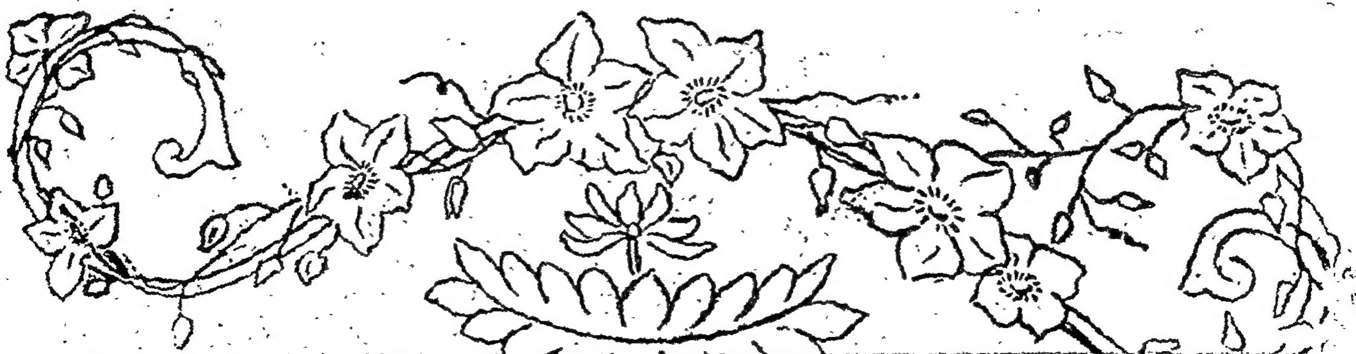
मं
ग
ल





स्वरलिपियों का चिन्ह परिचय

प	जिन स्वरों के ऊपर नीचे कोई चिन्ह न हो, वे मध्य (बीचकी) सप्तक के शुद्ध स्वर हैं।
ध	जिस स्वर के नीचे पड़ी लकीर हो वे कोमल स्वर हैं। किन्तु कोमल मध्यम पर कोई चिन्ह नहीं होगा, क्योंकि कोमल 'म' शुद्ध माना गया है।
मं	तीव्र मध्यम इस प्रकार होगा।
नि़	जिसके नीचे बिन्दी हो, वे मन्द्र (पहिली) सप्तक के स्वर हैं।
सं	ऊपर बिन्दी वाले स्वर तार सप्तक के हैं।
प ~	जिस स्वर के आगे-जितनी लकीर हों, उसे उतनी ही मात्रा तक और बजाइये।
रा ऽ	जिस अक्षर के आगे ऽ चिन्ह जितने हों, उसे उतनी ही मात्रा तक और गाइये।
धप	इस प्रकार से जहां २ या ३ स्वर मिले हुए (सटेहुए) हों वे एक मात्रा में बजेंगे।
×|०	× सम, ० खाली, । ताली के चिन्ह हैं।
।	यह चिन्ह स्वरलिपियों में या तानों में अलग-अलग टुकड़े दिखाता है।
*	ऐसा फूल जहां हो, वहां पर १ मात्रा चुप रहना चाहिए।
⌒	स्वरों के ऊपर यह चिन्ह मींड देने के लिये होता है।
नि स	इस प्रकार किसी स्वर के ऊपर कोई स्वर हो, तो ऊपर वाले स्वर को जरा छूते हुए नीचे स्वर को बजाइये। इसे कण कहते है।
(म)	इस प्रकार कोई स्वर ब्रैकिट में बन्द हो, तो उसके आगे का स्वर और वह स्वर और पहिले का स्वर तथा फिर वही स्वर लेकर एक मात्रा में ही पमगम इस तरह बजाइए।
~~	यह चिन्ह स्वरों के ऊपर जमजमा देने के लिये होता है, अर्थात् स्वरों को हिलाना चाहिये।





वीर-वन्दन

वन्दे वीरं सुवीरं सुधीरं वरम्,
शान्तं दान्तं महान्तं सदाप्तं तरम् ।
येन हिंसा मूक-पशु संहारिका विलयीकृता,
शान्तिदा देवी दया सर्वत्र संप्रतिसारिता ।
वीत-द्वैतं तमीड़े दयासागरम् । वन्दे ...... ॥

येन सम्यग्ज्ञानपयसा प्राणिनो विमलीकृताः,
योजयित्वा धर्ममार्गे दुर्जनाः सुजनीकृताः ।
सर्वज्ञं तं स्वतन्त्रं यजे सादरम् । वन्दे ... ॥

देशना दत्ता स्वतन्त्रा साम्यभावप्रसारिणी,
दीन-दुर्बल-रक्षिका बहु भिन्न-भाव विदारिणी ।
साम्याधारं सहर्षं भजे शंकरम् । वन्दे ... ॥

दीनता-सम्वर्द्धकः किल कर्तृ वादः खण्डितः,
दैन्यहारी क्रान्तिकारी कर्मवादो मण्डितः ।
भव्यैर्वन्द्यं सुदेवं श्रये सन्नरम् । वन्दे ...... ॥

ध्यानगम्यो योगिनां यो भावरिपुसंहारकः,
सत्य-धर्मोद्धारकः संसार-सागर-तारकः ।
'पृथ्वीचन्द्रं' नमामि सुसंयमधरम् । वन्दे ॥

———





राग पीलू मिश्र (कहरवा) स्थायी

														प	प
×				×				×				×		व	न्दे
–	ग	म	प	गुम	गुर	स	र	ऩ	स	ग	म	प	–,	प	प
ऽ	व	रं	सु	वीऽ	ऽऽ	रं	सु	धी	ऽ	रं	व	रं	ऽ,	शा	न्तं
–	ग	म	प	गुम	गुर	स	र	ऩ	स	ग	म	प	–,	प	प
ऽ	दा	न्तं	म	हाऽ	ऽऽ	न्तं	स	दा	ऽ	प्तं	त	रं	ऽ.	व	न्दे

ऽ वीरं सुवीरं सुधीरं वरम् (यह पंक्ति प्रथम पंक्ति के समान दुहराई जायगी)

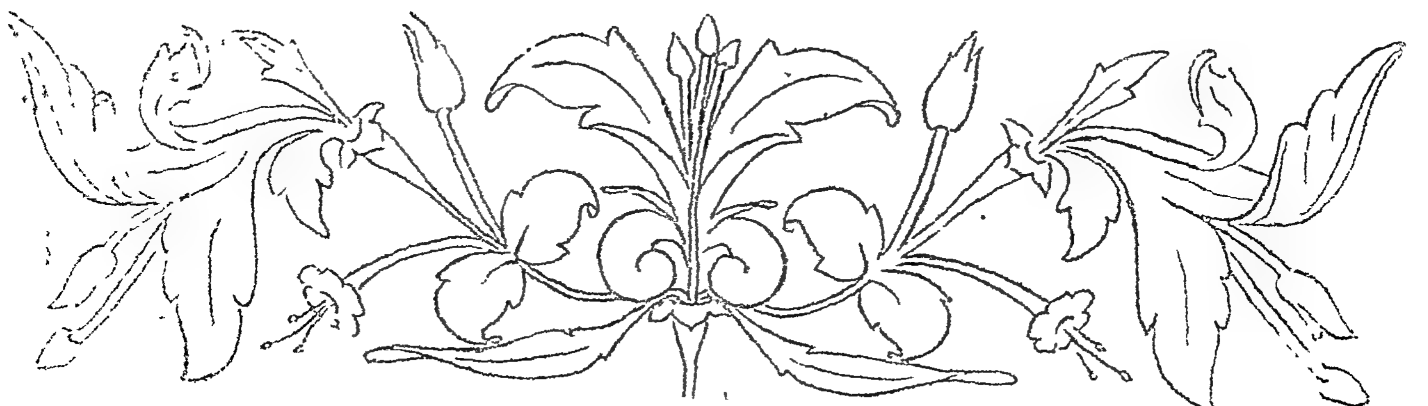
अन्तरा (ठेका बन्द)

म	–	प	न	–	न	–	सं	–	न	सं	सं	सं	–	नु	–	नु	नु	–
ये	ऽ	न	हिं	ऽ	सा	ऽ	मू	ऽ	क	प	शु	सं	ऽ	हा	ऽ	रि	का	ऽ
नु	न	पनु	संरं	नु	ध	प	–	नु	–	नु	नु	–	नु	–	नु	–	ध	नु
वि	ल	थीऽ	ऽऽ	कृ	ता	ऽ	ऽ	शा	ऽ	न्ति	दा	ऽ	दे	ऽ	वी	ऽ	द	या
–	पं	–	प	–	म	प	–	गु	स	सगु	मप	म	प	–	–			
ऽ	स	ऽ	वं	ऽ	त्र	सं	ऽ	प्र	ति	साऽ	ऽऽ	रि	ता	ऽ	ऽ			

ठेका शुरू—

														प	प
														वी	त
–	ग	म	प	गुम	गुर	स	र	ऩ	स	ग	म	प	–,	प	प
ऽ	द्वै	तं	त	मीऽ	ऽऽ	ड़े	द	या	ऽ	सा	ग	रं	ऽ,	व	न्दे

ऽ वीरं सुवीरं सुधीरं वरम्, शान्तं दान्तं महान्तं सदाप्तं तरम् (इन पंक्तियों को पहले की तरह दुहराइये) शेष अन्तरे इसी अन्तरा के समान बजाइये।



परमेष्ठी-महिमा

जय-जय-जय जयकार, परमेष्ठी।

जय-जय भविजन-बोध-विधाता, जय-जय आतम शुद्धि विधाता,
जय भवभञ्जनहार, परमेष्ठी। जय ········ ॥

जय सब संकट चूरण कर्त्ता, जय सब आशा पूरण कर्त्ता,
जय जग मंगलकार, परमेष्ठी। जय ······ ॥

तेरा जाप जिन्होंने कीना, परमानन्द उन्होंने लीना,
कर गये खेवा पार, परमेष्ठी। जय ······ ॥

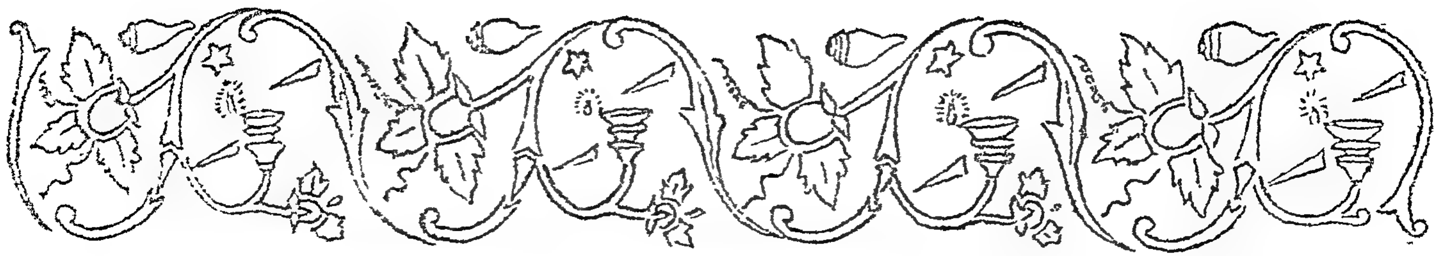
लीना शरना सेठ सुदर्शन, सूली से बनगया सिंहासन,
जय-जय करें नर नार, परमेष्ठी। जय ······ ॥

द्रोपदी चीर सभा में हरना, तब तेरा ही लीना शरना,
बढ़ गया चीर अपार, परमेष्ठी। जय ······ ॥

"सोमा" ने तुम सुमरण कीना, सर्प फूल माल कर दीना,
वर्ते मङ्गलाचार, परमेष्ठी। जय ······ ॥

'अमर' शरण में सम्प्रति आया, कर्मों के दुःख से घबराया,
शीघ्र करो उद्धार, परमेष्ठी। जय ······ ॥





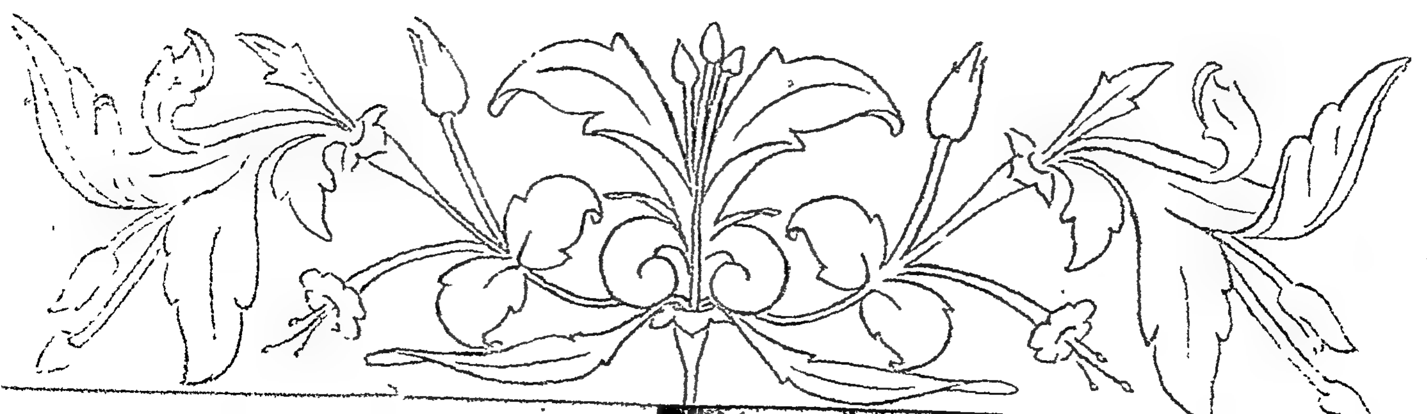
जय जय जय जयकार·····!

राग आसावरी–त्रिताल (मध्यलय) स्थाई

०				३				×				२			
र				सं				प				म			
म	म	प	सं	ध॒	प	पध॒	मप	ग॒	–	र	स	र	म	प	–
ज	य	ज	य	ज	य	जऽ	यऽ	का	ऽ	र	पर	मे	ऽ	छी	ऽ
				सं		प		म							
म	म	प	सं	ध॒	प	ध॒	म	प	–	–	–	–	–	–	प
ज	य	ज	य	ज	य	ज	य	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र

अन्तरा—

				न॒	न॒	न॒	न॒	ध॒				सं	रं		
म	म	प	प	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	सं	–	सं	सं	रं	न॒	सं	–
ज	य	ज	य	भ	व	ज	न	वो	ऽ	ध	वि	धा	ऽ	ता	ऽ
न॒	न॒	न॒	न॒									सं	सं		
ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	सं	–	सं	सं	संरं	ग॒ं	रं	सं	रं	न॒	ध॒	प
ज	य	ज	य	आ	ऽ	त	म	शुऽ	ऽ	द्धि	वि	धा	ऽ	ता	ऽ
		प		सं						सं		न॒			
प	प	ग॒ं	ग॒ं	रं	–	सं	सं	सं	रं	न॒	न॒	ध॒	ध॒	प	प
ज	य	भ	व	भं	ऽ	ज	न	हा	ऽ	र	पर	मे	ऽ	छी	ऽ
म								सं							
र	र	म	म	प	प	प	सं	ध॒	–	प	–	–	–	–	–
ज	य	ज	य	ज	य	ज	य	का	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

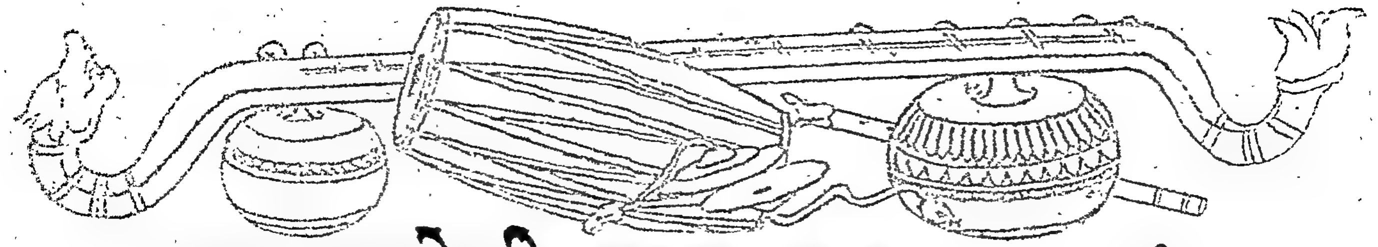


मंत्रराज-परमेष्ठी !

जय परमेष्ठी परमपददाता मतिदाता मङ्गल करतार !
वीतराग सर्वज्ञ दयामय गुणसागर अविकार ।
सत्यहितंकर शिवमगनेता, जय अर्हन् अवतार ॥ जय ......॥
अजरामर जगदीश निरंजन तर्कातीत अपार ।
लोकालोक चराचर ज्ञाता, जय सिद्ध सिद्धिदातार ॥ जय ....॥
पंचाचार प्रपालक गत-मद पतित उद्धारनहार ।
पूज्यपितासम गण प्रतिपालक जय गणी गुणभंडार ॥ जय .... ॥
शिष्यसुप्रेमी अतुलित ज्ञानी मिथ्यातम दिनकार ।
सतसिद्धान्तप्रसारी विजयी, जय पाठक पदधार ॥ जय .....॥
पंचमहाव्रत धार तपस्वी, निर्मम निरहंकार ।
शान्त सुदान्त दया के सागर जयमुनि जगदाधार ॥ जय .... ॥
अमर अनन्तगुणौघविकाशी कर्म-करीर-कुठार ।
जयभयहारी पावनकारी जयकारी नवकार ॥ जय..... ॥

—*—





जय परमेष्ठी परम पद ....!

राग भैरवी (कहरवा)

स्थायी

×				०				×				०			
स	म	म	म	म	–	म	म	ग॒	प	म	प	ग॒	र	ग॒	–
ज	य	प	र	मे	ऽ	ष्ठी	प	र	म	प	द्	दा	ऽ	ता	ऽ
ग॒	ग॒	रे॒	स	स	रे॒	ग॒	म	रे॒	ग॒	स	रे॒	स	–	–	स
म	ति	दा	ऽ	ता	ऽ	मं	ऽ	ग	ल	क	र	ता	ऽ	ऽ	र

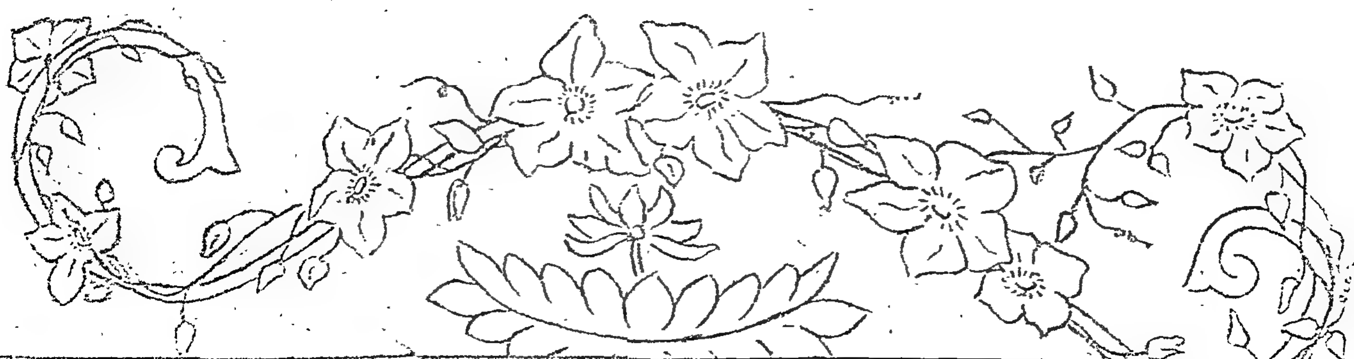
अन्तरा

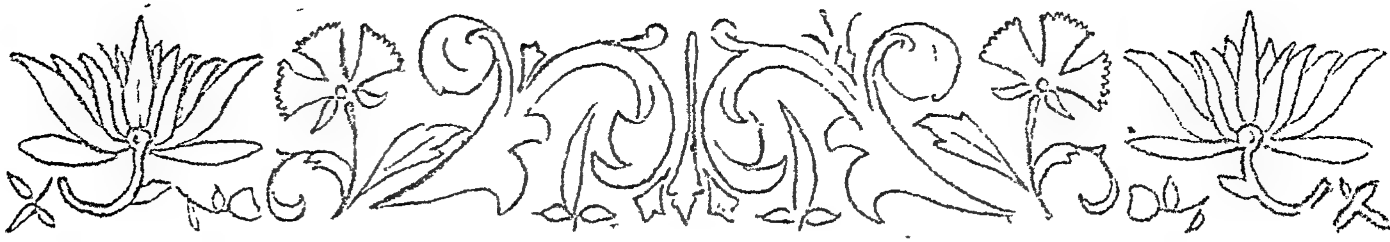
ध॒	–	ध॒	ध॒	–	म	ध॒	न॒	सं	–	सं	न॒	न॒सं	रें॒	सं	सं
वी	ऽ	त	रा	ऽ	ग	स	र	व	ऽ	ज्ञ	द्	याऽ	ऽ	म	य
न॒	रें॒	सं	न॒	ध॒	सं	न॒	ध॒	प	न॒	ध॒	प	–	–	–	–
गु	ण	सा	ऽ	ग	र	अ	वि	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
म	–	म	म	म	–	प	म	ग॒	ग॒	र	स	स	र	सर	ग॒
स	ऽ	त्य	हि	त	ऽ	क	र	शि	व	म	ग	ने	ऽ	ताऽ	ऽ
स	म	म	म	र	ग॒	स	रे॒	स	–	–	–	–	–	–	–
ज	य	अ	र	ह	न	अ	व	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र

जय परमेष्ठी परमपद्दाता मतिदाता मङ्गलकरतार ।

फिर शेप अन्तरे इसी अन्तरे के समान ।

———



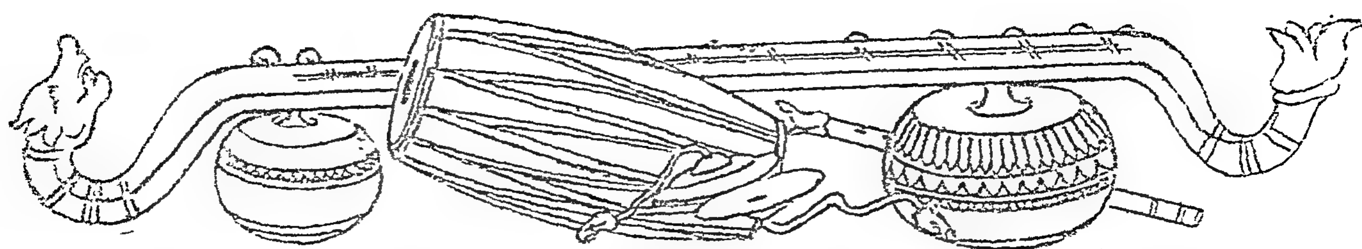


प्रभो महावीर !

ओ महावीर जी ! ओ महावीर जी !!
ओ महावीर जी ! ओ महावीर जी !!
धर्म विश्वास था सब उठा जा रहा ।
पाप का वेग दिन दिन बढ़ा जा रहा ।
नाश के गर्त में था जगत जा रहा ॥
तू ने बदली नई फिर से तसवीर जी ॥
धर्म-पन्थों के संघर्ष का ज़ोर था ।
मैं व तू का शरारत भरा शोर था ॥
एक उद्दण्डता-राज्य चहुँ ओर था ।
तू ने स्याद्वाद जैसी दी अकसीर जी ॥
धर्म के नाम पर घोर हिंसा चली ।
मूक पशुओं के कंठों पै छुरियां ढली ॥
धर्म गुरुओं ने थी भोली जनता छली ।
तू ने तोड़ी यह पाखण्ड-ज़ंजीर जी ॥
भोग की वासना थी भयङ्कर बला ।
मांस-मदिरा का था खूब दौरा चला ॥
मादरे हिन्द का था हृदय हा जला ।
तू ने दीया दया का पिला नीर जी ॥
वीर भगवन् ! बड़ा तेरा उपकार है ।
प्राणपण से ऋणी सर्व संसार है ॥
तू दया का अमर पूर्ण अवतार है ।
तू ने आके जगत की हरी पीर जी ॥

———



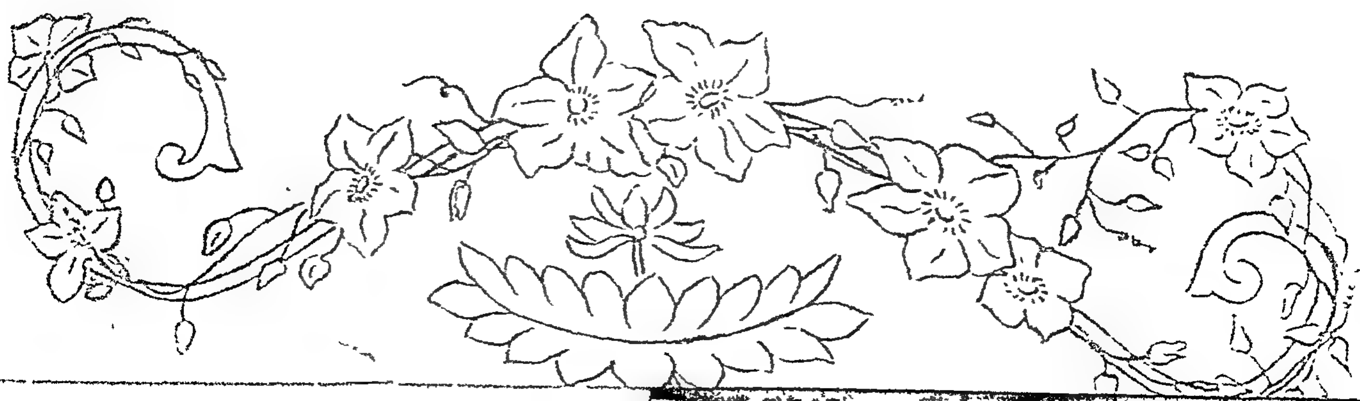


ओ महावीर जी ओ महावीर जी !

कहरवा—मध्यलय स्थायी														रे॒	स
×				०				×				०		ओ	म
ग॒	रे॒	–	स	न॒	स	–	स	सर	ग॒	–	र	ग॒	–	रे॒	स
हा	वी	ऽ	र	जी	ओ	ऽ	म	हाऽ	वी	ऽ	र	जी	ऽ	ओ	म
ग॒	रे॒	–	स	न॒	स	–	स	सर	ग॒	–	र	ग॒	–	र	ग॒
हा	वी	ऽ	र	जी	ओ	ऽ	म	हाऽ	वी	ऽ	र	जी	ऽ	ध	र्म
							अन्तरा								
म	म	–	ग॒	मप	म	म	ग॒	र	स	–	र	ग॒	–	र	ग॒
वि	श्वा	ऽ	स	थाऽ	स	ब	उ	ठा	जा	ऽ	र	हा	ऽ	पा	प
म	म	–	ग॒	प–	म–	–	ग॒	र	स	–	र	ग॒	–	ध॒	ध॒
का	वे	ऽ	ग	दिन	दिन	ऽ	ब	ढ़ा	जा	ऽ	र	हा	ऽ	ना	श
ध॒	ध॒	–	म	प	प	–	ग॒	र–	स	–	र	ग॒	–	रे॒	स
के	ग	ऽ	र्त	में	था	ऽ	ज	गत	जा	ऽ	र	हा	ऽ	तू	ने
ग॒–	रे॒	–	स	न॒	स–	–	स	सर	ग॒	–	र	ग॒	–	रे॒	स
बद	ली	ऽ	न	ई	फिर	ऽ	से	तस	वी	ऽ	र	जी	ऽ	ओ	म

हा वीर जी ओ महावीर जी। ओ महावीर जी ओ महावीर।

सूचनाः—मध्यम को षड़ज मान कर इसे गाइये।

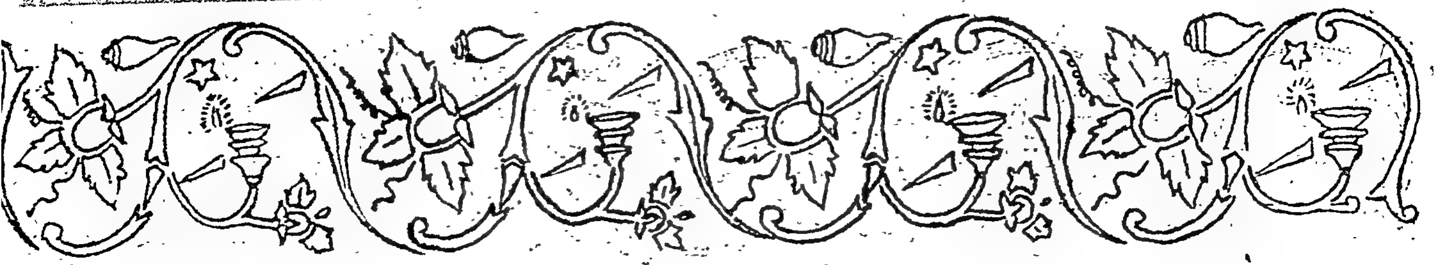




भ० महावीर ने क्या किया ?

वीर जिनेश्वर सोई दुनियां जगाई तूने ।
ज्ञान की मधुर सुरीली वंशी बजाई तूने ॥
भारत की नैया डोली,
मृत्यु आ शिर पर बोली,
स्वर्ग से आकर भगवन्! पार लगाई तूने!
पशुओं पै छुरियां चलतीं,
रक्त की नदियां बहतीं,
करुणा के सागर करुणा-गङ्गा बहाई तूने!
देवों की करना पूजा,
बस काम था और न दूजा,
मानव की अटल प्रतिष्ठा जग में जताई तूने!
पंथों का झूँठा झगड़ा,
जनता का मानस बिगड़ा,
भेद-सहिष्णुता की रक्खी सचाई तूने!
पाप का पंक धोना,
नर से नारायण होना,
'अमर' अमर पद की राह दिखाई तूने!





वीर जिनेश्वर ! सोई दुनियाँ !

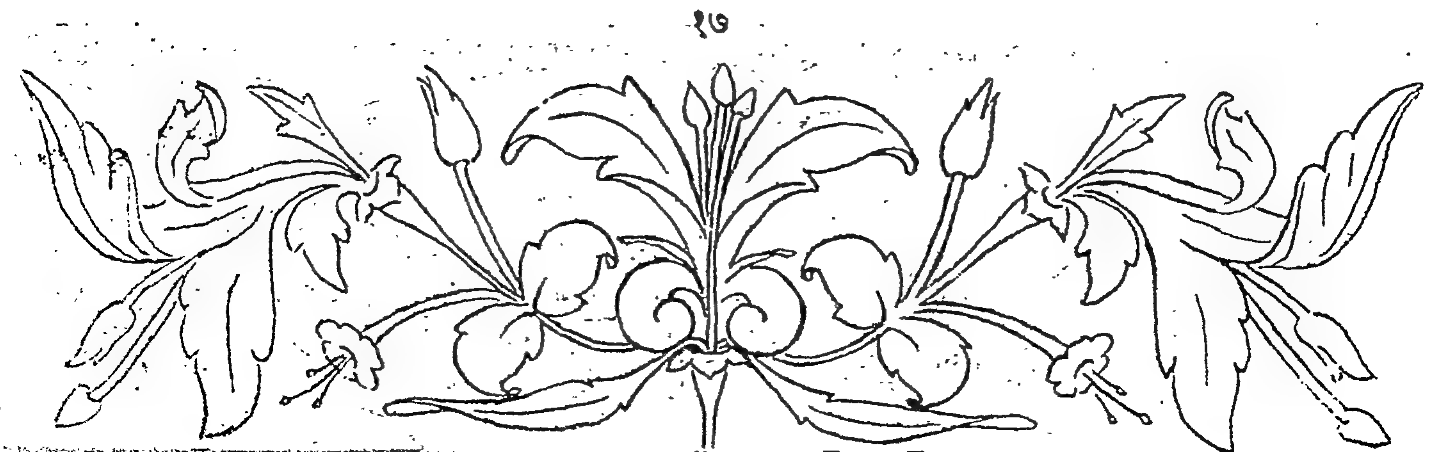
स्थायी (कहरवा)

×				०				×				०			
*	प	प	पम	पध	ध-	प	म	*	रग	ग	स	र	ग	म	प
*	वी	र	जिऽ	नेऽ	श्वर	सो	ई	*	दुनि	यां	ज	गा	ई	तू	ने
*	प	प	पम	पध	धध	प	म	*	रग	ग	स	र	ग	म	प
*	ज्ञा	न	कीऽ	मधु	रसु	री	ली	*	वंऽ	शी	व	जा	ई	तू	ने

अन्तरा—

*	ग	प-	प	धन	नध	नरं	सं	*	न	न	धप	पध	धन	ध	प
*	भा	रत	की	नैऽ	याऽ	डोऽ	ली	*	मृ	त्यु	आऽ	शिर	पर	बो	ली
*	प	प	पम	पध	धध	पप	म-	*	रग	ग	स	र	ग	म	प
*	स्व	र्ग	सेऽ	आऽ	कर	भग	वन्	*	पाऽ	र	ल	गा	ई	तू	ने

वीर जिनेश्वर सोई दुनियां जगाई तूने ।

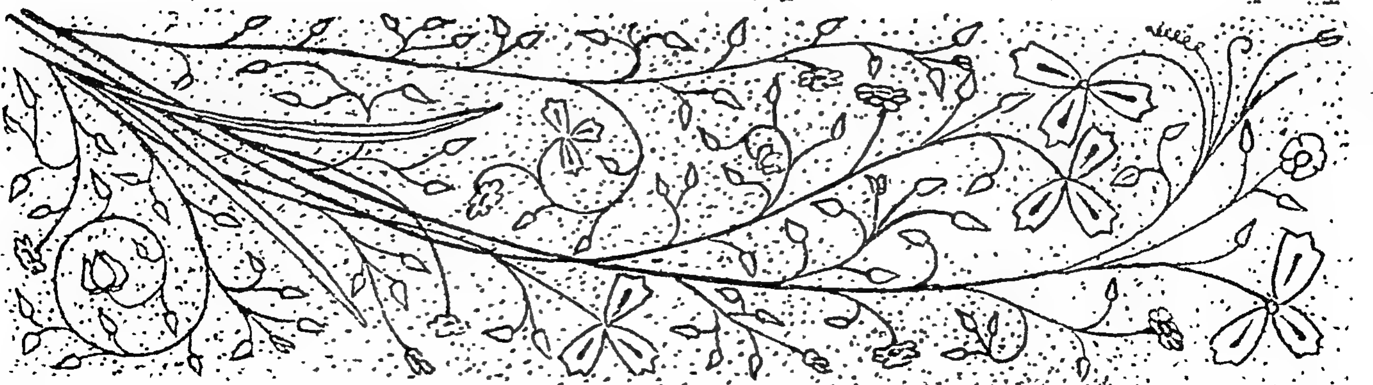




जिन स्तवन !

रसने ! रट लेना, सदा सुखद शुभ नाम !
ऋषभ अजित सम्भव भवहारी, अभिनन्दन नन्दनता-कारी।
सुमति सदा अभिराम ॥ रसने…॥
पद्म सुपार्श्व दया के सागर, चन्दा प्रभु तिहुँ जगत उजागर।
पुष्प दन्त निष्काम ॥ रसने…॥
श्री शीतल श्रेयांस मुनीश्वर, वासु पूज्य गम्भीर गुणीश्वर।
विमल-विमल गुणधाम । रसने…॥
नाथ अनन्त जी अविचल ध्यानी, धर्म शांति वर-केवल-ज्ञानी।
हों दुख दूर तमाम ॥ रसने…॥
कुंथु अरह मल्लि जिन स्वामी, मुनि सुव्रत नमि नेमि सुनामी।
कर डट के गुण ग्राम ॥ रसने…॥
पार्श्वनाथ जी नाग बचैया, वीर अहिंसा नाद बजैया।
भजले आठों याम ॥ रसने…॥
सीधे मग पर अब तो होले, पाप कालिमा अपनी धोले।
करले विश्व गुलाम ॥ रसने…॥
अन्ध-कूप में मतना गेरे, लगा "अमर" मन्दिर में डेरे।
मुझे मृत्यु से थाम ॥ रसने…॥

—— * ——





रसने रट लेना

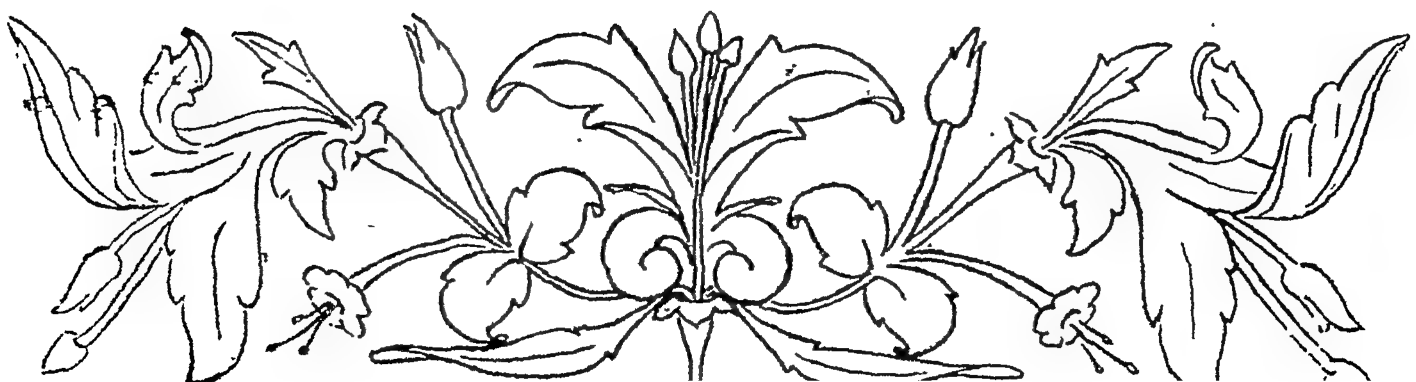
राग भीमपलासी-मिश्र, (कहरवा) स्थायी

×				०				×				०			
प	न॒	ध	प	म	मप	ग॒	म	प	—	—	—	ऩ॒	ऩ॒	—	स
र	स	ने	ऽ	ऽ	रट	ले	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	स	दा	ऽ	सु
ग॒	ग॒	म	ग॒	प	—	—	म	प	न॒	ध	प	म	मप	ग॒	म
ख	द	शु	भ	ना	ऽ	ऽ	म	र	स	ने	ऽ	ऽ	रट	ले	ऽ
प	—	—	—	ऩ॒	ऩ॒	—	स	ग॒	ग॒	म	ग॒	प	—	—	म
ना	ऽ	ऽ	ऽ	स	दा	ऽ	सु	ख	द	शु	भ	ना	ऽ	ऽ	म

अन्तरा —

स	म	म	म	म	म	म	—	स	ग॒	म	प	(म)ग॒	मग॒	र	स
ऋ	ष	भ	अ	जि	त	सं	ऽ	भ	व	भ	व	हा	ऽऽ	री	ऽ
प	प	प	म	प	न॒	धं	प	प	ध	म	प	ग॒म	मग॒	म	प
अ	भि	नं	ऽ	द	न	नं	ऽ	द	न	ता	ऽ	काऽ	ऽऽ	री	ऽ
प	न॒	न॒	न॒	सं	न॒	सं	गं॒	रं	सं	न॒	ध	प	न॒	ध	प
सु	म	ति	स	दा	ऽ	अ	भि	रा	ऽ	ऽ	म	र	स	ने	ऽ

रट लेना, सदा सुखद सुख धाम।





महावीर के चरणों में !

महावीर, जग स्वामी तुमको लाखों प्रणाम, तुमको लाखों प्रणाम !

अन्तर में वर करुणा जागी, देखा भारत अति दुख भागी।
वैभव की दुनियां त्यागी, लाखों प्रणाम, तुमको लाखों प्रणाम ॥

दैत्यों का दल बल चल आया, उत्कट संकट घन बरसाया।
लेशमात्र ना मन हिर्राया, लाखों प्रणाम, तुमको लाखों प्रणाम ॥

सर्प चण्ड कौशिक फुंकारा, उग्रदंश चरणों में मारा।
समझाया प्रेम पियारा, लाखों प्रणाम, तुमको लाखों प्रणाम ॥

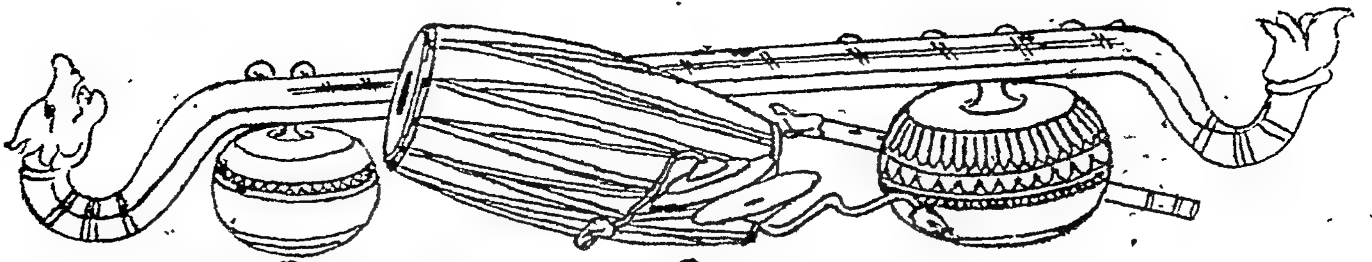
बारह वत्सर वन-वन डोले, सब विचार आचार में तोले।
हां, जनता में फिर खोले, लाखों प्रणाम, तुमको लाखों प्रणाम ॥

दुराचार पाखण्ड हटाया, सदाचार सर्वत्र पुजाया।
धर्मों का द्वन्द मिटाया, लाखों प्रणाम, तुमको लाखों प्रणाम ॥

अटल दुर्ग पशु बलि का तोड़ा, जातिवाद का कण्ठ मरोड़ा।
पतितों से नाता जोड़ा, लाखों प्रणाम, तुमको लाखों प्रणाम ॥

देव तुम्हारी महिमा भारी, 'अमर' विश्व की दशा सुधारी।
त्रिभुवन के मङ्गलकारी, लाखों प्रणाम, तुमको लाखों प्रणाम ॥

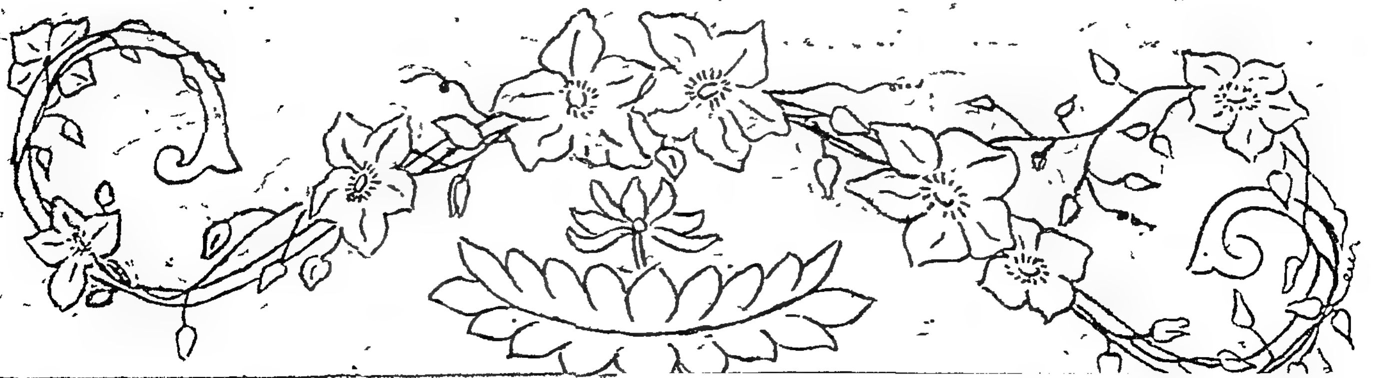




महावीर जग स्वामी.................!

स्थायी (कहरवा)

×				०				×				०			
स	रे	स	न	स	प	प	प	प	ध	प	म	प	ध	सं	–
म	हा	ऽ	वी	ऽ	र	ज	ग	स्वा	ऽ	मी	ऽ	तु	म	को	ऽ
–	–	प	ध	–	म	–	ग	र	–	–	म	ग	म	र	ग
ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ	खों	ऽ	प्र	णा	ऽ	ऽ	म	तु	म	को	ऽ
–	–	र	ग	–	स	–	रे	ग	स	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ	खों	ऽ	प्र	णा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म
अन्तरा —															
ग	–	म	म	ध	–	न	न	सं	सं	सं	न	सं	रें	सं	–
अ	ऽ	न्त	र	में	ऽ	व	र	क	रु	णा	ऽ	जा	ऽ	गी	ऽ
न	–	न	–	सं	–	सं	सं	न	रें	सं	न	प	ध	प	–
दे	ऽ	खा	ऽ	भा	ऽ	र	त	अ	ति	दु	ख	भा	ऽ	गी	ऽ
*	*	प	–	प	प	प	–	म	ध	प	म	र	म	ग	–
*	*	वै	ऽ	भ	व	की	ऽ	दु	नि	यां	ऽ	त्या	ऽ	गी	ऽ
*	*	प	–	–	म	–	ग	र	–	–	म	ग	म	र	ग
*	*	ला	ऽ	ऽ	खों	ऽ	प्र	णा	ऽ	ऽ	म	तु	म	को	ऽ
*	*	र	ग	–	स	–	रे	ग	स	–	–	–	–	–	–
*	*	ला	ऽ	ऽ	खों	ऽ	प्र	णा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म





दिल की चाह !

वीर जिनेश्वर आपका सच्चा भगत बन जाऊँ मैं।
पाप भरी जग—वासना दिल से समस्त हटाऊँ मैं॥

शान्त हृदय में द्वेष की, धधकें न कभी चिनगारियां।
शत्रुजनों पै भी सदा, प्रेम की गंगा बहाऊँ मैं॥

दीन-दुखी को देख कर आंसू वहाऊँ, रो उठूँ।
जैसे बने सर्वस्व भी देके सुखी वनाऊँ मैं॥

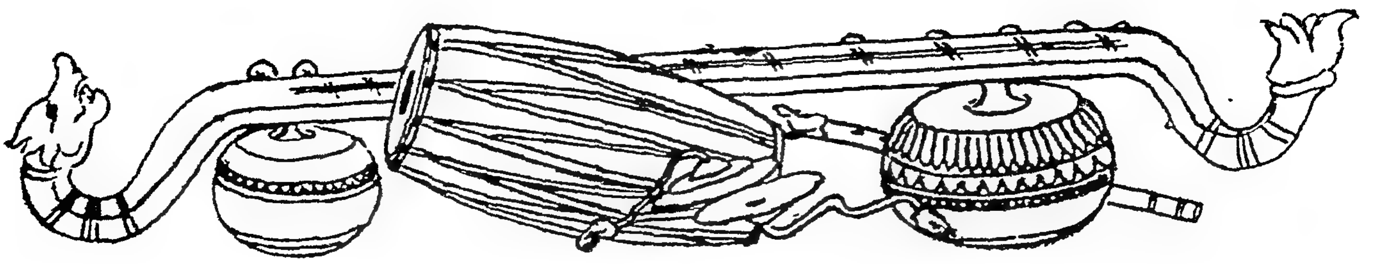
कैसा भी भीषण कष्ट हो, प्रणसे न तिलभर भी हिलूँ।
हँसता रहूँ कर्तव्य की वेदी पै शीश चढ़ाऊँ मैं॥

छोटे वड़े का भेद तज सेवक वनूं मैं विश्व का।
अपने विगाने की विष भरी दिल से दुई मिटाऊँ मैं॥

धर्म की लेके आड़ मैं, मत पक्ष करूँ न कभी जरा।
सत्य जहां भी मिले वहीं, पूर्णतया झुक जाऊँ मैं॥

स्वर्ग तथैव च मोक्ष की इच्छा नहीं कुछ भी 'अमर'।
अब तो यही है कामना, सफल नृजन्म वनाऊँ मैं॥





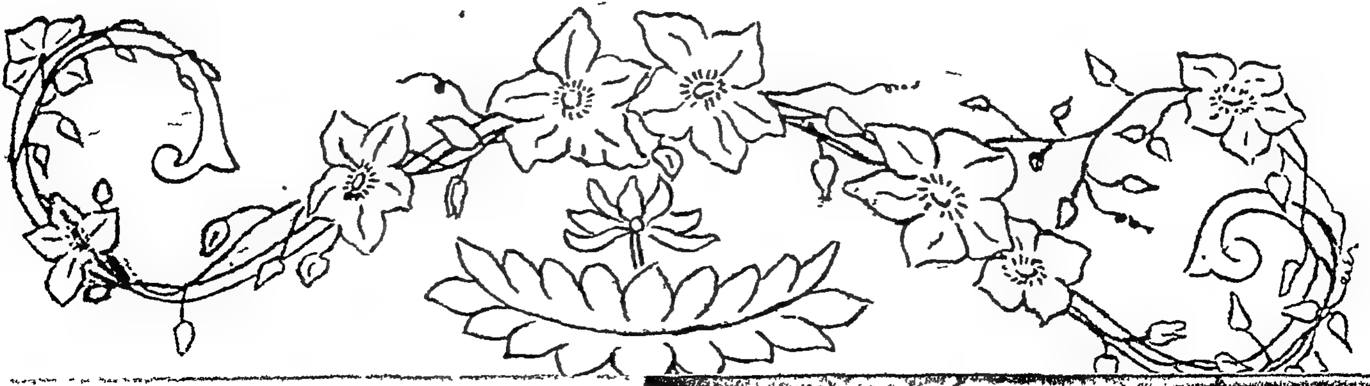
वीर जिनेश्वर आपका...............!

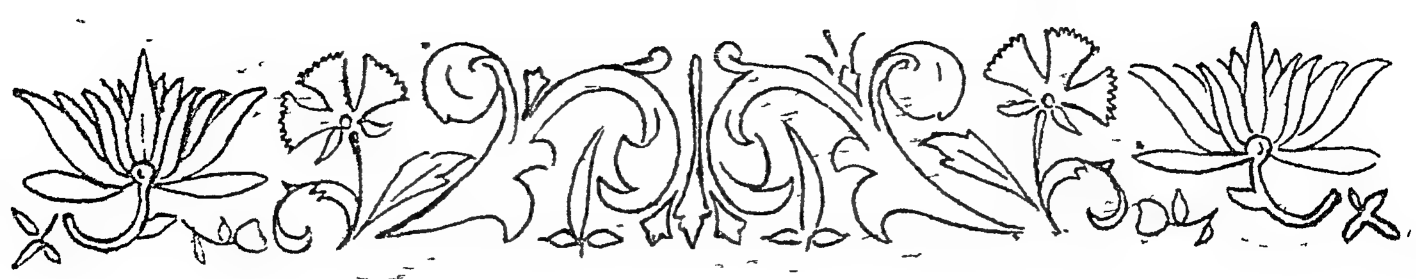
स्थाई (दादरा)

×			०			×			०		
स	र	ग	म	म	ग	म	प	म	ग॒	–	–
वी	र	जि	ने	श्व	र	आ	ऽ	प	का	ऽ	ऽ
र	स	ऩ	सर	ऱ	र	र	ग॒	र	स	–	–
स	च्चा	भ	गत	व	न	जा	ऽ	ऊँ	मैं	ऽ	ऽ
स	र	ग	म	म	ग	म	प	म	ग॒	–	–
पा	प	भ	री	ज	ग	वा	ऽ	स	ना	ऽ	ऽ
र	स	ऩ	सर	र	र	र	ग॒	र	स	–	–
दिल	से	स	मस्	त	ह	टा	ऽ	ऊँ	मैं	ऽ	ऽ

अन्तरा

स	ग	म	प	प	प	ग॒	–	सं	ग॒	प	–
शां	त	हृ	द	य	में	ध्ये	ऽ	य	की	ऽ	ऽ
म	म	ग	म	ध	प	ग॒	म	ग॒	स	–	–
धध	कें	न	क	भी	चिन	गा	ऽ	रि	यां	ऽ	ऽ
स	र	ग	म	–	ग	म	प	म	ग॒	–	–
श	त्रु	ज	नों	ऽ	पै	भी	ऽ	स	दा	ऽ	ऽ
र	स	ऩ	सर	र	र	र	ग॒	र	स	–	–
प्रे	ऽ	की	गंऽ	गा	व	हा	ऽ	ऊँ	मैं	ऽ	ऽ





अमर अभिलाषा !

भगवान् तुम्हारा इस जग में, मैं सच्चा भगत कहाऊँ ।
क्रोध निकट नहिं आने देऊँ, शास्त्र अचूक क्षमा का लेऊँ ।
दूर ही मार भगाऊँ, मैं सच्चा भगत कहाऊँ ॥ भगवान ·········· ॥
संत गुणी-जन जब मिल जावें, मद मत्सर नहिं मनमें आवें ।
सादर शीश झुकाऊँ, मैं सच्चा भगत कहाऊँ ॥ भगवान ·········· ॥
सत्य शंख का नाद बजाके, उथल-पुथल की क्रान्ति मचाके ।
सोता जगत जगाऊँ, मैं सच्चा भगत कहाऊँ ॥ भगवान ·········· ॥
न्याय मार्ग से मुख नहीं मोड़ूँ, स्वीकृत प्रण की मेंड़ न छोड़ूँ ।
कर्तव्य पथ बलि जाऊँ, मैं सच्चा भगत कहाऊँ ॥ भगवान ·········· ॥
प्राणिमात्र को अपना भाई, मानूँ सबकी चाहूँ भलाई ।
सेवा-मंत्र बनाऊँ, मैं सच्चा भगत कहाऊँ ॥ भगवान ·········· ॥
ऊँच-नीच का भेद न मानूँ, गुण पूजा का महत्व पिछानूँ ।
व्यक्ति न व्योम चढ़ाऊँ, मैं सच्चा भगत कहाऊँ ॥ भगवान् ·········· ॥
करुणानिधि ! वर करुणा कीजे, आत्मिकबल कुछ ऐसा दीजे ।
'अमर' अमर हो जाऊँ मैं सच्चा भगत कहाऊँ ॥ भगवान ·········· ॥





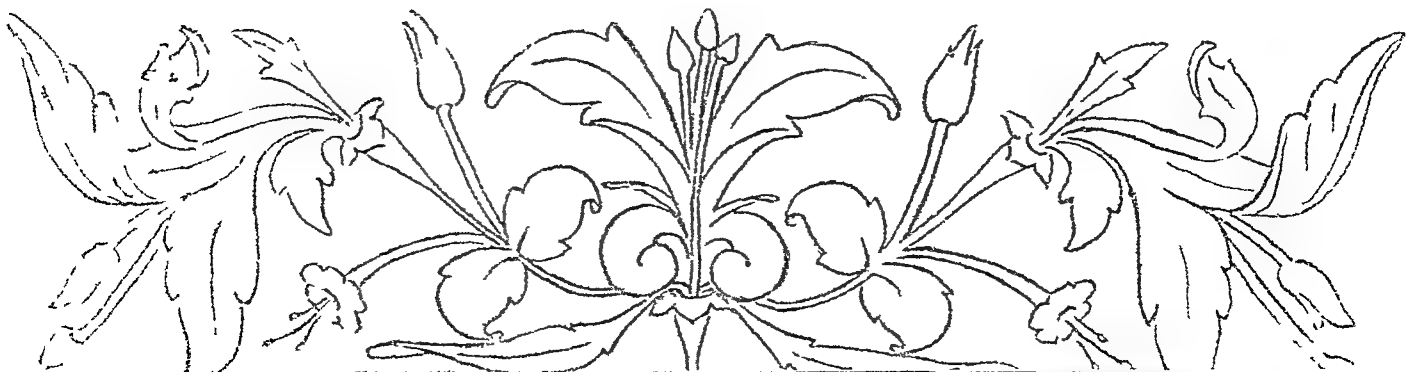
भगवान तुम्हारा इस जग में.....!

स्थायी (कहरवा)

												–		प	प
×				०				×				०		भ	ग
पध	ऩ	ध	प	प	ध	म	प	ग	म	ग	स	ग	म	प	–
वाऽ	ऽ	न	तु	म्हा	ऽ	रा	ऽ	इ	स	ज	ग	में	ऽ	मैं	ऽ
प	ध॒	प	म	ग॒	ग॒	र	ग॒	सर	ग॒र	स	–	–	–	प	प
स	ऽ	च्चा	ऽ	भ	ग	त	क	हाऽ	ऽऽ	ऊँ	ऽ	ऽ	ऽ	भ	ग
पध	ऩ	ध	प	प	ध	म	प	ग	म	ग	स	ग	म	प	–
वाऽ	ऽ	न	तु	म्हा	ऽ	रा	ऽ	इ	स	ज	ग	में	ऽ	मैं	ऽ
प	ध॒	प	म	ग॒	ग॒	र	ग॒	सर	ग॒र	स	–	–	–	–	–
स	ऽ	च्चा	ऽ	भ	ग	त	क	हाऽ	ऽऽ	ऊँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

म	–	म	म	प	प	प	ध	न	–	सं	–	न	रं	सं	–
क्रो	ऽ	ध	नि	क	ट	न	हिं	आ	ऽ	ने	ऽ	दे	ऽ	ऊँ	ऽ
गं॒	–	गं॒	गं॒	रं	मं	गं॒	रं	सं	रं	ऩ	ध	प	ध	सं	–
शा	ऽ	न्त	अ	चू	ऽ	क	न्त	मा	ऽ	का	ऽ	ले	ऽ	ऊँ	ऽ
सं	–	सं	रं	ऩ	–	ध	प	ग	म	ग	स	ग	म	प	–
दू	ऽ	र	हि	मा	ऽ	र	भ	गा	ऽ	ऊँ	ऽ	ऽ	ऽ	मैं	ऽ
प	ध॒	प	म	ग॒	ग॒	र	ग॒	सर	ग॒र	स	–	–	–	प	प
स	ऽ	च्चा	ऽ	भ	ग	त	क	हाऽ	ऽऽ	ऊँ	ऽ	ऽ	ऽ	भ	ग



प्रभु नाम कैसा है ?

नाम प्रभू का प्यारा बन्दे।

शक्कर मीठी, मिसरी मीठी,
नाम सुधा की धारा।
भवसागर में डूबी नैया,
नाम ही एक सहारा बन्दे।

जब भी भीर पड़ी भक्तों ने,
नाम का मन्त्र उचारा।
सच्चा है बस नाम प्रभू का,
झूँठा है जग सारा बन्दे।

माया की उलझन में फँसकर,
क्यों प्रभु-नाम बिसारा ?
नाम मन्त्र के आगे पल में,
काम, क्रोध, मद, हारा बन्दे।

'अमर' जिधर भी देखा जग में,
नाम ही नाम निहारा बन्दे।





नाम प्रभू का प्यारा.........!

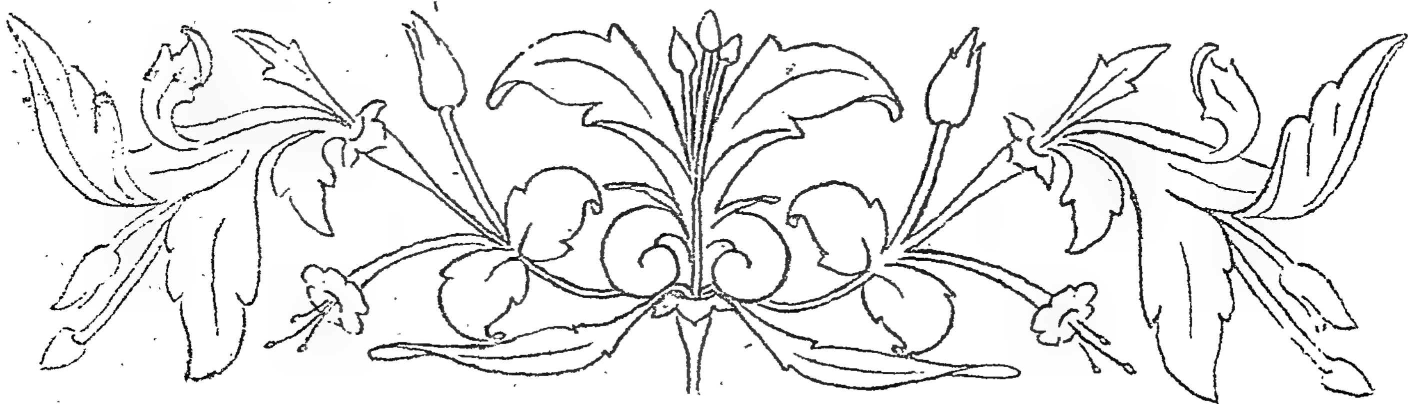
राग भैरव+भैरवी मिश्र, ताल कहरवा, (मध्यलय) स्थायी

×				×				×				×			
प	–	–	म	ग	रे॒	ग	रे॒	स	–	स	–	ग	म	प	–
ना	ऽ	म	प्र	भू	ऽ	का	ऽ	प्या	ऽ	रा	ऽ	वं	ऽ	दे	ऽ
प	–	–	म	ग	रे॒	ग	रे॒	स	–	स	–	–	–	–	–
ना	ऽ	म	प्र	भू	ऽ	का	ऽ	प्या	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

स	म	म	म	म	–	ग	म	प	ध॒	प	म	ग	म	प	–
श	ऽ	क	र	मी	ऽ	ठी	ऽ	मि	स	री	ऽ	मी	ऽ	ठी	ऽ
प	ध॒	नि॒	सं	गं॒	रें॒	सं	रें॒	नि॒	रें॒	सं	–	–	–	–	–
ना	ऽ	म	सु	धा	ऽ	की	ऽ	धा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
* ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	–	प	नि॒	ध॒	प	म	ध॒	प	–
* भ	व	सा	ग	र	में	ऽ	डू	ऽ	बी	ऽ	नै	ऽ	या	ऽ	
* ग	–प	म	ग	रे॒	ग	रे॒	स	–	स	–	ग	म	प	–	
* ना	ऽम	ही	प	ऽ	क	स	हा	ऽ	रा	ऽ	वं	ऽ	दे	ऽ	

नाम प्रभू का प्यारा.............।



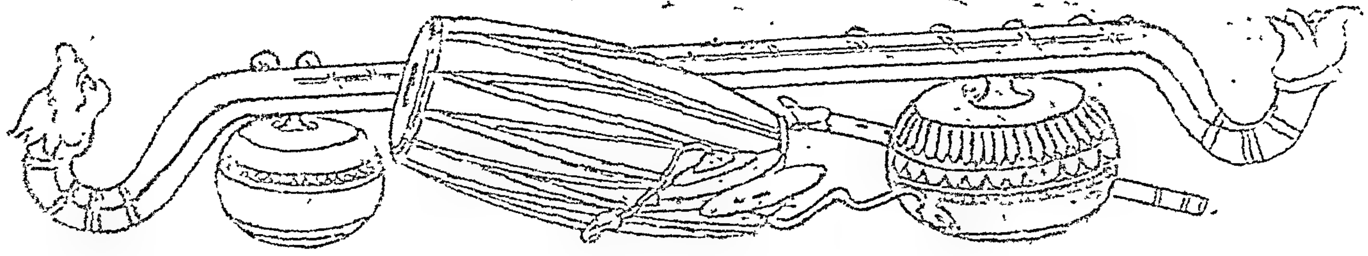
भ० पार्श्वनाथ के चरणों में

प्रभो पार्श्व ! तेरा जिसे ध्यान होगा,
जगत में भला क्यों वह हैरान होगा ?
क्षमा, सत्य करुणा के सद्गुण से ऊँचा,
उठेगा वह इतना कि हिमवान होगा ॥
न झूमेंगी सिर पर कभी दुख घटाऐं,
सभी भांति नित पूर्ण कल्याण होगा ।
झुकेंगे स्वयं देव चरणों में आके,
चरण-रज का अमृत सा सम्मान होगा ॥
बनाते हैं पारस ही लोहे से सोना,
बने जो न सोना वह नादान होगा ।
अँधेरा अविद्या का जड़ से मिटेगा,
प्रगट सूर्य ज्यों केवल-ज्ञान होगा ॥
फँसेगा न चक्कर में आवागमन के,
'अमर' हो अमर मोक्ष स्थान होगा ।

प्रभो पार्श्व ! तेरा जिसे........!

राग भीमपलासी मिश्र, ताल—झपताल, स्थायी—

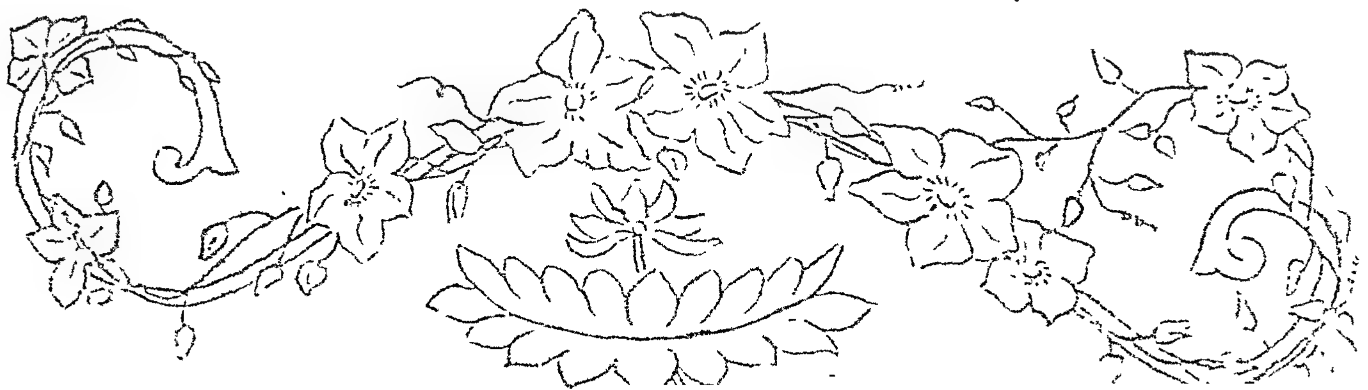
										प
×		२			०		३			प्र
प	नि॒	ध	–	प	म	प	ग॒	–		म
भो	ऽ	पा	ऽ	र्श्व	ते	ऽ	रा	ऽ		जि

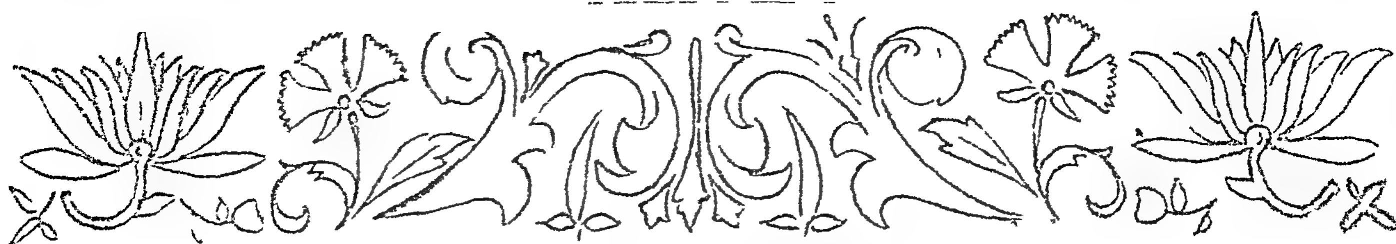


प	–	ग॒	–	म	रे	–	सा	–	रे
से	ऽ	ध्या	ऽ	न	हो	ऽ	गा	ऽ	ज
नि़॒	सा	ग॒	म	प	प	नि॒	सां	–	सां
ग	त	में	ऽ	भ	ला	ऽ	क्यों	ऽ	वो
नि॒	–	ध	–	म	प	नि॒	ध	–	प
है	ऽ	रा	ऽ	न	हो	ऽ	गा	ऽ	प्र

अन्तरा—

									प
									ज
प	–	ग॒	–	म	प	नि॒	सां	–	सां
मा	ऽ	स	ऽ	त्य	क	रु	णा	ऽ	के
नि॒	सां	मं	गं॒	गं॒	रें	–	सां	–	सां
स	द	गु	ण	से	ऊँ	ऽ	चा	ऽ	उ
सां	–	नि॒	ध	प	ग॒	म	ग॒	रे	सा
ठे	ऽ	गा	ऽ	व	इ	त	ना	ऽ	कि
नि़॒	सा	ग॒	म	प	प	–	ग॒	–	म
हि	म	वा	ऽ	न	हो	ऽ	गा	ऽ	प्र





सन्त-महिमा !

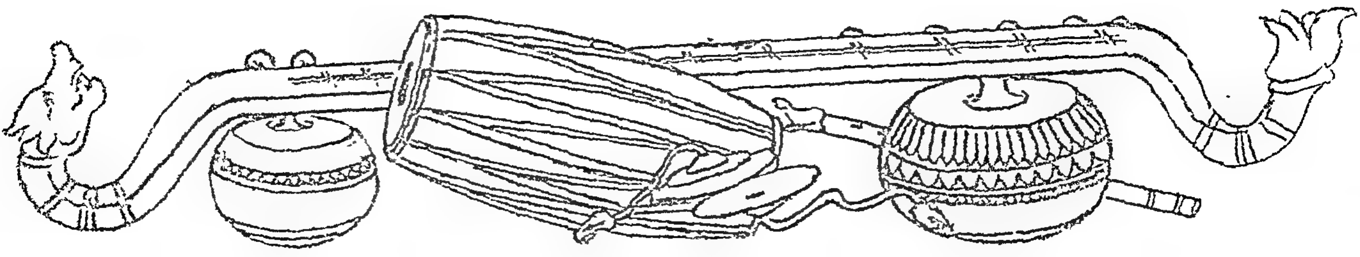
जगत के तारने वाले जगत में सन्त-जन ही हैं,
उन्हें उपमा कहो क्या दें, अपन से वे अपन ही हैं।
सकल सुख भोग तज करके, जगत कल्याण को निकले,
मनोहर महल जिनके फिर भयंकर शून्य वन ही हैं।
अटल संयम सुमेरू के शिखर पर सन्त बैठे हैं,
जिधर देखो उधर उनके अमन के गुलचमन ही हैं।
सुधा की खोज में दुनियां वनी फिरती है क्यों पागल,
सुधा तो संत लोगों के सदा मङ्गल वचन ही हैं।
कुल्हाड़ी से कोई काटे, कोई आ फूल बरसाये,
खुशी से दें दुआ यकसां अजब सारे चलन ही हैं।
स्वयं पर वज्र भी टूटे तो हँसते ही रहेंगे, हां,
दुखी को देख रो उठने दया के तो सदन ही हैं।
हृदय की हूक से हर दम हज़ारों बार वन्दन हो,
'अमर' अमरत्व के दाता संत के पावन चरन ही हैं।

जगत के तारने वाले जगत में...... !

राग दुर्गा, ताल-रूपक

				स्थायी—									म
२		३		×			२		३		×		ज
ध	ध	ध	प	म	–	प	म	–	र	–	स	–	र
ग	त	के	ऽ	ता	ऽ	र	ने	ऽ	वा	ऽ	ले	ऽ	ज





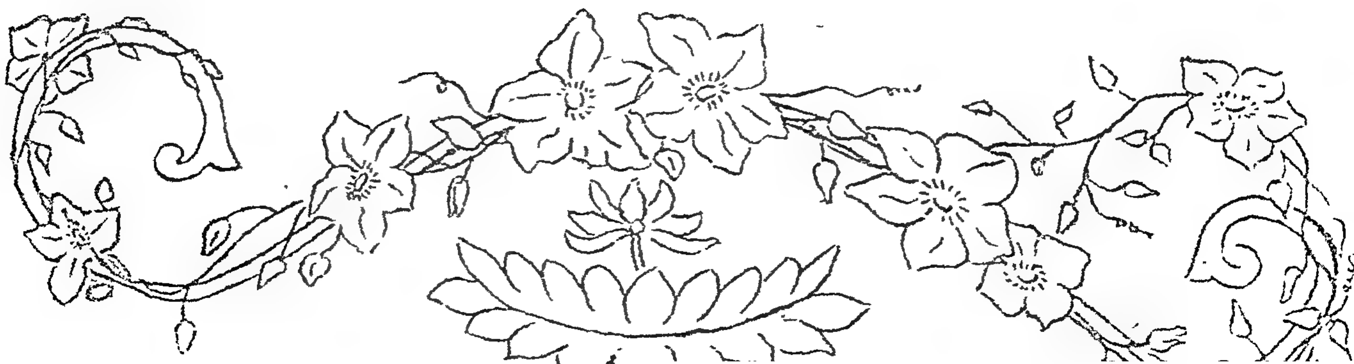
स स	ध़ -	स - र	म म	प -	ध - ध
ग त	मे ऽ	सं ऽ त	ज न	ही ऽ	हैं ऽ उ
ध -	ध सं	ध - प	म -	प -	र - र
न्हें ऽ	उ प	मा ऽ क	हो ऽ	क्या ऽ	दें ऽ अ
ध़ ध़	स -	र - म	म म	प -	ध - ध
प न	से ऽ	त्रे ऽ अ	प न	ही ऽ	हैं ऽ ज

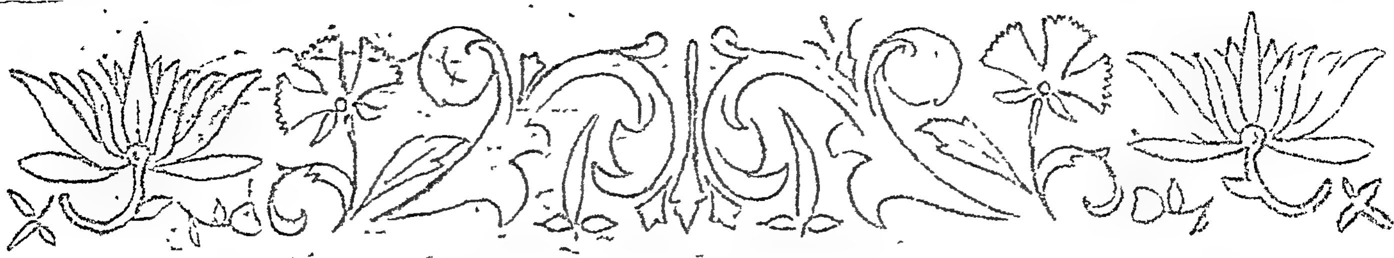
गत के तारने वाले………।   प / स

अन्तरा—

म म	प प	ध - ध	सं सं	ध ध	सं - ध
क ल	सु ख	भो ऽ ग	त ज	क र	के ऽ ज
सं सं	रं -	मं - रं	सं -	रं रं	सं - सं
ग त	क ऽ	ल्या ऽ ण	को ऽ	नि क	ले ऽ म
मं -	रं रं	सं सं रं	ध ध	सं -	ध ध प
नो ऽ	ह र	म ह ल	जि न	के ऽ	फि र भ
म -	प प	म - र	स र	म प	ध - ध
यं ऽ	क र	शू ऽ न्य	व न	ही ऽ	हैं ऽ ज

गत के तारने वाले………। *(शेष अन्तरे भी इसी प्रकार कहे जाँयगे)*





वीर वन्दना !

प्रभो वीर ! तेरा ही केवल सहारा ।
जगत में न कोई शिवंकर हमारा ॥ १ ॥

सभी ओर कर्मों का है घेरा डाला ।
कृपा कर दो ऐसी उड़े पारा पारा ॥ २ ॥

जला ज्ञान दीपक दिखा मार्ग सदसत् ।
भटकते फिरें, घोर धुन्ध पसारा ॥ ३ ॥

निकट शीघ्र से शीघ्र अपने बुलालो ।
पड़े ताकि जगमें न आना दुवारा ॥ ४ ॥

—※—

प्रभो वीर ! तेरा ही.........!

राग दरबारी मिश्र, तालः—झपताल

		स्थायी—							स
×		२			०		३		प्र
र	म	र	र	स	नु	स	धु	नु	स
भो	ऽ	वी	ऽ	र	ते	ऽ	रा	ऽ	ही
र	म	पधु,	मप	म	गु	म	र	–	स
के	ऽ	वल,	ऽऽ	स	हा	ऽ	रा	ऽ	प्र

भो ऽ वी ऽ र इसको इसी प्रकार कहिये ।





									म
									ज
प	धु	सं	—	नुप	र	म	र	—	स
ग	त	में	ऽ	नऽ	को	ऽ	ई	ऽ	शि
र	म	पधु	मप	म	र	म	र	—	स
वं	ऽ	कऽ	रऽ	ह	मा	ऽ	रा	ऽ	प्र

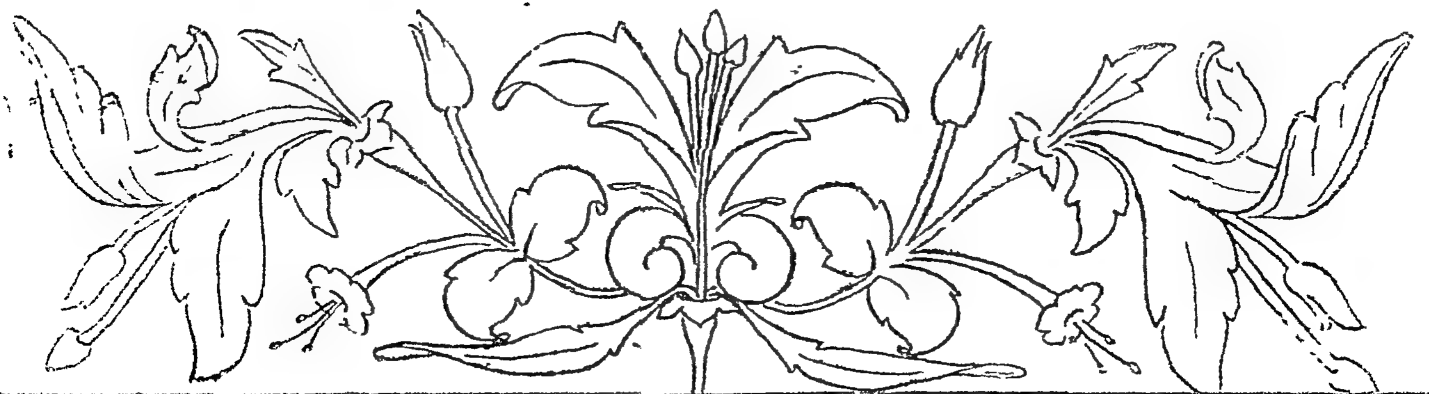
भो ऽ वी ऽ र ……… फिर कहिये।

अन्तरा—

									म
									स
म	प	धु	—	नु	सं	—	सं	—	सं
भी	ऽ	ओ	ऽ	र	क	ऽ	मों	ऽ	का
नु	सं	नसं	रं	सं	नु	सं	धु	नु	प
है	ऽ	घेऽ	ऽ	रा	डा	ऽ	ला	ऽ	कु
गं	मं	रं	—	सं	नु	सं	धु	नु	प
पा	ऽ	क	र	दो	ऐ	ऽ	सी	ऽ	उ
सं	—	नु	—	प	र	म	र	—	स
ड़े	ऽ	पा	ऽ	रा	पा	ऽ	रा	ऽ	प्र

भो ऽ वी ऽ र फिर इसको स्थायी की भांति कहिये।

नोटः—शेष अन्तरे भी इसी अन्तरे की तरह कहे जायेंगे।



भव्य-भावना !

प्रभो प्रेम सागर में तेरे बहूँ मैं ।
भ्रमर तेरे चरणों का हर दम रहूँ मैं ॥

हटूँ एक इञ्च भी अपनी न राह से ।
कभी भी न गन्दा करूँ कंठ आह से ॥
करूँ पूरा जो कुछ कि मुख से कहूँ मैं ॥

दुखी दुर्बलों का बनूँ मैं सहारा ।
कभी स्वप्न में भी करूँ ना किनारा ॥
सदा लोक-सेवा का दृढ़ व्रत गहूँ मैं ॥

सताया किसी से मैं कैसा ही जाऊँ ।
न माथे पै बल अपने मैं नेक लाऊँ ॥
बुराई के बदले भलाई चहूँ मैं ॥

लुटा जाऊँ मैं धर्म-वेदी पै सब धन ।
करूँ काम ऐसा, करें याद सब जन ॥
'अमर' धर्म हित लाख मुश्किल सहूँ मैं ॥

राग बिहाग, झपताल

		स्थायी—							स
×		२			०		३		प्र
ऩ	–	प़	ऩ	स	ग	–	र स	स	स
भो	ऽ	प्रे	ऽ	म	सा	ऽ	ग	र	में
प	मं	ग	–	म	ग	–	स	–	स
ते	ऽ	रे	ऽ	ब	हूँ	ऽ	मैं	ऽ	भ्र



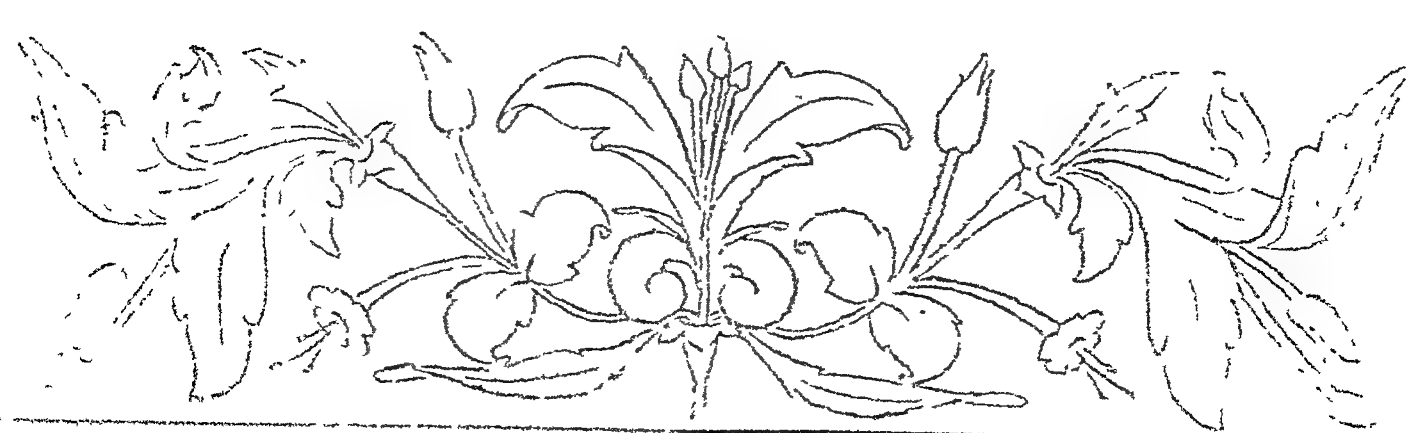
म	ग	प	-	प	न	न	प	-	प
म	र	ते	ऽ	रे	च	र	णों	ऽ	का
प	र्म	ग	ग	म	गम	पध	गम	ग	स
ह	र	द	म	र	हूँऽ	ऽऽ	मैंऽ	ऽ	ऽ

भो ऽ प्रेम ...... ।

अन्तरा—

									प
									ह
प	-	सं	-	सं	सं	-	रं	सं	-
हूँ	ऽ	ए	ऽ	क	इं	ऽ	च	भी	ऽ
सं	सं	गं	-	मं	गं	गं	सं	-	सं
अ	प	नी	ऽ	न	रा	ह	से	ऽ	क
गं	-	सं	-	सं	न	-	प	-	प
भी	ऽ	भी	ऽ	न	गं	ऽ	दा	ऽ	क
न	-	प	-	ध	ग	म	ग	स	स
रूँ	ऽ	कं	ऽ	ठ	आ	ह	से	ऽ	क
ग	म	प	न	सं	नसं	गं	रं	रं	सं
रूँ	ऽ	पू	ऽ	रा	जोऽ	ऽ	कु	छ	कि
न	ध	प	-	र्म	ग	म	ग	स	स
मु	ख	से	ऽ	क	हूँ	ऽ	मैं	ऽ	प्र

भो ऽ प्रेम ...।





सफल जीवन की मांग !

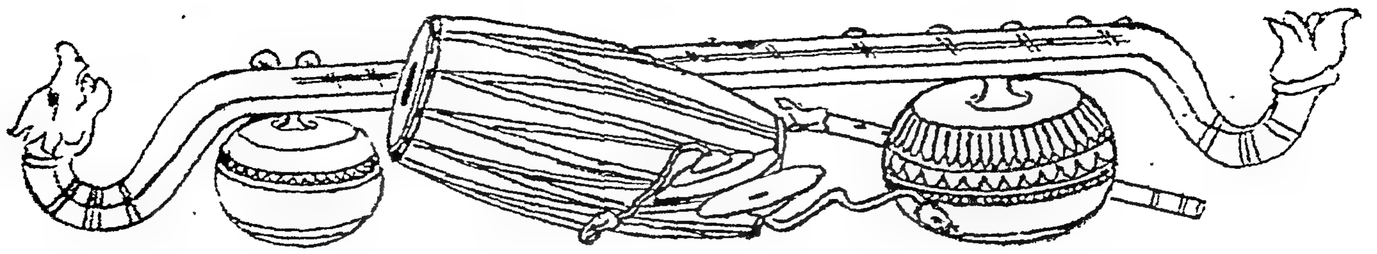
जीवन सफल बनाना हां, बनाना प्रभो।
हृदय मन्दिर में घुप है अँधेरा,
ज्ञान की ज्योति जगाना हां ! जीवन .... ।
धधक रहा है द्वेष दावानल,
प्रेम पयोधि बहाना हां ! जीवन .... ॥
भोग वासना जला रही है,
अन्तर ताप बुझाना हां ! जीवन .... ।
बीच भँवर में नैया फँसी है,
झट—पट पार लगाना हां ! जीवन .... ॥
न्याय मार्ग का पक्ष न छोड़ूँ,
दुश्मन हो सारा ज़माना हां ! जीवन .... ।
उत्कट संकट हँस—हँस झेलूँ,
अविचल धैर्य बँधाना हां ! जीवन .... ॥
प्राणी-मात्र को सुख उपजाऊँ,
चाहूँ न चित्त दुखाना हां ! जीवन .... ।
मैं भी तुमसा जिन बन जाऊँ,
परदा दुई का हटाना हां ! जीवन .... ॥
'अमर' निरन्तर आगे बढ़ूँ मैं,
कर्तव्य वीर बनाना हां ! जीवन .... ।

ताल—कहरवा (मध्यलय)

स्थायी—

	×			×				×				×			
*	ध़	स	स	र	म	म	म	प	मं	प	ध	—	—	—	—
*	जी	व	न	स	फ	ल	ब	ना	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ



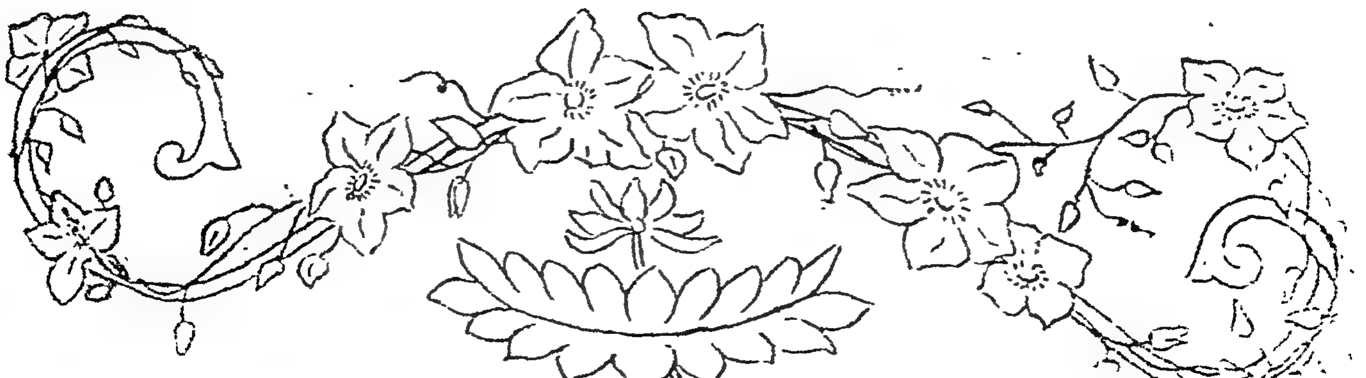


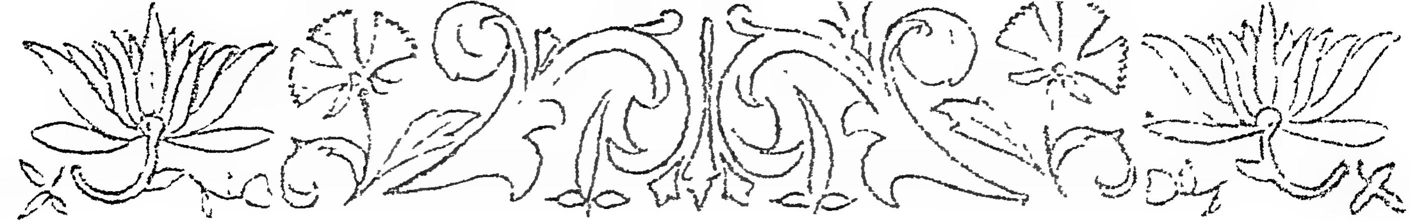
*	प	–	प	प	म॑	प	ध	म	–	–	–	–	–	–	–
*	हां	ऽ	च	ना	ऽ	ना	प्र	भो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग॒	ग॒	–	ग॒	र	र	स	–	स	र	म	र	म	–	प	–
हृ	दय	ऽ	मं	दि	र	में	ऽ	घु	प	है	अँ	धे	ऽ	रा	ऽ
*	प	प	प	प	म॑	प	ध	ध	प	म	म	(म॑)	–	(प	–
*	ज्ञा	न	की	ज्यो	ऽ	ति	ज	गा	ऽ	ना	ज	गा	ऽ	ना	ऽ
*	प	प	प	प	म॑	प	ध	ध	–	म	–	–	–	–	–
*	ज्ञा	न	की	ज्यो	ऽ	ति	ज	गा	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

ध	ध	सं	सं	रं	–	सं	–	रं	मं	रं	सं	ध	ध	प	प
ध	ध	क	र	हा	ऽ	है	ऽ	द्वे	ऽ	प	दा	वा	ऽ	न	ल
*	प	प	प	प	म॑	प	ध	ध	प	म	म	(म॑)	–	(प)	–
*	प्रे	म	प	यो	ऽ	धि	व	हा	ऽ	ना	व	हा	ऽ	ना	ऽ
*	प	प	प	प	म॑	प	ध	ध	–	म	–	–	–	–	–
*	प्रे	म	प	यो	ऽ	धि	व	हा	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

———





मंगल प्रार्थना !

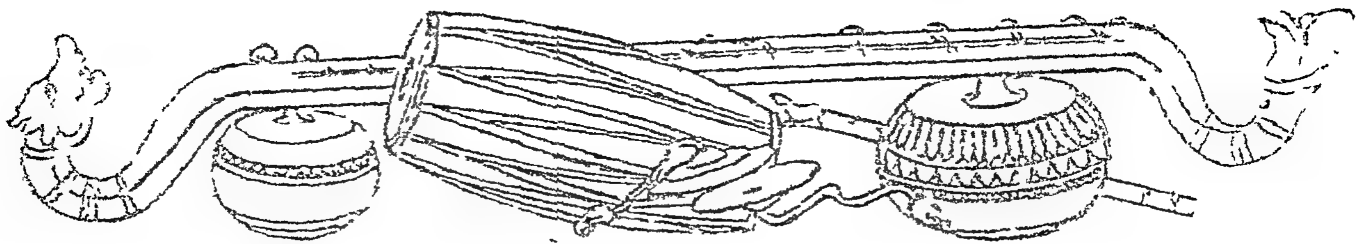
दयामय दीनों के भगवान !
हम दीनों पर कृपया अपना रखते रहना ध्यान ॥
तुम पूर्ण सिन्धु हम तुच्छ विन्दु हैं, नहीं कुछ अपना मान ।
बोधिदान के द्वारा प्रभुजी करलो आप समान ॥ दयामय ''॥
पतितों की पत राखनहारे, भवसागर-जलयान ।
विश्व हितंकर करो सभी को, उन्नति लक्ष्य प्रदान ॥ दयामय '' ॥
दया दान सन्तोष हों हम में, प्रभुजी एक समान ।
काम क्रोध मद लोभ मोह का, हो जड़ से अवसान ॥ दयामय ''॥
भेद भाव हों लुप्त परस्पर, कर वन्धुत्व विधान ।
हों स्वतन्त्र सब, कहीं दास्य का रहे न नाम निशान ॥ दयामय'''॥
धर्म पक्ष पर अड़ें अडिग हम, हँस-हँस हों वलिदान ।
पाप पक्ष तो लें न स्वप्न में, भीरु वनें सुमहान ॥ दयामय'''॥
रहें अदम्य अगम्य निरन्तर, हम भारत सन्तान ।
तने सकल भूमण्डल पर हाँ, नित नव कीर्ति-वितान ॥ दयामय''' ॥
लसै अविद्या तिमिर नष्ट कर, विद्या-स्वर्ण-विहान ।
प्रभो ! रमो हम रोम-रोम में मान 'अमर' स्वस्थान ॥ दयामय'''॥

—*—

दयामय दीनों के भगवान..........!

						त्रिताल, स्थायी–										ग
२				०				३				×				द
रग	मग	र	स	*	ग	र	स	सऩ	धप़	ध़	र	स	–		स,	ग
याऽ	ऽऽ	म	य	*	दी	ऽ	नों	केऽ	ऽऽ	भ	ग	वा	ऽ		न,	द





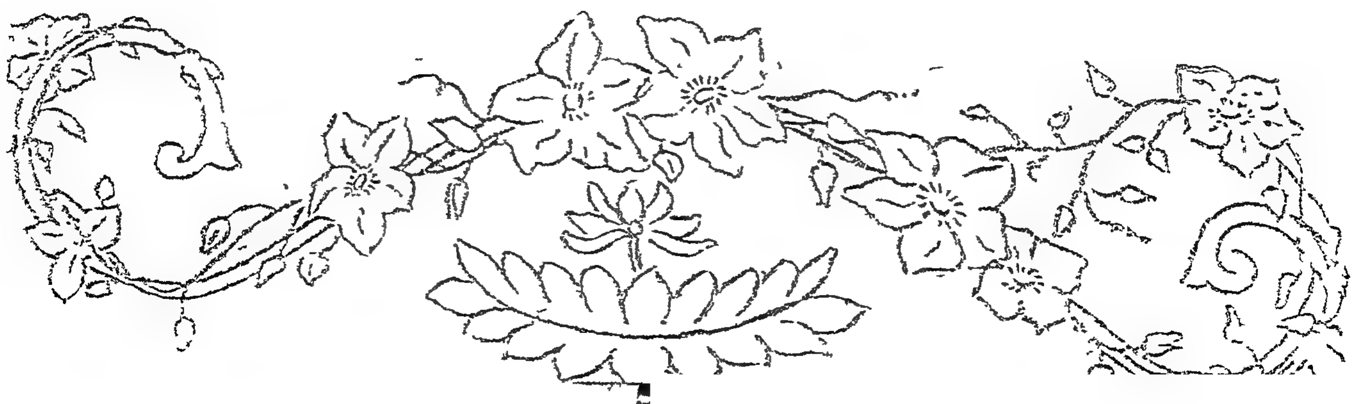
रग	मग	र	स	*	ग	र	स	सऩ	धप़	ध़	र	स	–	–	स
याऽ	ऽऽ	म	य	*	दी	ऽ	नों	केऽ	ऽऽ	भ	ग	वा	ऽ	ऽ	न
*	ग	ग	ग	र	–	ग	म	ग	र	ऩ	ध़	ऩ	र	स	–
*	ह	म	दी	नों	ऽ	प	र	कृ	प	या	ऽ	अ	प	ना	ऽ
*	ग	ग	ग	ग	र	ग	ध	प	मं	ग	म	रग	मग	र	स
*	र	ख	ते	र	ह	ना	ऽ	ध्या	ऽ	न	द	याऽ	ऽऽ	म	य

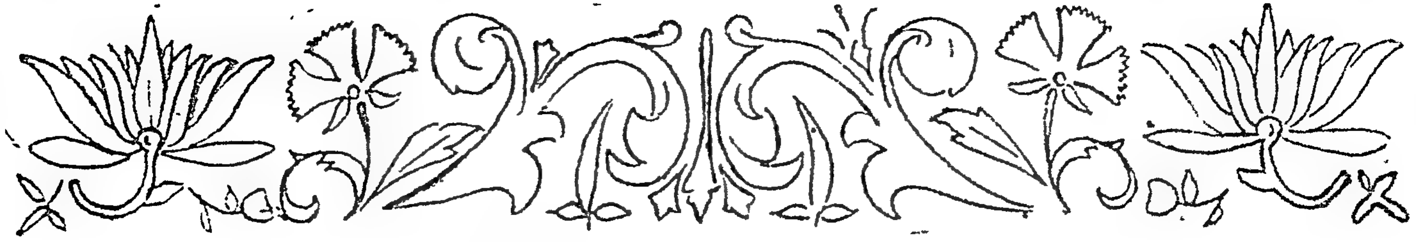
दीनों के भगवान् …… ।

अन्तरा

														प	प
०				३				×				२		तु	म
प	–	मं	ग	–	ग	मं	ध	मंध	नसं	सं	सं	–	सं	सं	–
पू	ऽ	र्ण	सिं	ऽ	धु	ह	म	तुऽ	ऽऽ	च्छ	वि	ऽ	दु	हैं	ऽ
न	न	–	न–	मं	ध	न	ध	मं	ध	प	–	–	–	–	–
न	हीं	ऽ	कुछ	अ	प	ना	ऽ	भा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न
सं	–	सं	सं	–	सं	सं	रं	न	–	न	सं	ध	ध	प	–
वो	ऽ	ध	दा	ऽ	न	के	ऽ	द्वा	ऽ	रा	ऽ	प्र	भु	जी	ऽ
मं	ध	प	मं	ग	–	र	र	स	–	स	ग	रग	मग	र	स
क	र	लो	ऽ	आ	ऽ	प	स	मा	ऽ	न	द	याऽ	ऽऽ	म	य

दीनों के भगवान ।





प्रभु से प्रार्थना !

भगवन् दया के सागर हम दास हैं तुम्हारे,
सब से भले निराले तुम नाथ हो हमारे।

सबके हितैषी तुम हो आनन्द देने वाले,
अतएव दो हमें भी, आनन्द दान प्यारे।

सादा चलन बनावें, फ़ैशन विलास तजकर,
ऐसी दो बुद्धि भगवन्, कर दुःख दूर सारे।

आगे अड़ी खड़ी हों, चाहे अड़चनें हज़ारों,
फिर भी न हारें हिम्मत, हों धीर हम करारे।

पापों से हम डरें नित, अरु शुद्ध भाव रक्खें,
हमसे न दुःख पावें, जग के दुखी विचारे।

करने को देश सेवा, सानन्द मर मिटें हम,
हरसू बजें हमारे, नित जीत के नकारे।

संसार सिन्धुतारक ! तिहुँ लोक के उजागर,
करदो 'अमर' हमारा, शुभ नाम जग में सारे।



कहरवा, मध्यलय—स्थाई—														र	ग॒
												×		भ	ग
स–	–	–	–	ऩ॒	ध़	–	ऩ॒	स	ऩ	स	–	–	–	ध़	स
वन्	ऽ	ऽ	ऽ	द	या	ऽ	के	सा	ऽ	गर	ऽ	ऽ	ऽ	ह	म
ग	–	–	–	ग	म	–	म	ग	–	र	–	स	–	र	ग॒
दा	ऽ	ऽ	ऽ	स	हैं	ऽ	तु	म्हा	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	स	ब





स	–	–	–	ऩ॒	ध़	–	ऩ॒	स	ऩ	स	–	–	–	ध़	स
से	ऽ	ऽ	ऽ	भ	ले	ऽ	नि	रा	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	तु	म
ग	–	–	–	ग	म	–	म	ग	–	र	–	स	–	र	ग॒
ना	ऽ	ऽ	ऽ	थ	हो	ऽ	ह	मा	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	भ	ग

वन् दया के सागर, हम दास हैं तुम्हारे (इस पंक्ति को फिर से दुहराइये)

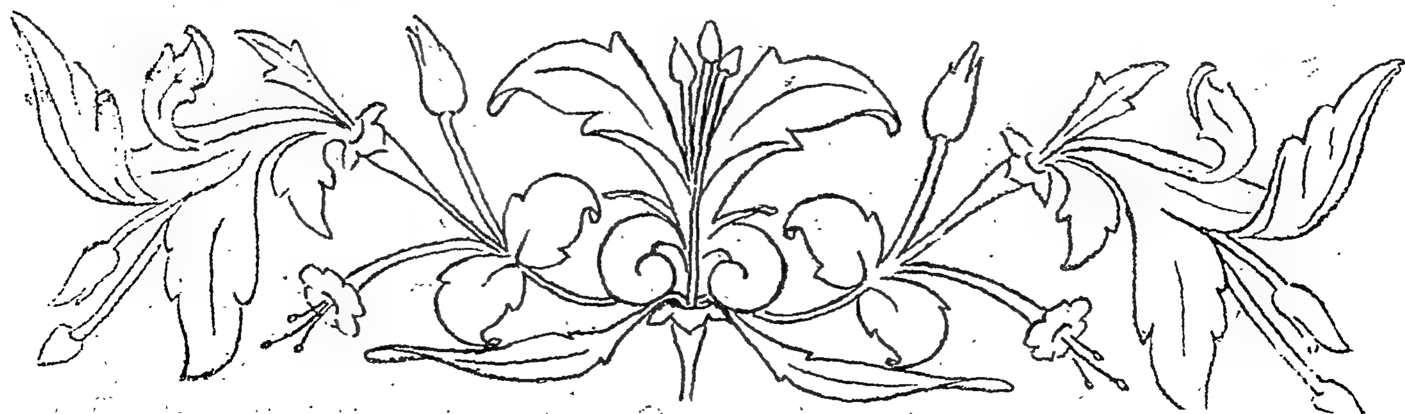
अन्तरा

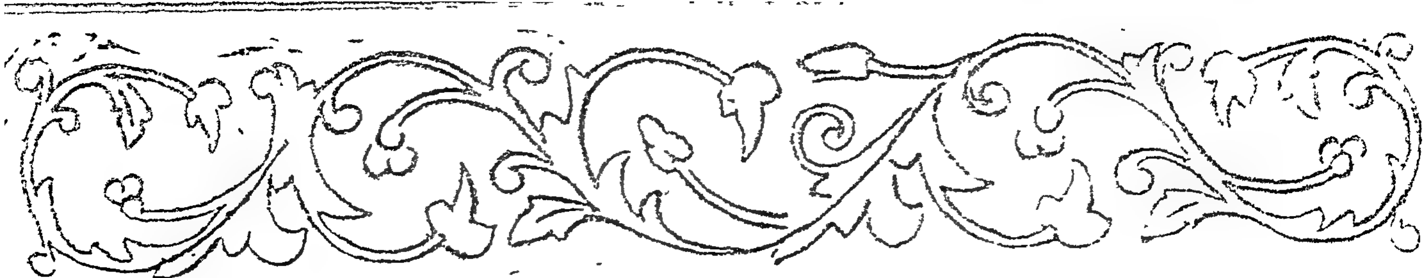
स	ऩ
स	व

स	ग	–	म	र	ग	–	म	प	सं	प	–	–	–	म	ग
के	ऽ	ऽ	ऽ	हि	तै	ऽ	पी	तु	म	हो	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ
म	ध	–	प	ध	न॒	–	ध	प	ध	प	–	–	–;	र	ग॒
नं	ऽ	ऽ	ऽ	द	दे	ऽ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ;	अ	त
स	–	–	–	ऩ॒	ध़	–	ऩ॒	स	ऩ	स	–	–	–	ध़	स
ए	ऽ	ऽ	ऽ	व	दो	ऽ	ह	में	ऽ	भी	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ
ग	–	–	–	ग	म	–	म	ग	–	र	–	स	–	र	ग॒
नं	ऽ	ऽ	ऽ	द	दा	ऽ	न	प्या	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	भ	ग

वन् दया के सागर, हम दास हैं तुम्हारे …… ..।

इस गीत को अपने मध्यम को स्वर मान कर गाइये ।





प्रार्थना

दीनबन्धो ! ज्ञान सूरज का उजेरा कीजिए।
दूर यह अज्ञान का सारा अँधेरा कीजिए।
छा रही काली घटायें पाप की चारों तरफ।
धर्म की वायू से कलिमल दूर सारा कीजिए॥
देश को बर्बाद करती है अविद्या पापिनी।
दुःखहारी मूल से संहार इसका कीजिए॥
रूढ़ियों को ही धर्म बस मानते हैं आजकल।
नाश जल्दी अब 'अमर' इस मान्यता का कीजिए॥

दीनबन्धो ! ज्ञान सूरज का……!

राग—यमन कल्याण (मिश्र) ताल–तीव्रा (मध्यलय)

स्थायी—

+			२		३		+			२		३	
न	–	ध	प	–	र्म	–	ग	–	म	ग	–	र	–
दी	ऽ	न	बं	ऽ	धो	ऽ	ज्ञा	ऽ	न	का	ऽ	सू	ऽ



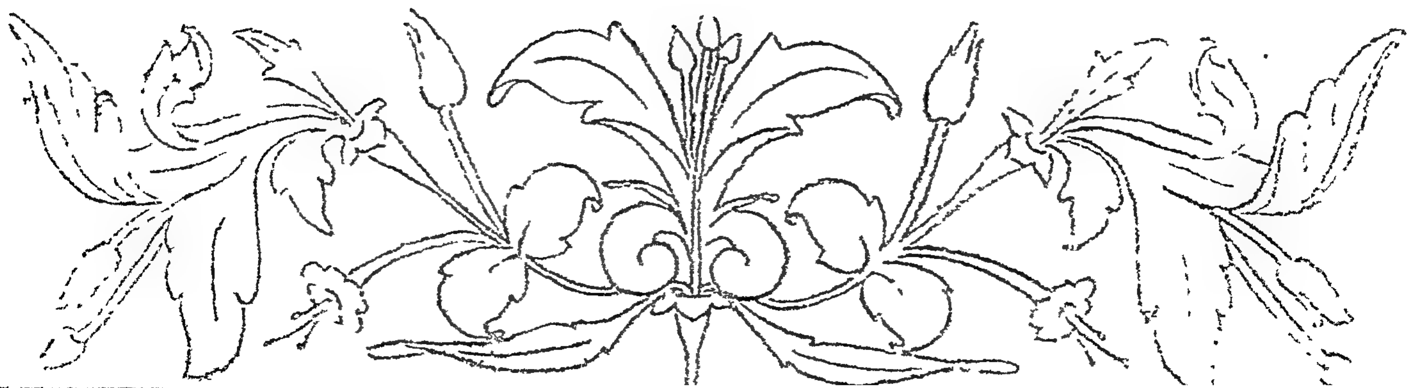


ऩ	र	र	ग	र	ग़	प	र	-	र	स	-	-	-
र	ज	उ	जे	ऽ	रा	ऽ	की	ऽ	जि	ये	ऽ	ऽ	ऽ
मं	-	ध	प	प	न	-	रं	-	न	ध	-	प	-
दू	ऽ	र	य	ह	अ	ऽ	ज्ञा	ऽ	न	का	ऽ	सा	ऽ
मं	-	ग	र	र	ग	र	प	-	र	स	-	-	-
रा	ऽ	अं	धे	ऽ	रा	ऽ	की	ऽ	जि	ये	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

ग	-	मं	ध	ध	मं	ध	सं	-	सं	सं	-	न	न
छा	ऽ	र	ही	ऽ	का	ऽ	ली	ऽ	घ	टा	ऽ	यें	ऽ
गं	-	रं	सं	-	रं	रं	न	-	-	ध	प	प	-
पा	ऽ	प	की	ऽ	चा	ऽ	रों	ऽ	ऽ	त	र	फ	ऽ
गं	-	रं	सं	न	ध	प	म	-	ग	र	र	ग	-
ध	ऽ	मं	की	ऽ	वा	ऽ	यू	ऽ	से	क	लि	म	ल
ग	-	र	ग	र	ग	प	र	-	र	स	-	-	-
दू	ऽ	र	सा	ऽ	रा	ऽ	की	ऽ	जि	ये	ऽ	ऽ	ऽ

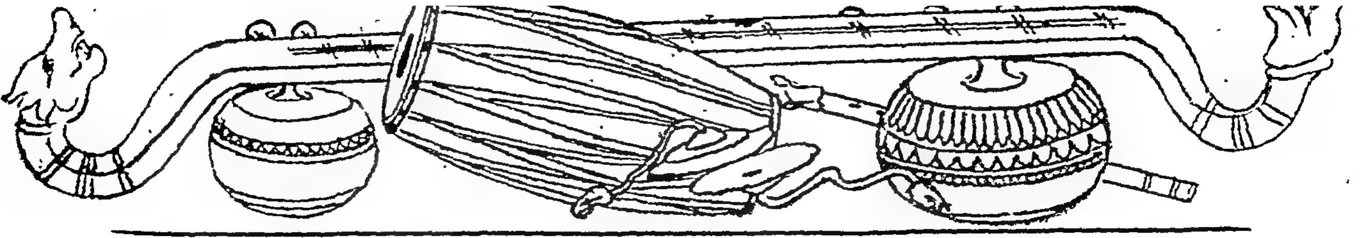
शेष अन्तरे भी इसी प्रकार कहे जायेंगे।



भगवान् महावीर ने क्या किया ?

सद्धर्म का डंका भारत में, बजवा दिया वीर जिनेश्वर ने ।
और उजड़े भारत को फिर से सरसा दिया वीर जिनेश्वर ने ॥
पशुओं जैसा शूद्रों से व्यवहार यहां सब करते थे ।
पर प्रेम से सबको एक जगह बिठला दिया वीर जिनेश्वर ने ॥
पुरुषों के पैरों की जूती महिलाएँ समझी जाती थीं ।
पुरुषों से नहीं हैं कम महिला बतला दिया वीर जिनेश्वर ने ॥
देवी देवों के आगे यहां खून के दरिया बहते थे ।
सर्वत्र अहिंसा का झण्डा लहरा दिया वीर जिनेश्वर ने ॥
एकान्त वाद के झगड़े में पड़ सब मत वाले लड़ते थे ।
स्याद्वाद के द्वारा सब झगड़ा मिटवा दिया वीर जिनेश्वर ने ॥
पावापुर में यज्ञों की जब धूम मची थी अति भारी ।
तब गौतम जैसे पण्डित को समझा दिया वीर जिनेश्वर ने ॥
झूँठे रीति रिवाज़ों में सब धर्म समझ कर बैठे थे ।
सद्धर्म का मारग सब जन को दिखला दिया वीर जिनेश्वर ने ॥
आत्मा में अनन्ती ताक़त है, यह परमातम बन सकती है ।
मानव से 'अमर' ईश्वर होना बतला दिया वीर जिनेश्वर ने ॥

स्थायी (ताल कहरवा)														स	र
×				०				×				०		स	त
नु॒	–	स	स	ग॒	–	म	–	प	–	प	प	प	–	प	प
ध	ऽ	र्म	का	डं	ऽ	का	ऽ	भा	ऽ	र	त	में	ऽ	ब	ज



म	–	ग॒	र	ग॒	प	म	म	ग॒	–	र	ग॒	स	–	स	र
वा	ऽ	दि	या	वी	ऽ	र	जि	ने	ऽ	श्व	र	ने	ऽ	औ	र
ऩ॒	ऩ॒	स	–	ग॒	–	म	म	प	–	प	प	प	–	प	प
उ	ज	ड़े	ऽ	भा	ऽ	र	त	को	ऽ	फि	र	से	ऽ	स	र
म	–	ग॒	र	ग॒	प	म	म	ग॒	–	र	ग॒	स	–	स	र
सा	ऽ	दि	या	वी	ऽ	र	जि	ने	ऽ	श्व	र	ने	ऽ	स	त

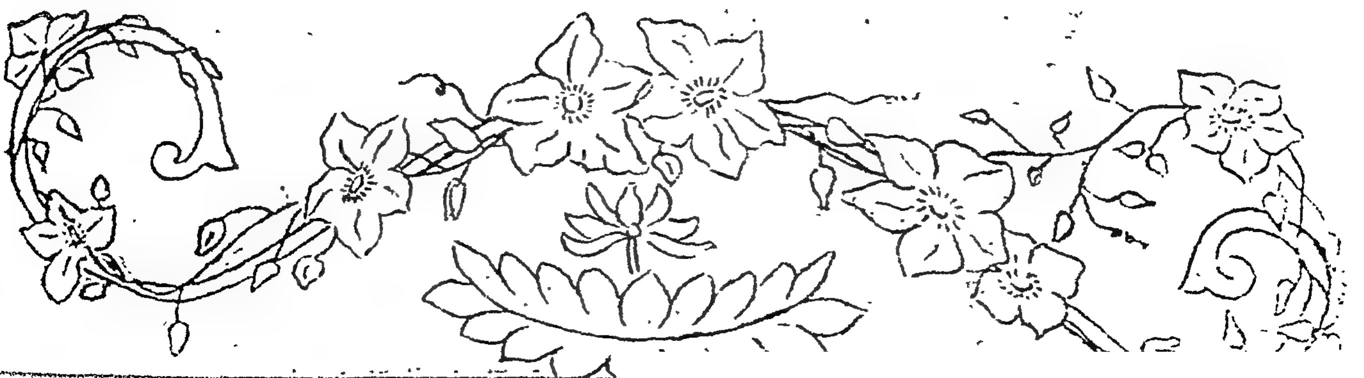
धर्म का डंका भारत में वजवा दिया वीर जिनेश्वर ने ।

अन्तरा

प	प	प	–	म	प	ग॒	म	प	–	न॒	–	सं	–	सं	सं
प	शु	ओं	ऽ	जै	ऽ	सा	ऽ	शू	ऽ	द्रों	ऽ	से	ऽ	व्य	व
न॒	–	न॒	ध	प	ध	म	म	प	ध॒	न॒	ध॒	प	–	स	र
हा	ऽ	र	य	हां	ऽ	स	व	क	र	ते	ऽ	थे	ऽ	प	र
ऩ॒	–	स	स	ग॒	ग॒	म	–	प	–	प	प	प	प	प	प
प्रे	ऽ	म	से	स	व	को	ऽ	ए	ऽ	क	ज	ग	ह	वि	ठ
म	–	ग॒	र	ग॒	प	म	प	ग॒	–	र	ग॒	स	–	स	र
ला	ऽ	दि	या	वी	ऽ	र	जि	ने	ऽ	श्व	र	ने	ऽ	स	त

धर्म का डंका भारत में वजवा दिया वीर जिनेश्वर ने ।

———





क्या चाहिये ?

विश्वपति ! तेरे चरण में ध्यान मुझको चाहिये,
'मैं हूँ तेरा भक्त' यह अभिमान मुझको चाहिये ।
कर्ण और जिह्वा तेरी ही भक्ति में अर्पण करूँ,
दोनों पै बस तेरा ही गुण-गान मुझको चाहिये ॥
बे खुदी ऐसी हो जिससे भूलूँ अपने को भी मैं,
सिर्फ तेरा ही हृदय में भान मुझको चाहिये ।
स्वर्ग के सौन्दर्य पर सानन्द ठोकर मार दूँ,
वासना जय की अनौखी शान मुझको चाहिये ॥
शत्रुओं को भी लखूँ शुभ प्रेम भीनी आंख से,
हर तरफ बस प्रेम का सामान मुझको चाहिये ।
देवता दुख से बचाने को न आए मेरे पास,
सत्य-व्रत का पारखी शैतान मुझको चाहिये ॥
और कुछ वरदान की बिलकुल 'अमर' इच्छा नहीं,
धर्म पर मिटने का इक वरदान मुझको चाहिये ।

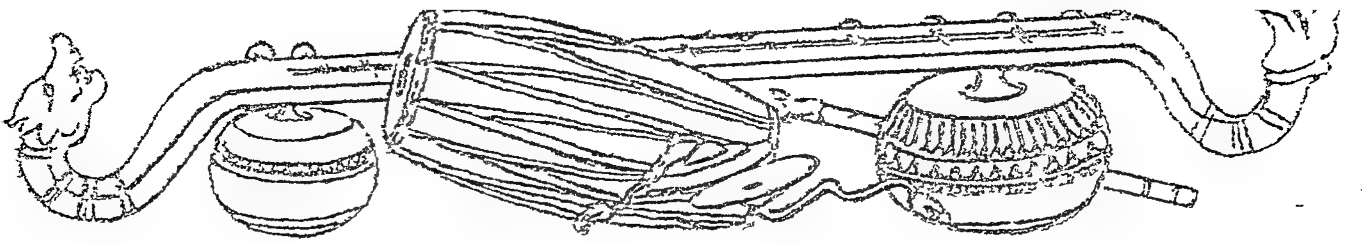
—— ——

विश्व पति तेरे चरण..........!

स्थायी (कहरवा) मध्यलय)

×			o				×			o			
* सं	–	सं	सं	सं	न	–	* ध	–	प	ध	नु	ध	–
* वि	ऽ	श्व	प	ति	ते	ऽ	* रे	ऽ	च	र	ण	में	ऽ

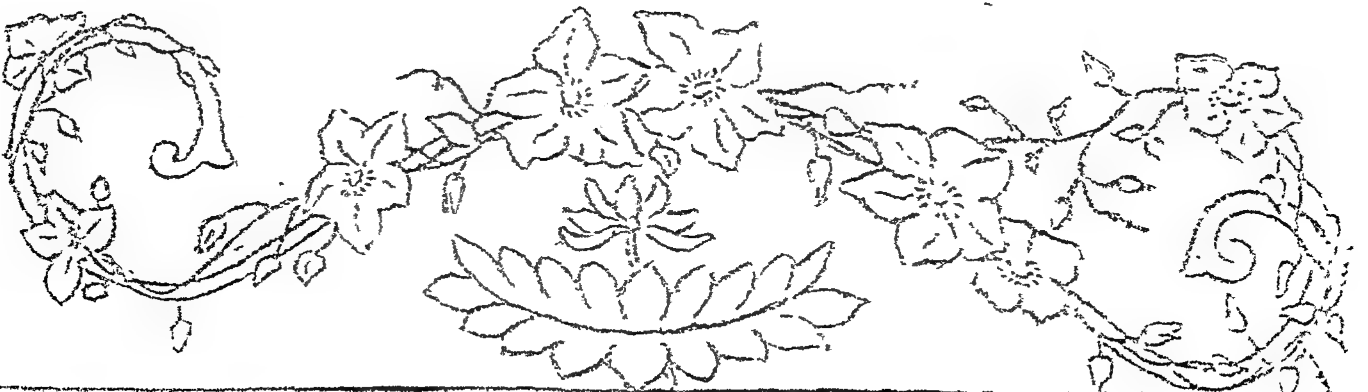




मं	प	–	मं	प	प	म	ग	*	ध	–	प	ध	नु	ध	–
ऽ	ध्या	ऽ	न	मु	झ	को	ऽ	*	चा	ऽ	हि	ये	ऽ	ऽ	ऽ
*	सं	–	सं	सं	–	न	–	*	ध	–	प	ध	नु	ध	ध
*	मैं	ऽ	हूँ	ते	ऽ	रा	ऽ	*	भ	ऽ	क्त	य	ह	अ	भि
मं	प	–	मं	प	प	म	ग	*	ध	–	प	ध	नु	ध	–
ऽ	मा	ऽ	न	मु	झ	को	ऽ	*	चा	ऽ	हि	ये	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

*	ग	–	म	ध	ध	न	–	*	सं	–	ध	न	रं	सं	–
*	क	ऽ	र्ण	औ	र	जि	ऽ	*	ह्वा	ऽ	ते	री	ऽ	ही	ऽ
*	सं	–	सं	सं	–	सं	ध	*	न	न	रं	सं	न	ध	–
*	भ	ऽ	क्ति	में	ऽ	अ	र	*	प	ण	क	रूँ	ऽ	ऽ	ऽ
*	सं	–	सं	सं	–	न	न	*	ध	–	प	ध	नु	ध	–
*	दो	ऽ	नों	पै	ऽ	व	स	*	ते	ऽ	रा	ही	ऽ	ऽ	ऽ
मं–	प	–	मं	प	प	म	ग	*	ध	–	प	ध	नु	ध	–
गुण	गा	ऽ	न	मु	झ	को	ऽ	*	चा	ऽ	हि	ये	ऽ	ऽ	ऽ





प्रशस्त-प्रार्थना !

दया दुग्ध सिन्धो ! दुखी दुःख-हारी ।
सदा निर्विकारी ! भव-भ्रांति हारी ॥
हृदागार में ज्ञान ज्योती जगादो ।
अविद्या तमस्तोम दूरी भगा दो ॥ १ ॥
भले ही करें लोग निन्दा-बुराई ।
बनें प्राण-वैरी, न मानें भलाई ॥
हमें स्वप्न में भी नहीं रोष आवे ।
भलाई न छोड़ें, भले प्राण जावे ॥ २ ॥
दुःखी-दीन ज्यों ही कहीं देख पावें ।
कि त्योंही स्वतः अश्रु-धारा बहावें ॥
सभी भांति आनन्द-भागी बनादें ।
खुशी से स्वसंपत्ति सारी लुटादें । ३ ॥
विपद्-ग्रस्त चाहे बनें क्यों न कैसे ?
रहें धैर्य-धारी हरिश्चन्द्र जैसे ॥
प्रति-ज्ञात-वाणी कभी भी न छोड़ें ।
निजोद्देश की ओर निर्बाध दौड़ें ॥ ४ ॥
किसी को नहीं जन्मतः नीच मानें ।
अछूतादि मिथ्या सभी भेद जानें ॥
घृणा पापियों से नहीं, पाप से ही ।
रहें प्रेम से सर्व ही भ्रात से ही ॥ ५ ॥
नहीं चाहते नर्क में दैत्य होना ।
नहीं चाहते स्वर्ग में देव होना ॥
हमारी प्रभो ! आपसे प्रार्थना है ।
हमें तो मनुष्यत्व की चाहना है ॥ ६ ॥



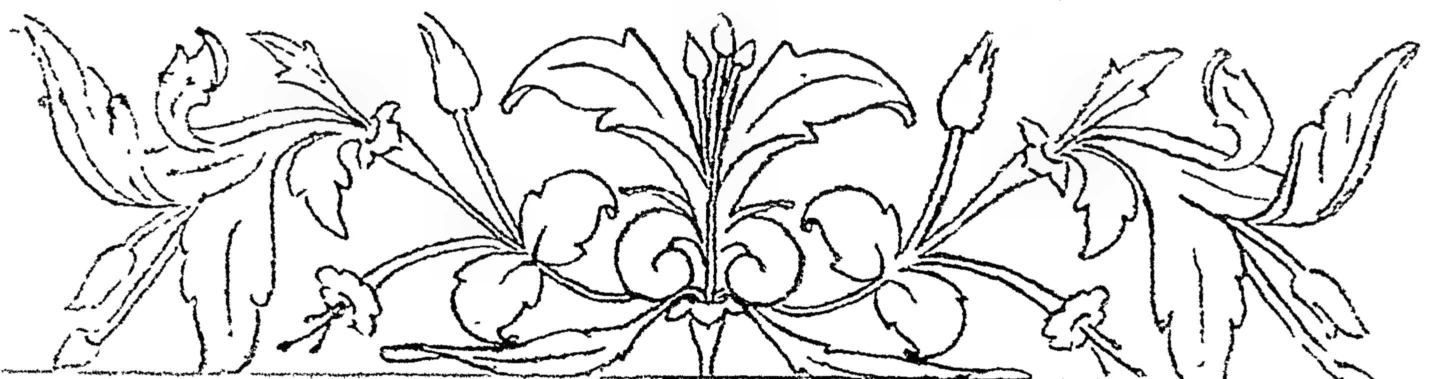


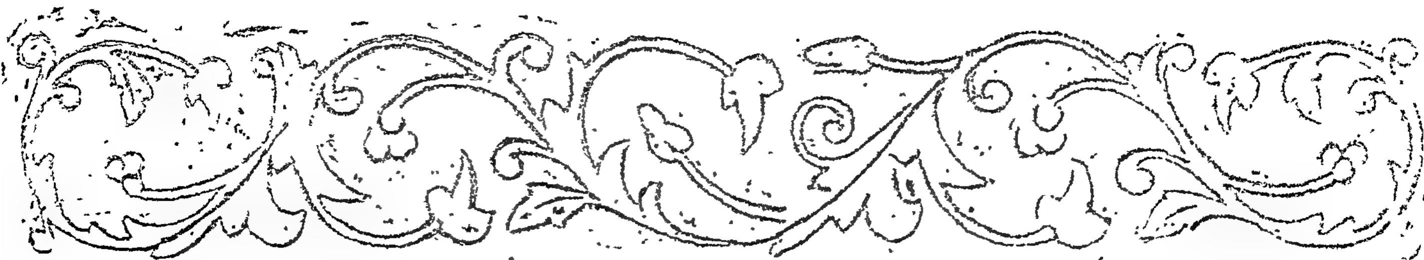
दया दुग्ध सिन्धो.......!

(राग भैरव मिश्र) ताल–झपताल (मध्यलय)

स्थायी—

									स
×		२			०		३		द
स	–	ध॒	–	प	म	–	रे॒	–	स
या	ऽ	दु	ऽ	ग्ध	सि	ऽ	न्धो	ऽ	दु
ऩ	स	ग	–	ग	म	–	म	–	म
खी	ऽ	दुः	ऽ	ख	हा	ऽ	री	ऽ	स
म	–	प	–	प	ध॒	–	प	–	प
दा	ऽ	नि	ऽ	विं	का	ऽ	री	ऽ	भ
म	रे॒	गम	प	प	म	–	रे॒	–	स
व	ऽ	भ्राऽ	ऽ	न्ति	हा	ऽ	री	ऽ	ह
ऩ	स	ग	–	ग	म	–	प	–	प
दा	ऽ	गा	ऽ	र	में	ऽ	ज्ञा	ऽ	न





धृ	–	नृ	–	धृ	म	–	प	–	पं
ज्यो	ऽ	ती	ऽ	ज	गा	ऽ	दो	ऽ	श्र
प	धृ	न	–	सं	धृ	–	प	–	प
वि	ऽ	द्या	ऽ	त	म	ऽ	स्तो	ऽ	म
म	रे	गम	प	प	म	–	रे	–	स
दू	ऽ	रीऽ	ऽ	भ	गा	ऽ	दो	ऽ	द

या वीर………।

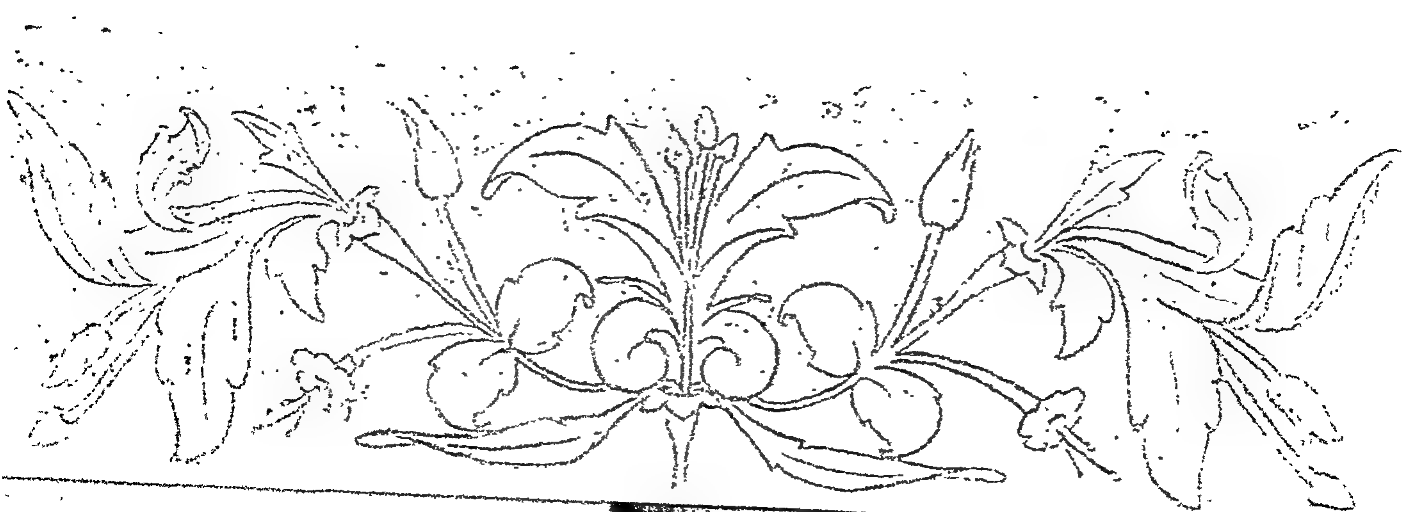
अन्तरा—

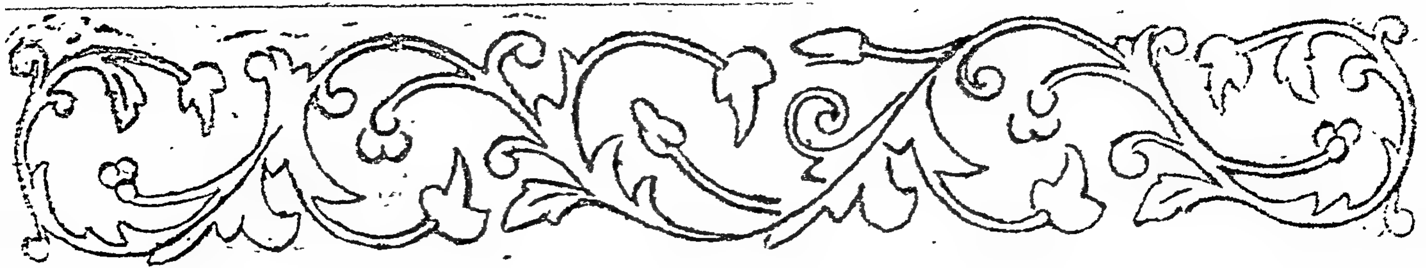
									प
									भ
प	–	धृ	–	धृ	सं	–	सं	–	सं
ले	ऽ	ही	ऽ	क	रैं	ऽ	लो	ऽ	ग
धृ	–	न	–	सं	रें	–	सं	–	सं
नि	ऽ	न्दा	ऽ	बु	रा	ऽ	ई	ऽ	व
सं	रें	मं	–	मं	रें	–	सं	–	न
नें	ऽ	प्रा	ऽ	ण	वै	ऽ	री	ऽ	न



न	सं	रें	-	सं	न	सं	ध॒	-	प
मा	ऽ	नें	ऽ	भ	ला	ऽ	ई	ऽ	ह
गं	मं	रें॒	-	सं	रें॒	रें॒	सं	-	सं
में	ऽ	स्व	ऽ	प्न	में	ऽ	भी	ऽ	न
ध॒	-	न	-	सं	ध॒	-	प	-	प
हीं	ऽ	रो	ऽ	प	आ	ऽ	वे	ऽ	भ
प	ध॒	रें॒	-	सं	ध॒	-	प	-	प
ला	ऽ	ई	ऽ	न	छो	ऽ	ड़े	ऽ	भ
म	रे॒	गम	प	प	म	-	रे॒	-	स
ले	ऽ	जाऽ	ऽ	न	जा	ऽ	वे	ऽ	द

या दुग्ध सिन्धो………।





जय जिनेन्द्र !

जय जिनेन्द्र ! विनम्र वन्दन पूर्णतः स्वीकार हो,
दीन भक्तों के तुम्हीं सर्वस्व सर्वाधार हो।

मोह मद मायादि दोषों से पृथक् हो सर्वदा,
शान्ति समता सत्य के गुण सिन्धु अपरम्पार हो।

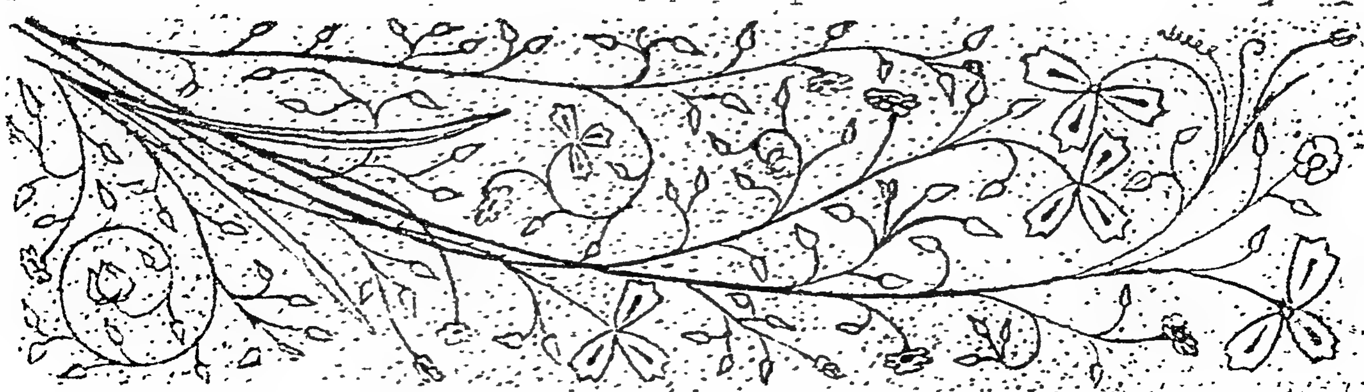
देखते हस्तामलक-सम ज्ञान से भुवनत्रयी,
सूर्य से भी अनन्त ज्योतिवंत ज्ञानागार हो।

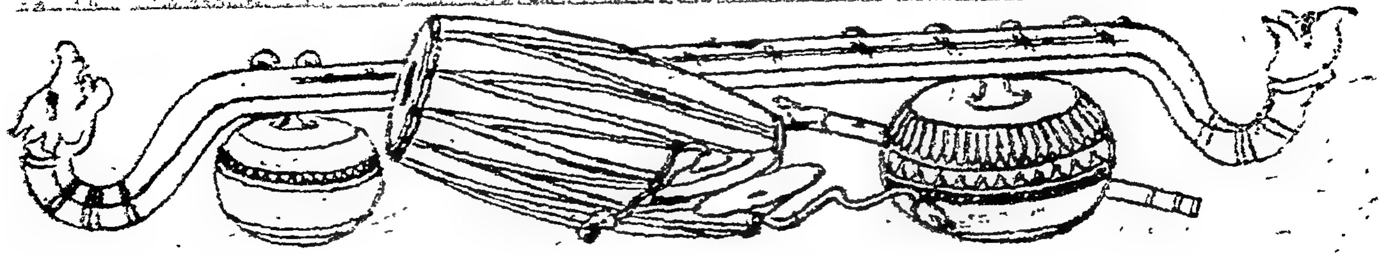
आपकी मङ्गलमयी करुणा सुधा से शीघ्र ही,
पूर्ण परमानन्द हो भव दुःख का संहार हो।

धर्म पर मरना सिखाता आपका आदर्श ही,
धर्म के और धर्मवीरों के तुम्हीं शृङ्गार हो।

धर्म की जग में ध्वजा लहराएं जय-जय नाद से,
हम में ऐसा उग्रतम बल-बुद्धि का संचार हो।

एकता के सूत्र में गुँथ जाय जैन समाज सब,
प्रेम झरने का 'अमर' प्रतिपल अमित विस्तार हो।





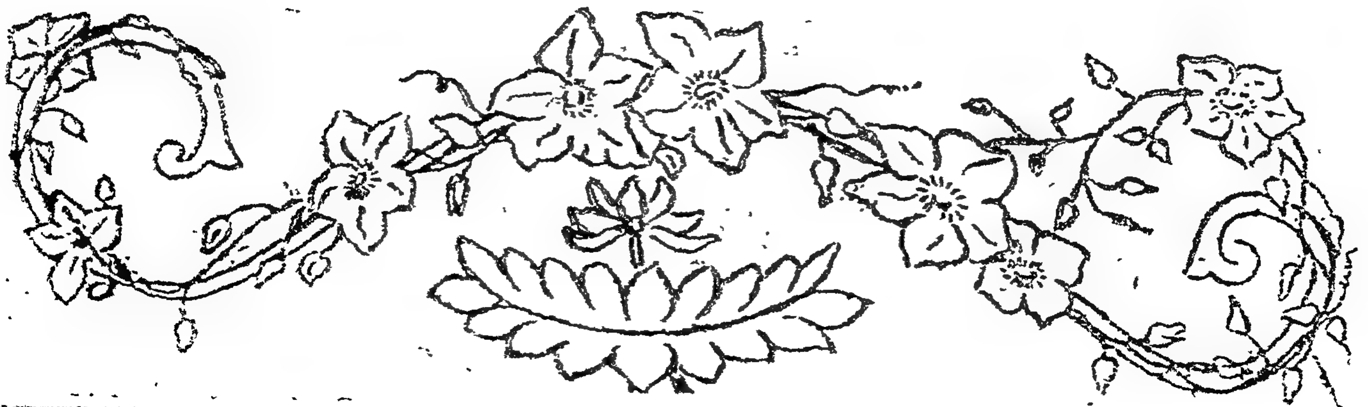
जय जिनेन्द्र विनम्र वन्दन........!

राग सोहनी, (ताल रूपक) मध्यलय—स्थाई

×			२		३		×			२		३	
ग	ग	ग	मं	-	ध	ध	सं	-	सं	सं	रें	सं	सं
ज	य	जि	ने	ऽ	द्र	वि	न	ऽ	म्र	वं	ऽ	द	न
न	-	ध	मं	ध	न	सं	न	ध	न	ध	-	मं	ग
पू	ऽ	र्ण	तः	ऽ	स्वी	ऽ	का	ऽ	र	हो	ऽ	ऽ	ऽ
ग	-	ग	मं	ध	न	सं	सं	-	रें	सं	रें	न	सं
दी	ऽ	न	भ	ऽ	क्तों	ऽ	के	ऽ	तु	म्हीं	ऽ	स	र
न	-	ध	मं	ध	न	सं	न	ध	न	ध	-	मं	ग
व	ऽ	स्त्र	स	र	वा	ऽ	धा	ऽ	र	हो	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

गं	-	गं	गं	गं	गं	-	मैं	गं	रें	सं	-	सं	-
मो	ऽ	ह	म	द	मा	ऽ	या	ऽ	दि	दो	ऽ	पों	ऽ
नसं	नध	ध	मं	ध	न	सं	न	ध	न	ध	-	-	-
सेऽ	ऽऽ	पृ	थ	क	हो	ऽ	स	र	व	दा	ऽ	ऽ	ऽ
ग	-	ग	मं	ध	न	सं	सं	रें	सं	रें	न	सं	सं
शा	ऽ	न्ति	स	म	ता	ऽ	स	ऽ	त्य	के	ऽ	गु	ण
न	-	ध	मं	ध	न	सं	न	ध	न	ध	-	मं	ग
सिं	ऽ	धु	अ	प	रं	ऽ	पा	ऽ	र	हो	ऽ	ऽ	ऽ



अगर वीर न जगाता !

अगर वीर स्वामी हमें न जगाता,
तो भारत में कैसे नया रङ्ग आता ?
न होता उदय ज्ञान का सत्य-सूरज,
तो कैसे अविद्या-अँधेरा नशाता ?
न बचता पशू एक भी यज्ञ बलि से,
अहिंसा का गर्जन न जो वह सुनाता ?
बने ईश मानव न जो यह बताता,
तो पापों के दल पै विजय कौन पाता ?
सभी जाति आपस में लड़-लड़के मरतीं,
न जो विश्व से प्रेम करना सिखाता ?
न करता अगर कर्ता पन का खंडन,
तो पुरुषार्थ का फिर किसे ध्यान आता ?
अमर हो अमर धाम में जा विराजा,
'अमर' धर्म का धन्य डङ्का बजाता ?

——※——

राग मिश्र, झपताल (मध्यलय)

स्थाई

									सं
×		२			०		३		अ
न	ध	ग	–	म	र	–	स	–	स
ग	र	वी	ऽ	र	स्वा	ऽ	मी	ऽ	ह





म	–	गम	मंम	ग	म	ध	मध	नसं	सं
में	ऽ	नाऽ	ऽऽ	ज	गा	ऽ	ताऽ	ऽऽ	तो
न	ध	ध॒	ध	सं	ग	म	र	स	स
भा	ऽ	र	त	में	कै	ऽ	से	ऽ	न
म	–	गम	मंम	ग	म	ध	मध	नसं	सं
या	ऽ	रंऽ	ऽऽ	ग	आ	ऽ	ताऽ	ऽऽ	अ

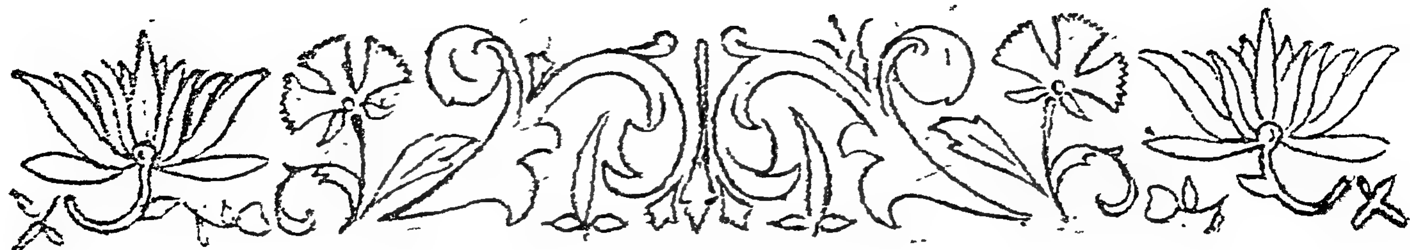
म
न

अन्तरा

ग	म	ध॒	–	ध	सं	ध	सं	–	सं
हो	ऽ	ता	ऽ	उ	द	य	ज्ञा	ऽ	न
सं	–	गं	रं	सं	ध	ध॒	ध	सं	सं
का	ऽ	स	ऽ	त्य	सू	ऽ	र	ज	तो
न	ध	ग	–	म	र	–	स	–	स
कै	ऽ	से	ऽ	अ	वि	ऽ	द्या	ऽ	का
म	म	गम	मंम	ग	म	ध	मध	नसं,	सं
अँ	धे	राऽ	ऽऽ	न	शा	ऽ	ताऽ	ऽऽ,	अ

गर वीर स्वामी ''।





मेरी ओर

प्रभूजी क्या है देखोना ज़रा तो मेरी ओर ! (ध्रुव)
ऊजड़ मग भव-विपन भयङ्कर, चल रही आंधी घोर ।
जान दीन असहाय मुझे हा ! लूट रहे कलि चोर ॥
भूल गया औसान सभी मैं, चले न कुछ भी ज़ोर ।
नाथ तुम्हीं हो अब तो मेरे केवल रक्षा ठोर ॥
तुम तो पावन हो परमेश्वर मैं पतितन सिरमोर ।
दीनबन्धु ! क्यों देर करो कुछ करो स्वपद पै ग़ौर ॥
पुत्र-दुःख में लेत पिता का करुणा-सिन्धु हिलोर ।
किन्तु खेद क्या कारण मुझ पै बन गये कठिन कठोर ॥
अब तो अपने तुल्य करो प्रभु, यह जन पामर ढोर ।
'अमर' लग रही लौ तुम ही से जैसे चन्द्रचकोर ॥







प्रभू जी क्या है देखोना........!

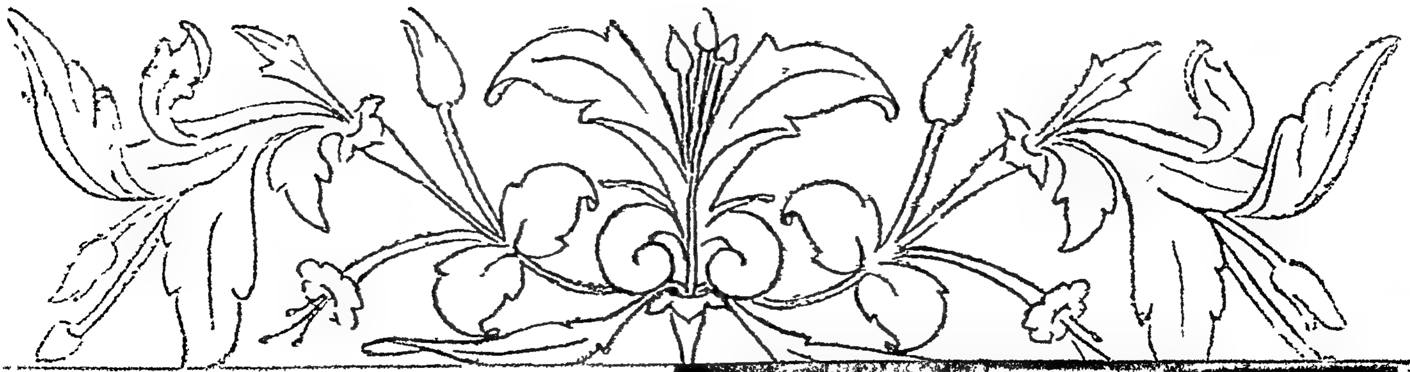
स्थायी (कहरवा)														म	–
×				०				×				०		प्र	ऽ
प	–	नु	–	ध	–	नु	–	प	धु	प	म	गु	र	स	–
भू	ऽ	जी	ऽ	क्या	ऽ	हैं	ऽ	दे	ऽ	खो	ऽ	ना	ऽ	ज़	ऽ
र	–	म	–	*	प	नु	धु	प	–	–	–	–	–	म	–
रा	ऽ	तो	ऽ	*	मे	ऽ	री	ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	प्र	ऽ

भू जी क्या है देखोना ज़रा तो मेरी ओर।

अन्तरा—

प	धु	नु	सं	सं	सं	सं	नु	नु	रं	सं	रं	नु	–	नु	ध
ऊ	ऽ	ज	ड़	भ	ग	भ	व	वि	प	न	भ	यं	ऽ	क	र
प	ध	ध	म	म	प	नु	धु	प	–	–	–	–	–	–	–
च	ल	र	ही	आं	ऽ	धी	ऽ	घो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
प	धु	नु	सं	रं	मं	गुं	रं	सं	गुं	रं	सं	नु	रं	सं	नु
जा	ऽ	न	दी	ऽ	न	अ	स	हा	ऽ	य	मु	झे	ऽ	हा	ऽ
ध	सं	नु	धु	प	धु	म	धु	प	–	–	–	–	–	म	–
लू	ऽ	ट	र	हे	ऽ	हैं	ऽ	चो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	प्र	ऽ

भू जी क्या है देखोना ज़रा तो मेरी ओर।



प्रशस्त प्रार्थना

दर्शन प्रभो दिखाना शिवपुर बसाने वाले,
दिल में सदा समाना कलिमल नसाने वाले।
गहरा अँधेरा छाया, ढूँढ़ा न मार्ग पाया,
दीपक ज़रा जलाना तम को मिटाने वाले।
सोये पड़े हैं सब जन आलस्य में है तन मन,
इस नींद से जगाना त्रिभुवन जगाने वाले।
भवपाश में फँसे हैं सब ओर से कसे हैं,
भ्रम-भाव से छुड़ाना, बन्धन छुड़ाने वाले।
माया की मन्त्रणा में पशु हैं कुयन्त्रणा में,
मानव 'अमर' बनाना, मानव बनाने वाले।

——*——

ताल दादरा, मध्यलय

				स्थायी—						स	र
×			०			×			०	द	र
ऩ	ऩ	स	ग	–	म	प	–	प	–	प	प
श	न	प्र	भो	ऽ	दि	खा	ऽ	ना	ऽ	शि	व
प	ध	ध	म	–	प	ग	प	म	–	ग	म
पु	र	ब	सा	ऽ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	दि	ल

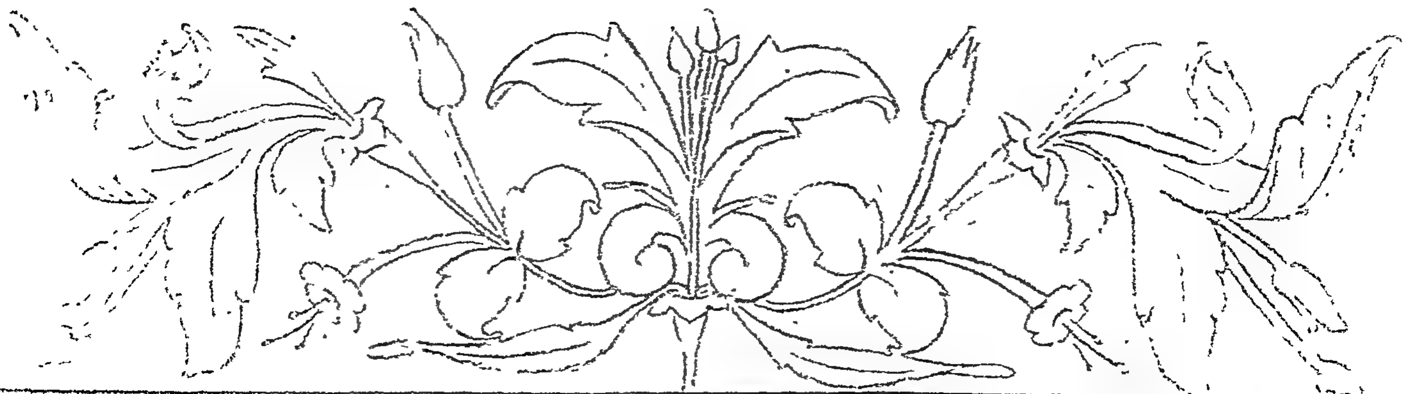


प	सं	नु	ध	प	म	ग	प	म	–	ध	प
में	ऽ	स	दा	ऽ	स	मा	ऽ	ना	ऽ	क	लि
गु	गु	र	स	–	र	ऩ	–	स	–	स	र
म	ल	न	सा	ऽ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	द	र

शन प्रभो दिखाना ……………।

अन्तरा—										गु	गु
										ग	ह
गु	–	र	स	–	र	ग	म	म	–	प	धु
रा	ऽ	आँ	धे	ऽ	रा	छा	ऽ	या	ऽ	हूँ	ऽ
न	सं	गुं	रं	सं	रं	न	रं	सं	–	सं	रं
ढ़ा	ऽ	न	मा	ऽ	गँ	पा	ऽ	या	ऽ	दी	ऽ
नु	–	ध	प	ध	म	ग	प	म	–	ध	प
प	ऽक	ज	रा	ऽ	ज	ला	ऽ	ना	ऽ	त	म
गु	–	र	स	–	र	ऩ	–	स	–	स	र
को	ऽ	मि	टा	ऽ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	द	र

शन प्रभो दिखाना ……………।

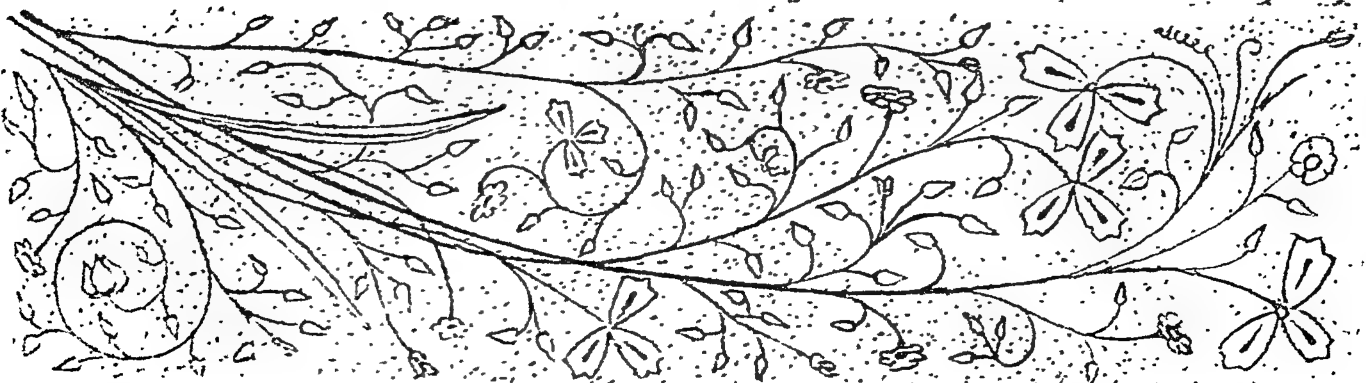


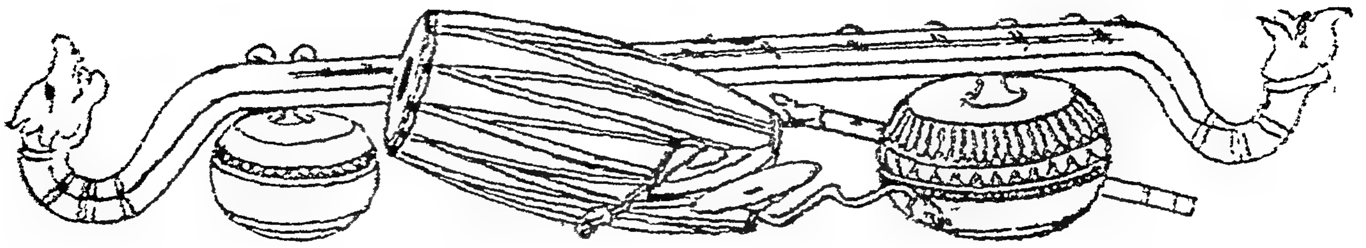
प्रतिज्ञा !

प्रभो ! वीर तेरा ही सुमरन करूँगा ।
जगत में तेरे गीत गाता फिरूँगा ॥
चलूँगा सदा तेरे वतलाये पथ पर ।
क़दम एक तिल भर न पीछे धरूँगा ॥
अटल सत्य का मर्म लोगों से कहते ।
किसी भी न डर से ज़रा भी डरूँगा ॥
रहूँगा अटल धर्म रक्षा की खातिर ।
वड़े हर्ष के साथ हँस-हँस मरूँगा ॥
तड़पता है कष्टों से सारा ही भारत ।
सभी द्वेष क्लेशों की पीड़ा हरूँगा ॥
अविद्या के कारण वने नर पशू से ।
हृदय में 'अमर' ज्ञान विजली भरूँगा ॥

राग—तेलङ्ग मिश्र, ताल—झपताल

				स्थायी—					म
×		२			०		३		प्र
सं	प	न॒	न॒	प	ग	म	ग	-	स
भो	ऽ	वी	ऽ	र	ते	ऽ	रा	ऽ	ही
ऩ	स	ग	ग	म	प	न॒	प	ग	म
सु	म	र	न	क	रूँ	ऽ	गा	ऽ	ज





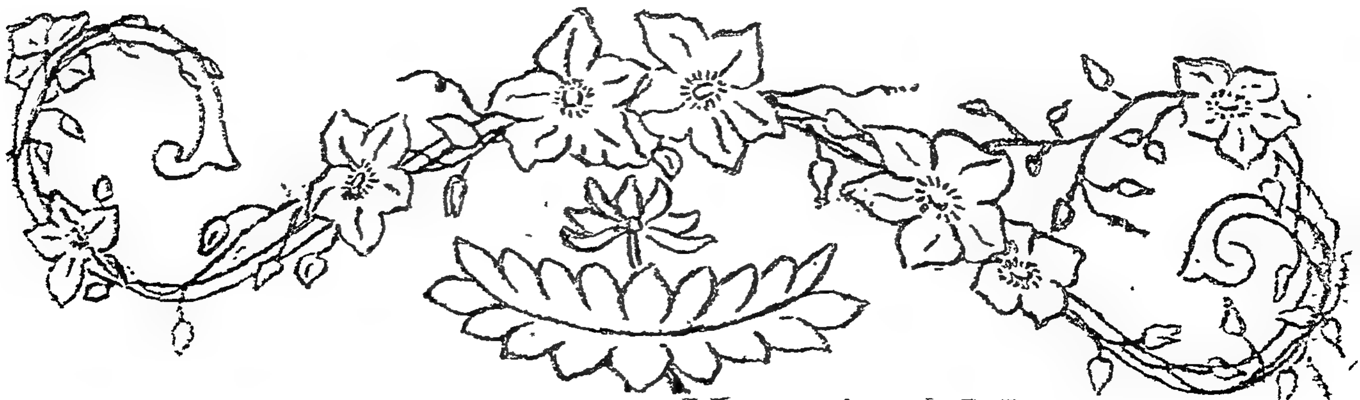
ग	ग	स	-	स	ग	म	प	न	सं
ग	त	में		ते	रे	ऽ	गी	ऽ	त
नसं	गं	सं	-	सं	न॒	-	प	-	म
गाऽ	ऽ	ता	ऽ	फि	रूँ	ऽ	गा	ऽ	प्र

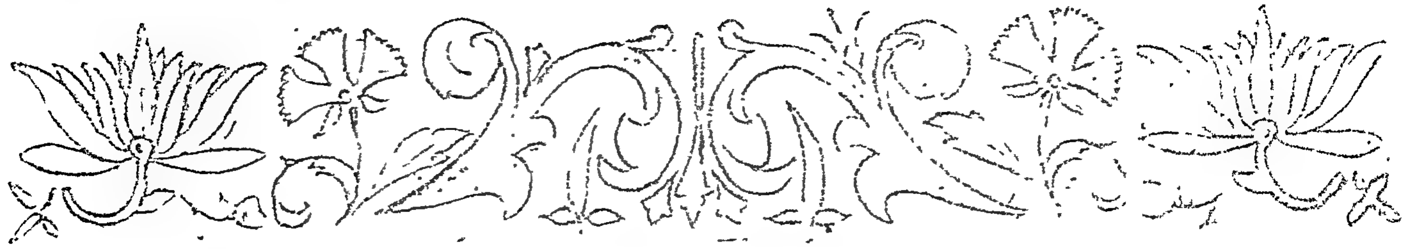
भो! वीर तेरा ही ………।

अन्तरा—

									म
									च
प	न॒	प	-	न	न	सं	सं	-	सं
लूँ	ऽ	गा	ऽ	स	दा	ऽ	ते	ऽ	रे
न	सं	गं	-	सं	न	सं	न॒	प	सं
व	त	ला	ऽ	ये	प	थ	प	र	क
गं	मं	गं	-	सं	न॒	न॒	प	प	पध
द	म	ए	ऽ	क	ति	ल	भ	र	नऽ
रं	रं	सं	-	न॒	प	न॒	प	ग	म
पी	ऽ	छे	ऽ	ध	रूँ	ऽ	गा	ऽ	प्र

भो! वीर तेरा ही………………।





प्रभु-भक्ति

जगदीश के पद पंकजों में नित्य शीश झुकाइये,
आनन्द परमानन्द फिर तद्रूप होकर पाइये।
संसार के सुख-भोग तूफ़ानी समन्दर है अतः,
प्रभु-नाम नौका में मज़े से बैठ कर तर जाइये।
चिरकाल से दुख देते आये हैं प्रबल कर्मों के दल,
भगवद् भजन तलवार से कुहराम इनमें मचाइये।
प्रभु के बताये मार्ग पर चलना ही प्रभु की भक्ति है,
अतएव शम दम को हृदय के भाव से अपनाइये।
मत मतान्तर के बखेड़ों में धरा क्या है 'अमर',
आदर्श मत अपना तो केवल ईश-भक्ति बनाइये।

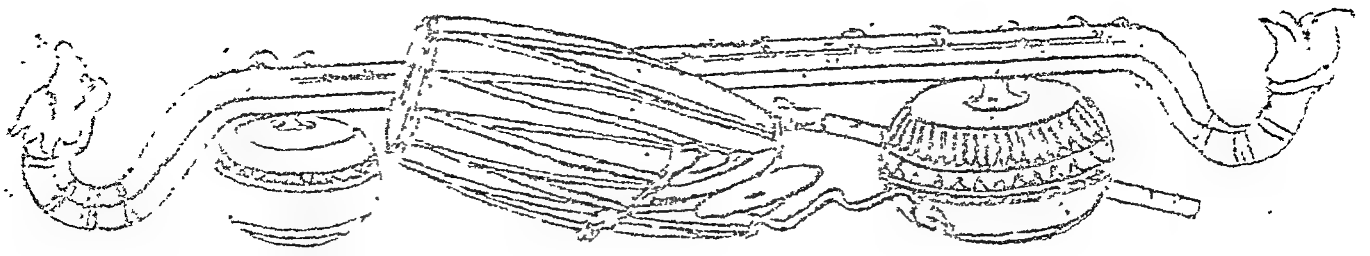
——*——

ताल-रूपक

स्थायी—

												प़	प़
×			२		३		×			२		३ ज	ग
र	-	र	ग	र	ग	म	र	-	ग॒	र	-	स	-
दी	ऽ	श	के	ऽ	प	द	पं	ऽ	क	जों	ऽ	में	ऽ
स	-	र	ऩ	-	ध़	प़	प़	-	र	र	-	र	-
नि	ऽ	त्य	शी	ऽ	श	झु	का	ऽ	इ	ये	ऽ	आ	ऽ





ग	–	र	र	ग	म	प	ग	म	ग	र	ग॒	र	स
नं	ऽ	द	प	र	मा	ऽ	नं	ऽ	द	फि	र	त	द्
स	–	र	ऩ॒	–	ध़	प़	प़	–	र	र	–	प़	प़
रू	ऽ	प	हो	ऽ	क	र	पा	ऽ	इ	ये	ऽ	ज	ग

दीश के पद.................।

—अन्तरा—

												म	–
												सं	ऽ
म	–	प	न	–	न	न	न	–	न	सं	–	सं	–
सा	ऽ	र	के	ऽ	सु	ख	भो	ऽ	ग	तू	ऽ	फ़ा	ऽ
रं	गं॒	रं	सं	–	सं	रं	न॒	सं	न॒	ध	ध	प	प
नी	ऽ	स	मं	ऽ	न्द	र	हैं	ऽ	अ	तः	ऽ	प्र	भु
रं	–	रं	रं	गं॒	रं	सं	सं	–	रं	न॒	–	ध	प
ना	ऽ	म	नौ	ऽ	का	ऽ	में	ऽ	र्म	जे	ऽ	से	ऽ
ग	म	प	ग	म	ग	म	र	ग॒	र	सा	–	प़	प़
बै	ऽ	ठ	क	र	त	र	जा	ऽ	इ	ये	ऽ	ज	ग

दीश के पद.................।

———





सिद्ध-वन्दन

दयामय सिद्ध-प्रभुजी का हृदय में ध्यान लाते हैं,
अमल आदर्श के द्वारा अलौकिक शान्ति पाते हैं।
जगत-भूषण विगत-दूषण अखंडानन्द अविनाशी,
जरा और मृत्यु के दुनियावी चक्कर में न आ ते हैं।
विकटतम क्रोध मद माया तथा लोभादि रिपु जीते,
जलाकर राग द्वेषांकुर विशुद्धात्मा कहाते हैं।
तुम्हारे रूप की तुलना किसी से हो नहीं सकती,
चराचर विश्व के सब दृश्य तुमसे मुँह छिपाते हैं।
पहुंच तुम तक नहीं हो सकती, मनकी और वाणी की,
लड़ा कर तर्क पर तर्कें विबुध सब हार जाते हैं।
विलक्षण ज्ञान लोचन से तथा द्रढ़ ध्यान के बल से,
तुम्हारा रूप तो योगीन्द्र ही लखते लखाते हैं।
जगत वन्दन जगत के नाथ जीवन भव्य जीवों के,
हठीले भक्त को भगवान अपना सा बनाते हैं।
तुम्हीं हो मुक्ति के दाता तुम्हीं हो कर्म के घाता,
दया दीनों पै कुछ करना 'अमर' आशा लगाते हैं।

दयामय सिद्ध प्रभुजी का……

ताल—पश्तो

स्थायी—

						स
	३	×	२	३		× द
र म	प ध	सं - सं	सं रं	संरं गं	सं - रं	
या ऽ	म य	सि ऽ द्ध	प्र भु	जीऽ ऽ	का ऽ ह	



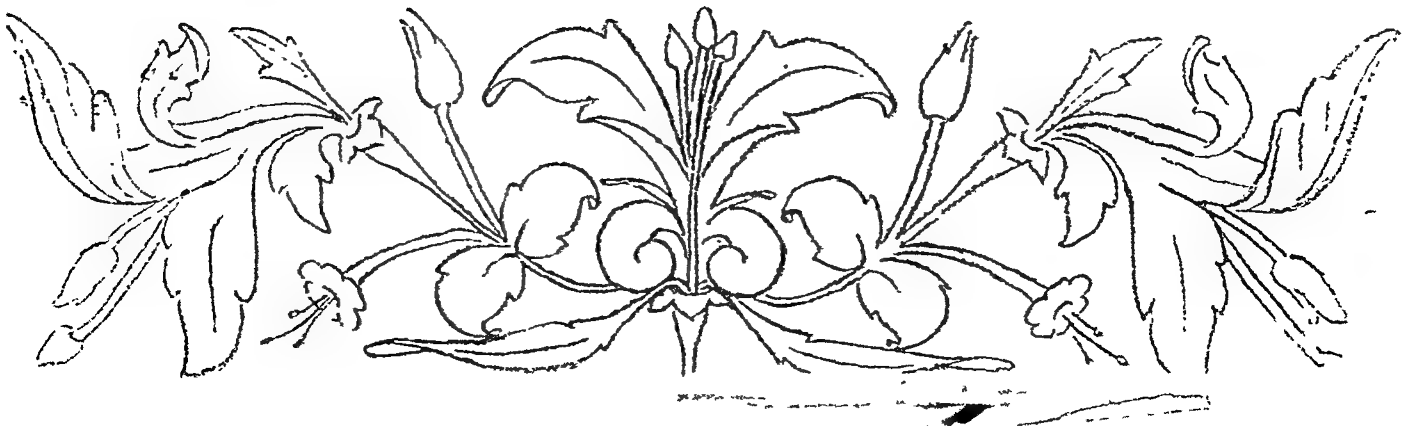


नु नु	ध प	गु – र	रग म	गु र	स – स
द य	में ऽ	ध्या ऽ न	लाऽ ऽ	ते ऽ	हैं ऽ अ
र म	प ध	नु – नु	रं –	नु ध	प – ध
म ल	आ ऽ	द ऽ र्श	के ऽ	द्धा ऽ	रा ऽ अ
गु –	र र	र – र	रग म	गु र	स – स
लौ ऽ	कि क	शा ऽ न्ति	पाऽ ऽ	ते ऽ	हैं ऽ द

या मय सिद्ध ...... ।

		अन्तरा —			प ज
प ध	प ध	नु नु नु	ध नु	ध नु	सं सं सं
ग त	भू ऽ	प ण वि	ग त	दू ऽ	प ण अ
नु –	ध –	प – प	ध सं	संरं गं	सं – रं
खं ऽ	डा ऽ	न ऽ न्द	अ वि	नाऽ ऽ	शी ऽ ज
नु –	ध ध	ध – ध	ध नु	प ध	सं – नु
रा ऽ	औ र	मृ ऽ त्यु	के ऽ	दु नि	या ऽ वि
ध प	म गु	र – गु	रग म	गु र	स – स
च ऽ	क र	में ऽ न	आऽ ऽ	ते ऽ	हैं ऽ द

या मय सिद्ध ....।



महावीर !

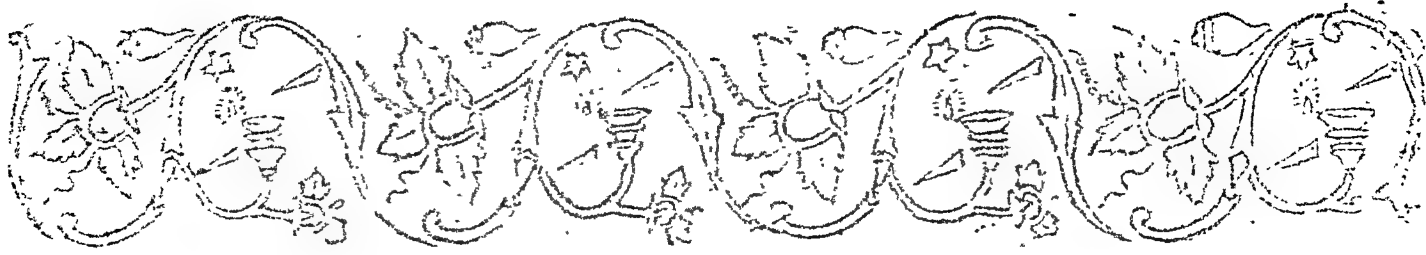
शान्ति-सुधारस के वर सागर।
क्लेश अशेष समूल संहारी ॥
लोक, अलोक विलोक लिये ॥
जग लोचन केवल ज्ञानके धारी ॥
शेष, सुरेश, नरेश सभी ।
प्रण में पद्-पङ्कज बारम्बारी ॥
वीर जिनेश्वर धर्म दिनेश्वर ।
मङ्गल कीजिये मङ्गल कारी ॥

शान्ति-सुधारस के वर··········!

राग मिश्र देशकार, (झपताल–मध्यलय)

स्थायी—

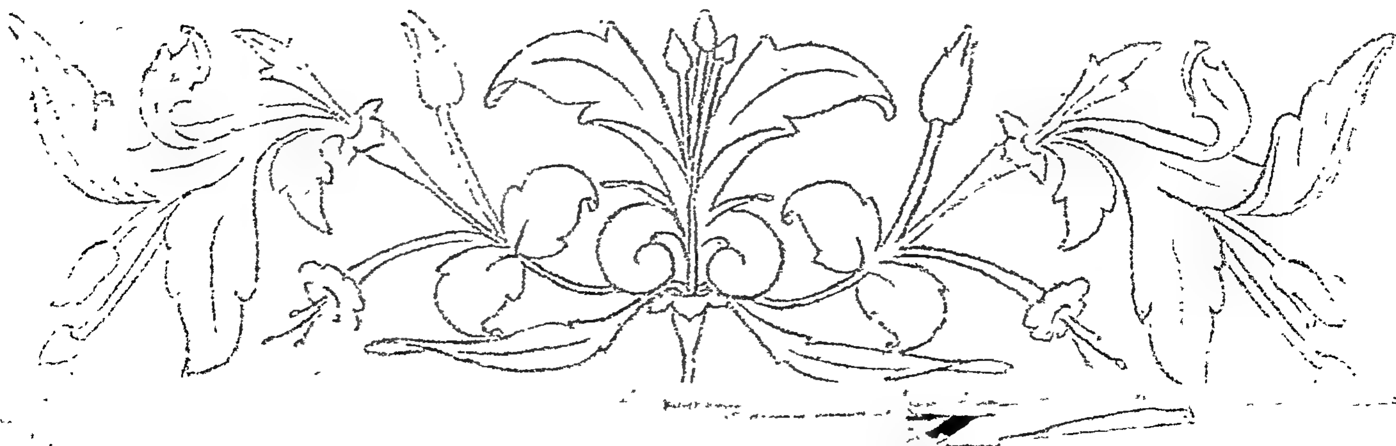
प									
ग	प	ध	ध	प	ग	प	ग	-	स
शां	ऽ	ति	ऽ	सु	धा	ऽ	र	ऽ	स



ध़	ध़	स	–	स	प	ग	प	प	ध
के	ऽ	व	ऽ	र	सा	ऽ	ग	ऽ	र
प	ध	सं	–	संध	प	ध	प	–	प
क्ले	ऽ	श	ऽ	अऽ	शे	ऽ	प	ऽ	स
ग	प	ध	–	प	ग	प	रग	–र	स
मू	ऽ	ल	ऽ	सं	हा	ऽ	ऽ	ऽऽ	री

अन्तरा—

प	–	सं	–	सं	सं	रं	ध	–	सं
लो	ऽ	क	ऽ	अ	लो	ऽ	क	ऽ	वि
ध	–	सं	–	रं	सं	–	प	–	ध
लो	ऽ	क	ऽ	लि	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	गं	गं	रं	सं	–	ध	–	प
ज	ग	लो	च	न	के	ऽ	व	ऽ	ल
प	ध	सं	–	प	ग	प	ग	–र	स
ज्ञा	ऽ	न	ऽ	के	धा	ऽ	ऽ	ऽऽ	री



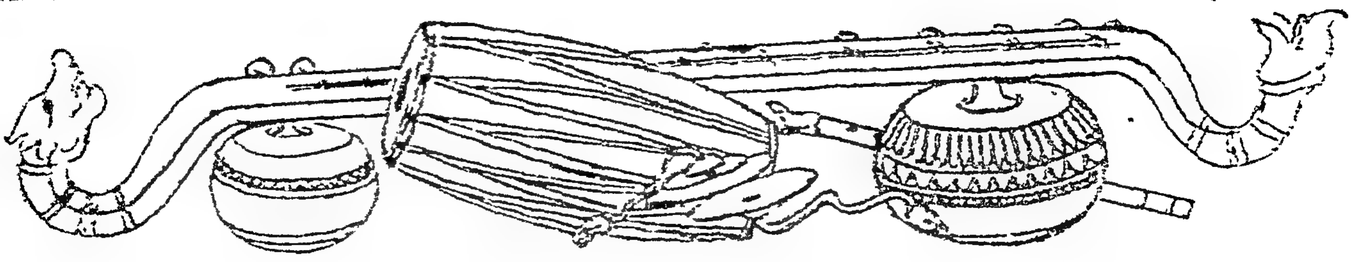
अन्तिम मंगल !

भगवन् ! भवाब्धि भीषण,
डूबे बड़े विचक्षण ।
बेड़ा ज़रा लँघादे, बेड़ा लँघाने वाले !
अज्ञान--ध्वान्त फैला,
दिखता कहीं न गैला ।
ज्योती ज़रा जगादे, ज्योती जगाने वाले !
आलस अड़ा खड़ा है,
साहस मरा पड़ा है ।
मुर्दे ज़रा जिलादे, मुर्दे जिलाने वाले !
दुष्कर्म--शृंखला से,
जकड़ा पड़ा सदा से ।
बन्दी ज़रा छुड़ा दे, बन्दी छुड़ाने वाले !
मैं पुत्र तू पिता है,
संसार जानता है ।
क़ाबिल ज़रा बनादे, क़ाबिल बनाने वाले !

भगवन् ! भवाब्धि भीषण........!

राग मिश्र भैरवी, दादरा (मध्यलय)

				स्थायी—					:	स	रे̱
×			०			×			०	भ	ग
त̣	न̣	स	ग̱	–	म	म	प	–	प	प	–
व	न्	भ	वा	ऽ	ब्धि	भी	ऽ	ष	ण	डू	ऽ



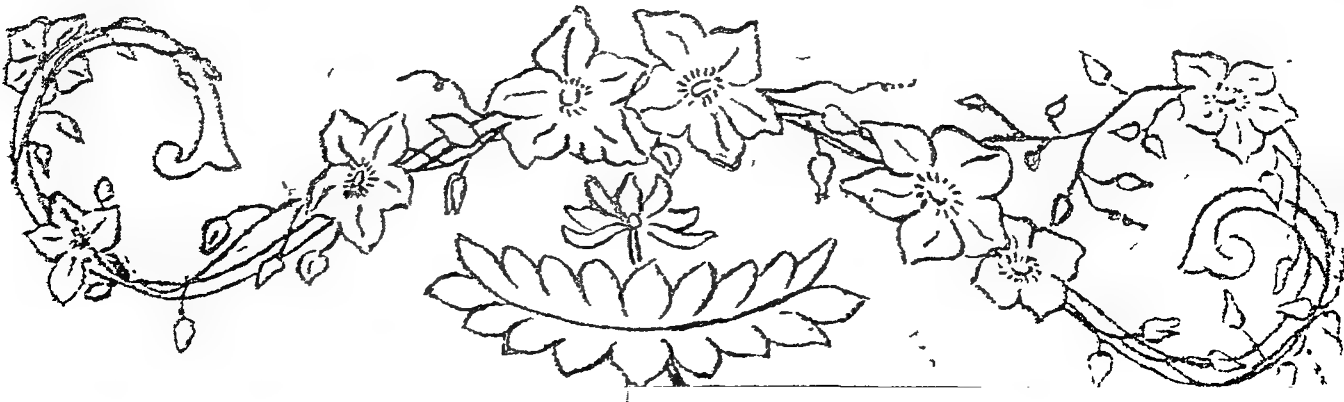
पध	न	ध	प	–	प	ग	म	ग	स	स	रे
वेऽ	ऽ	व	ड़े	ऽ	वि	च	ऽ	त्त	ण	वे	ऽ
न	स	ग	म	ध	न	संरें	गं	सं	–	रें	–
ड़ा	ऽ	ज	रा	ऽ	लँ	घाऽ	ऽ	दे	ऽ	वे	ऽ
न	–	ध	म॑	–	ग	रे	–	स	–	स	रे
ड़ा	ऽ	लँ	घा	ऽ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	भ	ग

अन्तरा—

ध	–
अ	ऽ

ध	–	म	ध	ध	न	न	सं	सं	–	सं	सं
ज्ञा	ऽ	न	ध्वा	ऽ	न्त	फै	ऽ	ला	ऽ	दि	ख
संरें	गं	सं	(ध)	–	न	न	सं	सं	–	सं	रें
ताऽ	ऽ	क	हीं	ऽ	न	गै	ऽ	ला	ऽ	ज्यो	ऽ
मं	–	मं	गं	–	गं	रें	रें	सं	–	रें	रें
ती	ऽ	ज	रा	ऽ	ज	गा	ऽ	दे	ऽ	ज्यो	ऽ
न	–	ध	म॑	–	ग	रे	–	स	–	सा	रे
ती	ऽ	ज	गा	ऽ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	भ	ग

वन् ……। (शेष अन्तरे भी इसी प्रकार कहे जायेंगे)



मन की कामना !

प्रभो मेरा हृदय गुण-सिन्धु अपरम्पार हो जाए।
सफल सब ओर से पावन मनुज अवतार हो जाए॥
खुशी हो रंज हो कुछ हो, रहूँ मैं एक सा हर दम।
हृदय के यन्त्र पर मेरा अटल अधिकार हो जाए॥
ज़रा सा भी मिले मुझ में न ढूँढ़ा चिन्ह ईर्ष्या का।
परोन्नति देख कर दिल हर्ष से सरशार हो जाए॥
अहं के और त्वं के द्वन्द हों सब दूर मुझ में से।
भुला दे स्वर्ग को वह प्रेम का संसार हो जाए॥
सचाई का निभाऊँ प्रण, नहीं पीछे हटूँ हर्गिज़।
भले ही खण्डशः इस देह का संहार हो जाए॥
दुखी को देख मैं दुःखित बनूँ सेवा में जुट जाऊँ।
दया का दिल के हर कण में मधुर संचार हो जाए॥
मुझे स्वर्गीय सुख साम्राज्य की कुछ भी नहीं इच्छा।
"अमर" तो बस प्रभो तव नाम पर बलिहार हो जाए॥

प्रभो मेरा हृदय.....................!

ताल पश्तो (मध्यलय)

स्थायी—

														स
२		३		×			२		३		×			प्र
र	–	प	–	ग	–	म	र	र	ग	ग	र स	–	स
भो	ऽ	मे	ऽ	रा	ऽ	हृ	द	य	गु	ण	सिं	ऽ	धु



ध़	ध़	स	–	र	ग	ग	स	र	ग	म	ग	–	स
अ	प	रं	ऽ	पा	ऽ	र	हो	ऽ	जा	ऽ	ये	ऽ	स
र	र	प	प	ग	–	म	र	–	ग	–	स	स	र
फ	ल	स	व	ओ	ऽ	र	से	ऽ	पा	ऽ	व	न	म
ध़	ध़	स	स	र	ग	ग	स	र	ग	म	ग	–	स
नु	ज	अ	व	ता	ऽ	र	हो	ऽ	जा	ऽ	ये	ऽ	प्र

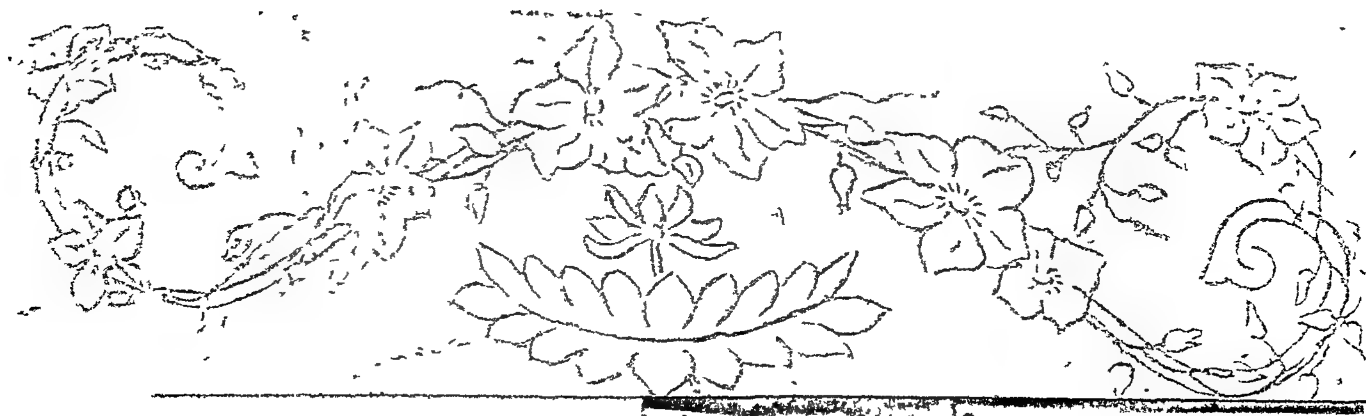
भो मेरा हृदय गुण सिन्धु अपरम्पार हो जाए।

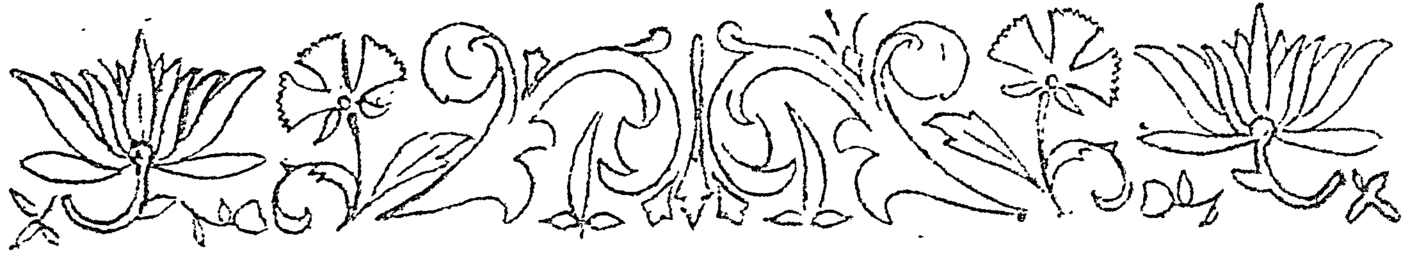
अन्तरा—

	र
	खु

र	ग	स	–	र	–	र	ग॒	–	म	म	प	–	प
शी	ऽ	हो	ऽ	रं	ऽ	ज	हो	ऽ	कु	छ	हो	ऽ	र
प	–	प	म	प	ध	ध	प	–	म	म	ग	–	र
हूँ	ऽ	मैं	ऽ	ए	ऽ	क	सा	ऽ	ह	र	द	म	हृ
र	र	प	–	ग	–	म	र	र	ग	–	र स	–	स
द	य	के	ऽ	यं	ऽ	त्र	प	र	मे	ऽ	रा	ऽ	अ
ध़	ध़	स	स	र	ग	ग	स	र	ग	म	ग	–	स
ट	ल	अ	धि	का	ऽ	र	हो	ऽ	जा	ऽ	ए	ऽ	प्र

भो मेरा हृदय गुण सिन्धु अपरम्पार हो जाए।





गुरुदेव !

लग गई, लग गई, लग गई हो,
प्रीती लग गई मोरी नाल गुरां दे ।

भाग्य अनूठे जगे हमारे,
सतगुरु पुर में आन पधारे,
दिल की कलियां खिल गई हो !

व्याख्यानों का ठाठ लगा है,
मन का सब सन्देह भगा है,
ज्ञान की झड़ियां लग गई हो !

राग-द्वेष का भाव हटाया,
साम्य भाव का घन घहराया,
प्रेम बदरिया झर गई हो !

पूर्ण अहिंसा का प्रण लीना,
अभय सर्व जीवों को दीना,
करुणा रग-रग बस गई हो !

छोड़ी सब धन कंचन माया,
अनासक्ति को कंठ लगाया,
तृष्णा-वेल उखड़ गई हो !

दुराचार पाखण्ड हटाते,
सदाचार आदर्श सिखाते,
पाप की वेड़ी कट गई हो !

सतगुरु की करुणा है भारी,
'अमर' हमारी दशा सुधारी,
नाव भँवर से तर गई हो !

——*——





लग गई, लग गई ………!

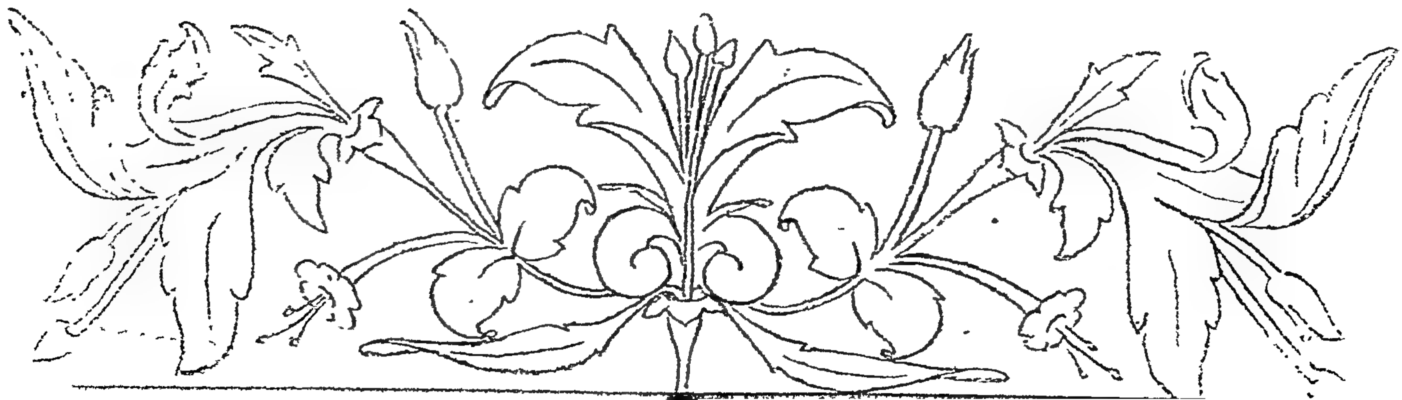
ताल कहरवा

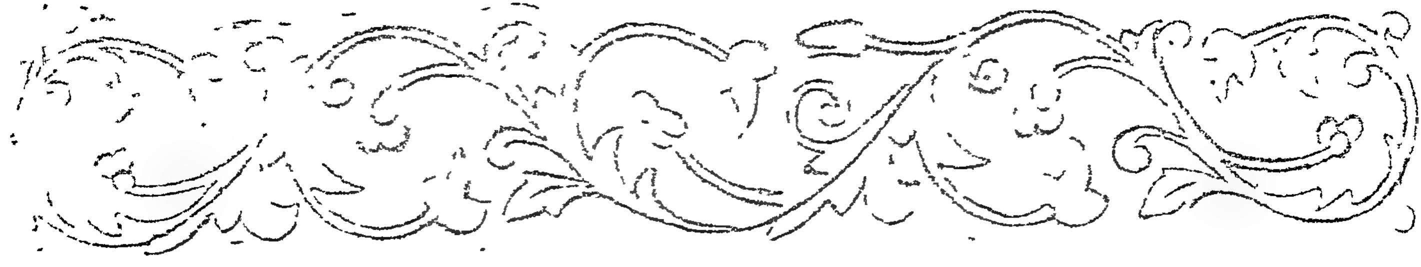
स्थाई—

×				०				×				०			
स	–	स	–	र	–	स	–	र	–	म	–	प	म	ध	–
ल	ग	ग	ई	ल	ग	ग	ई	ल	ग	ग	ई	हो	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	प	ध	–	प	–	म	म	प	प	म	ग	म	र	–
ऽ	ऽ	प्री	ऽ	ऽ	ती	ऽ	ऽ	ल	ग	ग	ई	मो	ऽ	री	ऽ
–	–	ग	–	–	स	–	स	स	–	–	–	स	–	–	–
ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ल	ऽ	गु	रां	ऽ	ऽ	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ

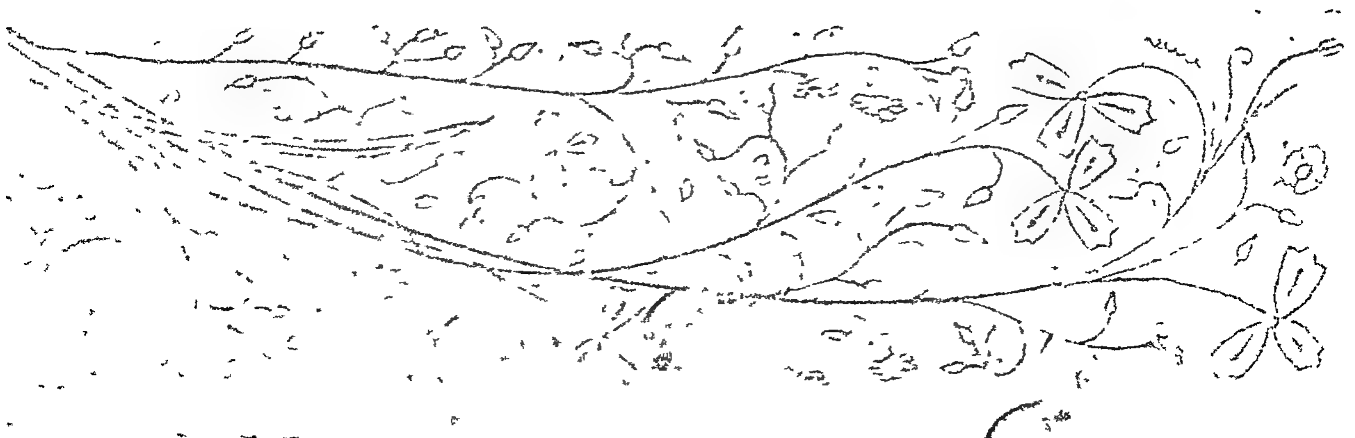
अन्तरा—

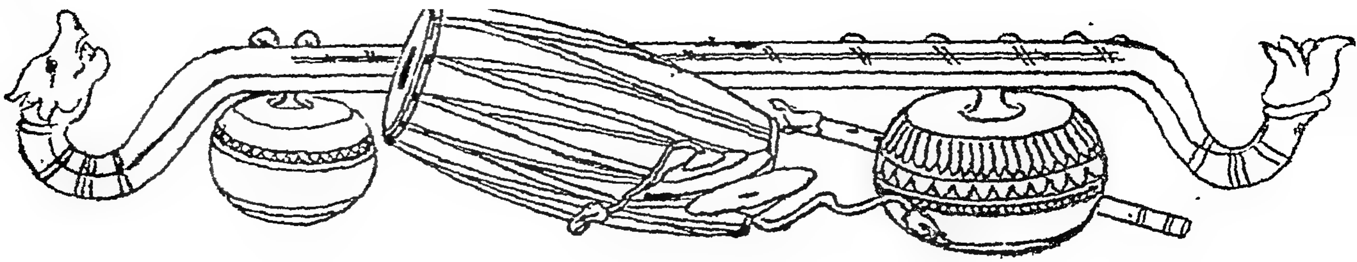
*	सं	सं	सं	न	सं	ध	–	*	गप	ध	न	ध	–	(न) प	–
*	भा	ग्य	अ	नू	ऽ	ठे	ऽ	*	जऽ	गे	ह	मा	ऽ	रे	ऽ
*	सं-	सं	सं	न	सं	ध	–	*	गप	ध	न	ध	–	(न) प	–
*	सत्	गु	रु	पु	र	में	ऽ	*	आऽ	न	प	धा	ऽ	रे	ऽ
स	–	स	–	र	–	स	–	र	–	म	–	प	म	ध	–
दि	ल	की	ऽ	क	लि	यां	ऽ	खि	ल	ग	ई	हो	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	प	ध	–	प	–	म	म	प	प	म	ग	म	र	ग
ऽ	ऽ	प्री	ऽ	ऽ	ती	ऽ	ऽ	ल	ग	ग	ई	मो	ऽ	री	ऽ
स	र	ग	–	–	स	–	स	स	–	–	–	स	–	–	–
ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ल	ऽ	गु	रां	ऽ	ऽ	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ



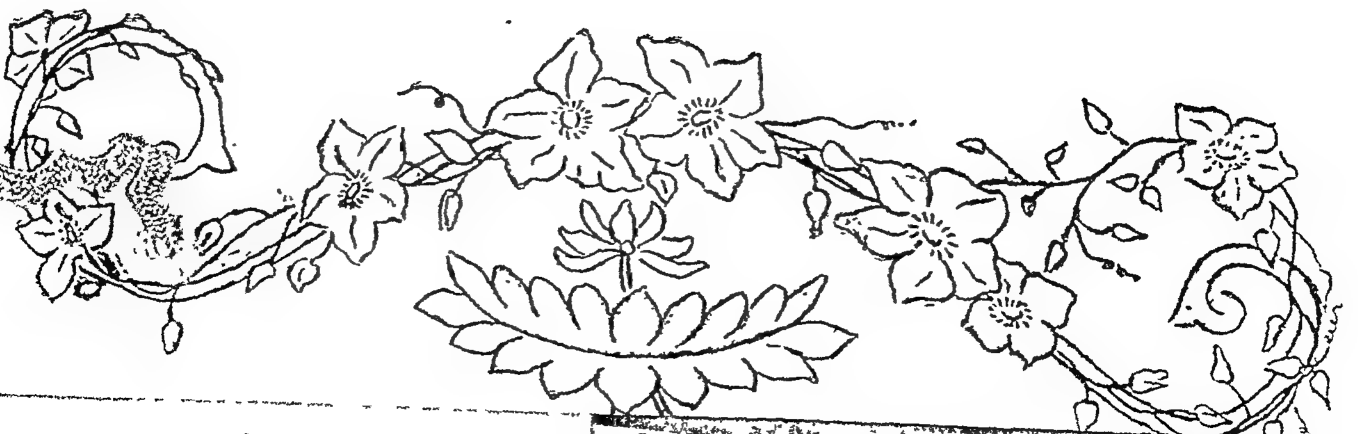






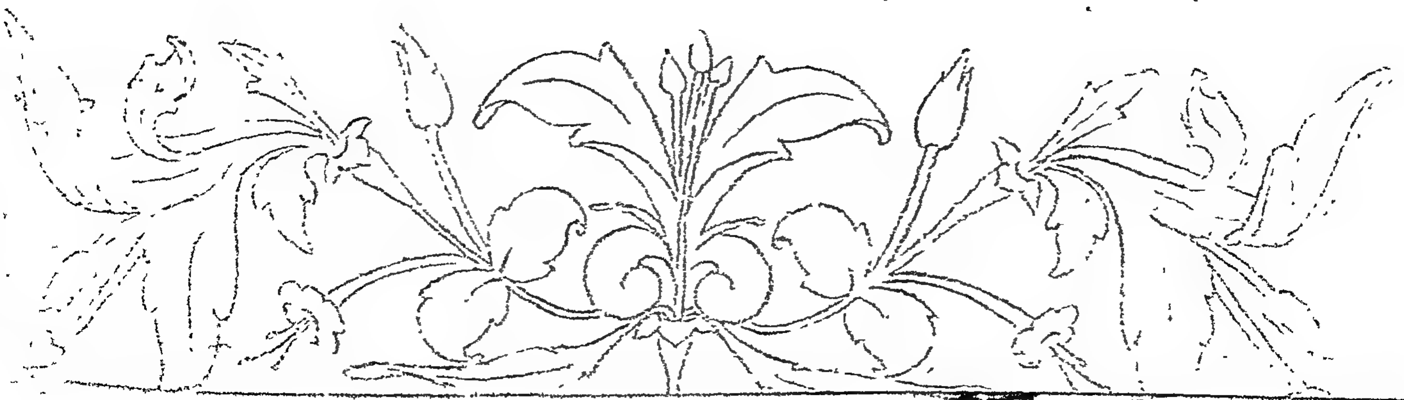


जा
ग
र
ण






D.N.Varma



अन्तर्जागरण !

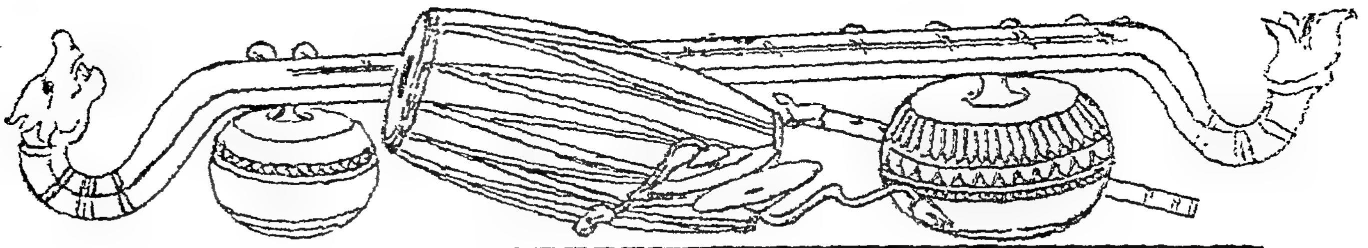
हठीले भाई ! जाग-जाग अन्तर में !
छाई काली घटा घुमड़ के;
आया अन्धड़ प्रवल उमड़ के ।
ज्ञान-दीप बुझने ना पाये, सावधान अन्दर में !
भोगों में ही जीवन गाला,
लक्ष्य न अपना तनिक सँभाला ।
मानव क्या वनमानुस ही है, समझ नहीं वन्दर में !
साथी तेरे गए अगाड़ी,
तू क्यों सोता पड़ा अनाड़ी ।
देख ! पिछड़ना ठीक नहीं है, जीवन के संगर में !
कायर वन कर रोता क्या है,
'अमर' रुदन से होता क्या है ?
कमर वांध कर उट्ठ, छुपा है शंकर इस कंकर में !

हठीले भाई ! जाग-जाग·······!

(राग जोगिया मिश्र) ताल-कहरवा

स्थायी—

															स
०				×				०				×			ह
स	रे	म	म	*	प‌नु	धु	प	-	म	ग	म	रे	रे	स	ऽ
ठी	ले	भा	ई	*	जाऽ	ग	जा	ऽ	ग	अं	ऽ	त	र	में	ऽ



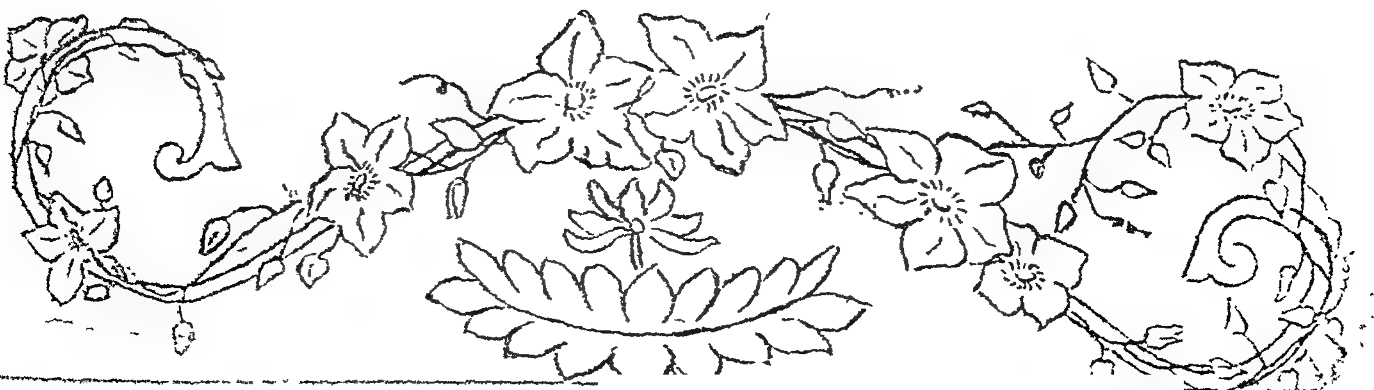
–	–	–	–	*	रे	–	रे	रे	–	स	–	रे	म	–	ग
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	*	छा	ऽ	ई	का	ऽ	ली	ऽ	घ	टा	ऽ	घु
रे	रे	स	–	*	स	–	रे	म	–	म	म	प	प	प	धु
म	ड़	के	ऽ	*	आ	ऽ	या	अ	ऽ	न्ध	ड़	प्र	व	ल	उ
धु	नु	धु	प	*	प	प	प	धु	धु	न	न	न	सं	सं	–
म	ड़	के	ऽ	*	झा	न	दी	ऽ	प	बु	झ	ने	ऽ	ना	ऽ
रें	–	सं	–	न	–	सं	धु	–	प	म	–	रे	रे	स	स
पा	ऽ	ये	ऽ	सा	ऽ	व	धा	ऽ	न	श्रं	ऽ	त	र	में	ह

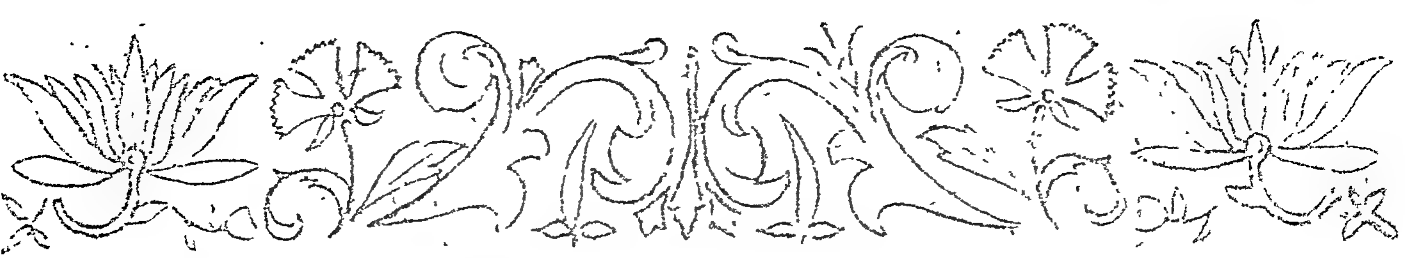
ठीले भाई ....।

अन्तरा—

*	प	–	धु	न	–	सं	–	–	सं	सं	सं	न	सं	सं	–
*	भो	ऽ	गों	में	ऽ	ही	ऽ	ऽ	जी	व	न	गा	ऽ	ला	ऽ
*	सं	सं	रें	गं	गं	मं	–	रें	रें	रें	सं	न	सं	सं	–
*	ल	ल	न	अ	प	ना	ऽ	त	नि	क	सँ	भा	ऽ	ला	ऽ
*	गं	गं	गं	रें	–	सं	सं	*	न	न	सं	धु	–	प	–
*	मा	न	व	क्या	ऽ	व	न	*	मा	नु	स	ही	ऽ	है	ऽ
प	नु	धु	प	म	–	ग	म	रे	रे	स	स	स	रे	म	म
स	म	झ	न	हीं	ऽ	वं	ऽ	द	र	में	ह	ठी	ले	भा	ई

जाग-जाग अन्तर में............।





जीवन-संग्राम !

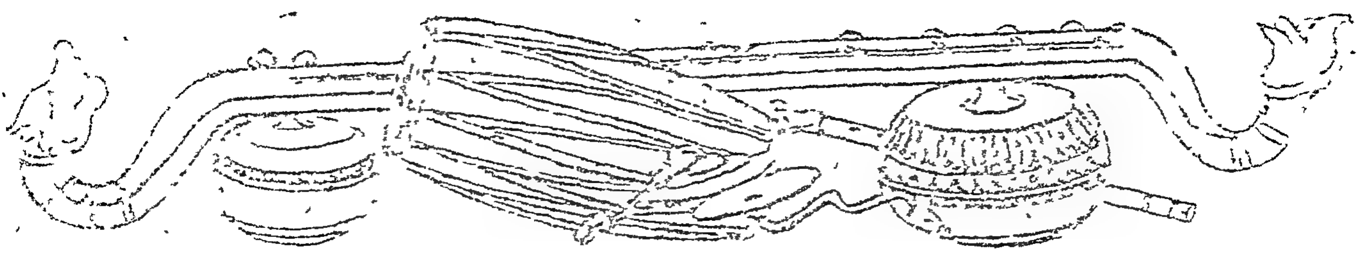
जीवन का रण-क्षेत्र है, उठो करो तैयारियां,
सोते पड़े हो क्यों वृथा, ले रहे हो अँगड़ाइयां।
भूलो न सब कुछ है यहीं पर जन्म की भी हो फिकर,
रहतीं कभी सदा नहीं, मीठी-मीठी मिठाइयां।
छोड़ो सभी बुराइयां, जीवन पवित्र लो बना,
वरना नरक में सड़ना है, मुँह पै उड़ेंगी हवाइयां।
आये हो मानव लोक में, कुछ तो भलाई कर चलो,
ज़िन्दा रखेंगी मरे पै भी, तुमको तुम्हारी भलाइयां।
दीनों की रक्षा के लिए, सर्वस्व की भी भेंट दो,
खोलो खजाने ! कब तलक बांधे फिरोगे चाबियां ?
पूर्ण मनुष्य जाओ बन, देव गणों के भी प्रभू,
दूर करो सभी 'अमर' जो हैं हृदय की खामियां।

जीवन का रण-क्षेत्र है..........!

स्थाई—ताल, दादरा (मध्यलय)

×			०			×			०		
ध़	स	र	ग	ग	र	स	र	स	ऩध़	ऩध़	–
जी	व	न	का	र	ण	क्षे	ऽ	त्र	हैऽ	ऽऽ	ऽ





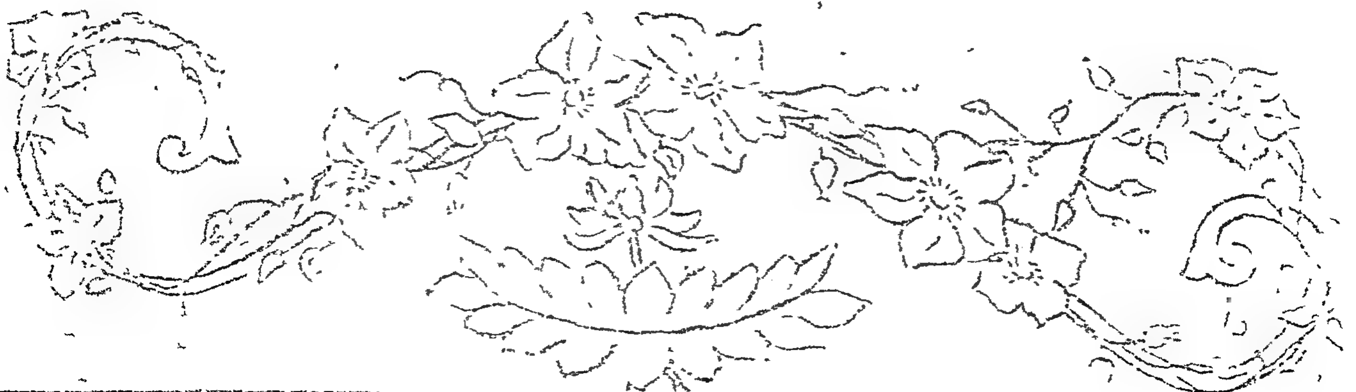
म	म	र	ग	ग	स	र	–	नृ	स	–	–
उ	ठो	क	रो	तै	ऽ	या	ऽ	रिं	यां	ऽ	ऽ
धृ	स	र	ग	–	स	र	–	स	नृधृ	नृधृ	–
सो	ते	प	ड़े	ऽ	हो	क्यों	ऽ	वृ	थाऽ	ऽऽ	ऽ
म	म	र	ग	ग	स	र	–	नृ	स	–	–
ले	र	हे	हो	श्रँ	ग	ड़ा	ऽ	इ	यां	ऽ	ऽ

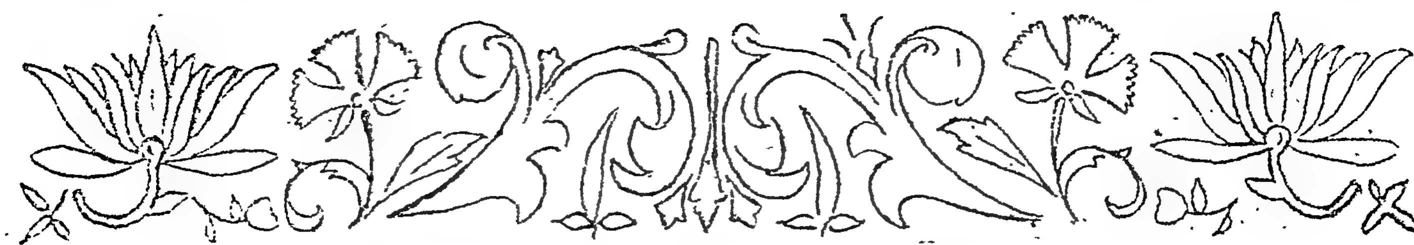
अन्तरा—

प	ग	म	प–	प	प	प	–	म	ध	–	–
भू	लो	न	सव	कु	छ	है	ऽ	य	हीं	ऽ	ऽ
ध–	नृ	ध	प	–	म	गम	प	म	ग–	–	–
पर	ज	न्म	की	ऽ	भी	होऽ	ऽ	फि	कर	ऽ	ऽ
धृ–	स	र	ग	–	स	र	–	स	नृधृ	नृधृ	–
रह	ती	क	भी	ऽ	स	दा	ऽ	न	हींऽ	ऽऽ	ऽ
म	म	र	ग	–	स	र	–	नृ	स	–	–
मी	ठी	मी	ठी	ऽ	मि	ठा	ऽ	इ	यां	ऽ	ऽ

जीवन का रणक्षेत्र है''''।

———





जीवन में मधु घोल !

खोल मन ! अब भी आंखें खोल।
उठा लाभ कुछ मिला हुआ है जीवन अति अनमोल ॥
जग-पति के चरणों में सोजा,
प्रेम-सुधा पी पागल होजा।
अपने पन में अथ इति खोजा,
भ्रम की मदिरा ढोल ॥
देख दुखी को झट हिल जा तू,
सेवा में तिल-तिल पिल जा तू।
अद्वैती वन सङ्ग सिल जा तू,
बोल न कुछ भी बोल ॥
'अमर' अमर पथ पर पद धर ले,
दुस्तर तम भवसागर तर ले।
अन्दर बाहर खुशबू भर ले,
जीवन में मधु घोल ॥

खोल मन अब भी आँखें······!

राग बहार मिश्र (त्रिताल) मध्यलय

					स्थायी—										न
२				०				३				×			खो
सं	रं	न	सं	नु	नु	प	–	म	प	गु	म	नु	–	ध	न
ऽ	ल	म	न	अ	ब	भी	ऽ	आं	ऽ	खें	ऽ	खो	ऽ	ल	खो

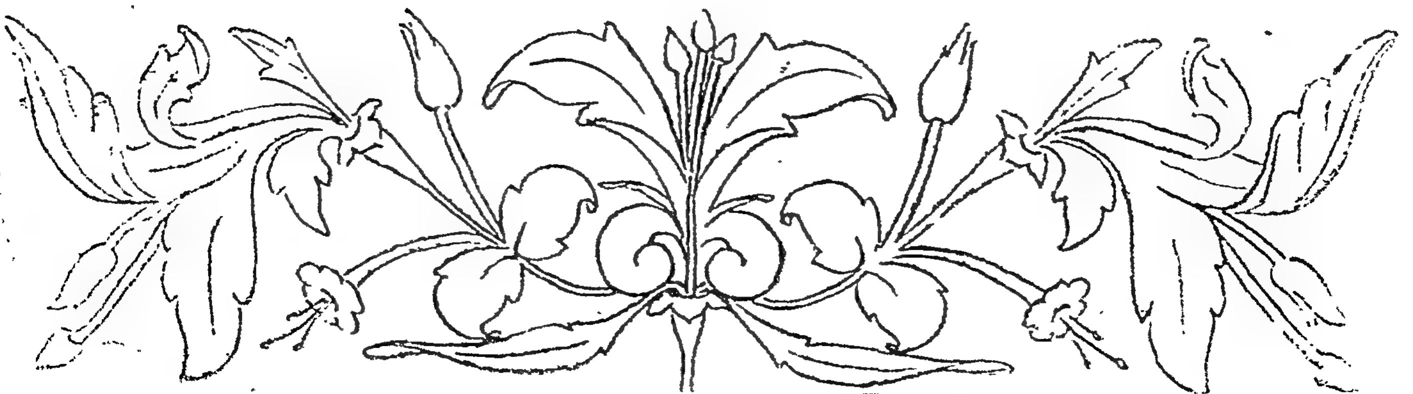




सं	रं	न	सं	न॒	न॒	प	–	म	प	ग॒	म	न॒	ध	न	सं
ऽ	ल	म	न	अ	व	भी	ऽ	आं	ऽ	खें	ऽ	खो	ऽ	ल	खो
सं	रं	न	सं	न॒	प	–	प	–	प	म	प	ग॒	ग॒	ग॒	म
ऽ	ल	म	न	उ	ठा	ऽ	ला	ऽ	भ	कु	छ	मि	ला	ऽ	हु
र	–	स	–	स	म	म	म	म	प	ग॒	म	न॒	–	ध	न
आ	ऽ	है	ऽ	जी	ऽ	व	न	अ	ति	अ	न	मो	ऽ	ल	खो

अन्तरा—

न॒	न॒	प	प	प	–	म	प	ग॒	–	ग॒	म	र	–	स	–
ज	ग	प	ति	के	ऽ	च	र	णों	ऽ	में	ऽ	सो	ऽ	जा	ऽ
स	म	म	म	म	प	ग॒	म	म	न॒	ध	न	सं	रं	न	सं
प्रे	ऽ	म	सु	धा	ऽ	पी	ऽ	पा	ऽ	ग	ल	हो	ऽ	जा	ऽ
गं॒	गं॒	गं॒	–	गं॒	गं॒	गं॒	–	गं॒	मं	रं	सं	रं	न	सं	–
अ	प	ने	ऽ	प	न	में	ऽ	अ	थ	इ	ति	खो	ऽ	जा	ऽ
न॒	न॒	प	–	म	प	ग॒	म	न॒	–	ध	न	सं	रं	न	सं
भ्र	म	की	ऽ	म	दि	रा	ऽ	ढो	ऽ	ल	खो	ऽ	ल	म	न



मनुष्य !

मनुज हूँ मैं यहां मनुजत्व का उपहार लाया हूँ,
हिमालय सा अतुल कर्तव्य का शिर भार लाया हूँ ॥
मिलेगा जो मुझे आनन्द मद में झूम जाएगा।
हृदय में प्रेम-वीणा की मधुर झनकार लाया हूँ ॥
सुगंधित पुष्प हूँ, खिलकर सुगंधित विश्व करदूँगा।
कभी भी कम न हो वह गन्ध का भंडार लाया हूँ ॥
सतायेंगे मुझे क्यों कर कुटिल रिपु काम क्रोधादिक।
चमकती ज्ञान की तीक्ष्ण अटल तलवार लाया हूँ ॥
पड़ें आपत्तियों के वज्र शिर पर क्यों न कितने ही।
हटूँगा इञ्च ना पीछे विजय का सार लाया हूँ ॥
मिटेंगे देश, कुल और जाति के सब भेद जग में से।
अखिल भू पर बसा नर जाति का परिवार लाया हूँ॥
बदल दूँगा सभी हा-हा भरी यह नर्क की दुनियां।
'अमर' सुन्दर शिवं कर स्वर्ग का संसार लाया हूँ ॥

ताल तीव्रा (मध्यलय)

					स्थायी—								म
२		३		×			२		३		×		म
र	स	ऩ	स	र	–	र	र	स	र	प	ग॒	–	म
नु	ज	हूँ	ऽ	मैं	ऽ	य	हां	ऽ	म	नु	ज	ऽ	त्व
र	–	स	स	र	म	म	प	म	मप	धप	ग॒	–	मं
का	ऽ	उ	प	हा	ऽ	र	ला	ऽ	याऽ	ऽऽ	हूँ	ऽ	हि



र	स	नु	स	र	–	र	र	र	ग	म	र	–	गु
मा	ऽ	ल	य	सा	ऽ	अ	तु	ल	क	र	त	ऽ	व्य
स	–	स	स	र	म	म	प	म	मप	धप	गु	–	म
का	ऽ	शि	र	भा	ऽ	र	ला	ऽ	याऽ	ऽऽ	हूँ	ऽ	म

नुज हूँ मैं यहां मनुजत्व का उपहार लाया हूँ।

अन्तरा (ठेकाबन्द)

म	म	–	प	–	न	–	न	न	–	न	–	न	–	सं	न	सं	न	सं
मि	ले	ऽ	गा	ऽ	जो	ऽ	मु	झे	ऽ	आ	ऽ	नं	ऽ	द	म	द	में	ऽ

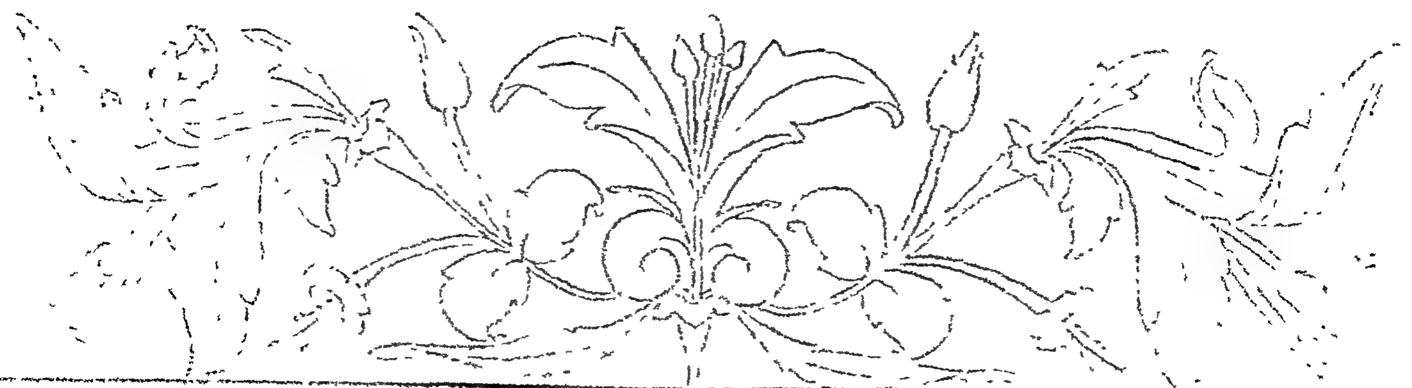
–	धसं	नध	पध	नसं	नसं	–	नु	–	नु	नुध	पम	गुर	सर	मप
ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	झू	ऽ	म	जाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ

धसं	नुध	प-	–	–	नुध	पम	गुर	सगु	–°	र	–
येऽ	गाऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ

ठेका शुरू—	म
	हृ

र	स	नु	स	र	–	र	र	स	र	प	गु	–	म
द	य	में	ऽ	प्रे	ऽ	म	वी	ऽ	णा	ऽ	की	ऽ	म
र	र	स	स	र	म	म	प	म	मप	धप	गु	–	म
धु	र	झ	न	का	ऽ	र	ला	ऽ	याऽ	ऽऽ	हूँ	ऽ	म

नुज हूँ मैं यहां मनुजत्व का उपहार……।



अहिंसा की प्रधानता !

अहिंसा ही दुनियां में सबसे प्रवर है,
नहीं मित्र ! इसमें ज़रा भी कसर है।

अहिंसा के आगे झुके विश्व सारा,
अहिंसा में कैसा विचित्र असर है !

असंभव नहीं कोई वस्तु बशर को,
सभी कुछ हो संभव अहिंसा अगर है !

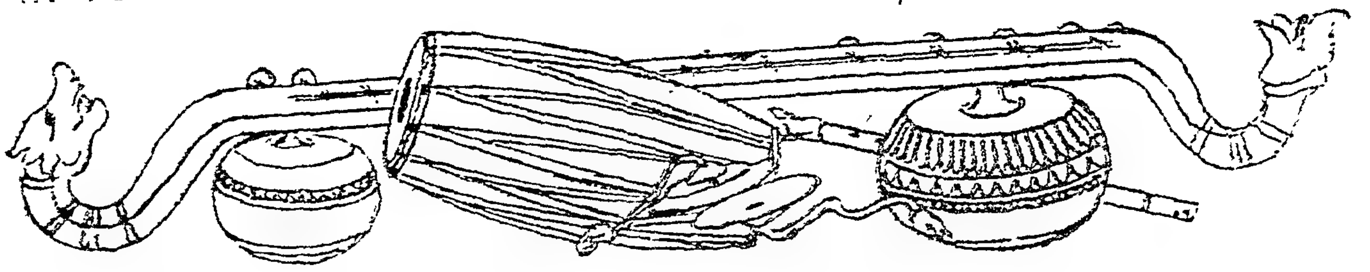
अहिंसा से मिलती है सुख शान्ति सच्ची,
अहिंसा ही मुक्ती की सीधी डगर है !

अहिंसा से बल आत्मा का बढ़ा दो,
अहिंसक ही दुनियां में रहता निडर है !

"अहिंसा है भयभीत मन की निशानी",
जो कहते हैं उनको न कुछ भी खबर है !

नहीं है अमर कोई वस्तु जहां में,
'अमर' यह अहिंसा तो बेशक अमर है !

——*——



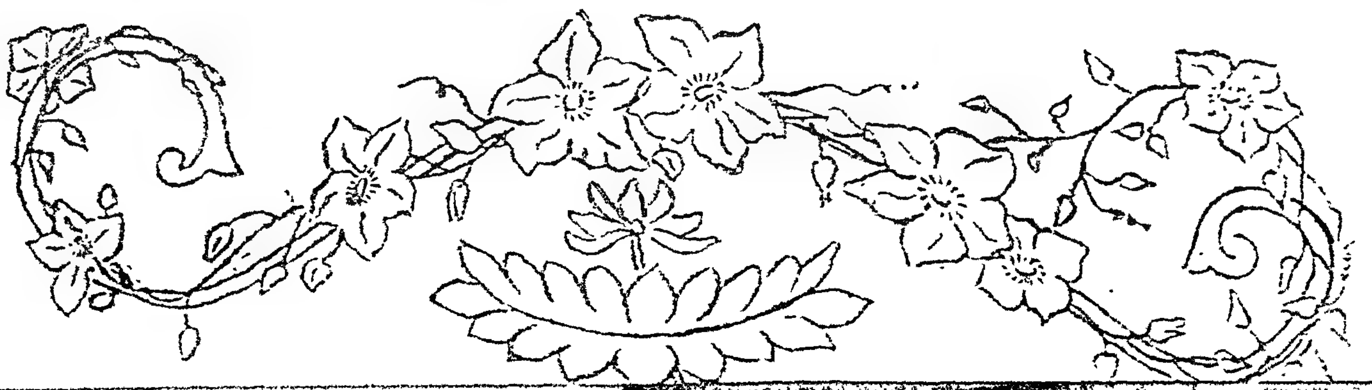
अहिंसा ही दुनियां में..............!

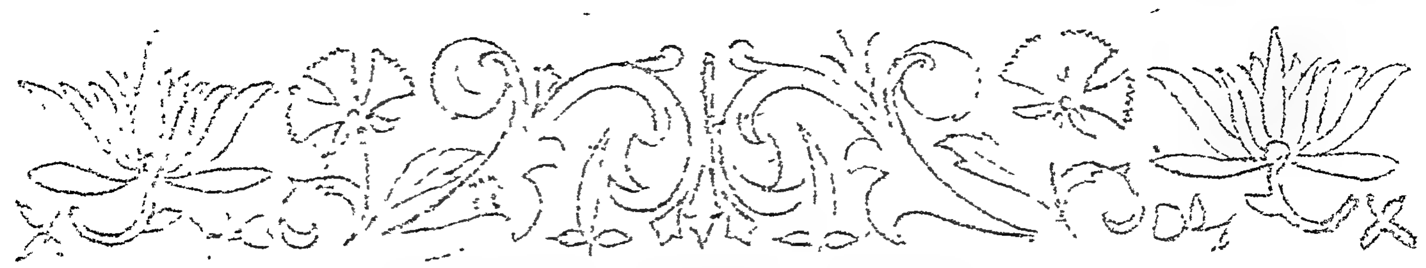
स्थायी (कहरवा)																
																स
×				०				×				०				अ
र	–	म	म	ग॒	ग॒	र	र	ऩ	स	र	र	स	स	ऩ		स
हिं	ऽ	सा	ही	दु	नि	यां	में	स	ब	से	प्र	व	र	है		न
र	–	म	म	ग॒	ग॒	र	र	स	–	ग॒	र	स	स	ऩ		स
हीं	ऽ	मि	त्र	इ	स	में	ज़	रा	ऽ	भी	क	स	र	है		अ

हिंसा ही दुनियां में सबसे प्रवर है ....।

अन्तरा																
																स
																अ
र	–	म	म	प	–	प	ध	पध	ऩ॒	ध	प	म	प	ग॒		स
हिं	ऽ	सा	के	आ	ऽ	गे	झु	केऽ	ऽ	वि	श्व	सा	ऽ	रा		अ
र	–	म	म	ग॒	–	र	र	ऩ	स	र	र	स	स	ऩ		स
हिं	ऽ	सा	में	कै	ऽ	सा	वि	चि	ऽ	त्र	अ	स	र	है		अ

हिंसा ही दुनियां में सबसे प्रवर है ....।





अमूल्य नर जन्म !

उपकार करो तन से मन से,
धन से जन से, जग-दुःख हरो।

अविचार अनीति तजो सब ही,
मत वैभव का कुछ गर्व करो॥

अपने पर खूब सचेत रहो,
फिर तो जग में अणु भी न डरो।

नर जन्म अमोल मिला कुछ तो,
परलोक हितार्थ निकाल धरो॥

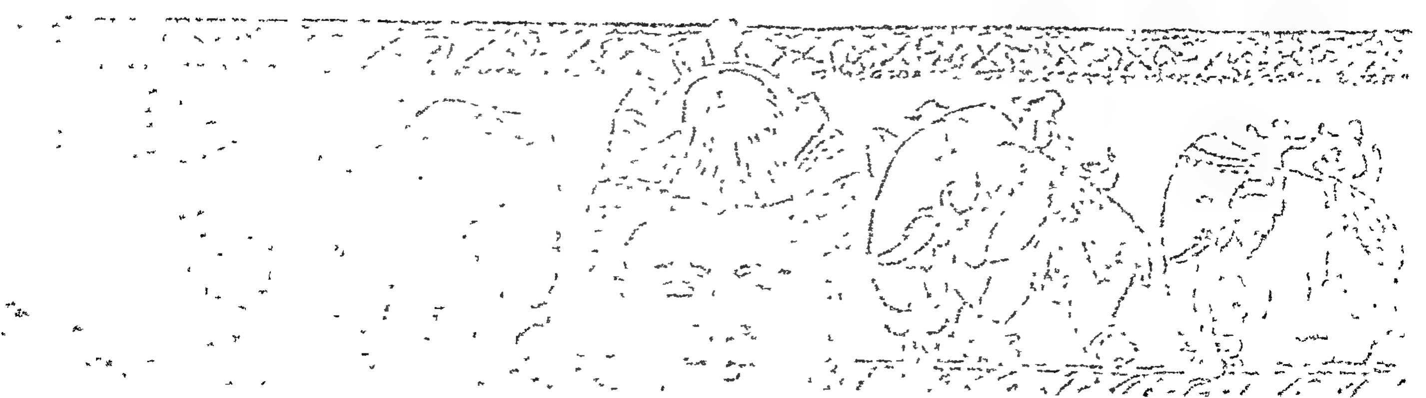
——❋——

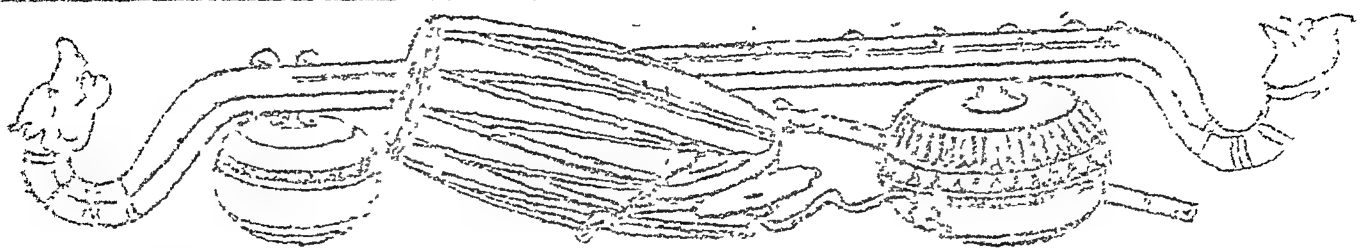
उपकार करो तन से मन········!

ताल—कहरवा

स्थायी—

														स	ऩ
×				०				×				०		उ	प
स	ग	ग	ग	ग	म	र	ग	म	प	प	प	प़	–	प	ध
का	ऽ	र	क	रो	ऽ	त	न	से	ऽ	म	न	से	ऽ	ध	न



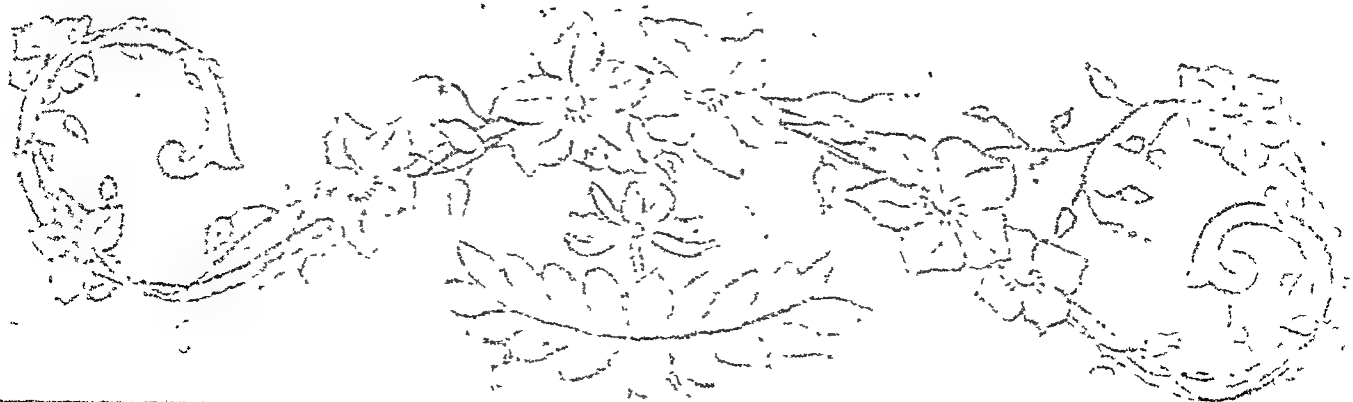


न॒	सं	सं	न॒	न॒	ध	धं	प	प	म	प	म	ग	–	स	ऩ
से	ऽ	ज़	न	से	ऽ	ज	ग	ढु	ऽ	ख	ह	रो	ऽ	अ	वि

चार ····· गर्व करो। (इसी प्रकार गाया जायगा.)

अन्तरा—														ग	म
														अ	प
प	न	न	न	न	सं	ध	न	न	सं	सं	सं	सं	–	सं	न
ने	ऽ	प	र	ख़ू	ऽ	व	स़	चै	ऽ	त	र	हो	ऽ	फि	र
सं	गं	गं	रं	रं	सं	सं	रं	न	सं	सं	सं	सं	–	प	ध
तो	ऽ	ज	ग	में	ऽ	अ	गु	भी	ऽ	न	ड	रो	ऽ	न	र
सं	सं	सं	सं	सं	–	सं	रं	न॒	–	न॒	ध	प	–	प	ध
ज	ऽ	न्म	अ	मो	ऽ	ल	मि	ला	ऽ	कु	छ	तो	ऽ	प	र
न॒	सं	सं	न॒	न॒	ध	ध	प	ग	म	प	म	ग	–,	स	ऩ
लो	ऽ	क	हि	ता	ऽ	र्थ	नि	का	ऽ	ल	ध	रो	ऽ	उ	प

कार करो तन से ·············।





मनवा !

मनवा ! तू नहीं मानत है !
पाप पंक से दिवा-रात्रि मम अन्तर सानत है ॥
प्रभू-भजन करने को बैठूँ तू खटपट निज ठानत है।
बार-बार समझाया फिर भी हठ अपनी ही तानत है॥
विषय-भोग कटु विष मैं समझूँ तू मधु अमृत जानत है।
पागल ज्यों अविराम एक स्वर नित कीर्ति बखानत है॥
जब लग जग वन्दन जगपति का नहीं रूप पिछानत है।
तब लग 'अमर' मूढ़ तब सिर पर लख-लख लानत है॥

मनवा तू नहीं मानत है......!

राग पीलू, ताल कहरवा

स्थाई —

o				×				o				×			
										र					
स	र	स	ऩ	–	स	र	प	ग॒	–	स	ऩ	स	–	–	–
म	न	वा	ऽ	ऽ	तू	न	हिं	मा	ऽ	न	त	है	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	ध़	प़	ध़	ऩ	ऩ	स	–	–	ग॒ग॒	–	ग॒
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पा	प	पं	ऽ	क	से	ऽ	ऽ	दिवा	ऽ	रा



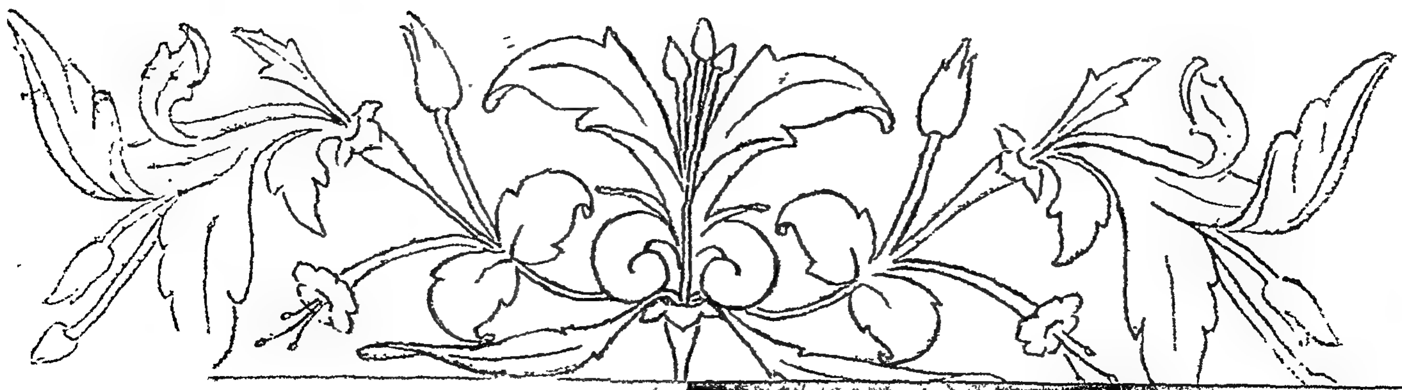


र	म	म	ग॒	–	प	प	प	प	–	प	ध	ग	प	म	ग
ऽ	त्रि	म	म	ऽ	अ	न्त	र	सा	ऽ	न	त	है	ऽ	ऽ	ऽ
स	र	(स)	ऩ	–	स	र	प	ग॒	–	स	ऩ	स	–	–	–
म	न	वा	ऽ	ऽ	तू	न	हिं	मा	ऽ	न	त	है	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

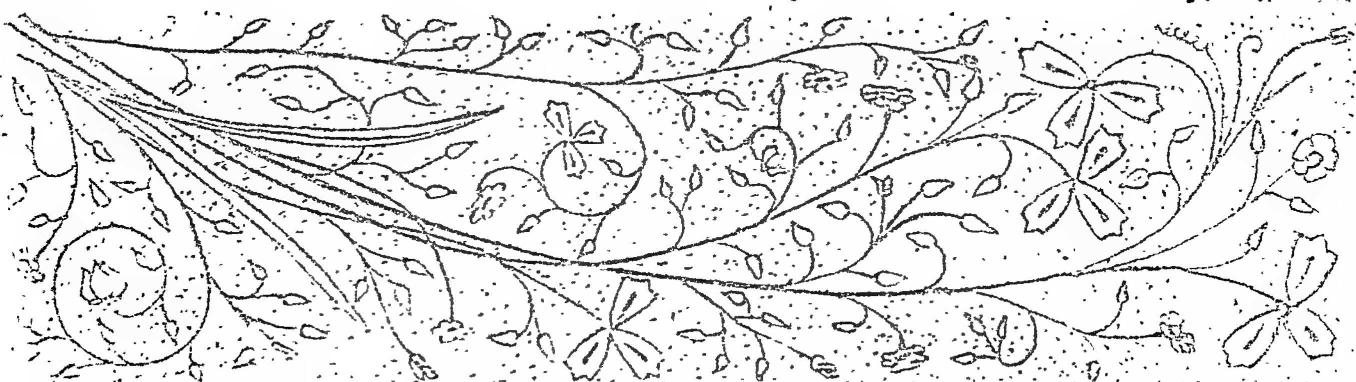
स	र	स	ऩ	* स	ग	म		प	प	ध	प	ग	म	ध	प
म	न	वा	ऽ	* प्र	भू	भ		ज	न	क	र	ने	ऽ	को	ऽ
ग॒	र	स	ऩ	प	–	प	प	प	प	ध	प	म	ग	र	र
वै	ऽ	हूँ	ऽ	तू	ऽ	ख	ट	प	ट	नि	ज	ठा	ऽ	न	त
र	ग	म	प	* ध	ध	ध		–	ध	ध	ध	न॒	–	ध	प
है	ऽ	ऽ	ऽ	वा	र	वा		ऽ	र	स	म	झा	ऽ	या	ऽ
ग	म	प	–	प	प	प	प	म	–	प	ध	ग	प	म	ग
फि	र	भी	ऽ	ह	ठ	अ	प	नी	ऽ	ही	ऽ	ता	न	त	है
स	र	स	ऩ												
ऽ	म	न	वा	तू नहिं मानत है ………।											

—— ——



प्रतिज्ञा पालन !

प्रतिज्ञा पै क़ायम रहो चाहे कुछ हो,
नहीं पीछे हर्गिज़ हटो चाहे कुछ हो।
प्रतिज्ञा के वल से ही मिलती है इज्ज़त,
प्रतिज्ञा को पूरन करो चाहे कुछ हो।
पशू हैं मनुज वे, जो प्रण के न पक्के,
अतः सच्चे मानव वनो चाहे कुछ हो।
प्रतिज्ञा-वली की विजय हो जरूरी,
कभी न हताश रहो चाहे कुछ हो।
प्रतिज्ञा से होता सुयश सारे जग में,
'अमर' अपने यश को रखो चाहे कुछ हो।





प्रतिज्ञा पै कायम रहो.........!

ताल कहरवा, स्थायी—

															ध
×				०				×				०			प्र
सं	–	सं	न	ध	न	ध–	ध	प	–	म	ग	म	ध	–	ध
ति	ऽ	ज्ञा	पै	का	ऽ	यम	र	हो	ऽ	चा	हे	कुछ	हो	ऽ	न
सं	–	सं	न	ध	न	ध–	ध	प	–	म	ग	म–	ध	–	ध
हीं	ऽ	पी	छे	ह	ऽ	गिंज	ह	टो	ऽ	चा	हे	कुछ	हो	ऽ	प्र

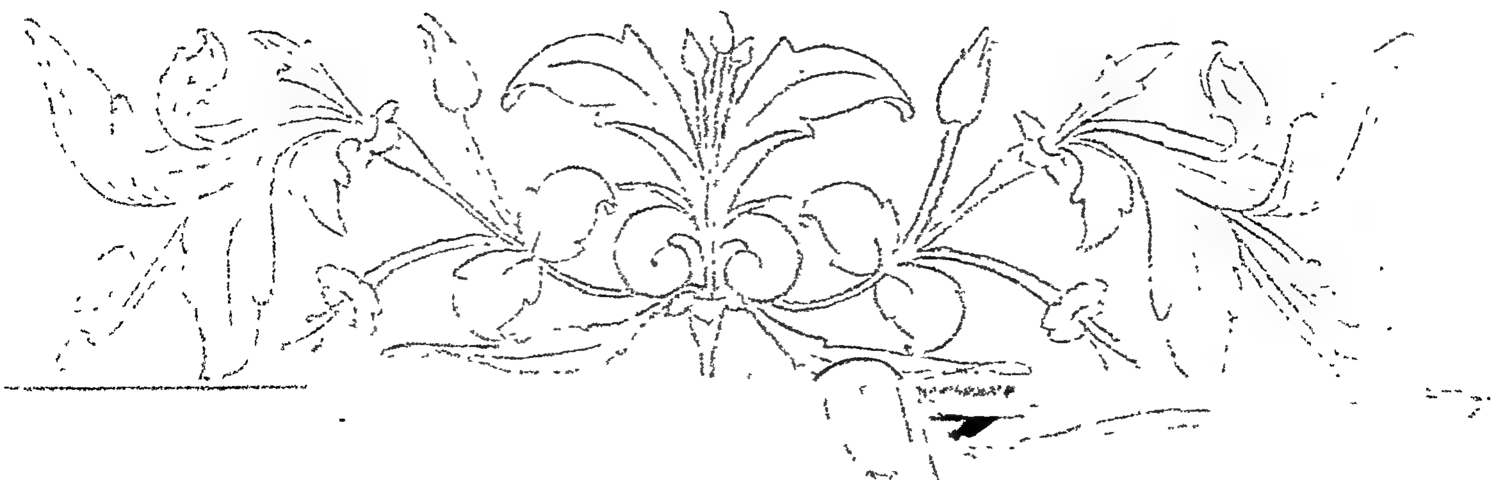
तिज्ञा पै कायम रहो चाहे कुछ हो।

अन्तरा

															म
×				०				×				०			प्र
ग	म	ध	न	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं	न	धन	सं	ध–	ध
ति	ऽ	ज्ञा	के	व	ल	से	ही	मि	ल	ती	है	इऽ	ऽ	ज्जत	प्र
सं	–	सं	न	ध	न	ध–	ध	प	–	म	ग	म–	ध	–	ध
ति	ऽ	ज्ञा	को	पू	ऽ	रन	क	रो	ऽ	चा	हे	कुछ	हो	ऽ	प्र

तिज्ञा पै कायम रहो चाहे कुछ हो।

———



आज के श्रावक

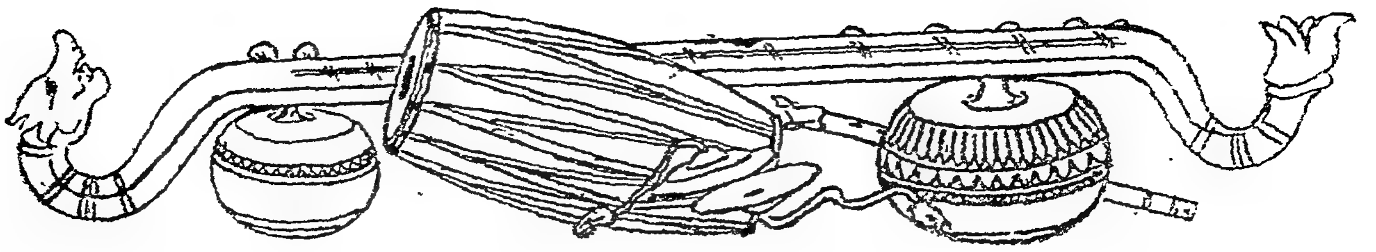
श्रावकों ने अपना सब गौरव गँवाया इन दिनों ।
उच्चतम जीवन निरा पामर बनाया इन दिनों ॥
शास्त्र का व्याख्यान अब क्योंकर भला आये पसंद ।
भैरवी की बहर में आनन्द पाया इन दिनों ॥
छान कर पीते हैं पानी, स्थावरों की है दया ।
कंठ पर दीनों के झट खंजर चलाया इन दिनों ॥
आप खुद तो दिन में दो-दो बार दौने चाटते ।
भूखे मरते भाई को धक्का दिलाया इन दिनों ॥
आके धर्म-स्थान में भी छोड़ते न प्रपंचता ।
धर्म महिमा का वृथा पाखण्ड छाया इन दिनों ॥
धर्म-रक्षक अब 'अमर' आनन्द से श्रावक कहां ।
नाम धारी श्रावकों का दिन है आया इन दिनों ॥



श्रावकों ने अपना सब.........!

स्थायी (ताल पश्तो) मध्यलय

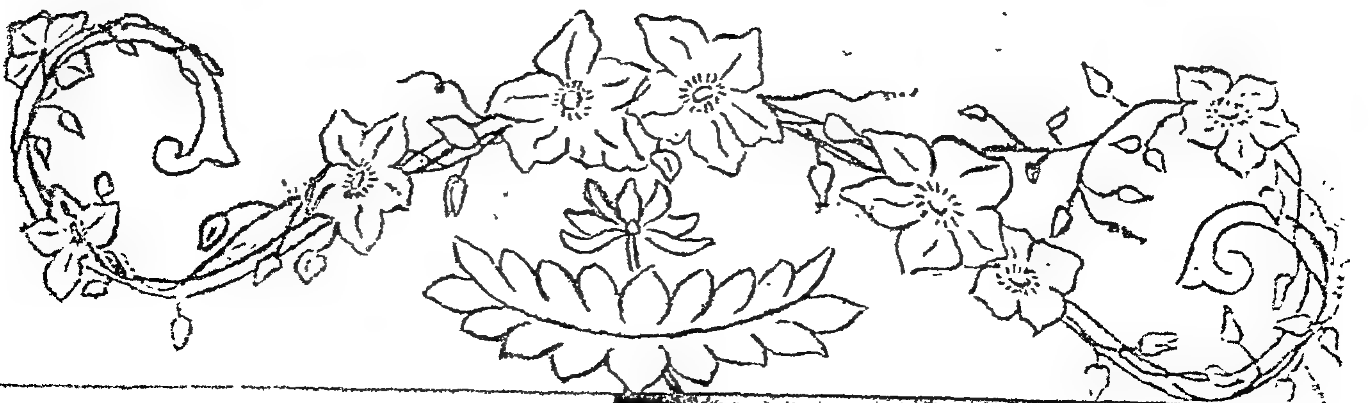
×	२	३	×	२	३
न – न	न –	ध न	सं सं न	ध ध	प प
श्रा ऽ व	कौं ऽ	ने ऽ	श्र प ना	स व	गौ ऽ



मं	मं	प	ग	–	स	–	ग	ग	मं	प	–	–	–
र	व	गँ	वा	ऽ	या	ऽ	इ	न	दि	नों	ऽ	ऽ	ऽ
न	–	न	न	न	ध	न	सं	सं	न	ध	–	प	–
उ	ऽ	च्च	त	म	जी	ऽ	व	न	नि	रा	ऽ	पा	ऽ
मं	मं	प	गम	गर	स	–	ग	ग	मं	प	–	–	–
म	र	व	नाऽ	ऽऽ	या	ऽ	इ	न	दि	नों	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

मं	–	ग	मं	–	ध	ध	सं	–	सं	सं	सं	सं	–
शा	ऽ	स्त्र	का	ऽ	व्या	ऽ	ख्या	ऽ	न	श्र	व	क्यों	ऽ
न	न	न	न	–	ध	न	धन	सं	न	ध	–	प	–
क	र	भ	ला	ऽ	श्रा	ऽ	येऽ	ऽ	प	सं	ऽ	ऽ	द
न	–	न	न	–	ध	न	सं	सं	न	ध	–	प	–
भै	ऽ	र	वी	ऽ	की	ऽ	व	ह	र	में	ऽ	श्रा	ऽ
मं	–	प	गम	गर	स	–	ग	ग	मं	प	–	–	–
नं	ऽ	द	पाऽ	ऽऽ	या	ऽ	इ	न	दि	नों	ऽ	ऽ	ऽ



कीर्ति-कृति !

भू लोक में आये हो कुछ तो कीर्ति-कृति कर जाइयो,
भंडार आगे के लिये भी याद कर भर जाइयो।
दे डालियो जो पास हो सर्वस्व दीनों के लिये,
कौड़ी पै कौड़ी जोड़कर धरती में ना धर जाइयो ॥
जो शत्रु अति ही दुःख दे उसका भी हित कीजे सदा,
पिछली बुरी बातों को करके याद मत टर जाइयो।
दुष्कर्म करने के हृदय में जब विचार उठें तभी,
धर ध्यान रावण आदि के, इतिहास पर डर जाइयो ॥
यह सार है नर ज़िन्दगी का, लीजियो बनियो 'अमर',
जीना उचित हो जी-इयो, मरना उचित मर जाइयो।

——*——

भू लोक में आये हो·······!

स्थायी (दादरा)

×			०			×			०		
स	स	र	ग॒	–	र	ग॒	म	र	ग॒	–	स
भू	लो	क	में	ऽ	ऽ	आ	ये	हो	कु	ऽछ	तो
स	र	ऩ	स	स	र	सर	ग॒	रे॒	स	–	रे॒ऩ
की	ऽ	र्तिं	कृ	ति	ऽ	कर	जा	इ	यो	ऽ	ऽऽ



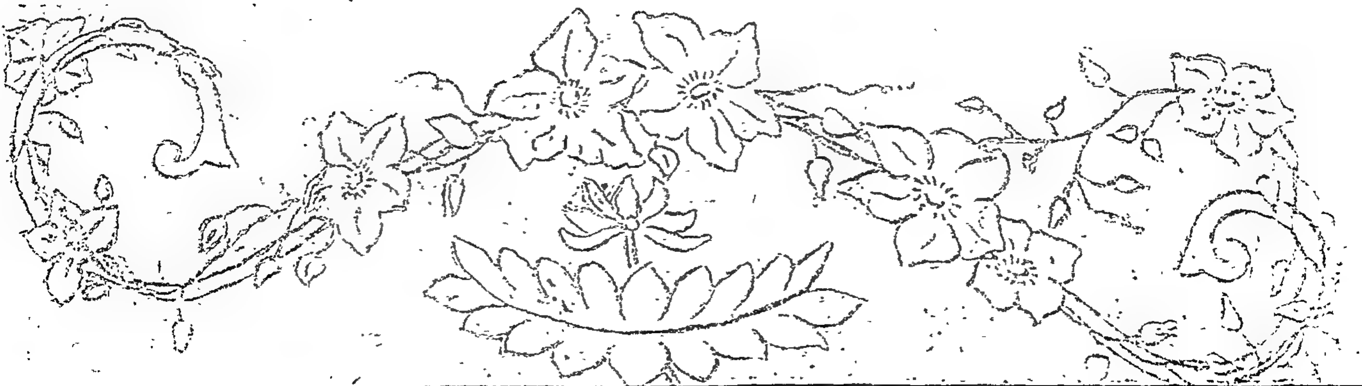


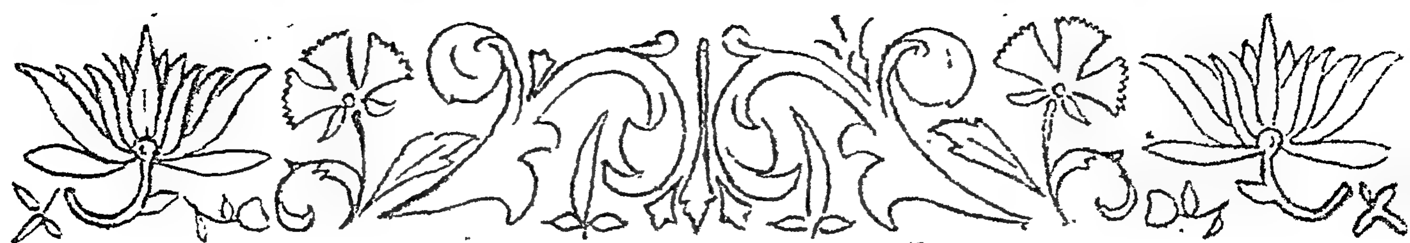
नृ	स	र	ग	–	र	ग	म	र	ग	–	स
भं	डा	र	आ	ऽ	गे	के	ऽ	लि	ये	ऽ	भी
स	र	नृ	स	स	र	सर	ग	रे	स	–	रेनृ
या	ऽ	द	क	र	ऽ	भर	जा	इ	यो	ऽ	ऽऽ

अन्तरा—

प	धु	म	प	–	प	प	धु	म	प	–	–
दे	डा	लि	यो	ऽ	जो	पा	ऽ	स	हो	ऽ	ऽ
प	धु	म	प	–	ग	मर्म	मग	रे	स	–	–
स	र्व	स्व	दी	ऽ	नों	केंऽ	ऽऽ	लि	ये	ऽ	ऽ
स	स	र	ग	–	र	ग	म	र	ग	–	स
कौ	ड़ी	पै	कौ	ऽ	ड़ी	जो	ऽ	ड़	कर	ऽ	ऽ
सर	र	नृ	स	–	र	सर	ग	रे	स	–	रेनृ
धर	ती	में	ना	ऽ	धर	जाऽ	ऽ	इ	यो	ऽ	ऽऽ

———





चरण-रत्न

प्रण-वीर महान न स्वत्व कभी,
पथ नीति विसार गँवावत हैं ।
मिल जाय यदा पर कष्ट कथा,
झट तत्र स्व-दौड़ लगावत हैं ।
कट जांय सहर्ष रणांगण में पर,
पैंड न एक डिगावत हैं ।
नर-रत्न जगत्त्रय पूजित के,
"चरणोत्तम रत्न" कहावत हैं ।



प्रण-वीर महान, न स्वत्व कभी……!

स्थायी (कहरवा)														प	म
×				०				×				०		प्र	ण
प	ध	नु	ध	प	म	गु	गु	गु	–	गु	गु	र	स	स	ऩ
वी	ऽ	र	म	हा	ऽ	न	न	स्व	ऽ	त्व	क	भी	ऽ	प	थ

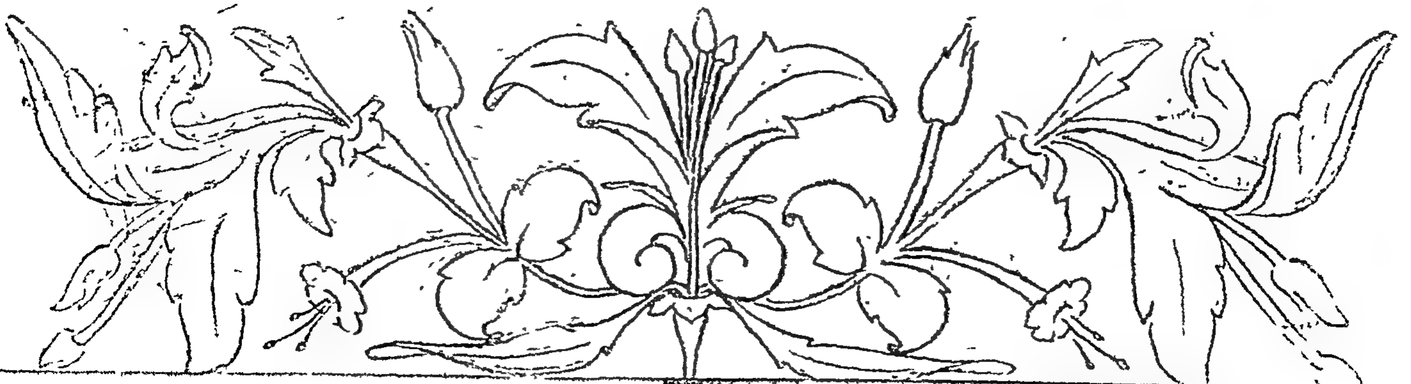




स	र	र	र	र	ग॒	म	ग॒	र	–	र	र	स	–	प	म
नी	ऽ	ति	वि	सा	ऽ	र	गँ	वा	ऽ	व	त	हैं	ऽ	मि	ल

"मिल जाय सदा" यह पंक्ति भी इसी प्रकार बजाई जावेगी।

अन्तरा—														प	प
														क	ह
प	ध	ध	सं	सं	–	सं	सं	सं	रं	रं	सं	रं	गं॒	गं॒	रं
जां	ऽ	य	स	ह	ऽ	पँ	र	णां	ऽ	ग	ण	में	ऽ	प	र
सं	–	सं	रं	सं	न॒	न॒	ध	ध	न॒	न॒	ध	प	–	प	म
पैं	ऽ	ड़	न	ए	ऽ	क	डि	गा	ऽ	व	त	हैं	ऽ	न	र
प	ध	न॒	ध	प	म	ग॒	ग॒	ग॒	–	ग॒	ग॒	र	स	स	ऩ
र	त	न	ज	ग	ऽ	त्र	य	पू	ऽ	जि	त	के	ऽ	च	र
स	र	र	र	र	ग॒	म	ग॒	र	–	र	र	स	–	प	म
णो	ऽ	त्त	म	र	त	न	क	हा	ऽ	व	त	हैं	ऽ	प्र	ण



संगठन !

ज़रूरत है अब तो बड़ी संगठन की,
कमी हो रही है बड़ी सङ्गठन की।
जो हैं विश्वभर की सुखद सम्पदा वे,
खरीदी हुई दासियां संगठन की ॥
विपत्ति के बादल उड़ें एक क्षण में,
चले जब कि पछुवा हवा संगठन की।
जुदाई में तो तीये छत्तीस रहते,
तिरेसठ हों जब हो दया संगठन की ॥
विजय बादशाहों पै पाता है एका,
सुनी हार होती कहीं संगठन की ?
कठिन से कठिन काम सहसा सफल हों,
बदौलत इसी एकता संगठन की ॥
ख़तरनाक हालत में है रोगी भारत,
पिला दो 'अमर' बस दवा संगठन की।

—※—

(ताल पश्तो)

स्थायी—													न
×			२		३		×			२		३	ज
न	सं	-	ध	ध	प	-	मं	प	-	ग	म	र	स
ज़ु	ऽ	ऽ	र	त	है	ऽ	अ	ब	ऽ	तो	ऽ	ब	ऽ



स	र	–	ऩ	–	–	ऩ	स	स	–	गम	पध	नसं	न
ड़ी	ऽ	ऽ	सं	ऽ	ऽ	ग	ठ	न	ऽ	कीऽ	ऽऽ	ऽऽ	क
सं	–	–	ध	–	–	प	मं	प	–	ग	म	र	स
मी	ऽ	ऽ	हो	ऽ	ऽ	र	ही	ऽ	ऽ	है	ऽ	व	ऽ
स	र	–	ऩ	–	–	ऩ	स	स	–	ग	–	–	–
ड़ी	ऽ	ऽ	सं	ऽ	ऽ	ग	ठ	न	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ

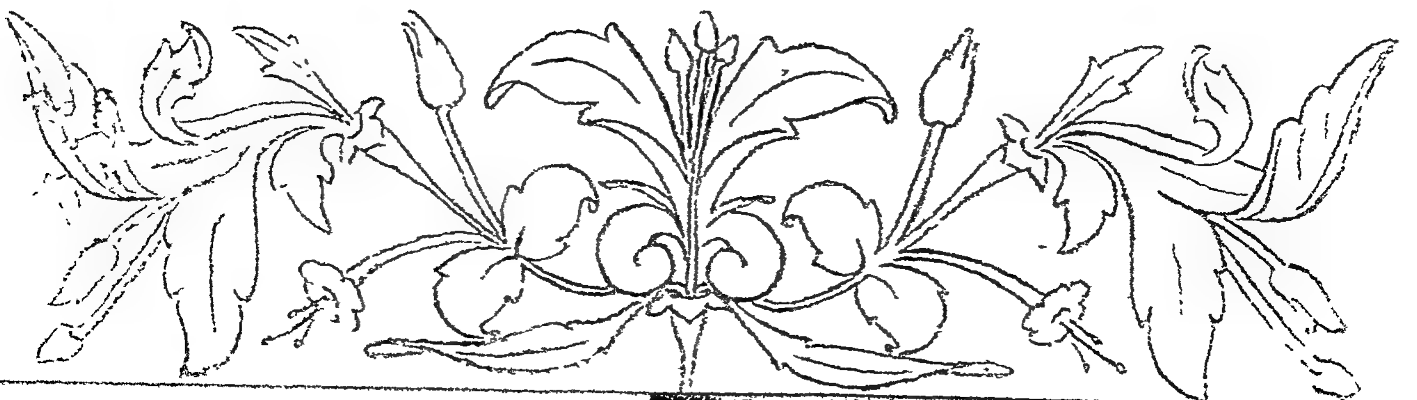
अन्तरा (ठेकावन्द)

ग	ग	–	प	–	प	पध	नसं	सं	–	न	न	–	न	–	सं	ध	–
जो	हैं	ऽ	वि	ऽ	श्व	भऽ	रऽ	की	ऽ	सु	ख	द	सं	ऽ	प	दा	ऽ
प	–	मं	–	ग	–	र	–	स	–								
यें	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ								

ठेका शुरू— | न / ख

सं	–	–	ध	–	–	प	मं	प	–	ग	म	ग	र
री	ऽ	ऽ	दी	ऽ	ऽ	हु	ई	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	सि
स	र	–	ऩ	–	–	ऩ	स	स	–	गम	पध	नसं	न
यां	ऽ	ऽ	सं	ऽ	ऽ	ग	ठ	न	ऽ	कीऽ	ऽऽ	ऽऽ	ज

रूरत है अब तो बड़ी संगठन की, कमी हो रही है बड़ी संगठन की।



अनेकान्त दृष्टि !

(१)

सरिता तट-वर्ती नगरों को,
रहता है आराम अपार ।
किन्तु बाढ़ में वही मचाती,
प्रलय काल-सा हाहाकार ॥

(२)

अग्नि कृपा से चलता है सब,
पाक आदि जग का व्यवहार ।
किन्तु उसीसे छिन भर में हा,
भस्म-राशि होता घर-बार ॥

(३)

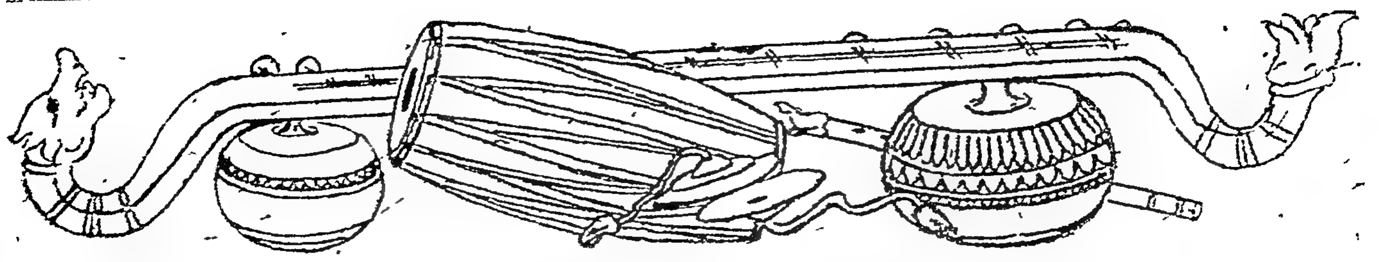
सघन जलद सूखी खेती में,
करता नवजीवन संचार ।
वही पलक में कृषक-काल हो,
करता हाय सर्व संहार ॥

(४)

विष-लव अणु-सा भी दिखलाता,
यमपुर का झट रौद्र-द्वार ।
किन्तु बचा दुःसाध्य रोग से,
बने कभी जीवन-दातार ॥

(५)

भला बुरा एकान्त जगत में,
कोई न देखा आंख पसार ।
अखिल सृष्टि गुण-दोष मयी है,
किससे करें द्वेष या प्यार ?



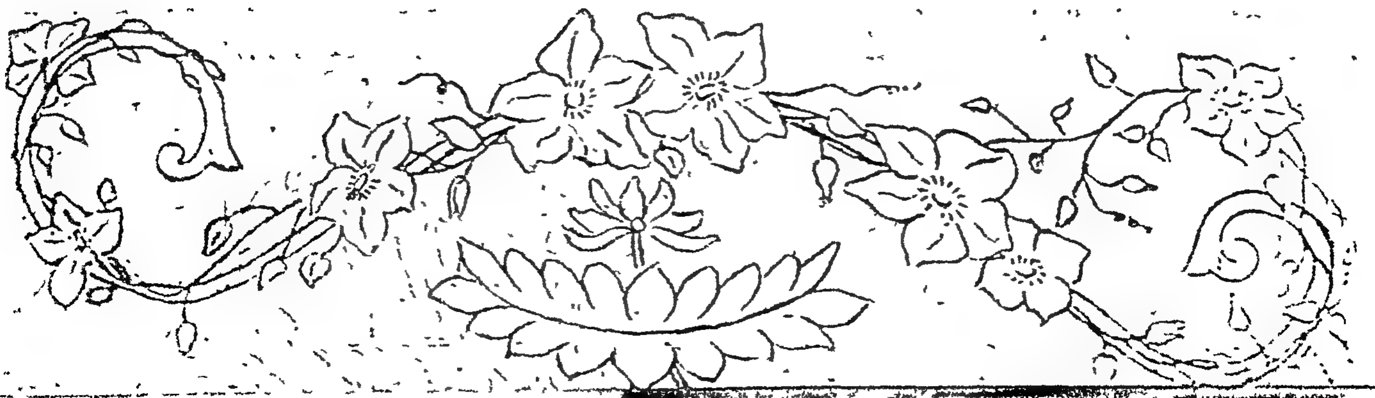
राग–शंकरा, त्रिताल (मध्यलय)

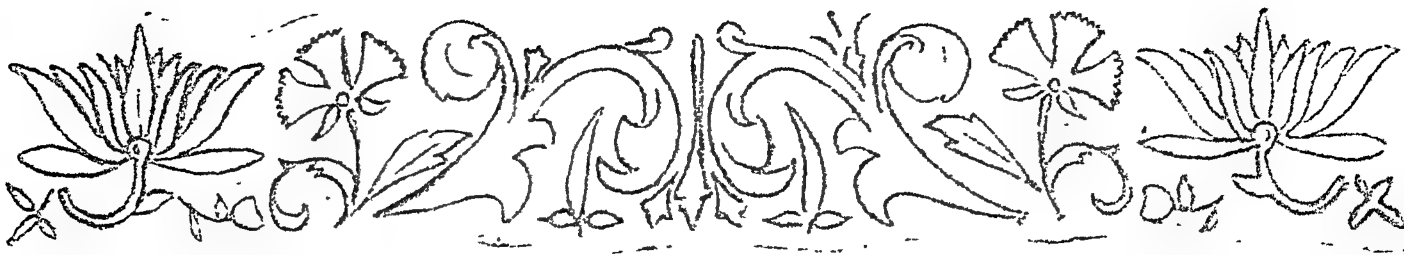
स्थायी––

०				३				×				४			
स	स	ग	–	प	प	सं	न	प	प	ग	प	ग	–	स	–
स	रि	ता	ऽ	त	ट	व	र	ती	ऽ	न	ग	रों	ऽ	को	ऽ
स	स	ग	–	प	–	प	–	प	–	ग	प	ग	–	स	–
र	ह	ता	ऽ	है	ऽ	आ	ऽ	नं	ऽ	द	अ	पा	ऽ	र	ऽ
स	–	ग	ग	प	प	सं	न	प	प	ग	प	ग	–	स	–
किं	ऽ	तु	वा	ऽ	ढ़	में	ऽ	व	ही	ऽ	म	चा	ऽ	ती	ऽ
सं	न	प	ग	–	प	सं	न	प	–	ग	प	ग	–	स	स
प्र	ल	य	का	ऽ	ल	सा	ऽ	हा	ऽ	हा	ऽ	का	ऽ	ऽ	र

अन्तरा––

प	–	सं	सं	सं	–	सं	–	सं	सं	न	प	प	नध	सं	न
अ	ऽ	ग्नि	कु	पा	ऽ	से	ऽ	च	ल	ता	ऽ	है	ऽऽ	स	ब
ग	–	प	प	सं	न	प	–	प	प	ग	प	ग	–	स	–
पा	ऽ	क	आ	ऽ	दि	का	ऽ	ज	ग	व्य	व	हा	ऽ	र	ऽ
प	प	सं	सं	सं	सं	सं	सं	नसं	रंसं	न	प	प	नध	सं	न
किं	ऽ	तु	उ	सी	ऽ	से	ऽ	छिऽ	नऽ	भ	र	में	ऽऽ	हा	ऽ
ग	–	प	प	सं	न	प	–	प	–	ग	प	ग	–	स	स
भ	ऽ	स्म	रा	ऽ	शि	हो	ऽ	ता	ऽ	घ	र	वा	ऽ	ऽ	र





कौन जन महिमा का आगार ?

प्राप्त हुआ है किसे जगत में पूजा का अधिकार ?
छोटे से छोटे जीवों पर रखता कृपा अपार,
अखिल विश्व में सदा बहाता भ्रातृ-भाव की धार,
प्रेम में डूबा सब संसार !

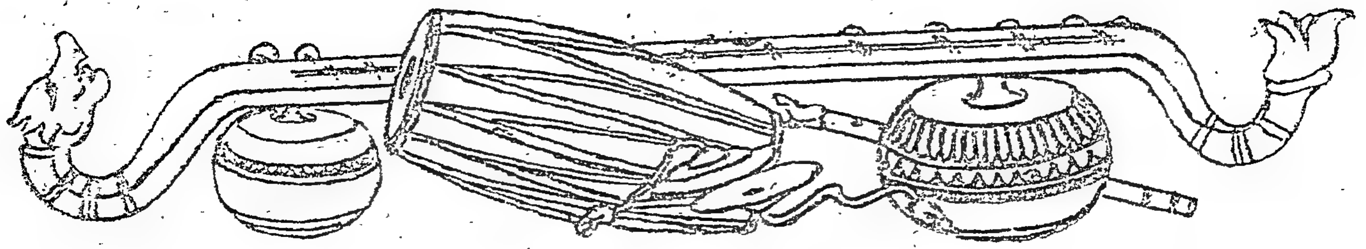
द्वेष-क्लेश का लेश नहीं है, नहीं घृणा कुविचार,
स्वच्छ हृदय है, उठें कहीं भी नहीं ज़रा कुविकार,
पूर्ण है संयम का अवतार !

कैसा भी कोई भी अपना करे क्यों न अपकार,
शान्ति पूर्ण उपकार रूप में करता है प्रतिकार,
क्षमा का खुला रखे नित द्वार !

अपना पर का भेद मिटाकर करले हृदय उदार,
दान दक्षिणा के पथ पर सब लुटा दिये भंडार,
विश्व का बने एक आधार !

मन वाणी और कर्म सभी में अमृत का संचार,
आस पास में लाखों कोसों नहीं तनिक भी क्षार,
"अमर" है मृत्युञ्जय हुङ्कार !





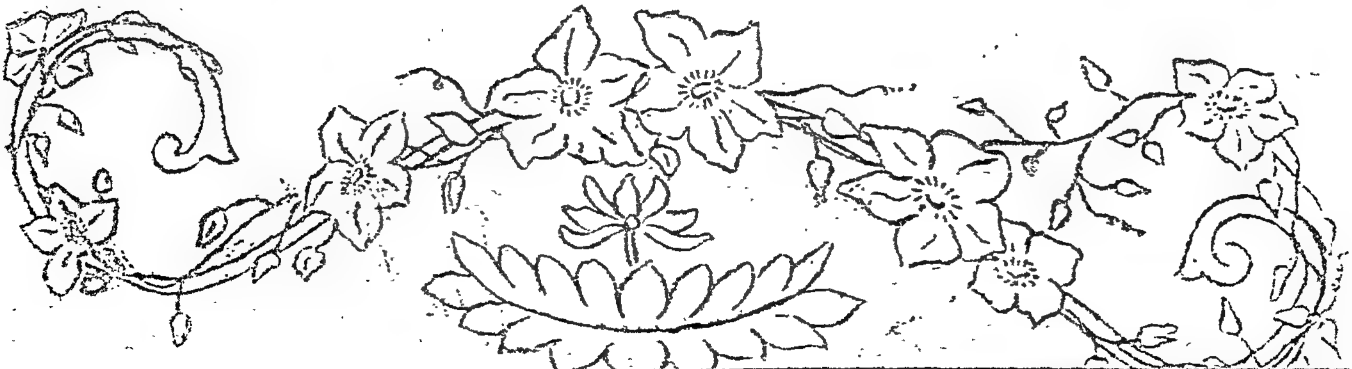
प्राप्त हुआ है किसे जगत में···!

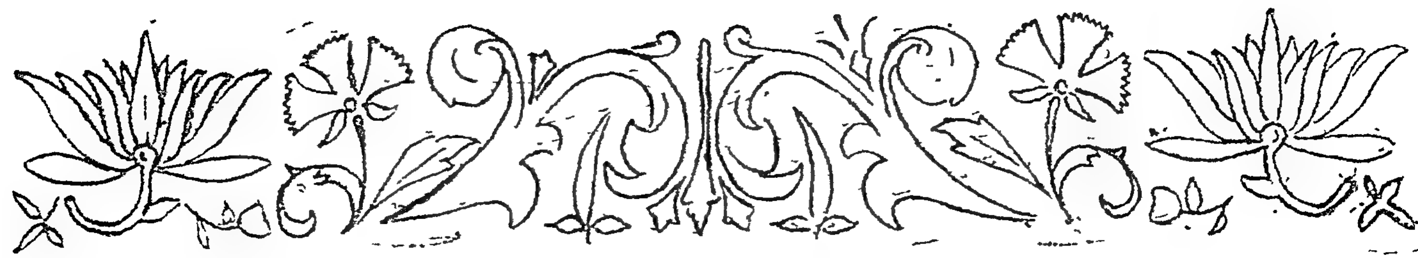
स्थायी (कहरवा)

×				०				×				०			
स	म	म	म	म	–	म	ग॒	ग॒म	प	–	म	ग॒	म	रे॒	स
प्रा	ऽ	प्त	हु	आ	ऽ	है	ऽ	किऽ	से	ऽ	ज	ग	त	में	ऽ
स	म	म	प	ग॒	–	स	रे॒	ग॒	–स	–	–	–	–	–	–
पू	ऽ	जा	ऽ	का	ऽ	अ	धि	का	ऽर	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

ग॒	–	म	–	ध॒	–	न॒	–	सं	–	सं	–	सं	–	सं	सं
छो	ऽ	टे	ऽ	से	ऽ	छो	ऽ	टे	ऽ	जी	ऽ	वों	ऽ	प	र
गं॒	गं॒	गं॒	–	रें	गं॒	–	सं	रें	गं॒	–	–	–	–	–	(रें) सं
र	ख	ता	ऽ	कृ	पा	ऽ	अ	पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
सं	मं	मं	मं	–	मं	मं	–	गं॒	मं	गं॒	मं	रें॒	–	सं	–
अ	खि	ल	वि	ऽ	श्व	में	ऽ	स	दा	ऽ	व	हा	ऽ	ता	ऽ
सं	रें॒	न॒	सं	ध॒	न॒	प	ध॒	म	प	प	म	ग॒	म	रे॒	स
भ्रा	ऽ	तृ	भा	ऽ	व	की	ऽ	धा	ऽ	र	प्रे	ऽ	म	में	ऽ
स	म	म	–	ग॒	ग॒	स	रे॒	ग॒	–स	–	–	–	–	–	–
हू	ऽ	वा	ऽ	स	व	सं	ऽ	सा	ऽर	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ





मूर्ख मन !

मूर्ख मन ! कब तक जहाँ में अपने को उलझायगा,
ध्यान श्री जिनराज के चरणों में कब तू लायगा ?
भूल कर निज लक्ष्य को जड़ भूत का चेरा बना,
क्या इसी भ्रम कल्पना में तू ख़ुदा बन जायगा ?
धर्म का धन छोड़ कर पूँजी बटोरी पाप की,
ढौंग के बल कब तलक धर्मात्मा कहलायगा ?
दीन को दाना न देता हज़्म करता सब स्वयं,
जायगा परलोक में तो तू वहां क्या खायगा ?
जब कि तू होता नहीं औरों के संकट में शरीक,
कौन शठ तुझ को यहां फिर प्रेम से अपनायगा ?
बन्दरों को भी उछलने कूदने में मात दी,
मानवी रंग ढंग में कब अपने को तू ठहरायगा ?
जोड़ नाता वीर से ले शान्ति की धूनी रमा,
अन्यथा पाखंड में फँस कर 'अमर' क्या पायगा ?



मूर्ख मन कब तक जहाँ में····!

(ताल तीव्रा) मध्यलय

स्थायी—

×			२		३		×			२		३	
प	-	ध॒	रं	रं	सं	सं	पध॒	न॒	ध॒	म	-	ग॒	-
मू	ऽ	र्खं	म	न	क	ब	तऽ	क	ज	हां	ऽ	में	ऽ





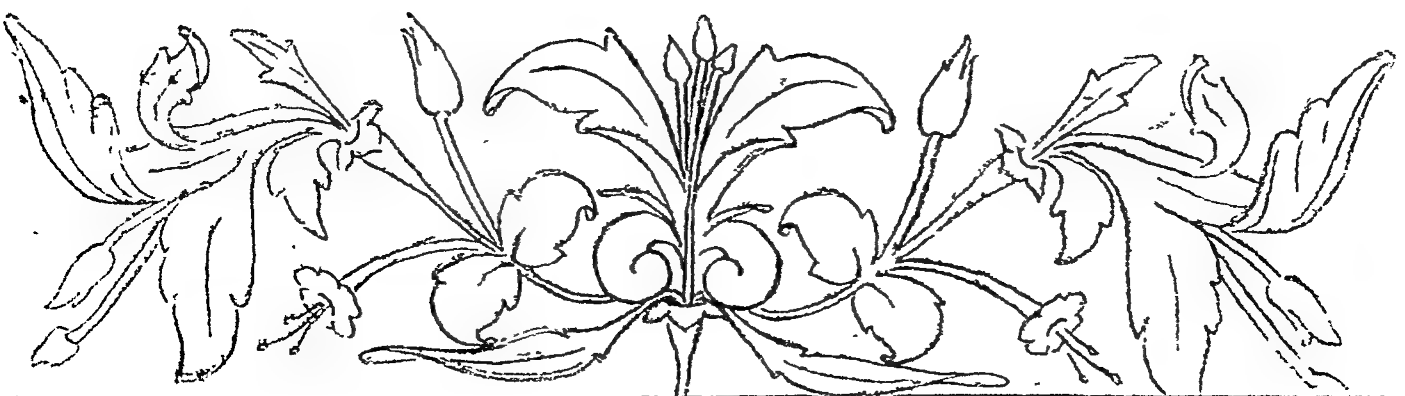
र	गु	स	स	र	गु	म	र	गु	स	स	–	–	–
अ	प	ने	को	ऽ	उ	ल	झा	ऽ	य	गा	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	धु	रं	–	सं	सं	प	नु	धु	म	–	गु	गु
ध्या	ऽ	न	श्री	ऽ	जि	न	रा	ऽ	ज	के	ऽ	च	र
र	गु	स	स	र	गु	म	र	गु	स	स	–	–	–
णों	ऽ	में	क	व	तू	ऽ	ला	ऽ	य	गा	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

स	म	म	म	म	म	म	स	गु	स	ऩ	–	स	स
भू	ऽ	ल	क	र	नि	ज	ल़	ऽ	क्ष्य	को	ऽ	ज	ड़
न	–	न	सं	–	सं	सं	नसं	गुं	रं	संरं	नसं	–	–
भू	ऽ	त	का	ऽ	चे	ऽ	राऽ	ऽ	व	नाऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
प	–	धु	रं	–	सं	सं	पधु	नु	धु	म़	–	गु	गु
क्या	ऽ	इ	सी	ऽ	भ्र	म	कुऽ	ऽ	रूप	ना	ऽ	में	ऽ
र	गु	स	स	र	गु	म	र	गु	स	स	–	–	–
तू	ऽ	खु	दा	ऽ	व	न	जा	ऽ	य	गा	ऽ	ऽ	ऽ

मूर्ख मन कब तक जहां में........................।

—— ——



भक्तों से परेशान भगवान

मनुष्यो ! क्यों मुझे जवरन अपन जैसा वनाते हो,
नमस्ते है तुम्हें, तुम तो मेरी प्रभुता घटाते हो ।
पिता हूँ विश्व का फ़िर भी समझते वाल छोटा-सा,
लिटा कर पालने में लोरियां दे-दे सुलाते हो ॥
नहीं लगती मुझे सर्दी, नहीं लगती मुझे गर्मी,
उढ़ाते क्यों दुशाले और पंखे क्यों डुलाते हो ?
स्वयं मैं शुद्ध निर्मल हूँ तथा औरों को करता हूँ,
समझ का फेर है प्रतिदिन किसे मल-मल न्हलाते हो ?
भला मुझ निर्विकारी का विवाह क्या रंग लायेगा,
विछा कर पुष्प शैया प्रेम से किसको सुलाते हो ?
नहीं हूँ मैं तुम्हारे मिष्ट मोहन भोग का भूखा,
वृथा ही नाम ले मेरा स्वयं मौजें उड़ाते हो ॥
दया करके मुझे नीचे गिराना छोड़ दो भक्तो !
'अमर' मम तुल्य वन कर क्यों न मेरे पास आते हो ?

—※—

मनुष्यो क्यों मुझे जबरन······!

स्थायी (कहरवा)

																नृ
०				×				०				×				म
ध़	नृ	ग॒	र	स	–	–	स	स	–	ग	ग	रग	म	–	म	
नु	ऽ	ष्यो	ऽ	क्यों	ऽ	ऽ	मु	झे	ऽ	ज	व	रन	ऽ	ऽ	अ	

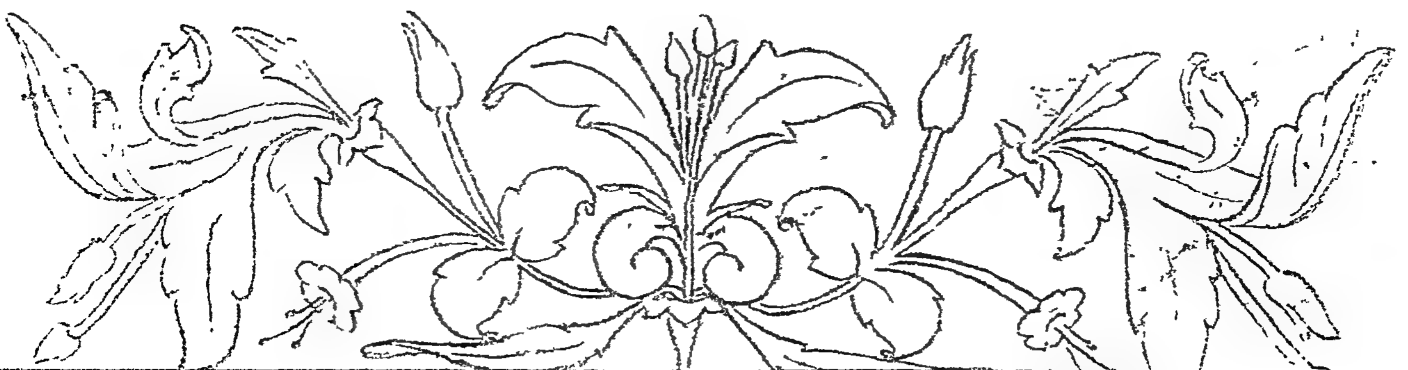


र	र	ग॒	र	स	–	–	स	ऩ	स	ऩस	रस	ऩ॒	ध़	–	ध़
प	न	जै	ऽ	सा	ऽ	ऽ	व	ना	ऽ	तेऽ	ऽऽ	हो	ऽ	ऽ	न
ध़	ऩ॒	ग॒	र	स	–	–	स़	स	–	ग	ग	सर	गम	ग	म
म	ऽ	स्ते	ऽ	है	ऽ	ऽ	तु	म्हें	ऽ	तु	म	तोऽ	ऽऽ	ऽ	मे
र	–	ग॒	र	स	–	–	स	ऩ	स	ऩस	रस	ऩ॒	ध़	–	ऩ॒
री	ऽ	प्र	भु	ता	ऽ	ऽ	घ	टा	ऽ	ऽते	ऽऽ	हो	ऽ	ऽ	म

अन्तरा— म पि

ग	म	ध	–	ध	–	–	ध	ध	न॒	प	ध	पध	नसं	न	सं
ता	ऽ	हूँ	ऽ	वि	ऽ	ऽ	श्व	का	ऽ	फि	र	भीऽ	ऽऽ	ऽ	स
ध	न॒	प	ध	म	ग	–	र	ग	र	ग	प	म	–	–	ऩ॒
म	झ	ते	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ल	छो	ऽ	टा	ऽ	सा	ऽ	ऽ	लि
ध़	ऩ॒	ग॒	र	स	–	–	स	स	–	ग	–	सर	गम	ग	म
टा	ऽ	क	र	पा	ऽ	ऽ	ल	ने	ऽ	में	ऽ	लोऽ	ऽऽ	ऽ	रि
र	–	ग॒	र	स	–	–	स	ऩ	स	ऩस	रस	ऩ॒	ध़	–	ऩ॒
यां	ऽ	दे	ऽ	दे	ऽ	ऽ	सु	ला	ऽ	तेऽ	ऽऽ	हो	ऽ	ऽ	म

नुष्यो क्यों मुझे जवरन अपन जैसा बनाते हो।





चाह !

चाह नहीं, सुख-धाम स्वर्ग में देवराज बन जाने की ।
चाह नहीं, बन धर्म प्रवर्तक जग में पैर पुजाने की ॥
चाह नहीं, दुर्जय कोटी-भट विश्व जयी कहलाने की ।
चाह नहीं, धन-राशि अमित या धन कुबेर पद पाने की ॥
चाह यही अज्ञात-रूप से, पड़ा रहूँ जग में भगवान् ।
दुखी दीन दुर्बल की खातिर होजाऊँ, हँस-हँस बलिदान ॥

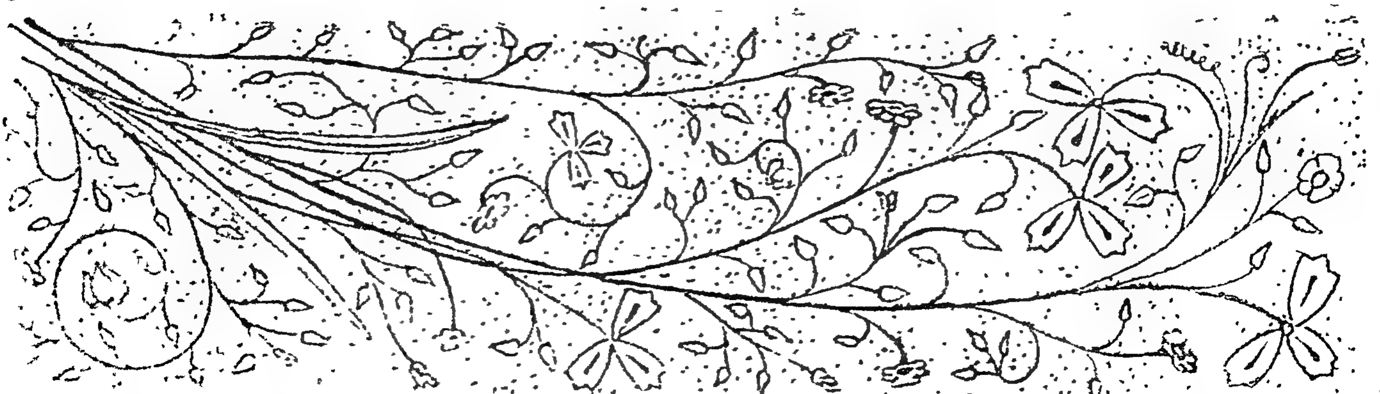


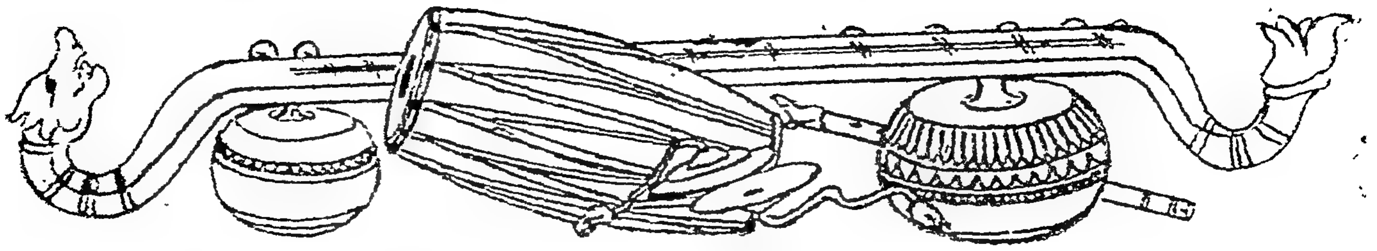
चाह नहीं सुखधाम..........!

राग मल्हार, त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी—

०				३				×				२			
र	म	र	स	ऩ॒	प़	म़	प़	ऩ॒	–	ध़	ऩ	–	नि़	स	–
चा	ऽ	ह	न	हीं	ऽ	सु	ख	धा	ऽ	म	स्व	ऽ	र्ग	में	ऽ





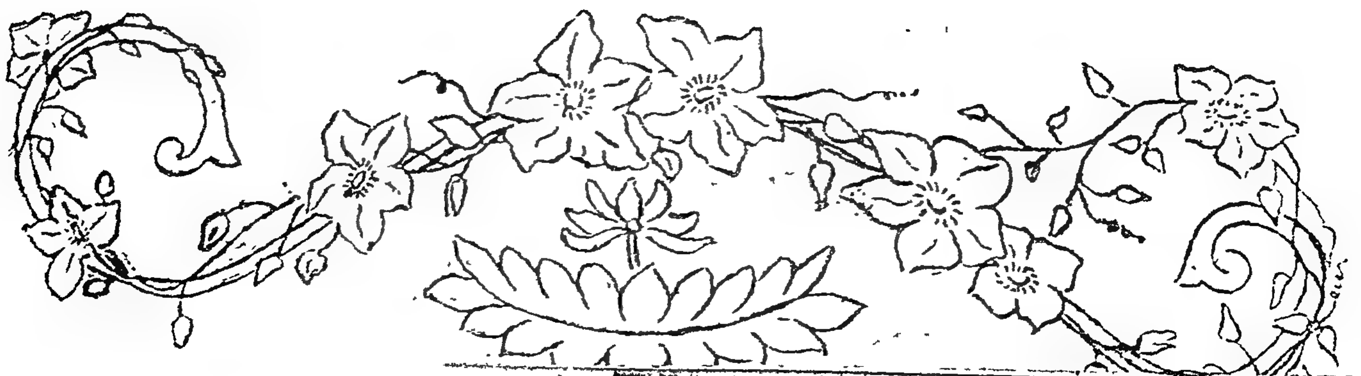
र	–	म	म	प	प	प	प	म	प	नु	प	गु	म	र	स
दे	ऽ	व	रा	ऽ	ज	व	न	जा	ऽ	ने	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ

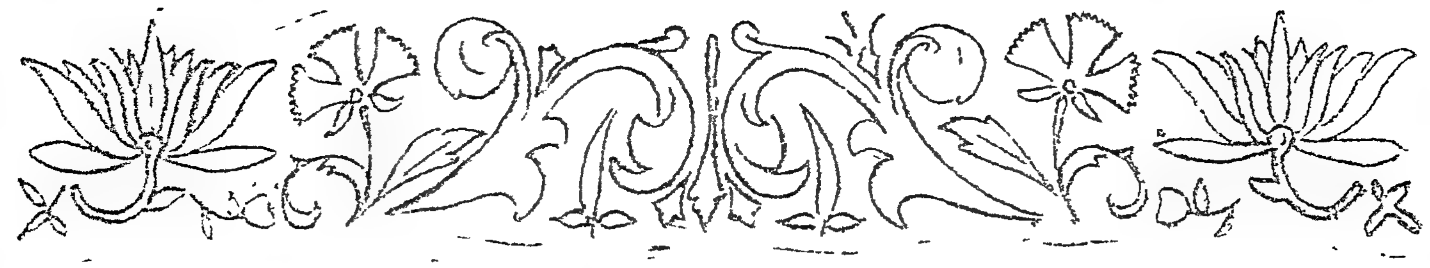
चाह नहीं ········ पुजाने की (इसी प्रकार गाया जायगा)

अन्तरा—

म	म	प	प	नु	ध	न	न	सं	सं	सं	–	न	सं	सं	सं
चा	ऽ	ह	न	हीं	ऽ	ठु	र	ज	य	को	ऽ	टी	ऽ	भ	ट
न	सं	रं	रं	रं	मं	रं	सं	न	सं	रं	सं	नु	ध	नु	प
वि	ऽ	श्व	ज	यी	ऽ	क	ह	ला	ऽ	ने	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ
म	प	सं	सं	नु	प	म	प	गु	गु	गु	म	र	र	स	–
चा	ऽ	ह	न	हीं	ऽ	ध	न	रा	ऽ	शि	अ	मि	त	या	ऽ
र	र	म	म	प	प	प	प	म	प	नु	प	गु	म	र	स
ध	न	कु	वे	ऽ	र	प	द	पा	ऽ	ने	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ

नोटः—चाह नहीं ······· बलिदान, (यह दोनों पंक्तियां भी अन्तरे के समान गाई जावेंगी)





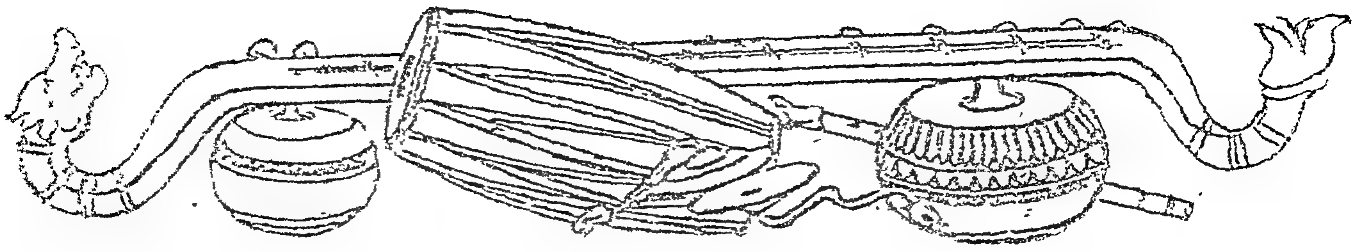
भारत की देवियां !

भारत की नारी एक दिन देवी कहलाती थी.
संसार में सब ठौर आदर-मान पाती थी!
वनवास में श्री रामजी के साथ में सीता,
महलों के वैभव को घृणा करके ठुकराती थी!
महारानी झांसी वाली अपने देश की खातिर,
तलवारें दोनों हाथों से रण में चमकाती थी!
चित्तौड़ में यवनों से अपने सत की रक्षा को,
हँस-हँस के अग्निज्वाला में सब ही जल जातीं थी!
पत्नी श्री मंडन मिश्र की शास्त्रार्थ करने में,
आचार्य शंकर, जैसों के छक्के छुड़वाती थी!
मार्तण्ड सा कटु तेज था वर क्या 'अमर' पूछो,
दुष्कर्मकारी गुण्डों की आंखें मिच जाती थी!

भारत की नारी एक दिन......

स्थायी (कहरवा)														ऩ	-
×				०				×				०		भा	ऽ
स	स	र	-	ऩ	-	स	-	ध़	-	-	ऩ	प़	प़	प़	र
र	त	की	ऽ	ना	ऽ	री	ऽ	ए	ऽ	ऽ	क	दि	न	दे	ऽ





र	–	र	ग	स	–	ऩ	–	स	–	–	–	–	–	ऩ	–
वी	ऽ	क	ह	ला	ऽ	ती	ऽ	थी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सं	ऽ
स	–	–	र	ऩ	–	स	स	ध़	–	–	ऩ	प़	–	प़	र
सा	ऽ	ऽ	र	में	ऽ	स	व	ठौ	ऽ	ऽ	र	आ	ऽ	द	र
र	–	–	ग	स	–	ऩ	–	स	–	–	–	–	–	ऩ	–
मा	ऽ	ऽ	न	पा	ऽ	ती	ऽ	थी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	भा	ऽ

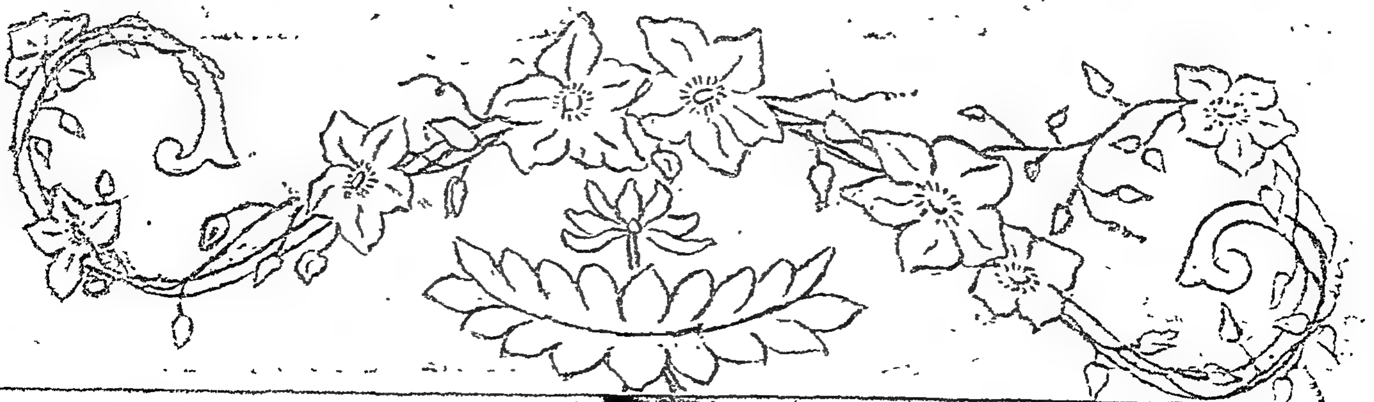
रत की नारी एक दिन देवी कहलाती थी।

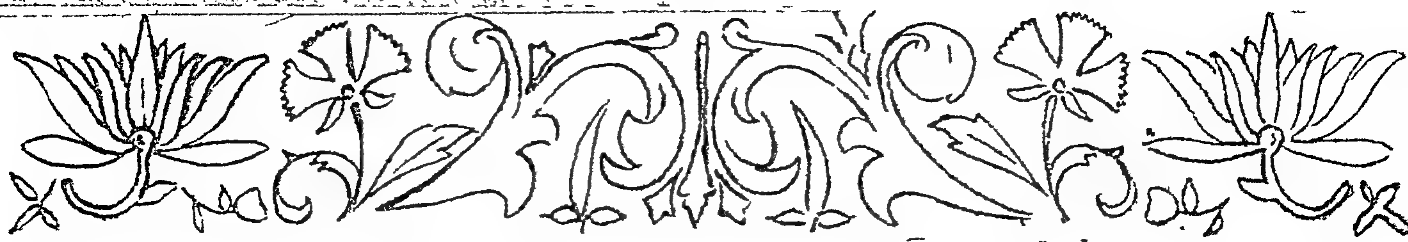
अन्तरा—

														स	ऩ
														व	न
ध़	–	–	ध़	ऩ	–	र	ऩ	ऩर	गम	–	म	म	–	म	–
वा	ऽ	ऽ	स	में	ऽ	शि	री	राऽ	ऽऽ	ऽ	म	जी	ऽ	के	ऽ
ग	–	–	स	ऩ	र	ग	र	स	–	–	–	–	–	ऩ	ऩ
सा	ऽ	ऽ	थ	में	ऽ	सी	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	ह
स	–	र	–	ऩ	–	स	स	ध़	–	–	ऩ	प़	–	प़	र
लों	ऽ	के	ऽ	वै	ऽ	भ	व	को	ऽ	ऽ	घृ	णा	ऽ	क	र
र	–	र	ग	स	–	ऩ	–	स	–	–	–	–	–	ऩ	–
के	ऽ	ठु	क	रा	ऽ	ती	ऽ	थी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	भा	ऽ

रत की नारी एक दिन देवी कहलाती थी।

(अपने पंचम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिये)





आज के साधु !

पूर्वजों की ओर कुछ ना लक्ष्य लाते आजकल,
साधुता के नाम पर छलछन्द रचाते आजकल।
जानते तक भी नहीं प्राकृत गिरा क्या चीज़ है,
मात्र टव्वों से जिनागमतत्व पाते आजकल।
पौरुपी तक भी नहीं होती है खुल्ले काल में,
दो-दो माह चौमास में तप रङ्ग जमाते आजकल।
क्या करें अध्ययन का अवकाश कुछ मिलता नहीं,
घण्टों वैठे भक्त से वातें वनाते आजकल।
सूत्र लेकर हाथ में गाते कवाली और गज़ल,
चटपटे किस्से सुना श्रावक रिझाते आजकल।
वीनती चौमास की मंजूर झट होती नहीं,
खर्च का चिट्ठा वना पहले दिखाते आजकल।
जैन संस्कृति का भला उद्धार हो क्योंकर 'अमर'
जव कि नैया के खिवैया ही डुवाते आजकल।

स्थायी (ताल पश्तो)

×			२		३		×			२		३	
प	–	ध॒	रं	–	सं	–	प	न॒	ध॒	म	म	ग॒	–
पू	ऽ	र्व	जों	ऽ	की	ऽ	ओ	ऽ	र	कु	छ	ना	ऽ





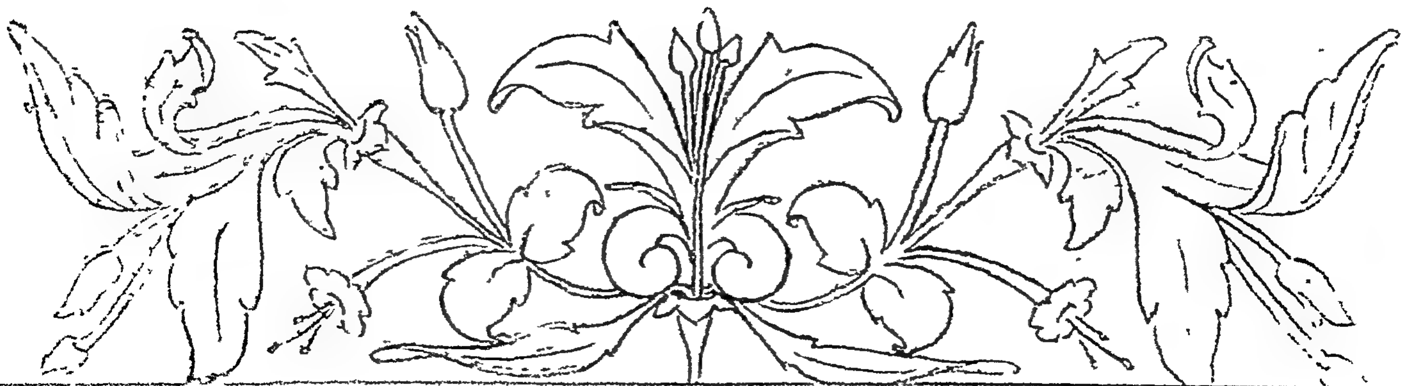
		र							र				
र	ग॒	स	स	र	रग॒	म	र	ग॒	स	स	—	—	—
ल	ऽ	दय	ला	ऽ	तेऽ	ऽ	आ	ऽ	ज	कल	ऽ	ऽ	ऽ
प	—	ध॒	रं	—	सं	—	प	न॒	ध॒	म	म	ग॒	ग॒
सा	ऽ	धु	ता	ऽ	के	ऽ	ना	ऽ	म	प	र	छ	ल
		र							र				
र	ग॒	स	स	र	रग॒	म	र	ग॒	स	स	—	—	—
छं	ऽ	द	र	च	तेऽ	ऽ	आ	ऽ	ज	कल	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा——

स	म	म	म	—	म	म	स	ग॒	स	ऩ	—	स	—
जा	ऽ	न	ते	ऽ	त	क	भी	ऽ	न	हीं	ऽ	प्रा	ऽ
न	न	न	न	—	सं	—	नसं	रंग॒ं	रं	संरं	नसं	—	—
कृ	त	गि	रा	ऽ	क्या	ऽ	चीऽ	ऽऽ	ज़	हैऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
प	—	ध॒	रं	—	सं	—	प	न॒	ध॒	म	—	ग॒	ग॒
मा	ऽ	त्र	ट	ऽ	क्यों	ऽ	से	ऽ	जि	ना	ऽ	ग	म
		र							र				
र	ग॒	स	स	र	रग॒	म	र	ग॒	स	सरे॒	ऩस	—	—
त	ऽ	त्व	पा	ऽ	तेऽ	ऽ	आ	ऽ	ज	कल	ऽऽ	ऽ	ऽ

पूर्वजों की ओर कुछ ना लदय लाते आजकल ।

———



आत्म-बल

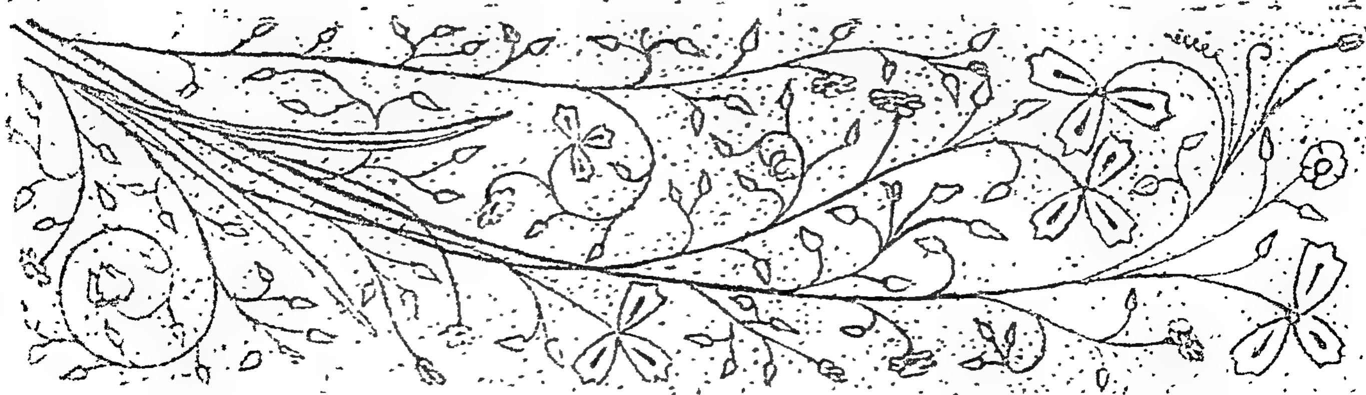
आतम बल सब बल का सरदार (ध्रुव)
आतम बल वाला अलबेला, निर्भय होकर देता हेला।
लड़ कर सारे जग से अकेला, लेता बाजी मार ॥
कैसी ही हों फौज भयङ्कर, तोप मशीनें हों प्रलयङ्कर।
आत्म बली रहता है बेडर, देता सब को हार ॥
चाहे फांसी पर लटकादे, चाहे तोप के मुँह उड़वादे।
आत्म बली सबको ही दुआ दे, कभी न दे धिक्कार ॥
लेता है आतम बलधारी, स्वतन्त्रता सब जग की प्यारी।
पराधीनता दुख संहारी, करै सुखी संसार ॥
प्रतिहिंसा के भाव न लाता, सदा शान्ति का गाना गाता।
सारा सोता देश जगाता, करै नीति परचार ॥
आतम बल है जग में नामी, 'अमर' न इसमें कुछ भी खामी।
बनो इसी के सच्चे हामी, तज पशु बल भयकार ॥

—※—

आतम बल सब बल का सरदार !

राग देस मिश्र

स्थायी—त्रिताल (मध्यलय)															म
२				०				३				×			आ
र	र	म	प	सं	सं	प	ध	म	ग	ऩ	स	रग	म	र	स
त	म	ब	ल	स	ब	ब	ल	का	ऽ	स	र	दाऽ	ऽ	र	आ



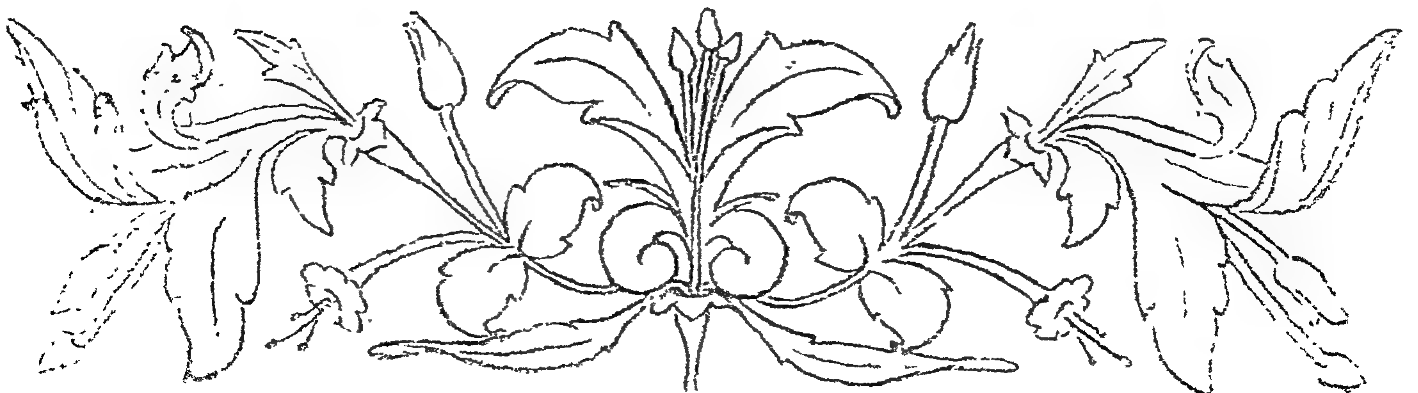


र	र	म	प	सं इ		प	ध	म	ग	स	न	स	—	—	—
त	म	व	ल	स	व	व	ल	का	ऽ	स	र	दा	ऽ	ऽ	ऽ
—	—	—	—												
ऽ	ऽ	ऽ	र												

अन्तरा—

*	म	प	प	न	न	सं	—	प	—	न	न	न	सं	नसं	रं
*	आ	त	म	व	ल	वा	ऽ	ला	ऽ	अ	ल	वे	ऽ	लाऽ	ऽ
—	रंगं	रं	सं	रं	न	सं	सं	प	—	न	—	न	सं	पन	संरं
ऽ	निर	भ	य	हो	ऽ	क	र	दे	ऽ	ता	ऽ	हे	ऽ	लाऽ	ऽऽ
—	रं	रं	रं	रं	गं	रंगं	मं	मं	गं	रं	गं	सं	न	सं	—
ऽ	लड़	क	र	सा	ऽ	रेऽ	ऽ	ज	ग	से	अ	के	ऽ	ला	ऽ
*	न	—	न	न	—	सं	रं	नु	ध	प	म	र	र	म	प
*	ले	ऽ	ता	वा	ऽ	जी	ऽ	मा	ऽ	र	आ	त	म	व	ल

आतम वल सव वल का सरदार।



उद्बोधन !

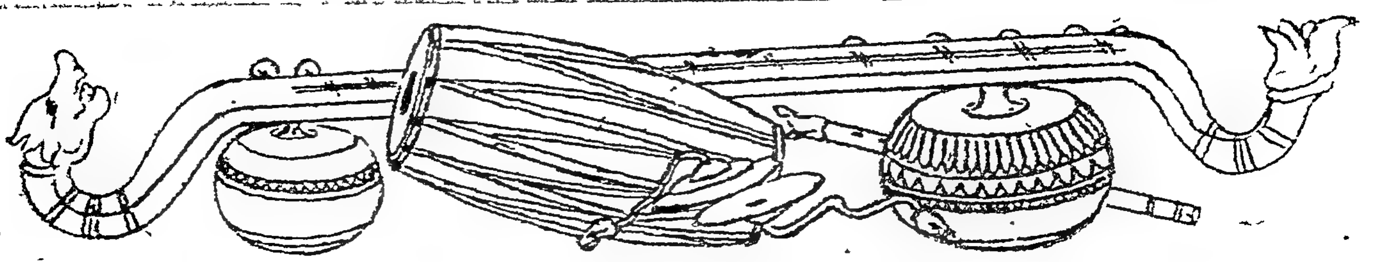
क्या पड़ा ग़ाफ़िल सुकृत कर ज़िन्दगी वन जायगी,
क्या करेगा कूच की जब भेरी ही वज जायगी।
क्या फुला छाती अकड़ कर चलता है मद में छका,
अन्त में मिट्टी की पुतली धूल में मिल जायगी॥
क्या अक़लमन्दी में हँस-हँस ठग रहा है मुग्ध-जन,
मौत के आगे तेरी यह सब अक़ल वह जायगी।
क्या ये लक्ष्मी के नशे से आंख तेरी चढ़ रही,
खाली हाथों जायगा दमड़ी नहीं सँग जायगी॥
क्या बधावे पर बधावे देते ये संगी तुझे,
वक्त पर इनमें भगा दौड़ी कड़ी मच जायगी।
क्या ग़रीबों पर चलाता चक्र अत्याचार का,
देखले करनी तेरी, तेरे ही सिर पड़ जायगी॥
क्या बुराई में धरा है? कर भलाई तू 'अमर',
क्योंकि तेरे वाद वाकी वस यही रह जायगी।

---*---

क्या पड़ा ग़ाफ़िल सुकृत...........!

(राग भीमपलासी-मिश्र) स्थायी (ताल-तीव्रा)

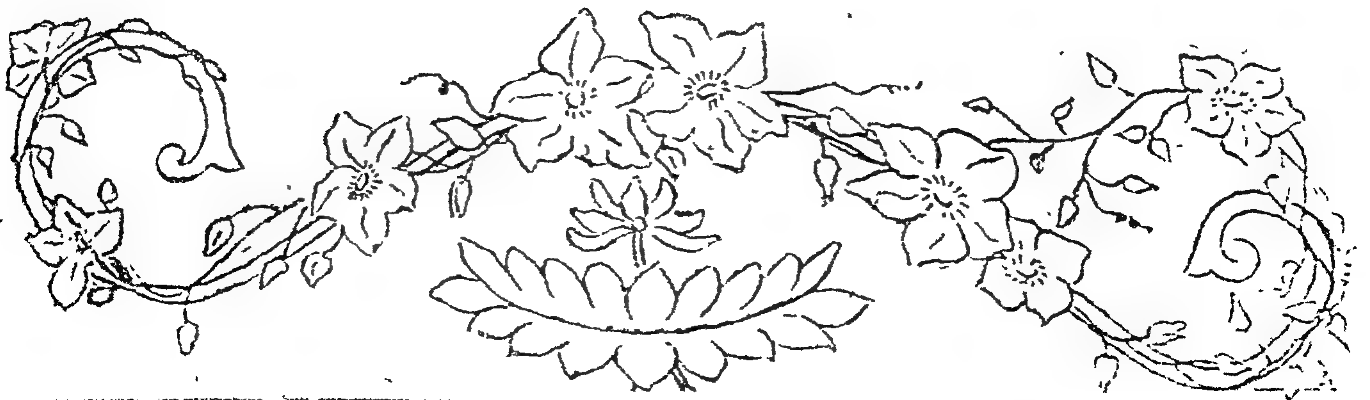
×			२		३		×			२		३	
सं	-	प	प	म	प	-	ग॒	ग॒	म	र	र	स	स
क्या	ऽ	प	ड़ा	ऽ	ग़ा	ऽ	फि	ल	सु	कृ	त	क	र

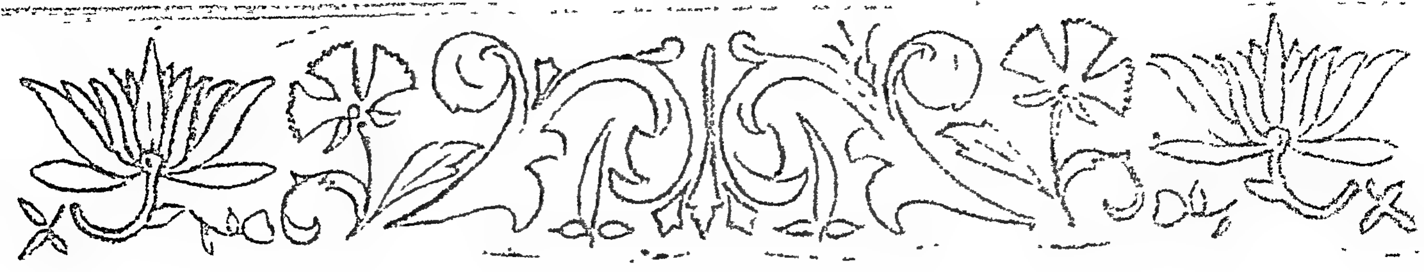


स	–	र	ऩ॒	–	स	स	म	–	ग॒	प	–	–	–
ज़ि	ऽ	द	गी	ऽ	ब	न	जा	ऽ	य	गी	ऽ	ऽ	ऽ
सं	–	प	प	म	प	–	ग॒	–	म	र	–	स	स
क्या	ऽ	क	रे	ऽ	गा	ऽ	कू	ऽ	च	की	ऽ	ज	ब
स	–	र	ऩ॒	–	स	स	म	–	ग॒	प	–	–	–
भे	ऽ	री	ही	ऽ	ब	ज	जा	ऽ	य	गी	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

प	–	प	म	प	ग॒	म	प	–	न॒	सं	सं	सं	सं
क्या	ऽ	फु	ला	ऽ	छा	ऽ	ती	ऽ	अ	क	ड़	क	र
न॒	न॒	न॒	सं	–	सं	सं	पन॒	संरं	सं	न॒	–	ध	प
च	ल	ता	है	ऽ	म	द	मेंऽ	ऽऽ	छु	का	ऽ	ऽ	ऽ
सं	–	प	प	म	प	–	ग॒	–	म	र	र	स	–
अं	ऽ	त	में	ऽ	मि	ऽ	ट्टी	ऽ	की	पु	त	ली	ऽ
स	–	र	ऩ॒	–	स	स	म	–	ग॒	प	–	–	–
धू	ऽ	ल	में	ऽ	मि	ल	जा	ऽ	य	गी	ऽ	ऽ	ऽ



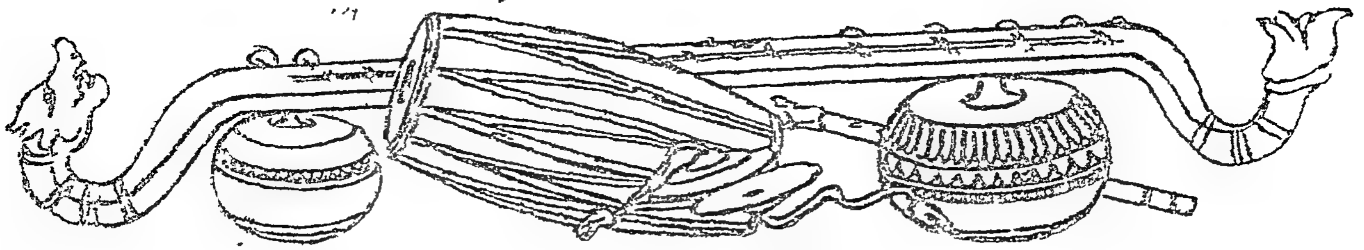


महावीर के पथ पर !

वीर प्रभू के पथ पै, क़दम बढ़ाते जाना ।
मानव जन्म अमोलक सफल बनाते जाना ॥
प्रेम के साथ रहना, सब मीठी कड़वी सुनना ।
उत्तर में कुछ ना कहना, दिल से भुलाते जाना ॥
गर्व न कुछ भी करना, जग है बस जीना मरना ।
होकर के नम्र विचरना, शीश झुकाते जाना ॥
आवे जो दर पै दुखिया, शीघ्र बनाना सुखिया ।
सेवा में बन कर मुखिया, कीर्ति कमाते जाना ॥
पंथों का जाल हटाके, मैं तू का भेद मिटाके ।
सबको इक साथ जुटाके, सत्य सुनाते जाना ॥
मन्दिर है प्रभुका नरतन; करले यदि तनमन पावन ।
बनकर तू 'अमर' सुभगवन, दर्श दिलाते जाना ॥

—— * ——





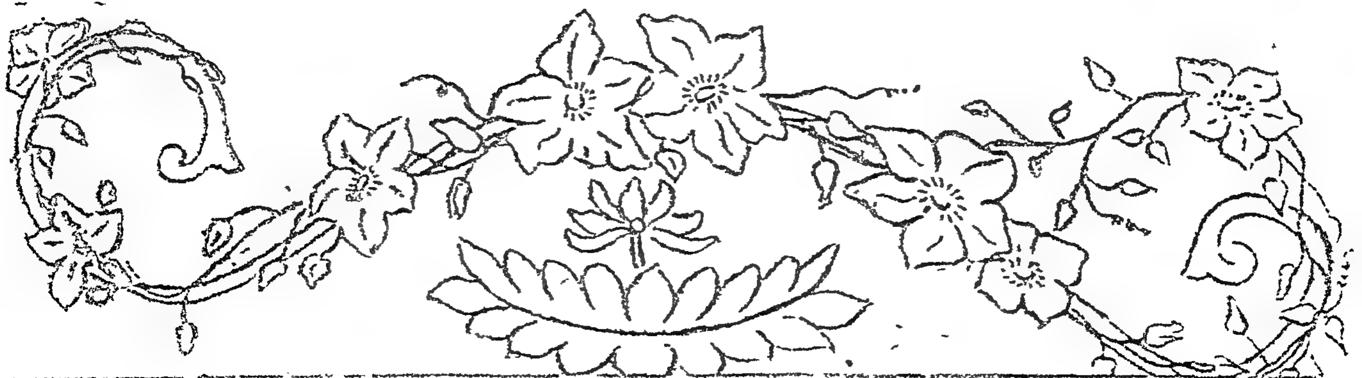
वीर प्रभू के पथ पै......!

स्थायी (कहरवा)

×				o				×				o			
*	प	प	पम	पध	ध-	पप	म	*	रग	ग	स	र	ग	म	प
*	वी	र	प्रऽ	भूऽ	केऽ	पथ	पै	*	कद	म	ब	ढ़ा	ते	जा	ना
*	प	प	पम	पध	धध	प	मम	*	रग	ग	स	र	ग	म	प
*	मा	न	वऽ	जन्	मअ	मो	लक	*	सफ	ल	ब	ना	ते	जा	ना

अन्तरा—

*	ग	प	प	धन	नध	नरं	सं	*	न	न	धप	पध	धन	ध-	प
*	प्रे	म	के	साऽ	ऽथ	रह	ना	*	सब	मी	ठीऽ	कड़	वीऽ	सह	ना
*	प	प	पम	पध	ध-	प-	म	*	रग	ग	स	र	ग	म	प
*	उत्	तर	मेंऽ	कुछ	नाऽ	कह	ना	*	दिल	से	भु	ला	ते	जा	ना





साधू कैसा हो ?

साधुता रखता नहीं साधू हुआ तो क्या हुआ,
भेष की लज्जा नहीं, साधू हुआ तो क्या हुआ ?
सुन्दरी को देखते ही चित्त अति चञ्चल बने,
काम को मारा नहीं, साधू हुआ तो क्या हुआ ?
स्वाद-भोजन चाहे नित, दुःस्वादु पा छीं-छीं करे,
जीभ पर अंकुश नहीं, साधू हुआ तो क्या हुआ ?
दुर्वचन सुनते ही मारे क्रोध के भल्ला उठे,
शत्रु पर समता नहीं, साधू हुआ तो क्या हुआ ?
सिर्फ जीना आता है, मरना कभी आता नहीं,
मौत से हँसता नहीं, साधू हुआ तो क्या हुआ ?
दूसरों के साध्य साधे, व्यर्थ झंझट कर "अमर",
साध्य निज साधा नहीं, साधू हुआ तो क्या हुआ ?

साधुता रखता नहीं……!

(राग तिलककामोद मिश्र) ताल पश्तो

स्थाई—

×			२		३		×			२		३	
सं	–	प	धप	धप	म	म	गर	ग	र	ऩस	रस	ऩ	प़
सा	ऽ	धु	ताऽ	ऽऽ	र	ख	ताऽ	ऽ	न	हींऽ	ऽऽ	सा	ऽ



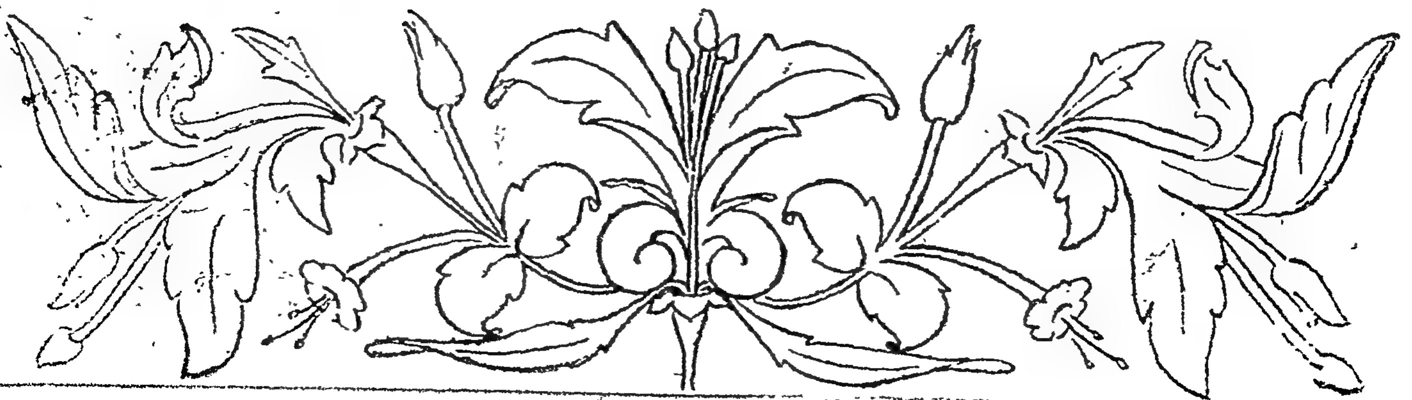


प़	ऩ	ऩ	स	–	रग	मप	मग	रग	सऩ	स	–	–	–
धू	ऽ	हु	आ	ऽ	तोऽ	ऽऽ	क्याऽ	ऽऽ	हुऽ	आ	ऽ	ऽ	ऽ
सं	–	प	धप	धप	म	म	गर	ग	र	ऩस	रस	ऩ	–
मे	ऽ	ष	कीऽ	ऽऽ	ल	ऽ	जाऽ	ऽ	न	हींऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
प़	ऩ	ऩ	स	–	रग	मप	मग	रग	सऩ	स	–	–	–
धू	ऽ	हु	आ	ऽ	तोऽ	ऽऽ	क्याऽ	ऽऽ	हुऽ	आ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

म	–	प	नं	–	न	–	सं	–	न	सं	–	सं	–
सु	ऽ	द	री	ऽ	को	ऽ	दे	ऽ	ख	ते	ऽ	ही	ऽ
प	न	सं	रं	रं	रं	गं	संरं	गं	संन	सं	–	–	–
चि	ऽ	त्त	अ	ति	चं	ऽ	चऽ	ल	चऽ	ने	ऽ	ऽ	ऽ
सं	–	प	धप	धप	म	–	गर	ग	र	ऩस	रस	ऩ	प़
का	ऽ	म	कोऽ	ऽऽ	मा	ऽ	राऽ	ऽ	न	हींऽ	ऽऽ	सा	ऽ
प़	ऩ	ऩ	स	–	रग	मप	मग	रग	सऩ	स	–	–	–
धू	ऽ	हु	आ	ऽ	तोऽ	ऽऽ	क्याऽ	ऽऽ	हुऽ	आ	ऽ	ऽ	ऽ

साधुता रखता नहीं, साधू हुआ तो क्या हुआ ।



जैसी करनी वैसी भरनी

बोवोगे जैसा बीज तरु वैसा लहरायेगा,
जैसा करोगे वैसा ही फल आयेगा।
कूँए में एक बार कुछ भी बोल देखिये,
जैसा कहोगे वैसा ही वह भी सुनायेगा॥
जोड़ोगे हाथ खुद तो दर्पण बिम्ब जोड़ेगा,
चांटा दिखाओगे तो झट चांटा दिखायेगा।
कांटा बनोगे तुम किसी की राह में अड़कर,
कांटा बनेगा एक दिन वह भी सतायेगा॥
थूकोगे गर नादान होकर आफ़ताब पर,
वापिस गिरेगा मुँह पर आ, दुनियां हँसायेगा।
चाहते हैं लोग तुमको कैसा जानना है क्या ?
अपने हृदय से पूछिये वह खुद बतायेगा॥
संसार में मीठे 'अमर' बन कर सदा रहना,
आदर्श नर जीवन तुम्हें ऊँचा उठायेगा।

—※—

बोवोगे जैसा बीज.........!

ताल—दादरा

स्थायी—

×			०			×			०		
ग	म	ग	(स)	–	र	नृ	–	धृ	पृ	पृ	पृ
बो	वो	गे	जै	ऽ	सा	बी	ऽ	ज	त	रु	वै

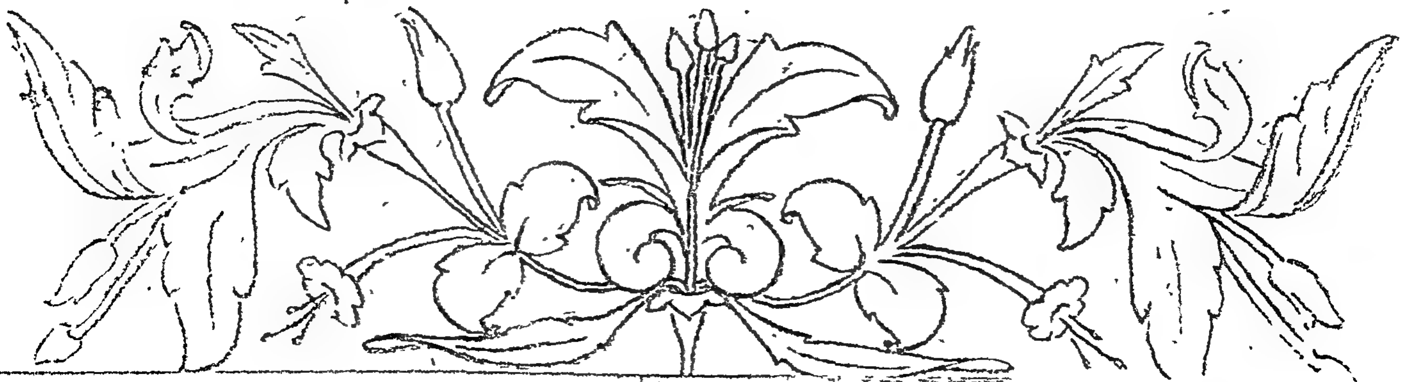


धृ	स	सस	र	ग	र	ग	–	–	–	–	–
सा	ऽ	लह	रा	ऽ	य	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	प	म	र	–	स	नृ	–	धृ	–	पृ	–
जै	सा	क	रो	ऽ	गे	वै	ऽ	सा	ऽ	ही	ऽ
धृ	स	–	र	ग	र	ग	–	–	–	–	–
फ	ल	ऽ	आ	ऽ	ये	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

ग	ग॒	ग	प	ग	प	ध	न	ध	प	ध	प
कुँ	ए	में	ए	ऽ	क	वा	ऽ	र	कु	छ	ऽ
न	–	प	ग	–	ग॒	ग	–	–	–	–	–
वो	ऽ	ल	दे	ऽ	खि	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	ग	(स)	–	र	नृ	–	धृ	–	पृ	–
जै	सा	क	हो	ऽ	गे	वै	ऽ	सा	ऽ	ही	ऽ
धृ	स	स	र	ग	र	ग	–	–	–	–	–
च	ह	सु	ना	ऽ	ये	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

———





कुछ होश की दवा लो !

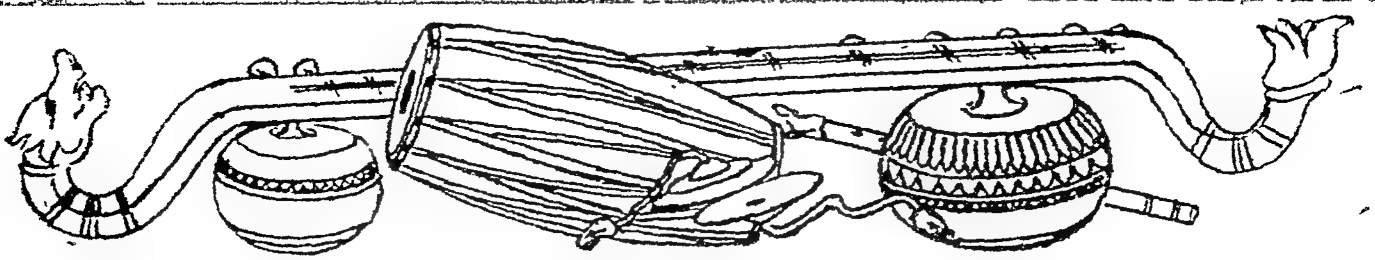
पा के नर जन्म भला व्यर्थ गँवाते क्या हो ?
चार दिन की है हवा, होश भुलाते क्या हो ?
दैत्य रावण की कहां स्वर्ण की लङ्का अब है,
नर्क से घर में घुसे एंठ दिखाते क्या हो ?
यादवों का भी निशां मिट गया जो थे लाखों,
पांच दश पा के स्वजन बग़लें बजाते क्या हो ?
भीम अर्जुन से गए जो हाथी उठाके चलते,
डेढ़ पसली के सड़े तन पै लुभाते क्या हो ?
है कहां आज वह कारूँ का ख़ज़ाना अनुपम,
चन्द चांदी के बने टुकड़े छिपाते क्या हो ?
काल-आंधी के 'अमर' झोंके से उड़ोगे क्षण में,
'मैं हूँ मैं हूँ' का वृथा, शोर मचाते क्या हो ?



पा के नर जन्म भला

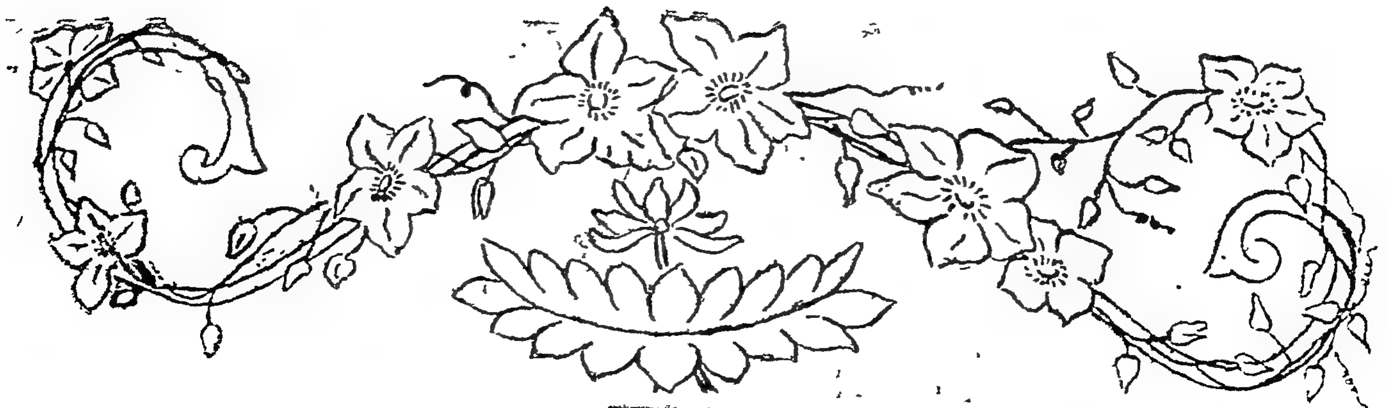
स्थायी—दादरा (मध्यलय)											नि̱
×			०			×			०		पा
स	ग̱	म	प	–	प	प	प	म	प	सं	नि̱
के	न	र	ज	ऽ	न्म	भ	ला	ऽ	व्य	ऽ	र्थ

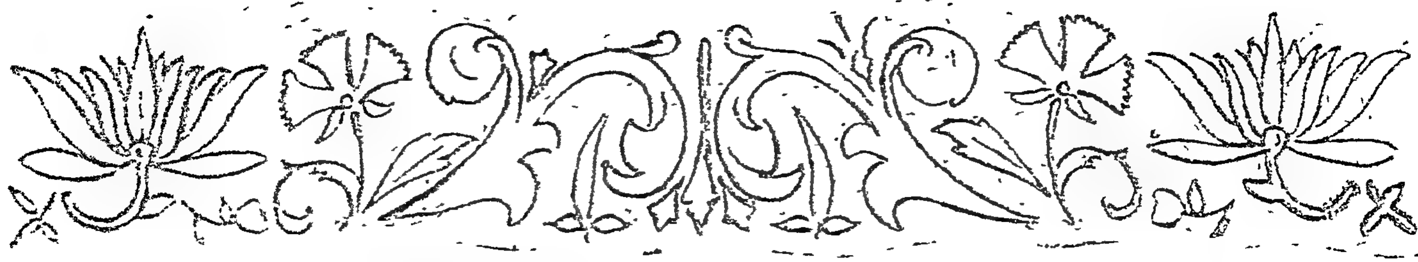




प	म	म	ग	–	ग	स	र	ग़	र	स	ऩ
गँ	वा	ऽ	ते	ऽ	क्या	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	चा
स	ग़	म	प	–	प	प	ध	म	प	सं	ऩ
र	दि	न	की	ऽ	है	ह	वा	ऽ	हो	ऽ	श
प	म	म	ग	–	ग	स	र	ग़	र	स,	ऩ
भु	ला	ऽ	ते	ऽ	क्या	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	पा
अन्तरा —											प दे
ग़	ग़	म	प	न	न	सं	सं	–	न	–	सं
त्य	रा	ऽ	व	ण	की	क	हां	ऽ	स्व	ऽ	र्ण
ध	प	म	प	न	ध	ध	प	–	–	–	ऩ
की	लं	ऽ	का	ऽ	अ	व	है	ऽ	ऽ	ऽ	न
स	ग़	म	प	प	प	प	ध	म	प	सं	ऩ
कं	से	ऽ	घ	र	में	घु	से	ऽ	ए	ऽ	ठ
प	म	म	ग	–	ग	स	र	ग़	रग़	रस,	ऩ
दि	खा	ऽ	ते	ऽ	क्या	ऽ	हो	ऽ	ऽऽ	ऽऽ,	पा

के नर जन्म भला व्यर्थ गँवाते क्या हो ?





अछूत !

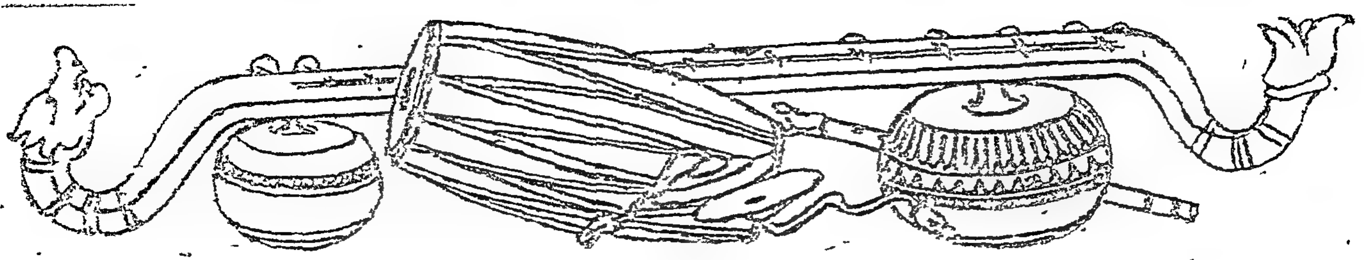
दलितों को तंग करके क्या फ़ायदा उठाया,
अफ़सोस जो उठाया, नुकसान ही उठाया !
अंत्यज, अछूत, पामर, महानीच, म्लेच्छ, पापी,
अप शब्द बोल क्या-क्या, गौरव सभी नशाया !
सम्बन्ध छोड़ सारे हा बैठे होके पगले,
हां हिन्द को तुम्हीं ने मुरदार यों बनाया !
दुर-दुर से तङ्ग आ-आ कितने हुए विधर्मी,
अब भी तो हो रहे हैं, फिर भी न होश आया !
गो भक्त की दशा में नफ़रत थी छाया तक से,
गो भक्षी हो सिराहने सादर बुला बिठाया !
मिट के रहेगी हस्ती, बस यह रही सही भी,
दलितों को गर 'अमर' अब सीने से ना लगाया !

——*——

स्थायी—कहरवा (मध्यलय)

×				०				×				०			
ऩ	स	र	–	स	र	–	स	ऩ	ऩ	स	–	र	ग	म	–
द	लि	तों	ऽ	को	तं	ऽ	ग	क	र	के	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	म	–	म	म	–	ग	र	ग	ग	–	र	–	स	–
क्या	ऽ	फा	ऽ	य	दा	ऽ	उ	ठा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ऱ	म	ग़	–	र	स	–	र	ऩ	–	स	–	–	–	–	–
क्या	ऽ	फा	ऽ	य	दा	ऽ	उ	ठा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ



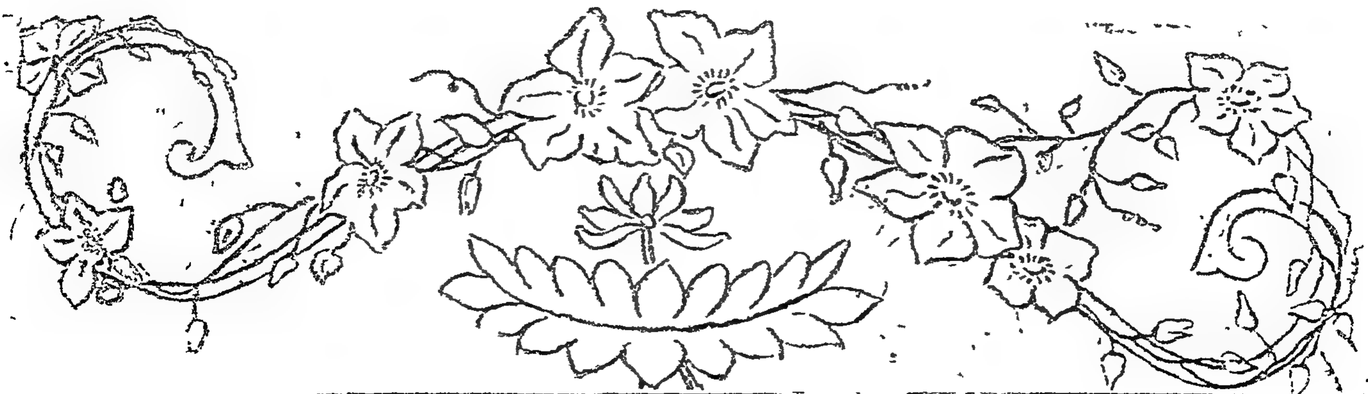


ऩ	स	र	–	स	र	–	स	ऩ	–	स	–	र	ग	म	–
अ	फ़	सो	ऽ	स	जो	ऽ	उ	ठा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	म	–	म	म	–	ग	र	ग	ग	–	र	–	स	–
नु	क	सा	ऽ	न	ही	ऽ	उ	ठा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
र	म	ग॒	–	र	स	–	र	ऩ	–	स	–	–	–	–	–
नु	क	सा	ऽ	न	ही	ऽ	उ	ठा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

ग	प	म	ग	ग	र	–	ग	म	प	प-	–	–	–	–	–
अं	ऽ	त्य	ज	अ	छू	ऽ	त	पा	ऽ	मर	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध	न॒	न॒	–	प	ध	–	म	ग	प	म	–	–	–	–	–
म	हा	नी	ऽ	च	म्ले	ऽ	च्छ	पा	ऽ	पी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध	न॒	न॒	–	प	ध	–	म	ग	र	र	ग	–	–	–	–
अ	प	श	ऽ	ब्द	वो	ऽ	ल	क्या	ऽ	क्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
र	म	ग॒-	–	र	स	–	ऩ	स	र	र	–	स	–	ऩ	–
गौ	ऽ	रव	ऽ	स	भी	ऽ	न	शा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
र	म	ग॒	–	र	स	–	र	ऩ	–	स	–	–	–	–	–
गौ	ऽ	र	व	स	भी	ऽ	न	शा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

———





जीवन के अन्तिम क्षण में !

भगवन् ! प्रसन्न हम हों, जब प्राण तन से निकलें,
आदर्श विश्व के हों, जब प्राण तन से निकलें।
उदयास्त राज्य ठुकरा, सानन्द सत्य कारण,
फांसी पै झूलते हों, जब प्राण तन से निकलें ॥
वन-न्याय-पक्षी, हस्ती अन्याय की मिटाने,
सिर हाथ ले खड़े हों, जब प्राण तन से निकलें।
रक्षार्थ जातिशत्रू की भी शरण में आये,
जी-जान होमते हों, जब प्राण तन से निकलें ॥
भूखों अपाहिजों को सर्वस्व दे दिलाकर,
उपवास हो रहे हों, जब प्राण तन से निकलें।
ऋण मातृ-भूमि का सब, डंके की चोट देकर,
जय-घोष गूंजते हों, जब प्राण तन से निकलें ॥
हँसते ही हों 'अमर' हम रोता हो देश सारा,
मर कर भी जी रहे हों, जब प्राण तन से निकलें।

——※——

भगवन् ! प्रसन्न हम

(राग तेलंग) ताल दादरा

			स्थायी --							ग	म
×			०			×			०	भ	ग
प	सं	नु	प	नु	प	ग	म	ग	-	स	स
व	न्	प्र	स	ऽ	न्न	ह	म	हों	ऽ	ज	व





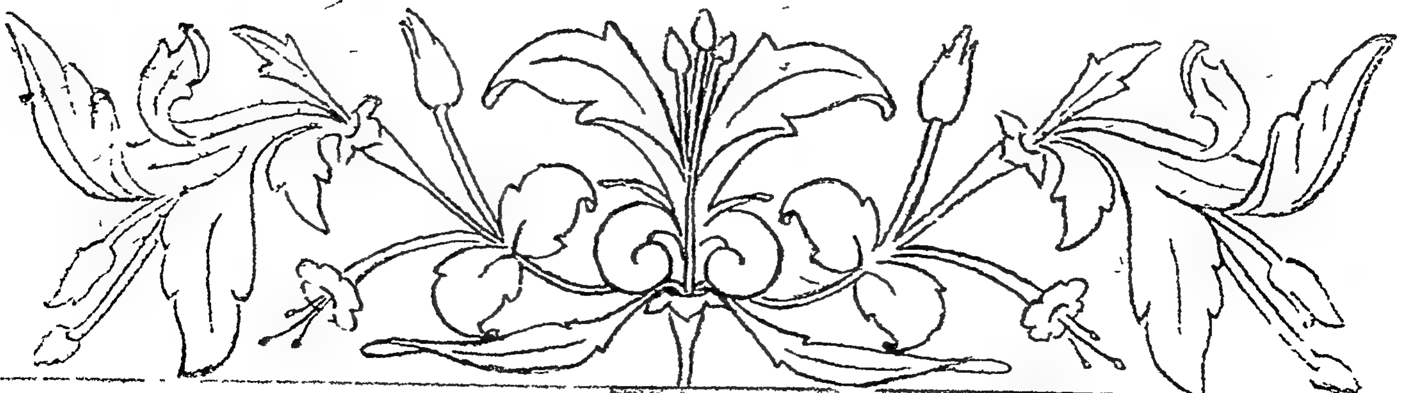
नु	नु	स	ग	ग	म	प	नु	प	म	ग	म
प्रा	ऽ	ण	त	न	से	नि	क	लें	ऽ	आ	ऽ
प	सं	सं	नु	नु	प	ग	म	ग	–	स	स
द	ऽ	र्श	वि	ऽ	श्व	के	ऽ	हों	ऽ	ज	व
नु	नु	स	ग	ग	म	प	नु	प	म	ग	म
प्रा	ऽ	ण	त	न	से	नि	क	लें	ऽ	भ	ग

वन प्रसन्न ……… ।

अन्तरा--

										ग	म
										उ	द
प	नु	प	न	–	न	सं	सं	सं	–	न	सं
या	ऽ	स्त	रा	ऽ	ज्य	ठु	क	रा	ऽ	सा	ऽ
गं	–	सं	नु	–	प	ग	म	ग	ग,	गं	–
नं	ऽ	द	स	ऽ	त्य	का	ऽ	र	ण,	फां	ऽ
गं	सं	सं	नु	नु	प	ग	म	ग	–	स	स
सी	ऽ	वै	भू	ऽ	ल	ते	ऽ	हों	ऽ	ज	व
नु	नु	स	ग	ग	म	प	नु	प	म	ग	म
प्रा	ऽ	ण	त	न	से	नि	क	लें	ऽ	भ	ग

वन् प्रसन्न हम हों……… ।



भगवान् कहां !

अफ़सोस है, मुझे तुम यहां–वहां तो ढूँढ़ते हो,
मौजूद हूँ जहां में वहां पर न ढूँढ़ते हो।
मंदिर व मस्जिदों में गिरजा घरों के भीतर,
सोता हूं आलसी क्या वहां जा पुकारते हो ॥
काशी जेरूसेलम में मक्का में कैद हूं क्या ?
मिलने मुझे जो वहां तुम बेसांस दौड़ते हो।
लज्जा से डूबा हूँ क्या गंगा गोदावरी में,
बाहर निकालने को जो उसमें कूदते हो ॥
दीनों व दुःखितों की सेवा में रहता हूं मैं,
हिम्मत हो जिनकी देखो क्यों दूर भागते हो।
मिलना अगर मिलो यहां, सेवाव्रती "अमर" हो,
नहिं तो ये भक्तपन का क्यों ढोंग बांधते हो ?

——❊——

अफ़सोस है मुझे तुम.........!

				स्थायी (दादरा)						ऩ	स
×			०			×			०	अ	फ़
र	–	र	रग	म	म	र	ग़	र स	स	ऩ	स
सो	ऽ	स	हैऽ	ऽ	मु	झे	ऽ	तु	म	य	हां
र	म	म	रम	पध	प	ग़	–	ग़	म	स ऩ	स
व	हां	तो	ढूँऽ	ऽऽ	ढ़	ते	ऽ	हो	ऽ	मौ	ऽ



र	–	र	रग	म	म	र	ग़ु	र स	–	ऩ	स
जू	ऽ	द	हूँऽ	ऽ	ज	हां	ऽ	मैं	ऽ	व	हां
र	म	म	रम	पध	प	ग़ु	–	ग़ु	म	र	ऩस
प	र	न	ढूँऽ	ऽऽ	ढ़	ते	ऽ	हो	ऽ	अ	फ़ऽ

सोस है मुझे तुम यहां-वहां तो ढूँढ़ते हो ।

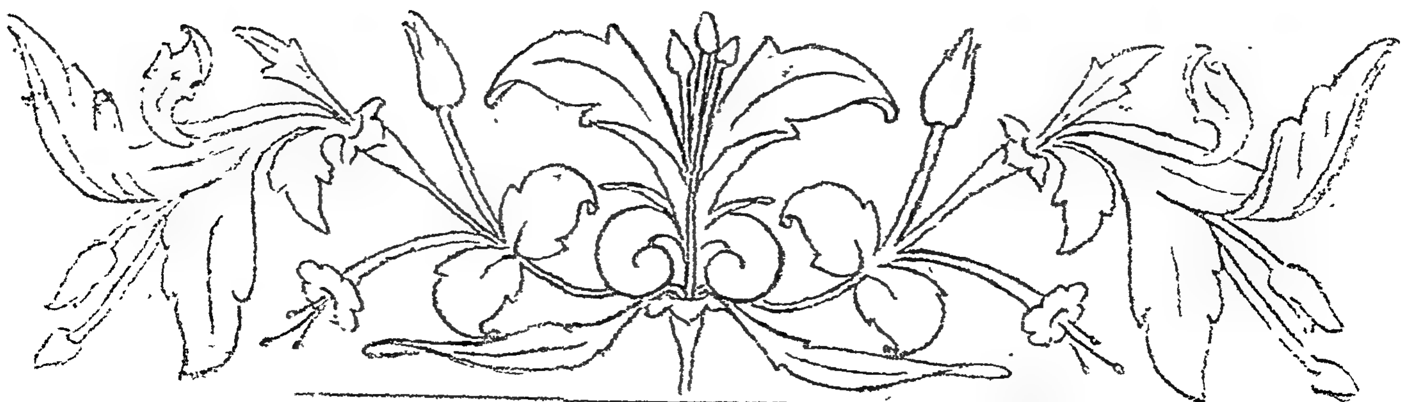
अन्तरा (ठेका वन्द)

ध	–	ध–	ध	ध	–	ध	पध	ऩ	–	ध प	–	म	म	म	–	प
मं	ऽ	दि्र	व	मस	ऽ	जि	दोंऽ	ऽ	ऽ	मैं	ऽ	गि	र	जा	ऽ	ध
प	–	प	रम	पध	मप	ग़ु	र									
रों	ऽ	के	भीऽ	ऽऽ	ऽऽ	त	र									

ठेका वन्द--	ऩ	स
	सो	ऽ

र	–	र	रग	म	म	र	ग़ु	स	–	ऩ	स
ता	ऽ	हूँ	आऽ	ऽ	ल	सी	ऽ	क्या	ऽ	व	हां
र	म	म	रम	पध	प	ग़ु	–	ग़ु	म	र	ऩस
जा	ऽ	पु	काऽ	ऽऽ	र	ते	ऽ	हो	ऽ	अ	फ़

सोस है मुझे तुम यहां-वहां तो ढूँढ़ते हो, मौजूद हूँ जहां पर वहां पर न ढूँढ़ते हो।



काहे बिछावे जाल अनारी........!

काहे बिछावे जाल अनारी।

क्या खुश होता दीन सताकर, अपने बल का जोर जताकर,
आगे कुटेगी खाल, अनारी।

सदा यहां पर रहना नहीं है, आखिर आगे जाना सही है,
चाहे चला लख चाल, अनारी॥

तूतो बेसुध नींद में सोता, वक्त अमोलक पाप में खोता,
सिर पे फिरता काल, अनारी।

जोड़ा जो महापाप करम कर, होगा सहाय न कष्ट पड़े पर,
तेरा कभी धन माल, अनारी॥

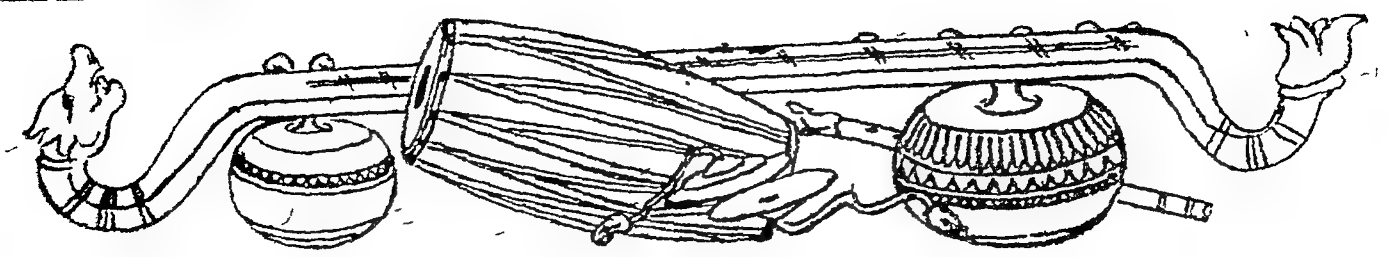
मतलब के हैं सब संगाती, बिन मतलब सूरत ना भाती,
काहे फँसा बेहाल, अनारी।

गर तू 'अमर' अमर पद चाहता, भजले वीर सदा सुखदाता,
सकल मिटें जञ्जाल, अनारी॥

राग—जोगिया मिश्र, ताल—दादरा (मध्यलय)

स्थायी—

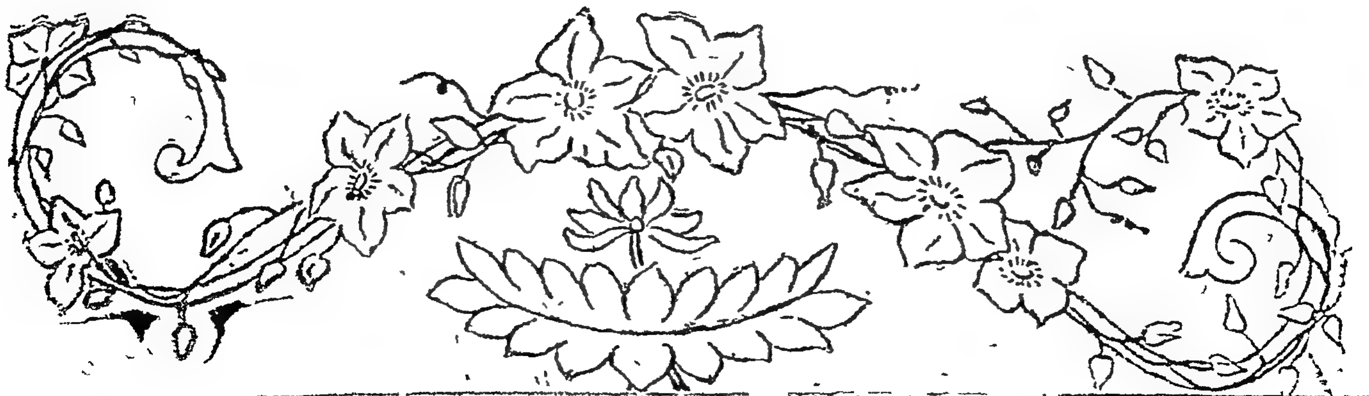
×	.		०			×			०		
स	रे॒	स	म	म	—	प	नु॒-	ध॒	प	म	—
का	हे	बि	छा	वे	ऽ	जा	लऽ	अ	ना	री	ऽ
रे॒	म	म	म	रे॒	रे॒	स	—	—	—	—	—
का	हे	बि	छा	ऽ	वे	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ

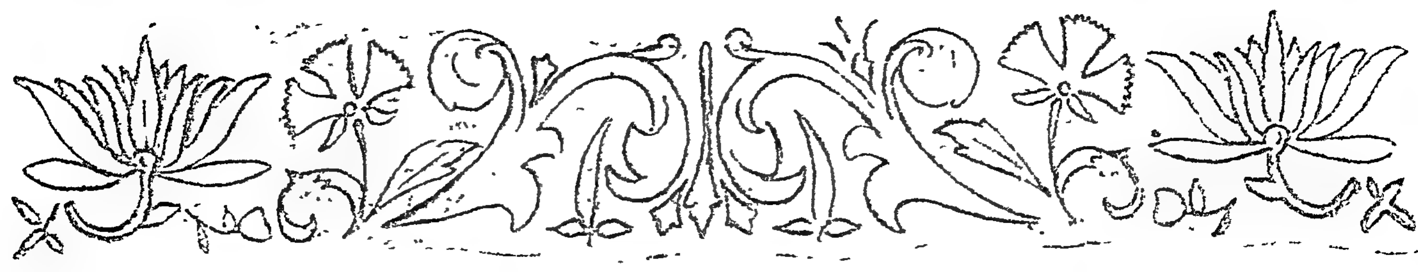


ध	ध	ध	ध	प	–	प,	न	न	ध	प	प
क्या	खु	श	हो	ता	ऽ	दी,	न	स	ता	क	र
पध	ध	–	नन	सं	सं	रें	–	रें	रें	सं	सं
अप	ने	ऽ	बल	का	ऽ	जो	ऽर	ज	ता	क	र
न	न	सं	ध	ध	प	म	म	म	रे	–	स
आ	गे	कु	टे	ऽ	गी	खा	ल	अ	ना	ऽ	री
रे	म	म	म	रे	रे	स	–	–	–	स	–
का	हे	वि	छा	ऽ	वे	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ

अन्तरा--

स	रे	स	म	म	म	प-	ध	प	न	सं	सं
स	दा	य	हां	प	र	रह	ना	न	हीं	है	ऽ
रें	रें	रें	रें	रें	–	मं	मं	मं	रें	सं	–
आ	खि	र	आ	गे	ऽ	जा	ना	स	ही	है	ऽ
न	न	सं	ध	ध	प	म	–	म	रे	स	–
चा	हे	च	ला	ल	ख	चा	ऽल	अ	ना	ऽ	री
रे	म	म	म	रे	रे	स	–	–	–	स	–
का	हे	वि	छा	ऽ	वे	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ





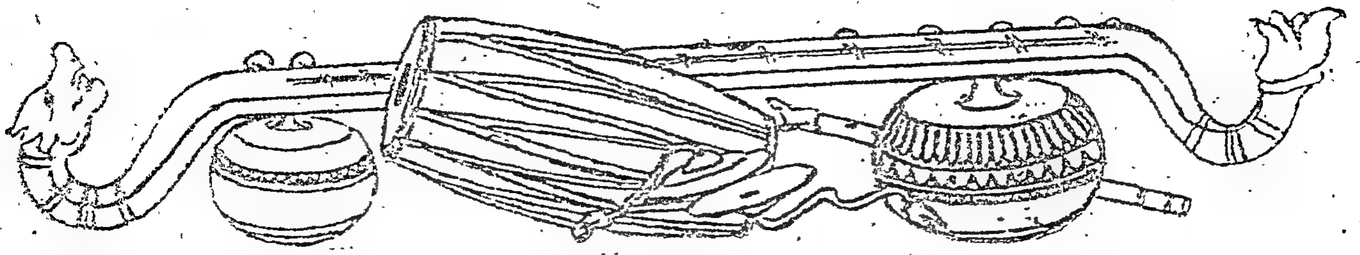
दया बिन बावरिया

दया विन बावरिया, हीरा जन्म गँवाये।
कि पत्थर से दिल को, क्यों ना फूल बनाये॥
कोमलता का भाव न मन में,
फिर क्या सुन्दरता से तन में।
जीवन विष बरसाये॥
दीन दुखी की सेवा कर ले,
पाप-कालिमा अपनी हर ले।
तिहुँ-जग मङ्गल गाये॥
धन लक्ष्मी का गर्व न करना,
आख़िर को सब तज कर मरना।
पर-हित क्यों न लुटाये॥
यह जीवन है एक कहानी,
पाप पुण्य है शेष निशानी।
'अमर' सत्य समझाये॥

(कहरवा)

					स्थायी—										म
०				×				०				×			द
ग़	र	स	ऩ	स	–	र	र	ग़	–	–	–	स	र	र	–
या	ऽ	वि	न	वा	ऽ	व	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ	ही	ऽ	रा	ऽ





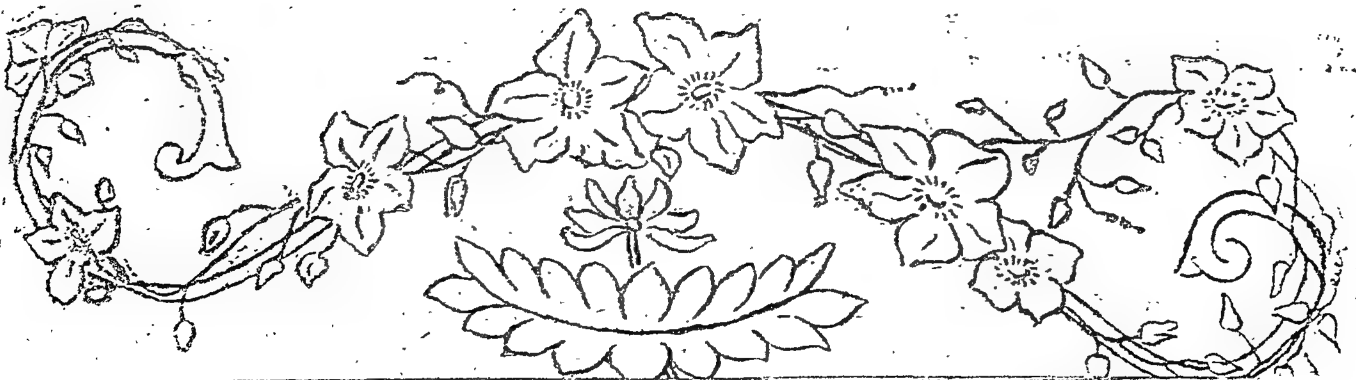
र	म	ग़	र	स	स	–	म	ग़	र	स	ऩ	स	–	र	र
ज	न	म	गँ	वा	ये	ऽ	कि	प	ऽ	त्थ	र	से	ऽ	दि	ल
ग़	–	–	–	स	र	र	–	र	म	ग़	र	स	स	–	म
को	ऽ	ऽ	ऽ	क्यों	ऽ	ना	ऽ	फू	ऽ	ल	व	ना	ये	ऽ	द

या विन वावरिया हीरा जन्म गँवाये।

अन्तरा—

*	न	न	न	न	सं	न	सं	*	ऩ	ध	ऩ	प	ऩ	ध	प
*	को	म	ल	ता	ऽ	का	ऽ	*	भा	व	न	म	न	में	ऽ
*	ऩ	ऩ	ऩ	ध	–	प	प	*	ग़	र	स	सर	ग़	र	–
*	फि	र	क्या	सु	ऽ	द	र	*	ता	ऽ	है	तऽ	न	में	ऽ
*	प	प	म	प	ऩ	ध	प	म	–	म	ग़	र	ग़	स	ऩ
*	जी	व	न	वि	प	व	र	सा	ऽ	य	द	या	ऽ	वि	न

वावरिया हीरा जन्म गँवाये।





कर्तव्य का भान !

ओ मनुज ! कर्तव्य का कुछ भान होना चाहिये,
सच्चे अर्थों में तुझे इन्सान होना चाहिये !
ज़िन्दगी और मौत दोनों आनी-जानी चीज़ हैं,
पूर्वजों की आन पर बलिदान होना चाहिये !
क्यों बनाया दिल को मुर्दा, इसमें देशोद्धार का,
शान्त हो न कदापि वह तूफ़ान होना चाहिये !
दीन दुखिया जब कभी कोई भी आये गांव में,
प्रेम से तव घर सभी का स्थान होना चाहिये !
श्रेय-प्रेय मिले हुए हैं विश्व के हर काम में,
श्रेय की ही ओर हरदम ध्यान होना चाहिये !
हर किसी भी देश का या धर्म का महापुरुष हो,
ऐ 'अमर' दिल में तेरे सम्मान होना चाहिये !

—*—

ओ मनुज कर्तव्य का कुछ.......!

स्थायी (ठेका कव्वाली)

×				०				×				०			
*	ऩ	−	ऩ	स	र	र	र	* म	−	−	म	म	प	ग़	ग़
*	ओ	ऽ	म	नु	ज	क	र	* त	ऽ	ऽ	व्य	का	ऽ	कु	छ

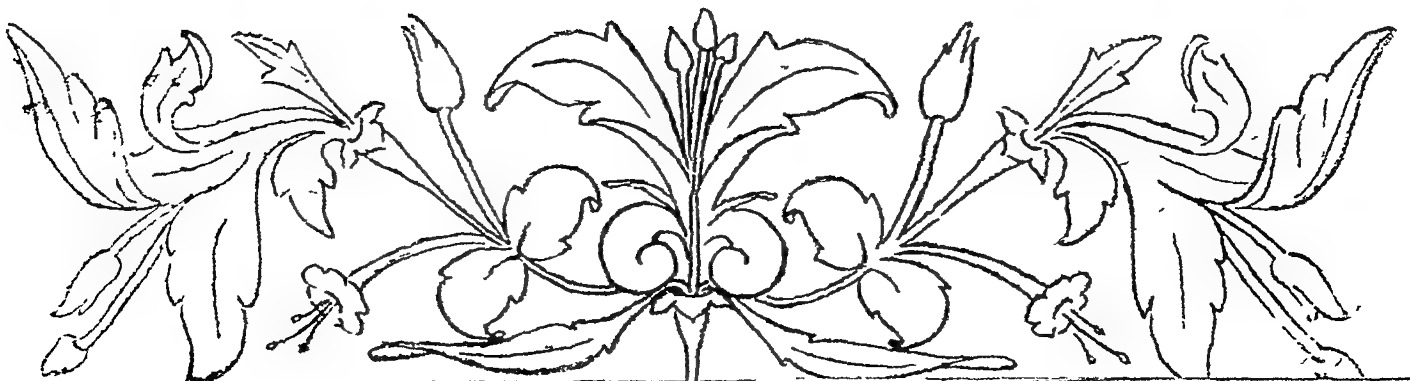




*	र	–	स ऩ	स	–	र	ग़	स	–	–	ऩ	स	–	–	–	
*	ध्या	ऽ	न	हो	ऽ	ना	ऽ	चा	ऽ	ऽ	हि	ये	ऽ	ऽ	ऽ	
*	ऩ	–	ऩ	स	र	र	–	*	म	–	म	म	प	ग़	–	
*	स	ऽ	च्चे	अ	र	थों	ऽ	*	में	ऽ	तु	झे	ऽ	ऽ	ऽ	
र	र	–	ऩ	स	–	र	ग़	स	–	–	ऩ	स	–	–	–	
ई	सा	ऽ	न	हो	ऽ	ना	ऽ	चा	ऽ	ऽ	हि	ये	ऽ	ऽ	ऽ	

अन्तरा—

*	प	–	प	प	–	ग	म	*	प	–	प	प	–	प	–	
*	ज़ि	ऽ	द	गी	ऽ	अ	रु	*	मौ	ऽ	त	दो	ऽ	नों	ऽ	
*	प	–	ध	प	–	म	–	ग	–	–	र	र	ग	म	–	
*	आ	ऽ	नी	जा	ऽ	नी	ऽ	ची	ऽ	ऽ	ज़	हैं	ऽ	ऽ	ऽ	
*	ऩ	–	ऩ	स	र	र	–	*	म	–	म	म	प	ग़	ग़	
*	पू	ऽ	र्वं	जों	ऽ	की	ऽ	*	की	ऽ	र्तिं	प	र	व	लि	
*	र	–	ऩ	स	–	र	ग़	स	–	–	ऩ	स	–	–	–	
*	दा	ऽ	न	हो	ऽ	ना	ऽ	चा	ऽ	ऽ	हि	ये	ऽ	ऽ	ऽ	



भला साधु !

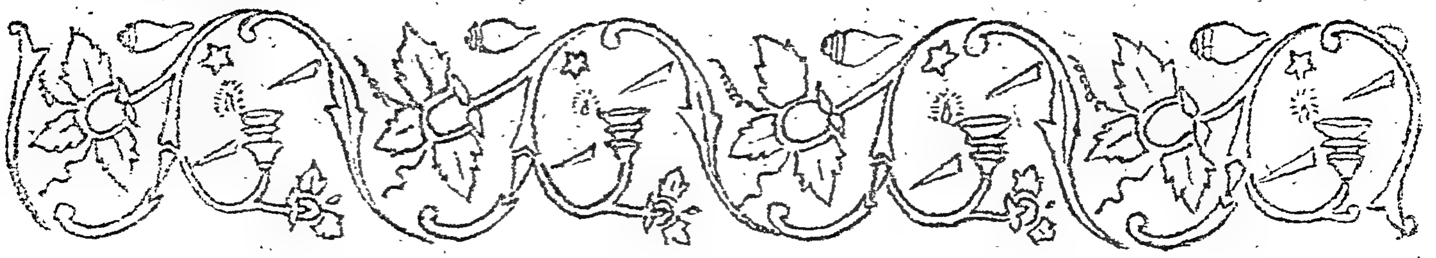
भला वह है साधू जो दिल का भला है,
उपरि भेष खाली तो खाली बला है।
विषय-भोग जग के उसे क्या डिगाएँ,
अटल मेरु सांचे में पूरा ढला है॥
प्रशंसाव निन्दा की परवा न बिलकुल,
सनक ध्येय की है विकट बावला है।
डराये कोई नग्न खंजर दिखा के,
कहे हंस के लीजे यह नश्वर गला है॥
तजे सर्व प्रियजन विचारे विलखते,
जगत-हित की ख़ातिर विकल उठ चला है।
'अमर' भिक्षु ऐसे बनो, हां, नहीं तो,
लुटेरों का यह भी नया काफ़ला है॥

——*——

भला है वह साधू..............!

राग भीमपलासी, ताल-झपताल

स्थायी--										स
×		२			०		३			भ
नृ	स	गृ	म	प	प	नृ	ध	प	प	
ला	ऽ	व	ह	है	सा	ऽ	धू	ऽ	जो	

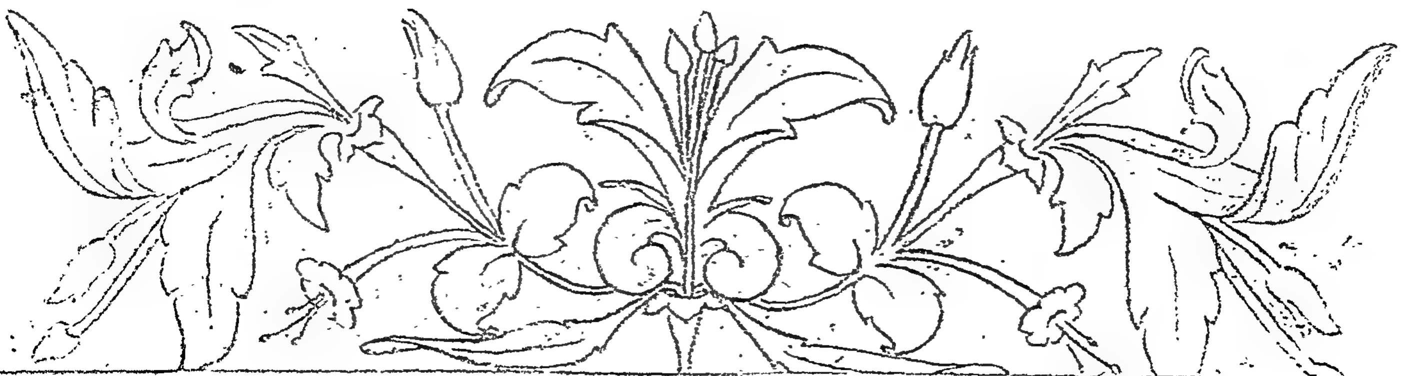


ग॒	स	ग॒	म	प	ग॒	र	स	–	स
दि	ल	का	ऽ	भ	ला	ऽ	है	ऽ	उ
न॒	स	ग॒	म	प	प	न॒	सं	–	सं
प	र	भे	ऽ	ष	खा	ऽ	ली	ऽ	तो
न॒	ध	प	ग॒	म	प	ग॒	र	स	स
खा	ऽ	ली	ऽ	व	ला	ऽ	हे	ऽ	भ

अन्तरा—

									प
									वि
प	प	ग॒	–	म	प	न॒	सं	–	सं
ष	य	भो	ऽ	ग	ज	ग	के	ऽ	उ
न॒	सं	गं॒	–	रं	सं	–	न॒	ध	प
से	ऽ	क्या	ऽ	डि	गा	ऽ	एँ	ऽ	अ
गं॒	रं	सं	–	न॒	ध	प	ग॒	–	म
ट	ल	मे	ऽ	रू	सां	ऽ	चे	ऽ	में
प	–	ग॒	–	म	ग॒	र	स	–	स
पू	ऽ	रा	ऽ	ढ	ला	ऽ	है	ऽ	भ

———





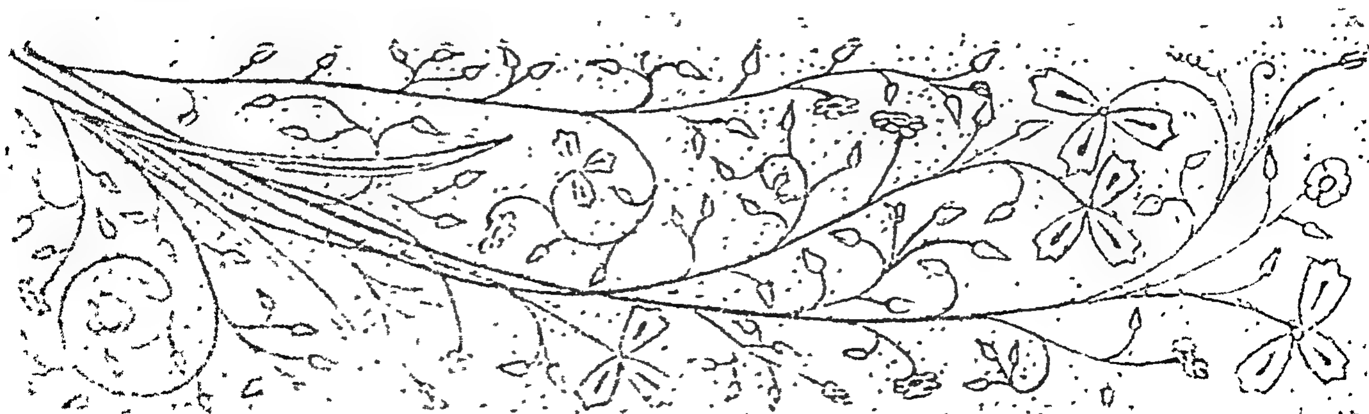
विद्या की आवश्यकता !

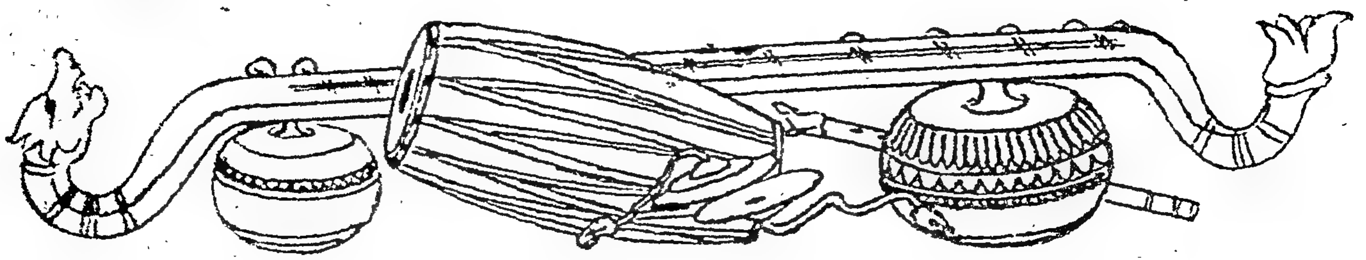
कौन कहता है कि विद्या लाभ पहुंचाती नहीं,
वक्त आने पर कभी क्या काम यह आती नहीं ?
ज्ञान ही का फ़र्क है इन्सान वा हैवान में,
हैं पशू वे भी बशर विद्या जिन्हें भाती नहीं ॥
दूर देशों में जहां कोई न अपनी जान का,
क्या सुविद्या उस जगह सत्कार करवाती नहीं।
मूर्ख की मैंने कहीं पर भी कदर देखी नही,
जगमगाती रत्नज्योती कांच में पाती नहीं ॥
प्रेम भाव प्रसारिणी वर वस्तु इस संसार में,
कोई विद्या के सिवा मुझको नजर आती नहीं।
खूँ पसीना एक कर चाहे 'अमर' जाकर कहीं,
किन्तु विद्या बिन कभी यह दीनता जाती नहीं ॥

कौन कहता है कि विद्या.........!

राग विन्द्रावनी सारंग, स्थायी (ताल रूपक)

×	२		३		×			२		३	
पन संरं सं	नु	प	म	प	र	म	र	नृ	–	स	–
कौऽ ऽऽ न	क	ह	ता	ऽ	है	ऽ	कि	वि	ऽ	द्या	ऽ





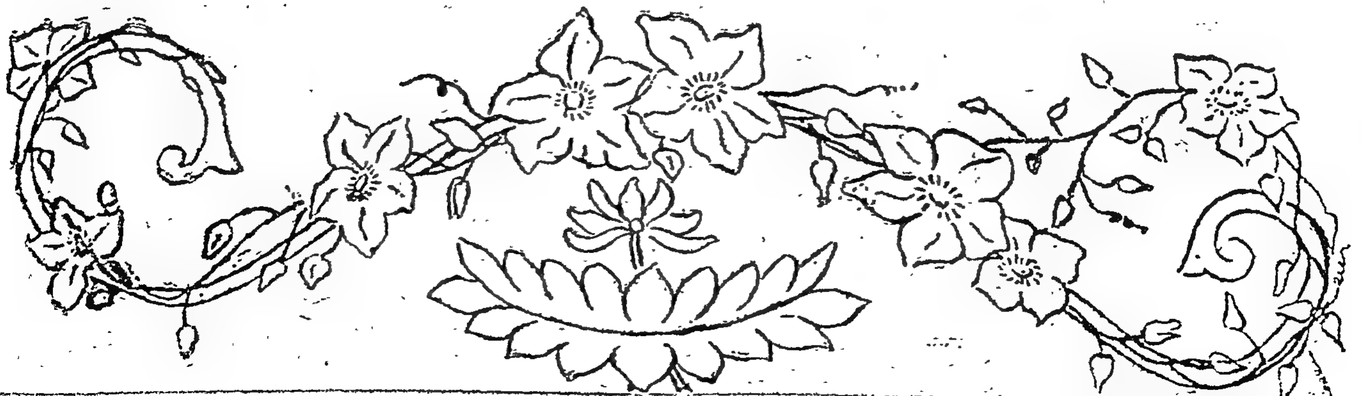
र म र	म प	नु प	मप नसं रंमं	रंसं नुप	मप नसं
ला ऽ भ	प हुं	चा ऽ	तीऽ ऽऽ नऽ	हींऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ
पन संरं सं	नु प	म प	र म र	नु –	स –
वऽ ऽऽ क्त	आ ऽ	ने ऽ	प र क	भी ऽ	क्या ऽ
र म र	म प	नु प	मप नसं रंमं	रंसं नुप	मप नसं
का ऽ म	य ह	आ ऽ	तीऽ ऽऽ नऽ	हींऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ

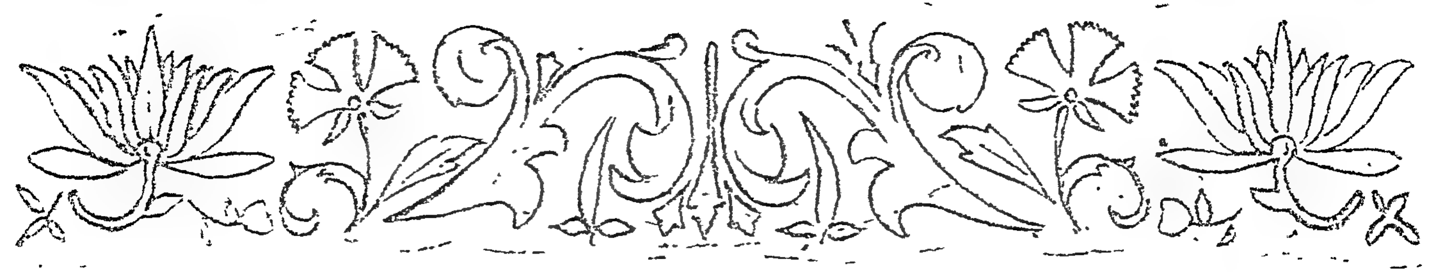
अन्तरा—

म – प	नु प	न –	सं – सं	सं –	सं सं
ज्ञा ऽ न	ही ऽ	का ऽ	फ़ ऽ कं	है ऽ	इ न
न – सं	रं मं	रं सं	नु – सं	नु –	प –
सा ऽ न	वा ऽ	है ऽ	वा ऽ न	में ऽ	ऽ ऽ
पन संरं सं	नु प	म प	र म र	नु नु	स –
हैंऽ ऽऽ प	शु ऽ	वे ऽ	भी ऽ व	श र	वि ऽ
र म र	म प	नु प	मप नसं रंमं	रंसं नुप	मप नसं
या ऽ जि	न्हें ऽ	भा ऽ	तीऽ ऽऽ नऽ	हींऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ

कौन कहता है कि विद्या लाभ पहुंचाती नहीं।

वक्त आने पर कभी क्या काम यह आती नहीं॥





क्या करना चाहिये !

जगत रङ्ग   ख़ुद को ऊंचा उठाना ।
　　　　ख़बरदार खाका न अपना उड़ाना ॥
बुराई से कोसों अलग दूर रहना ।
　　　　भलाई में हरदम दिलोजां जुटाना ॥
अगर रंजोग़म की कहीं आग सुलगे ।
　　　　वहा चश्मा रहमत का जल्दी बुझाना ॥
सदाक़त के कांटों पर हँस-हँस के चलना ।
　　　　प्रलोभन के गुल पै न हर्गिज़ भुलाना ।
रखो प्यारा फूलों सा खुशरङ्ग जीवन ।
　　　　न दिल कांटा बनके किसी का दुखाना ॥
बेख़ौफ़ो ख़तर रहना बुज़दिल न बनना ।
　　　　'अमर' धर्म अपने पै सब कुछ लुटाना ॥

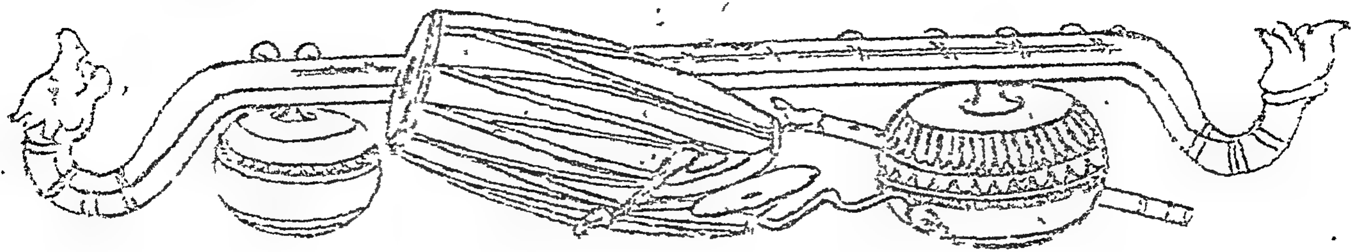
—— * ——

ताल—झपताल

स्थायी—

									स
×		२			०		३		ज
र	ग	नि॒	न॒	स	र	म	प	ध	ध
ग	त	रं	ग	में	अ	प	ने	ऽ	को
म	–	ग	–	स	र	ग	स	–	स
ऊं	ऽ	चा	ऽ	उ	ठा	ऽ	ना	ऽ	ख





र	म	प	ध	ध	पध	नु	ध	-	म
व	र	दा	ऽ	र	खाऽ	ऽ	का	ऽ	न
प	प	ग	-	म	ग	-	स	-	स
अ	प	ना	ऽ	उ	ड़ा	ऽ	ना	ऽ	ज

गत रङ्ग में अपने को ……… …।

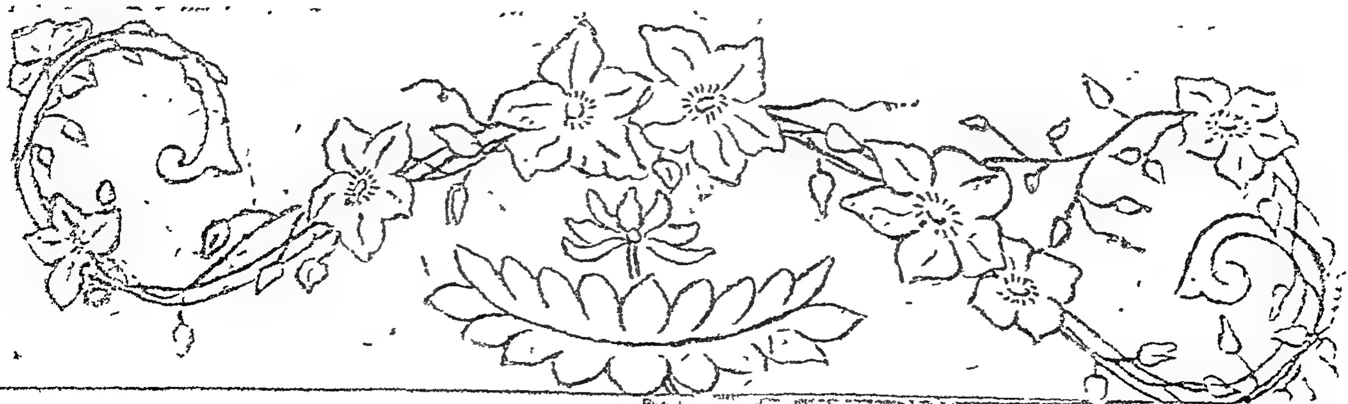
अन्तरा—

म
वु

म	प	न	-	न	न	सं	सं	-	सं
रा	ऽ	ई	ऽ	से	को	ऽ	सौं	ऽ	अ
रं	गं	गं	-	सं	रं	रं	सं	-	सं
ल	ग	दू	ऽ	र	र	ह	ना	ऽ	भ
रं	मं	गं	-	सं	सं	सं	प	प	प
ला	ऽ	ई	ऽ	में	ह	र	द	म	दि
पध	रं	सं	-	प	मप	ध	म	ग	स
लोऽ	ऽ	जां	ऽ	जु	टाऽ	ऽ	ना	ऽ	ज

गत रङ्ग में अपने को……………।

शेष अन्तरे भी इसी प्रकार कहिये।



चण्ड कौशिक का उद्धार !

(महावीर–वाणी)

मैं नहीं ठहरूँगा हर्गिज़ मार्ग मेरा छोड़दो,
वंधुओ ! मेरी तरफ की व्यर्थ चिन्ता छोड़दो ।
स्वप्न में भी भय के मारे भीत मैं होता नहीं,
मैं तो भय का भी हूँ भय, हा-हू मचाना छोड़दो ।
मौत मेरे सामने कर जोड़ थर–थर कांपती,
मैं मदारी मौत का, झूँठा डरावा छोड़दो ।
अग्नि, जल, विष, शस्त्र इनका देह तक संवंध है,
आत्मा तो अखंड अविनाशी है आगा छोड़दो ।
हम मुनी हैं स्थूल दुनियां से निराला मार्ग है,
मृत्यु में जीवन है लेना अपनी वाधा छोड़दो ।
जो तुम्हारा सर्प है हां, मित्र है मेरा वही,
मित्र के मिलने में देरी यों लगाना छोड़दो ।
विश्व–हित के हित 'अमर' पागल वना फिरता हूँ मैं,
देखना होता है क्या, पथ से डिगाना छोड़दो ।

—— * ——

मैं नहीं ठहरूँगा हर्गिज़........!

स्थायी (ठेका कव्वाली)

×				×				×				×			
*	ऩ॒	-	ऩ॒	स	र	र	र	*	म	-	म	म	प	ग॒	ग॒
*	मैं	ऽ	न	हीं	ऽ	ठ	ह	*	रूँ	ऽ	गा	ह	र	गि	ज़

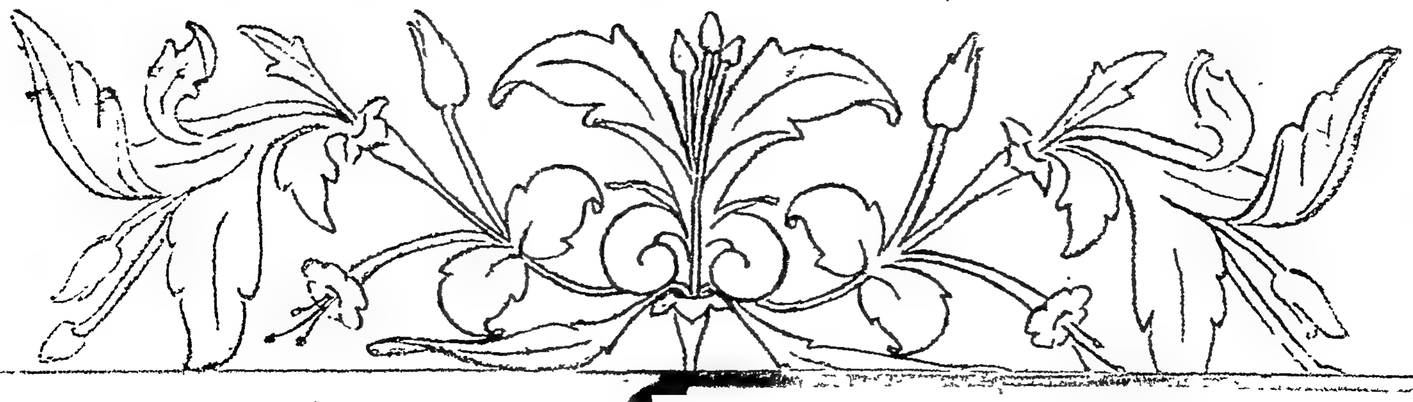




*	र	–	ऩ	सं	र	र	ग॒	स	–	–	ऩ	स	–	–	–
*	मा	ऽ	र्ग	मे	ऽ	रा	ऽ	छो	ऽ	ऽ	ड़	दो	ऽ	ऽ	ऽ
*	ऩ	–	ऩ	स	र	र	–	*	म	–	म	म	प	ग॒	–
*	वं	ऽ	धु	ओ	ऽ	मे	ऽ	*	री	ऽ	त	र	फ	की	ऽ
*	र	–	ऩ	स	र	र	ग॒	स	–	–	ऩ	स	–	–	–
*	व्य	ऽ	र्थ	चिं	ऽ	ता	ऽ	छो	ऽ	ऽ	ड़	दो	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

*	प	–	प	प	–	ग	म	*	प	प	प	प	–	प	–
*	स्व	ऽ	प्न	में	ऽ	भी	ऽ	*	भ	य	के	मा	ऽ	रे	ऽ
*	प	–	ध	प	–	म	–	*	ग	–	रं	र	ग	म	–
*	भी	ऽ	त	मैं	ऽ	हो	ऽ	*	ता	ऽ	न	हीं	ऽ	ऽ	ऽ
*	ऩ	–	ऩ	स	र	र	–	*	म	–	म	म	प	ग॒	–
*	मैं	ऽ	तो	भ	य	का	ऽ	*	भी	ऽ	हूँ	भ	य	हा	ऽ
*	र	–	ऩ	स	र	र	ग॒	स	–	–	ऩ	स	–	–	–
*	हू	ऽ	म	चा	ऽ	ना	ऽ	छो	ऽ	ऽ	ड़	दो	ऽ	ऽ	ऽ





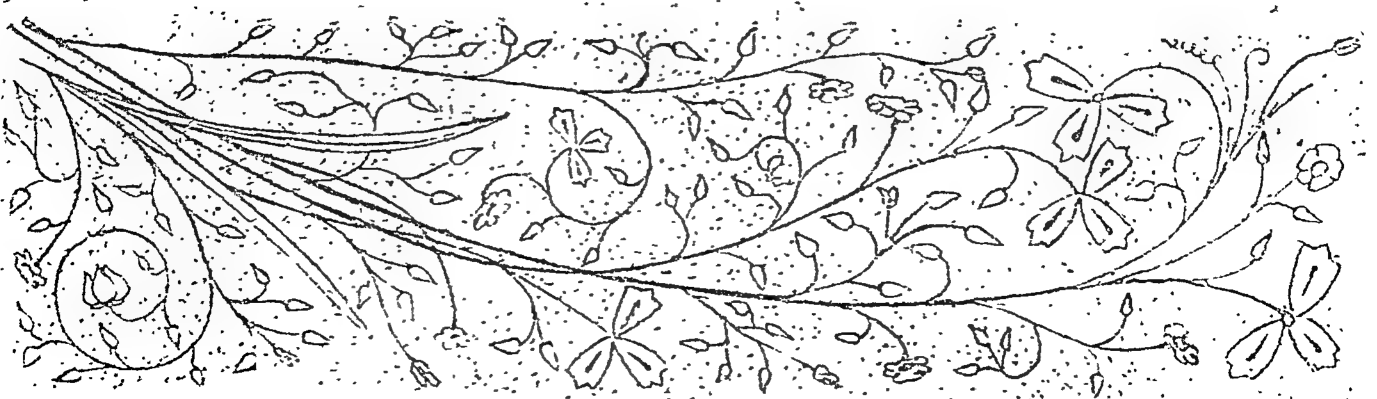
अतीत की नारियाँ !

भारत में कैसी थीं एक दिन शीलवती कुल नारियां,
धर्म के पथ पै जो हुईं हँस-हँस के बलिहारियां।
राजा विराट के महल में पक्की रही थी द्रौपदी,
कीचक कुमौत मरा वृथा खाली गईं सब वारियां।
रावण से दैत्य की कैद में सत्यवती सीता रहीं,
झेले भयंकर कष्ट पर मानी नहीं बदकारियां।
जौहर हुआ चित्तौड़ में गौरव बढ़ा मेवाड़ का,
ज़िन्दा हज़ारों जल मरीं हँसती हुईं सुकुमारियां।
लक्ष्मी थी लक्ष्मी हिन्द की, खूब लड़ी रण भूमि में,
देश हित जोगन बनी छोड़ के महल अटारियां।
रानी थी पृथ्वीराज की कैसी भयङ्कर शेरनी,
कांपा था अकबर आंखों में फटने लगी थीं तारियां।
गौरव पुराना याद कर, साहस की बिजली अब भरो,
उठो 'अमर' बहिनो करो उन्नति की तैयारियां।

भारत में कैसी थीं......!

स्थाई दादरा

×			०			×			०		
ध़	स	र	ग	ग	र	स	र	स	ऩध़	ऩध़	–
भा	रत	में	कै	सी	थीं	ए	ऽ	क	दिन	ऽऽ	ऽ



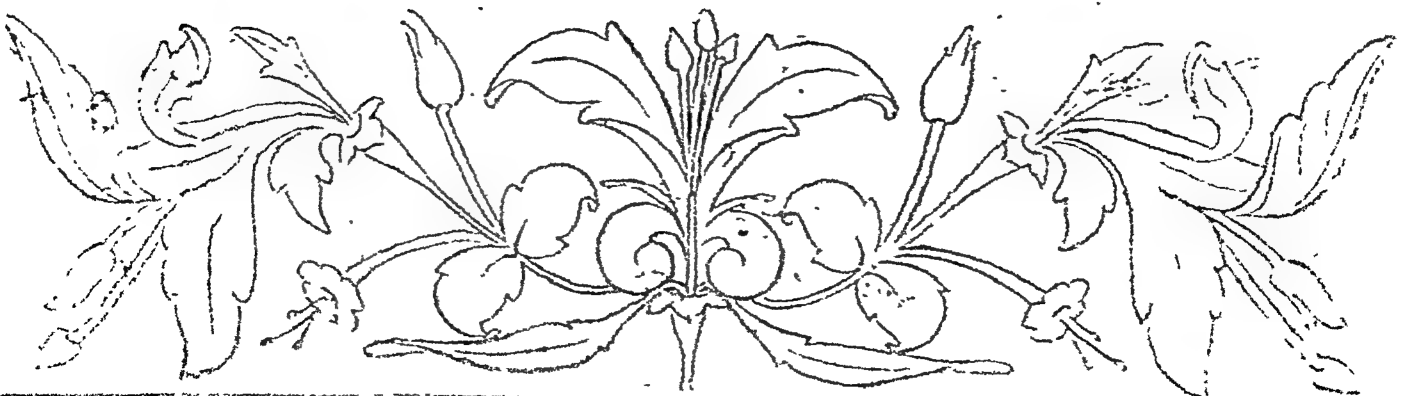


म	म	र	ग	ग	स	र	–	ऩ़	स	–	–
शी	ल	व	ती	कु	ल	ना	ऽ	रि	यां	ऽ	ऽ
ध़	स	र	ग	ग	र	स	र	स	ऩ़ध़	ऩ़ध़	–
ध	र्म	के	प	थ	पै	जो	ऽ	हु	ईऽ	ऽऽ	ऽ
म	म	र	ग	ग	स	र	–	ऩ़	स	–	–
हँस	हँ	स	के	ब	लि	हा	ऽ	रि	यां	ऽ	ऽ

अन्तरा—

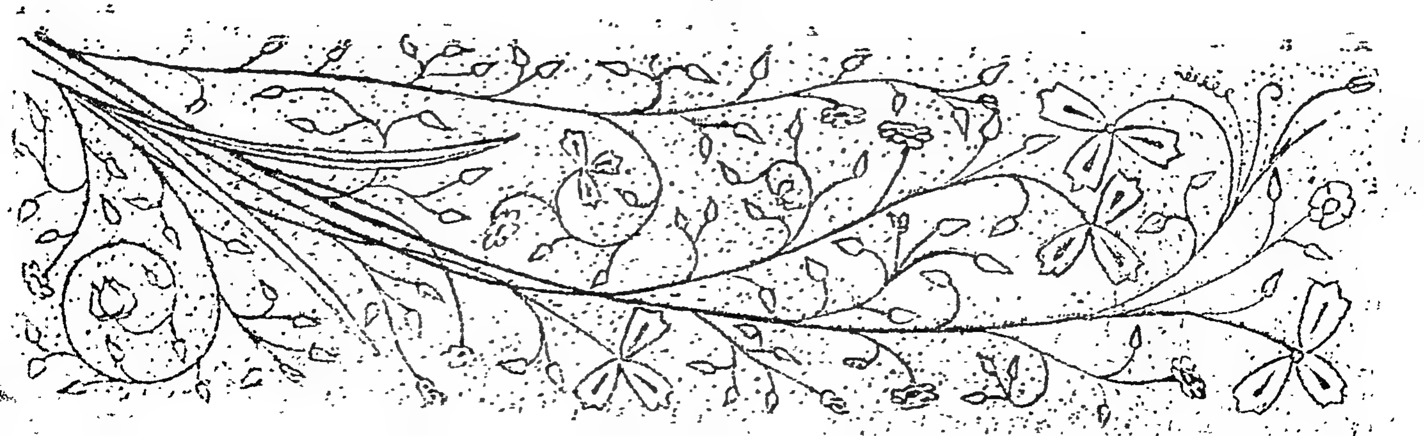
प	ग	म	प	प	प	प	ग	म	ध	–	–
रा	जा	वि	रा	ट	के	म	ह	ल	में	ऽ	ऽ
ध	न॒	ध	प	–	म	गम	प	म	ग	–	–
प	क्की	र	ही	ऽ	थी	द्रौऽ	ऽ	प	दी	ऽ	ऽ
ध़	स	र	ग	ग	र	स	र	स	ऩ़ध़	ऩ़ध़	–
की	चक	कु	मौ	त	म	रा	ऽ	बु	थाऽ	ऽऽ	ऽ
म	म	र	ग	ग	स	र	–	ऩ़	स	–	–
खा	ली	ग	ईं	स	व	वा	ऽ	रि	यां	ऽ	ऽ

भारत में कैसी थीं एक दिन ....।



पाप की घटाएँ·············!

पाप की काली घटाएँ छा रहीं संसार में,
सूझता कुछ भी नहीं अज्ञान के अन्धकार में।
अधखिले फूलों से कोमल वालकों के व्याह रचा,
वन्द करते हा! कुलक्षय हेतु शयनागार में ॥
मौत के महमान बूढ़े मौड़ बांधे शान से,
वाल-विधवा दें विठा व्यभिचार के वाज़ार में ॥
गर्दनें कटतीं धड़ाधड़ पूज्य गौ माताओं की,
आह चवा जाते नराधम नित्य के आहार में ॥
शीश झट फोड़ें, अछूतों से अगर पल्ला भिड़े,
विल्लियों कुत्तों से लेकिन मुँह चटाते प्यार में।
पाप का ताण्डव 'अमर' चारों तरफ़ ही हो रहा,
डगमगाती धर्म-नौका वह चली मँझधार में ॥



ताल—तीव्रा

स्थाई—

+			२		३		+			२		३	
र	–	स	र	स	र	प	गु	गु	म	र	–	स	–
पा	ऽ	प	की	ऽ	का	ऽ	ली	ऽ	य	टा	ऽ	यें	ऽ
र	म	म	म	प	प	–	रम	पध	प	गु	–	र	नुस
छा	ऽ	र	हीं	ऽ	सं	ऽ	साऽ	ऽऽ	र	में	ऽ	ऽ	ऽऽ

सूझता कुछ भी·········अन्धकार में। (इसी प्रकार गाइये)

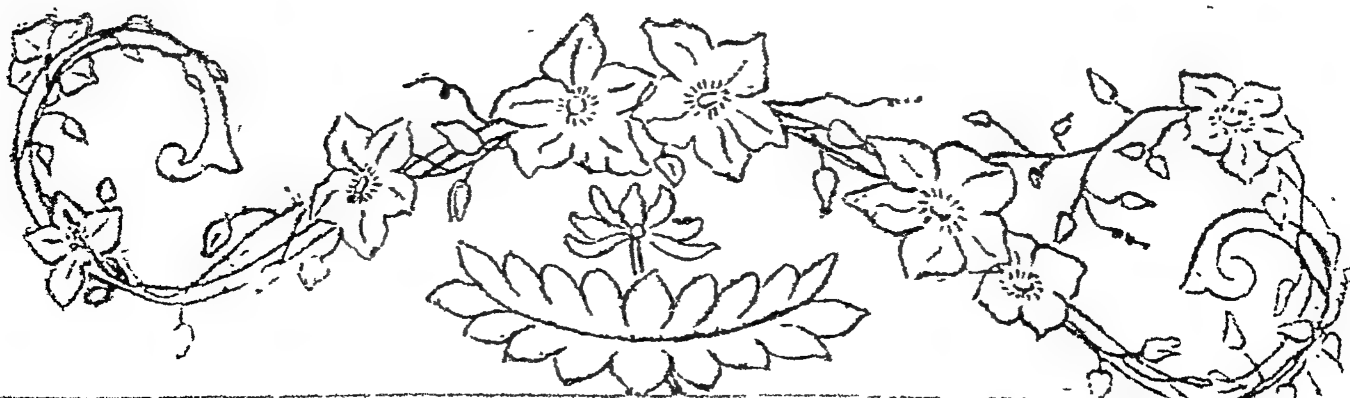
अन्तरा–ठेका वन्द–

मम	प	न	न	न	सं	सं	सं	संसं	संसं	(नु)	नु	नु	नु	नु	न	–
अध	खि	ले	फू	लों	से	को	ऽ	मल	ऽऽ	ऽ	वा	ल	कों	ऽ	के	ऽ
नुध	पम	रम	पध	नुध	प	मप	नुनु	धप	मगु	र	रर	सनु	धनु	स		
ध्याऽ	ऽऽ	ऽह	ऽऽ	ऽर	चा	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ		

ठेका शुरू––

र	–	स	र	स	र	प	गु	गु	म	र	र	स	स
व	ऽ	न्द	क	र	ते	ऽ	हा	ऽ	ऽ	कु	ल	द	य
र	म	म	म	प	प	–	रम	पध	प	गु	–	र	नुस
हे	ऽ	तु	श	य	ना	ऽ	गाऽ	ऽऽ	र	में	ऽ	ऽ	ऽऽ

नोटः––अगले सभी स्थाई तथा अन्तरे इसी प्रकार से गाये जायेंगे।





संसार में क्यों आये ?

नाम पैदा ना किया संसार में आया तो क्या ?
दिल न दिलवर (प्रभु) में लगाया दिल अगर पाया तो क्या ?
भर लिये धन के ख़ज़ाने ऐशो अशरत खूब की,
दीन को यदि दान देते हाथ थर्राया तो क्या ?
दुःख में प्रभु-भक्त होकर नित्य प्रभुजी को रटा,
मस्त हो सुख भोग में प्रभु नाम विसराया तो क्या ?
भीम-सा बल में हुआ लड़ता फिरा हर एक से,
धर्म-रत्ता के समय पग पीछे सरकाया तो क्या ?
सत्य का प्रण का धनी पक्का रहा आराम में,
कष्ट में निज लक्ष्य भूला और हिर्राया तो क्या ?
बैठ खल-जन मण्डली में गप्प हांकी खूब ही,
दो घड़ी सत्सङ्ग में गर आते शर्माया तो क्या ?
वक्त पर एक स्वेद-बिन्दू का भी श्रम कुछ ना किया,
ऐ 'अमर' वे वक्त यदि निज शीश कटवाया तो क्या ?

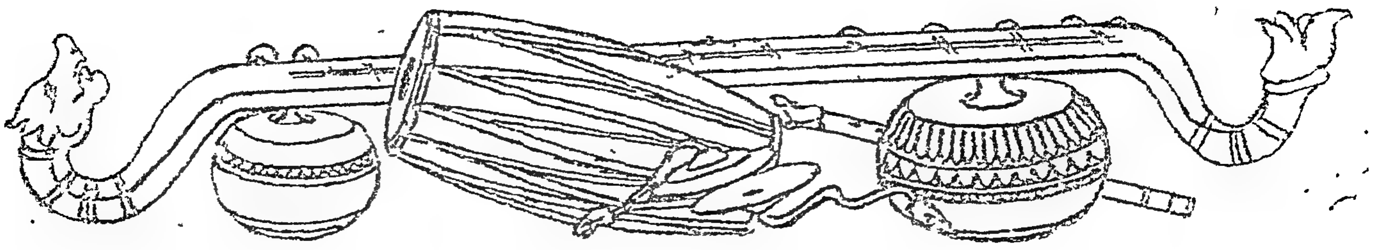
नाम पैदा ना किया……!

(ठेका कव्वाली)

स्थायी--

×				×				×				×			
*	ऩ॒	-	ऩ॒	स	र	र	-	*	म	-	ग	म	प	ग॒	-
*	ना	ऽ	म	पै	ऽ	दा	ऽ	*	ना	ऽ	कि	या	ऽ	ऽ	ऽ

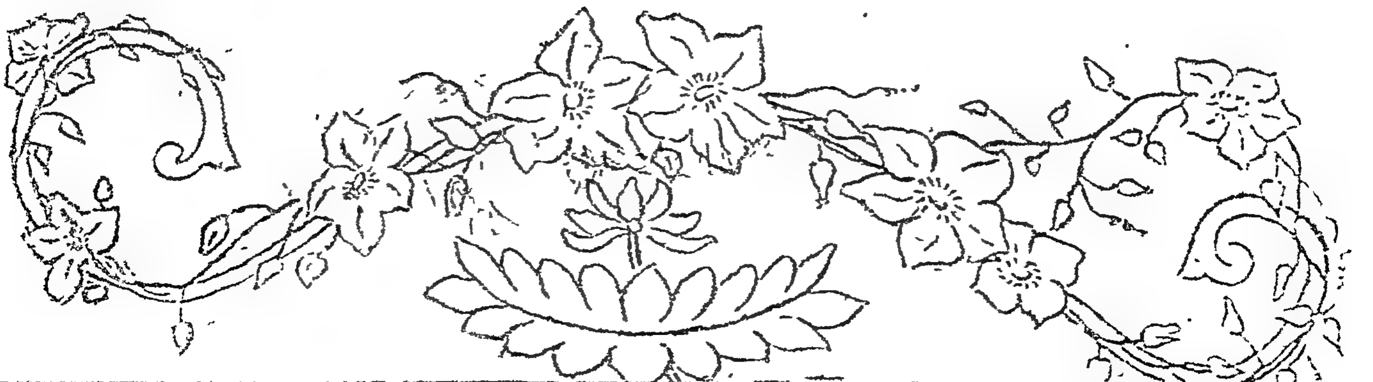


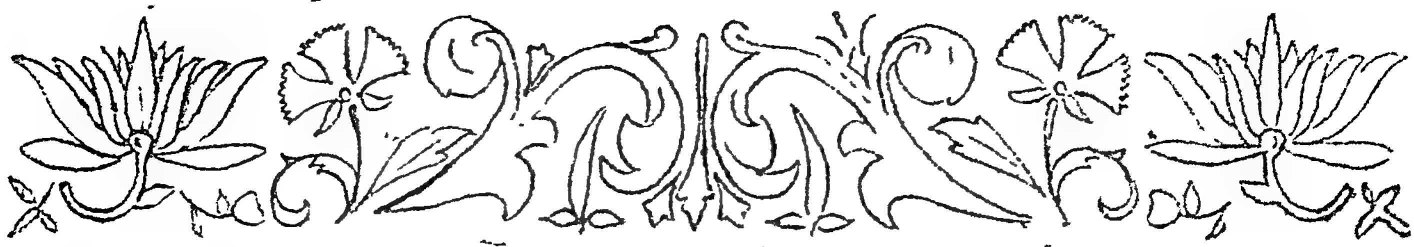


र	र	–	ऩ	स	र	र	ग॒	(र) स	–	–	ऩ	स	–	–	–
सं	सा	ऽ	र	मैं	ऽ	आ	ऽ	या	ऽ	ऽ	तो	क्या	ऽ	ऽ	ऽ
*	ऩ	ऩ	ऩ	स	र	र	र	*	म	–	ग	म	प	ग॒	–
*	दि	ल	ना	दि	ल	व	र	*	से	ऽ	ल	गा	ऽ	या	ऽ
*	र–	–	ऩ	स	र	र	ग॒	(र) स	–	–	ऩ	स	–	–	–
*	दिल	ऽ	अ	ग	र	पा	ऽ	या	ऽ	ऽ	तो	क्या	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा--

*	प	प	प	प	–	ग॒	म	*	प	–	प	प	–	प	–
*	भ	र	लि	ये	ऽ	ध	न	*	के	ऽ	ख़	जा	ऽ	ने	ऽ
*	म	–	ध	प	प	म	म	*	ग	–	र	र	ग	म	–
*	ऐ	ऽ	शो	इ	श	र	त	*	ख़ू	ऽ	व	की	ऽ	ऽ	ऽ
*	ऩ	–	ऩ	स	र	र	र	*	म	–	ग	म	प	ग॒	–
*	दी	ऽ	न	को	ऽ	य	दि	*	दा	ऽ	न	दे	ऽ	ते	ऽ
*	र	–	ऩ	स	र	र	ग॒	(र) स	–	–	ऩ	स	–	–	–
*	हा	ऽ	थ	थ	ऽ	र्रा	ऽ	या	ऽ	ऽ	तो	क्या	ऽ	ऽ	ऽ





सर्व धर्म समन्वय !

धर्म पथ ढूँढ़ा नहीं 'धर्मिक' हुआ तो क्या हुआ,
आत्म हित-चर्य्या नहीं 'आस्तिक' हुआ तो क्या हुआ ?
सप्त भङ्गी रट रटाकर स्याद्‌वादी बन गया,
धर्म द्वेष मिटा नहीं 'आर्हत' हुआ तो क्या हुआ ?
जानकर भी पश्यतः प्रविनष्ट क्षणभंगुर जगत,
'मैं' का विष उतरा नहीं 'सौगत' हुआ तो क्या हुआ ?
विश्व का प्रत्येक प्राणी विष्णु का ही रूप है,
कार्य से झलका नहीं 'वैष्णव' हुआ तो क्या हुआ ?
पांच वक्त नमाज़ पढ़ता डर ख़ुदा की मार से,
ज़ुल्म से डरता नहीं 'मुसलिम' हुआ तो क्या हुआ ?
बन्धुता के भाव से निःस्वार्थ दुखियों का 'अमर'.
दुःख दूर किया नहीं, 'क्रिश्चियन' हुआ तो क्या हुआ ?

—※—

धर्म-पथ ढूढ़ा नहीं "धार्मिक"""""""!

स्थायी (पश्तो)

×			२		३		×			२		३	
प	-	ध॒	रं	रं	सं	-	पध॒	नि॒	ध॒	म	-	ग॒	-
ध	ऽ	र्म	प	थ	ढूँ	ऽ	ढ़ाऽ	ऽ	न	हीं	ऽ	धा	ऽ

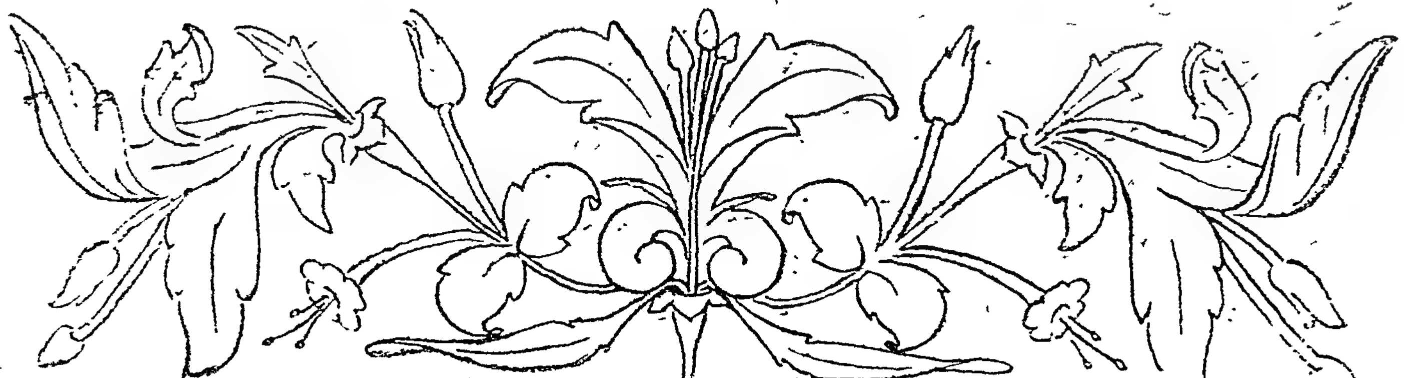


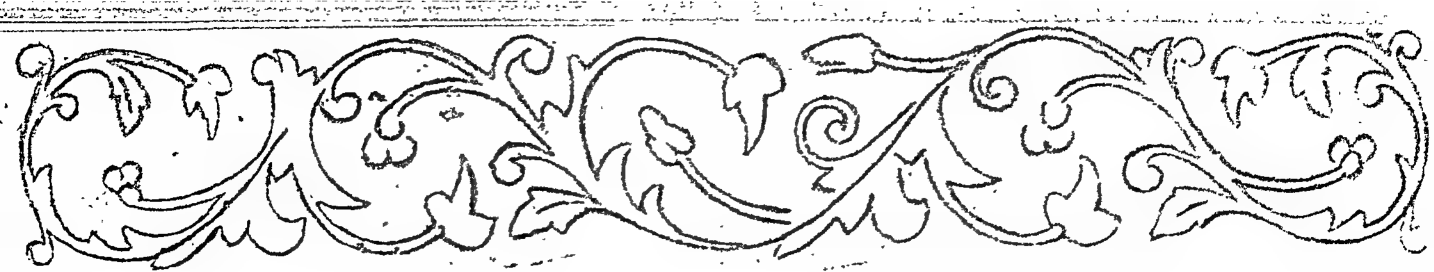


र	गु	र स	स	र	सर	गुम	र	गु	रे	स	–	–	–
मिं	क	हु	आ	ऽ	तोऽ	ऽऽ	क्या	ऽ	हु	आ	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	ध	रं	रं	सं	सं	पधु	नु	धु	म	–	गु	–
आ	ऽ	त्म	हि	त	च	रि	याऽ	ऽ	न	हीं	ऽ	आ	ऽ
र	गु	र स	स	र	रगु	म	गुर	गु	रे	स	–	–	–
स्ति	क	हु	आ	ऽ	तोऽ	ऽ	क्याऽ	ऽ	हु	आ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

म	–	म	म	–	म	–	स	गु	स	नु	–	स	स
स	ऽ	त	भं	ऽ	गी	ऽ	र	ट	र	टा	ऽ	क	र
न	–	न	न	–	सं	–	नसं	रंगुं	रं	संरं	नसं	–	–
स्या	ऽ	द	वा	ऽ	दी	ऽ	वऽ	ऽन	ग	याऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
प	–	धु	रं	–	सं	सं	पधु	नु	धु	म	–	गु	गु
ध	ऽ	र्म	द्धे	ऽ	प	मि	टाऽ	ऽ	न	हीं	ऽ	आ	र
र	–गु	स	स	र	रगु	म	गुर	गु	रे	स	–	–	–
ह	ऽत	हु	आ	ऽ	तोऽ	ऽ	क्याऽ	ऽ	हु	आ	ऽ	ऽ	ऽ





संघ !

आजाओ एक वार संप की छाया में !
जिनमें संप सदा रहता है ।
उनके नित्य पड़ा रहता है ॥
चरणों में संसार !
फूट पुजारी जो होते हैं ।
वे निज गौरव सब खोते हैं ॥
पाते हैं धिक्कार !
दुर्वल जन भी संप सहारे ।
वन जाते हैं वीर करारे ॥
संप सदा जयकार !
दीन पतंगे यदि सब मिलके ।
कूद पड़ें दीपक पै उछल के ॥
करें छिनक में छार !
निर्वल तार परस्पर मिलते ।
महावली गजराज जकड़ते ॥
निज वंधन में डार !
बूँद-बूँद मिल दरिया वहते ।
नहीं किसी के रोके रुकते ॥
होता अति विस्तार !
कैंची की वद आदत छोड़ो ।
'अमर' सुई से नेहा जोड़ो ॥
सुखी वनो नरनार !

——✻——





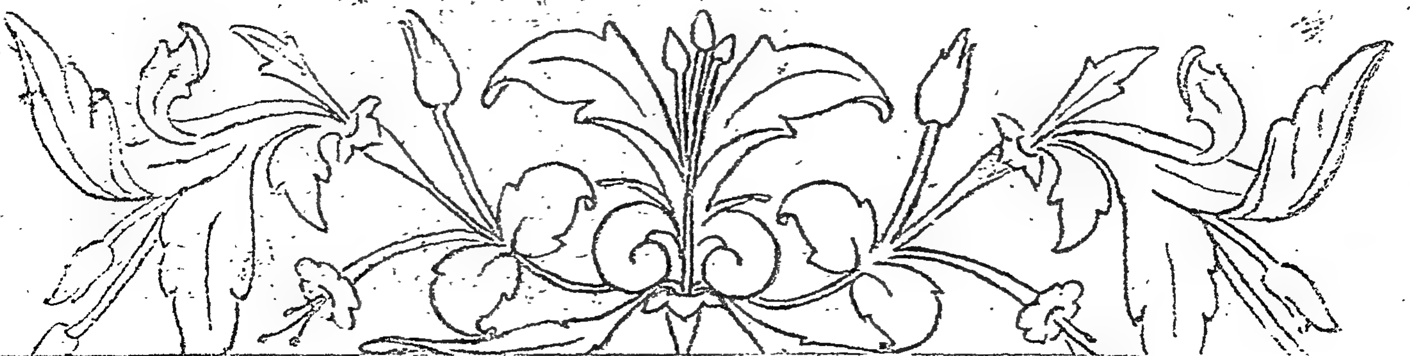
स्थायी (कहरवा)

×				०				×				०			
*	स	स	–	र	–	ग	ग	म	–	म	ग	र	ग	र	–
*	आ	जा	ऽ	ओ	ऽ	इ	क	वा	ऽ	र	सं	ऽ	प	की	ऽ
ध़	–	स	–	र	ग॒	र	स	*	स	स	–	र	–	ग	ग
छा	ऽ	या	ऽ	मैं	ऽ	ऽ	ऽ	*	आ	जा	ऽ	ओ	ऽ	इ	क
म	–	म	ग	र	ग	र	र	ध़	–	स	–	र	ग॒	र	स
वा	ऽ	र	सं	ऽ	प	की	ऽ	छा	ऽ	या	ऽ	मैं	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

*	स	स	ऩ	स	–	न॒	ध़	न॒	र	र	ग	म	ग	र	स
*	जि	न	में	सं	ऽ	प	स	दा	ऽ	र	ह	ता	ऽ	है	ऽ
*	स	स	ऩ	स	–	न॒	ध़	न॒	र	र	ग	म	ग	र	स
*	उ	न	के	नि	ऽ	त्य	प	ड़ा	ऽ	र	ह	ता	ऽ	है	ऽ
*	स	स	स	र	–	ग	–	म	–	म	ग	र	ग	र	र
*	च	र	णों	में	ऽ	सं	ऽ	सा	ऽ	र	सं	ऽ	प	की	ऽ
ध़	–	स	–	र	ग॒	र	स	*	स	स	–	र	–	ग	ग
छा	ऽ	या	ऽ	मैं	ऽ	ऽ	ऽ	*	आ	जा	ऽ	ओ	ऽ	इ	क
म	–	म	ग	र	ग	र	–	ध़	–	स	–	र	ग॒	र	स
वा	ऽ	र	सं	ऽ	प	की	ऽ	छा	ऽ	या	ऽ	मैं	ऽ	ऽ	ऽ

अपने मध्यम को षड्ज मानकर इस गीत को गाइये।

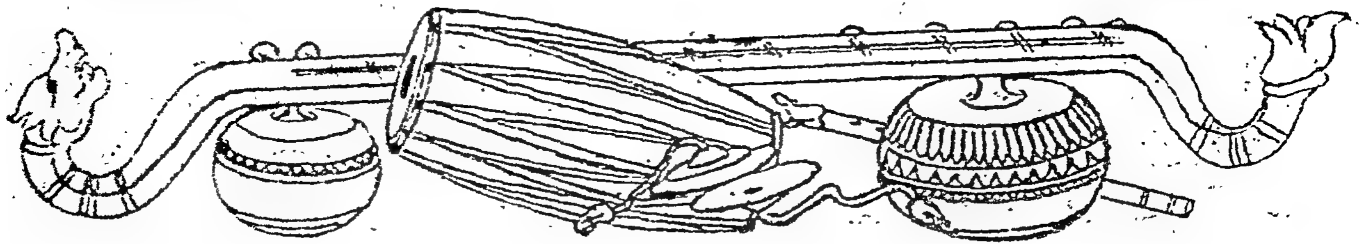


वीर का संदेशा !

संदेशा वीर स्वामी का, जहां को हम सुना देंगे।
वजा जैनत्व का डंका, जहां को हम जगा देंगे ॥
अविद्या के जो वहते हैं ये गन्दे नाले भारत में।
निशां इनका मिटाकर ज्ञान की गङ्गा वहा देंगे ॥
अछूतों पर जो होते हैं, जुलम यहां रातदिन भारी।
सिखाकर साम्य की शिक्षा,जुलम ये सव हटा देंगे ॥
मतों के जाल में फँसकर, जो भाई लड़ रहे हैं हा !
अनेकांती वना सवको, परस्पर हम मिलादेंगे ॥
हमारी कौम यह मुर्दा, हुयी है सव तरह से जो।
'अमर' अमृत पिलाकर सत्यका फिरसे जिलादेंगे ॥

—※—

						स्थायी (कहरवा)									स
×				×				×				×			सं
स	प	प	–	*	प	नु	नु	धु	प	म	गु	म	प	–	प
दे	ऽ	शा	ऽ	*	वी	ऽ	र	स्वा	ऽ	मी	ऽ	का	ऽ	ऽ	ज
म	–	गु	र	*	गु	म	म	गु	–	स	रे	गु	स	–	स
हां	ऽ	को	ऽ	*	ह	म	सु	ना	ऽ	दें	ऽ	गे	ऽ	ऽ	व



स	प	प	–	*	प	न॒	न॒	ध॒	प	म	ग॒	म	प	–	प
जा	ऽ	जैं	ऽ	*	न	ऽ	त्व	का	ऽ	ड़ं	ऽ	का	ऽ	ऽ	ज
म	–	ग॒	र	*	ग॒	म	म	ग॒	–	स	रे॒	ग॒	स	–	स
हां	ऽ	को	ऽ	*	ह	म	ज	गा	ऽ	दें	ऽ	गे	ऽ	ऽ	सं

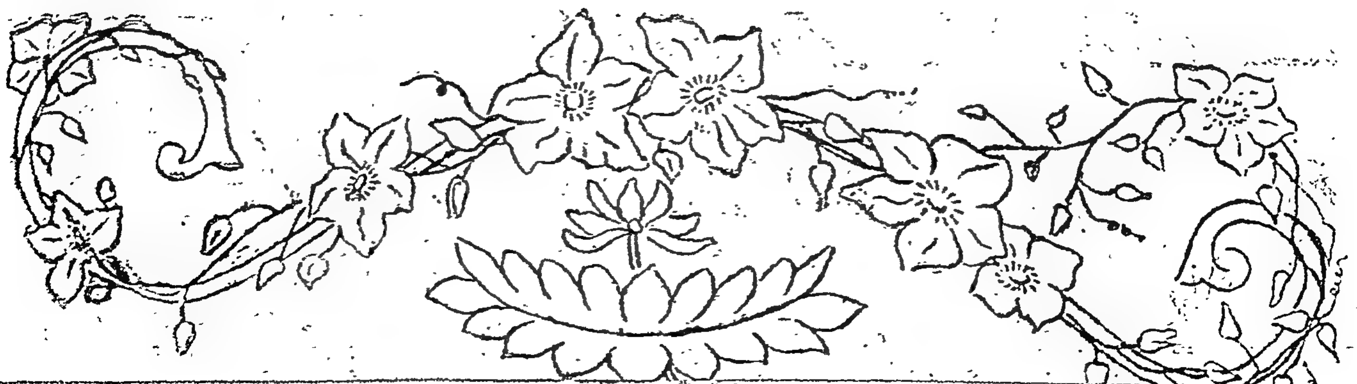
देशा वीर स्वामी का जहां को हम सुना देंगे।

अन्तरा—

															सं
															अ
सं	–	सं	–	*	सं	–	न॒	न॒	रं	सं	रं	न॒	–	–	ध
वि	ऽ	द्या	ऽ	*	के	ऽ	जो	व	ह	ते	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	ये
प	ध	म	–	*	प	–	ध॒	न॒	–	प	ध॒	न॒	प	–	स
गं	ऽ	दे	ऽ	*	ना	ऽ	ले	भा	ऽ	र	त	में	ऽ	ऽ	नि
स	प	प	प	*	प	न॒	न॒	ध॒	प	म	ग॒	*	म	प	प
शां	ऽ	इ	न	*	का	ऽ	मि	टा	ऽ	क	र	*	ज्ञा	ऽ	न
म	–	ग॒	र	*	ग॒	म	म	ग॒	–	स	रे॒	ग॒	स	–	स
की	ऽ	गं	ऽ	*	गा	ऽ	व	हा	ऽ	दें	ऽ	गे	ऽ	ऽ	सं

देशा वीर स्वामी का जहां को हम सुना देंगे।

———





तरने का अवसर !

तारना चाहे तो खुद को मौका है, अब तार ले,
इस असार शरीर से भी, सार का भी सार ले।
प्रेममय परमेश की सदुपासना कर प्रेम से,
ढोंग बाज़ी छोड़ अपना रूप आप निहार ले ॥
दीन दुखिया जो मिले आंसू बहा छाती लगा,
दूसरों के दुक्ख में पड़ने की आदत डाल ले।
गर बुरा व्यवहार कोई तेरे साथ करे तो तू;
कर भला उसका हृदय से, क्रोध को हँस मार ले ॥
आवश्यकतायें घटा अपनी, न हो तू लालची,
शान्तिदायक सर्वगुरु संतोष को स्वीकार ले।
सत्य ही ध्रुव है अटल है, सत्य होजा सत्य से,
पापदल को मार बढ़-बढ़ सत्य की तलवार ले ॥
भोग नहिं ये रोग हैं, बस दूर ही रहना 'अमर',
कहना था वह कह दिया, अब तू भी सोच विचार ले।

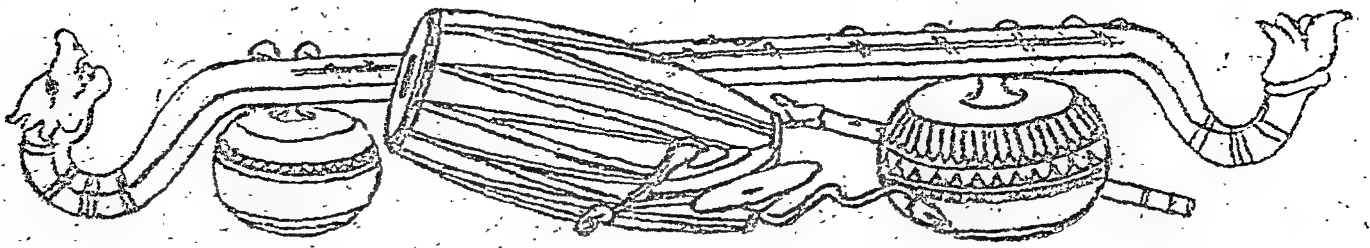
तारना चाहे तो खुद को·······!

ताल—तीव्रा

स्थायी—

×			२		३		×			२		३	
स	–	र	र	म	प	ध	ग़ु	–	म	र	र	स	–
ता	ऽ	र	ना	ऽ	चा	ऽ	हे	ऽ	तो	खु	द	को	ऽ



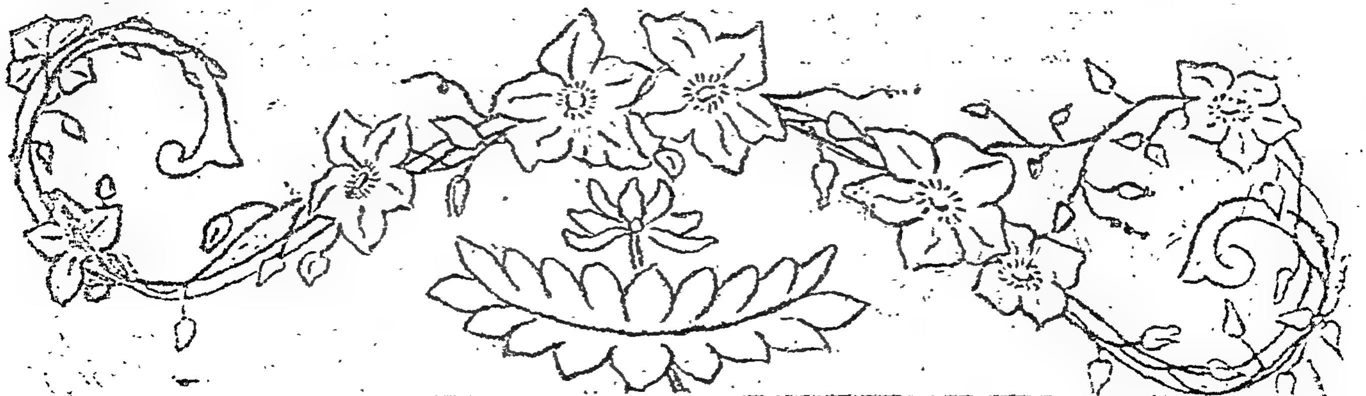


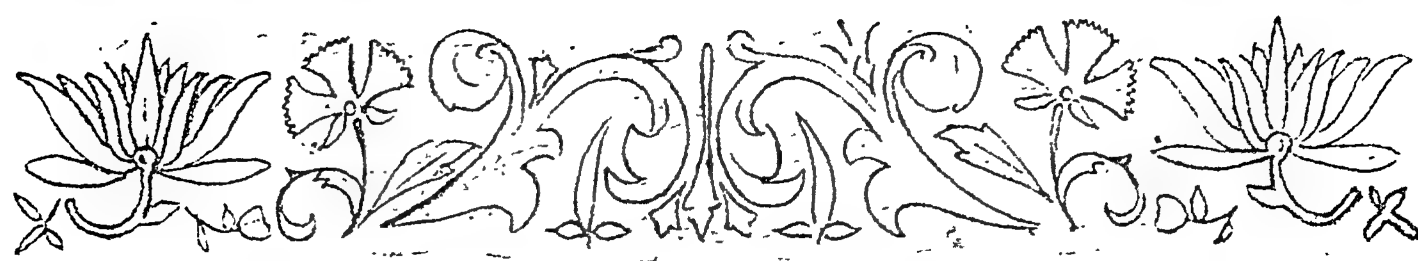
र	म	म	प	ध	म	प	र	ग॒	र	ऩ	–	स	–
मौ	ऽ	का	है	ऽ	अ	व	ता	ऽ	र	ले	ऽ	ऽ	ऽ
स	स	र	र	म	प	ध	पध	न॒	ध	प	ध	म	प
इ	स	अ	सा	ऽ	र	श	रीऽ	ऽ	र	से	ऽ	भी	ऽ
सं	–	न॒	ध	प	म	प	र	ग॒	र	ऩ	–	स	–
सा	ऽ	र	का	ऽ	भी	ऽ	सा	ऽ	र	ले	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

प	–	प	प	ध	म	प	न	–	न	न	सं	सं	सं
प्रे	ऽ	म	म	य	प	र	मे	ऽ	श	की	ऽ	स	दु
रं	–	रं	रं	गं	रं	मं	गं	गं	रं	सं	–	–	–
पा	ऽ	स	ना	ऽ	क	र	प्रे	ऽ	म	से	ऽ	ऽ	ऽ
न	–	न	न	सं	सं	–	सं	–	न॒	ध	प	म	प
ढों	ऽ	ग	वा	ऽ	जी	ऽ	छो	ऽ	ड़	अ	प	ना	ऽ
सं	–	न॒	ध	प	म	प	र	ग॒	र	ऩ	–	स	–
रू	ऽ	प	आ	ऽ	प	नि	हा	ऽ	र	ले	ऽ	ऽ	ऽ

(शेष अन्तरे इसी प्रकार कहिये)





धर्म का पतन !

वहाना धर्म का करके गज़व किस तौर ढाते हैं,
अखिल मानव जगत पर जाल माया का बिछाते हैं।
चढ़ा पत्थर के देवों पर हज़ारों भैंसे और वकरे,
खटाखट खंजरों से खून के दरिया वहाते हैं ॥
खड़ी कर दो कहीं ईंटें वनाई शीतला माता,
भगों-भग जातरी आते पुजापा ला चढ़ाते हैं।
तरसते दो-दो दानों को हज़ारों भाई अति भूखे,
हवन में घी मनों फूँकें अकल पै धप जमाते हैं।
वन एजेन्ट मुर्दों के चलाया श्राद्ध का धंधा,
पितर के नाम पर भूदेव ताजा माल खाते हैं ॥
अछूतों को न घुसने दें कभी भी धर्म स्थानों में,
अगर सत्कर्म करलें तो भी धड़ से शिर उड़ाते हैं।
दवोचे कान वैठा धर्म, आगे धर्म वालों के,
'अमर' चाहा जिधर ले धर्म की गर्दन घुमाते हैं ॥

वहाना धर्म का करके.........!

राग शिवरंजनी मिश्र स्थायी (कहरवा)

																ग़
×				०				×				०				व
र	ग़	स	र	ग़	प	–	प	ध	सं	ध	प	ग़	–	–		ग़
हा	ऽ	ना	ऽ	ध	ऽ	ऽ	र्म	का	ऽ	क	र	के	ऽ	ऽ		ग़





र	ग	स	र	ग	प	–	प	रग	मग	र	ग	स	–	–	स
ज	ब	कि	स	तौ	ऽ	ऽ	र	ढाऽ	ऽऽ	ते	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	अ
ध	स	र	ग	प–	–	–	प	ध	सं	ध	प	ग	–	–	ग
खि	ल	मा	ऽ	नव	ऽ	ऽ	ज	ग	त	प	र	जा	ऽ	ऽ	ल
र	ग	स	र	ग	प	–	प	रग	मग	र	ग	स	–	–	ग
मा	ऽ	या	ऽ	का	ऽ	ऽ	वि	छाऽ	ऽऽ	ते	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	व

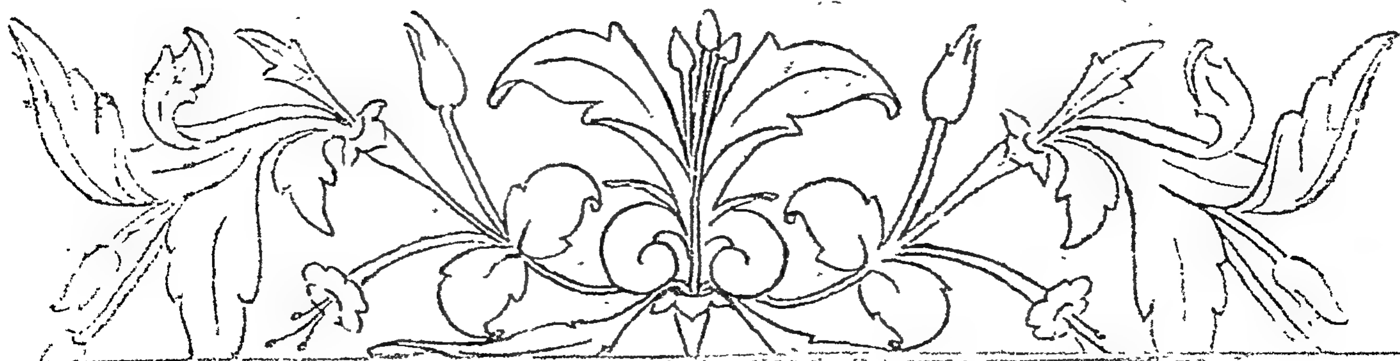
हाना धर्म का करके ग़जब किस तौर ढाते हैं ।

अन्तरा—

															प
															च
प	ध	सं	रं	–	रं	रं	रं	प	ध	सं	रं	गं	–	–	रं
ढ़ा	ऽ	प	ऽ	ऽ	त्थ	र	के	दे	ऽ	वों	ऽ	पै	ऽ	ऽ	ह
सं	रं	सं	ध	*	सं	–	रं	गं	रं	सं	रं	सं	–	–	ध
ज़ा	ऽ	रों	ऽ	*	भैं	ऽ	से	औ	र	ब	क	रे	ऽ	ऽ	ख
प	–	ग	र	ग	–	–	र	स	र	ग	प	*	ध	सं	ध
टा	ऽ	ख	ट	खं	ऽ	ऽ	ज	रों	ऽ	से	ऽ	*	खू	ऽ	न
प	–	ग	र	ग	–	–	ग	रग	मग	र	ग	स	–	–	ग
के	ऽ	द	रि	या	ऽ	ऽ	ब	हाऽ	ऽऽ	ते	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	ब

हाना धर्म का करके ग़जब किस तौर ढाते हैं ।

———



वीर के सैनिक !

महावीर स्वामी के सैनिक बनेंगे,
उसी के बताए सुपथ पर चलेंगे।
विपत्ती सहेंगे, जो आयेंगी ऊपर,
न तिलमात्र भी निज प्रण से डिगेंगे॥
उठाये अहिंसा का झंडा फिरेंगे,
अहिंसा को संसार-व्यापी करेंगे।
जियेंगे तो धर्म की रक्षा की खातिर,
इसी धर्म-रक्षा की खातिर मरेंगे॥
मिटा ऊँच नीच के भेद भयंकर,
अटल साम्य-सूचक नया युग रचेंगे।
'लखो शक्ति अपनी बनो पूर्ण ईश्वर',
संदेशा प्रभू का यह सबसे कहेंगे॥
अनेकान्त नद में मिला पंथ नदियां,
मत-द्वेष जग से मिटा के हटेंगे।
नहा के त्रिरत्न-त्रिवेणी के ज़ल में,
'अमर' मुक्ति-मन्दिर में जाके रमेंगे॥

महावीर स्वामी के सैनिक······!

राग दरबारी (मिश्र) झपताल (मध्यलय)

स्थायी—

×		२			०		३		
ऩस	रस	धॖ	ऩॖ	पॖ	मॖ	पॖ	धॖ	ऩॖ	स
मऽ	हाऽ	वी	ऽ	र	स्वा	ऽ	मी	ऽ	के



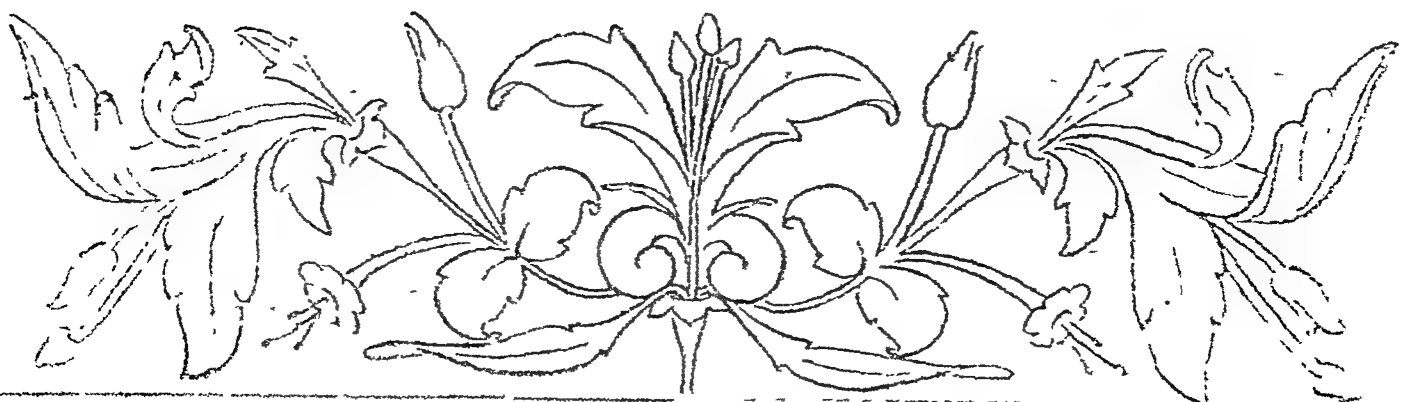
ऩ	स	र	र	प	ग़	म	र	–	स
सै	ऽ	नि	क	ब	नें	ऽ	गे	ऽ	ऽ
ऩस	रस	ध़	ऩ	प़	म़	प़	ध़	ऩ	स
उऽ	सीऽ	के	ऽ	व	ता	ऽ	ये	ऽ	सु
ऩ	स	र	र	प	ग़	म	र	–	स
प	थ	पै	ऽ	च	लें	ऽ	गे	ऽ	ऽ

महावीर स्वामी के सैनिक बनेंगे।

अन्तरा--

म	प	ध़	–	ऩ	सं	–	सं	–	सं
वि	प	त्ती	ऽ	स	हें	ऽ	गे	ऽ	जो
ऩ	सं	रं	–	सं	ऩसं	रंसं	ध़	ऩ	प
आ	ऽ	यें	ऽ	गी	ऊऽ	ऽऽ	प	र	न
गं़	गं़	गं़	–	मं	रं	–	सं	–	सं
ति	ल	मा	ऽ	त्र	भी	ऽ	नि	ऽ	ज
प	प	मप	ऩप	मप	ग़	म	र	–	स
प्र	ण	सेऽ	ऽऽ	डिऽ	गें	ऽ	गे	ऽ	ऽ

महावीर स्वामी के सेवक बनेंगे।



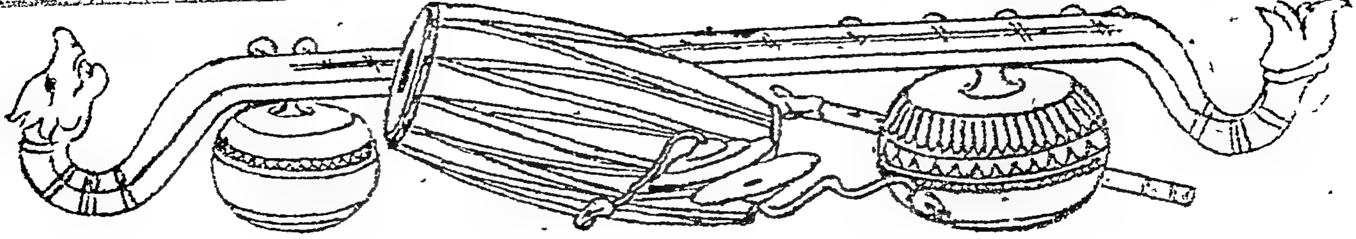
जागो, उठो !

अफ़सोस तुम राहगीर फिर वेहोश सोते हो,
जागो हुआ परभात क्यों यह वक्त खोते हो ?
मारग विकट घन-घोर वन, फिर दूर चलना है,
क्यों पाप की गठरी का बोझा सरपै ढोते हो ॥
चोरों की यह नगरी है, इसमें सावधानी से,
रहना संभल के काहे को यों मस्त होते हो ।
ये इन्द्रियां हैं चोर, मन सरदार है इनका,
कहदो इन्हें हम देखते हैं क्या चुराते हो ॥
यहां लुट गये लाखों सयाने भूल में आकर,
सिर पीट कर रोते गए क्यों तुम भी रोते हो ।
बस धर्म रूपी रत्न की पेटी ही सुख देगी,
इसको लुटेरों से 'अमर' क्यों ना छुपाते हो ॥

—※—

स्थायी (दादरा)																ध़	ऩ
×			०			×			०			×			०	अ	फ़
स	–	स	स–	स	स	स	–	रे॒	स–	ऩ	–	स	–	-र	ग॒	म	म
सो	ऽ	स	तुम	रा	ह	गी	ऽ	र	फिर	वे	ऽ	हो	ऽ	श	सो	ऽ	ते
ग॒	–	–	–	स	रे॒	म	–	म	ग॒	रे॒	रे॒	स	–	ऩ	ध़	ध़	ऩ
हो	ऽ	ऽ	ऽ	जा	ऽ	गो	ऽ	हु	आ	प	र	भा	ऽ	त	क्यों	य	ह



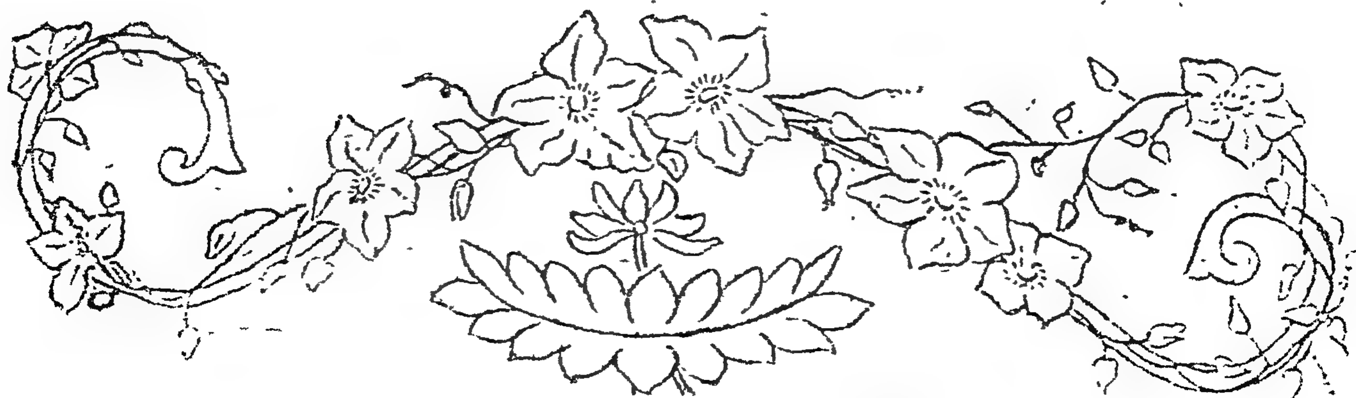


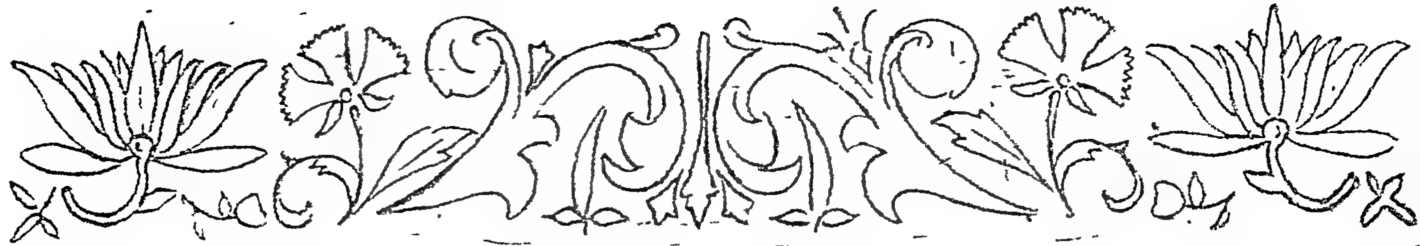
स	-	स	ग	रे	रे	स	-	-	-	ध	नि						
व	ऽ	क	खो	ऽ	ते	हो	ऽ	ऽ	ऽ	अ	फ़	सोस तुम राहगीर फिर					

वेहोश सोते हो, जागो हुआ परभात क्यों यह वक्त खोते हो।

अन्तरा—

																म	-
																मा	ऽ
ग	ग	म	ध-	ध	नि	सं	-	नि	रें-	सं	सं	नि	-	ध	प	नि	ध
र	ग	वि	कट	घ	न	घो	ऽ	र	वन	फि	र	दू	ऽ	र	च	ल	ना
प	-	-	-	म	प	नि	-	नि	नि	नि	ध	प	ध	ध	प	ध	म
है	ऽ	ऽ	ऽ	क्यों	ऽ	पा	ऽ	प	की	ग	ठ	री	ऽ	का	बो	ऽ	झा
प	प	ध	नि	प	ध	प	-	-	-	म	-	ध	-	ध	ध	ध	प
स	र	पै	ढो	ऽ	ते	हो	ऽ	ऽ	ऽ	चो	ऽ	रों	ऽ	की	ये	न	ग
म	प	प	म	म	ग	ग	प	म	र	-	म	ग	-	-	-	स	रे
री	ऽ	है	इ	स	में	सा	ऽ	व	धा	ऽ	नी	से	ऽ	ऽ	ऽ	र	ह
म	-	म	म	प	म	ग	म	ग	रे	स	-	स	-	रे	ग	स	रे
ना	ऽ	सँ	भ	ल	के	का	ऽ	हे	को	यों	ऽ	म	ऽ	स्त	हो	ऽ	ते
स	-	-	-	ध	नि												
हो	ऽ	ऽ	ऽ	अ	फ़	सोस तुम राहगीर फिर ......।											



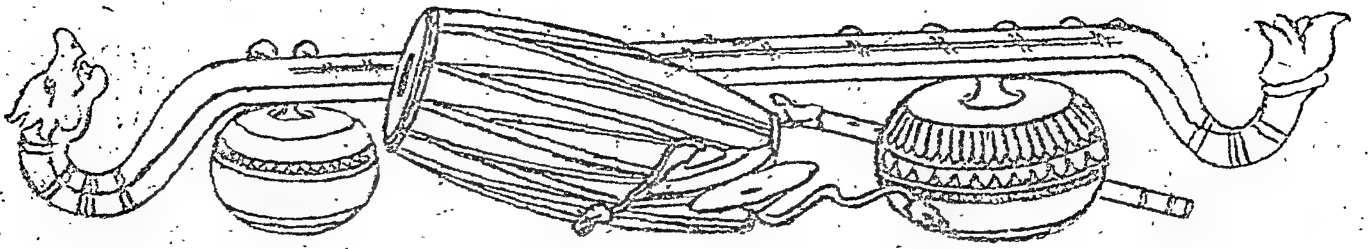


गीत

मनुष्य बन लगा दौड़, विषयों से मुख मोड़।
भूल न जाना, ओ प्राणी, भूल न जाना ॥
जीवन है इक लहर सिंधु की, इत आये, उत जाये।
धर्म-कर्म कुछ किया न जिसने, वह पीछे पछताये॥
नरक में मिले ठौर, पावे दुःख अति घोर।
मन कलपाना, ओ प्राणी, भूल न जाना ॥
पाकर कुछ चाँदी के टुकड़े, काहे ज़ोर दिखाए।
कौड़ी सङ्ग चले कब तेरे, किस पर शोर मचाए ?
आवे कोई द्वारे दुखी, शीघ्र बनाना सुखी।
जग-यश पाना, ओ प्राणी, भूल न जाना ॥
बड़े-बड़े राजा महाराजा, आए जग पर छाए।
लगा काल का चपत अन्त में ढूँढ़े खोज न पाए ॥
तू तो सीधा बन चल, काहे करे कल-कल ?
गर्व नशाना, ओ प्राणी, भूल न जाना ॥
भक्ति-भाव से झूम-झूम कर क्यों न ईश गुण गाएँ ?
शुष्क हृदय में अमर प्रेम का क्यों न सुरस बरसाए॥
पाप-मल सारे छँटें, दुख-द्वन्द्व सभी हटें।
'जिन' बन जाना, ओ प्राणी, भूल न जाना ॥

——*——





(ताल कहरवा)

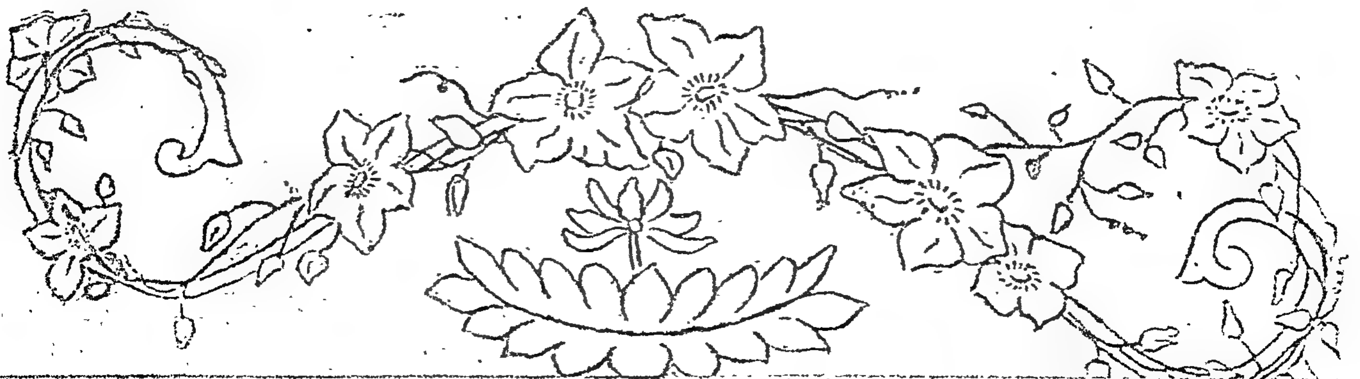
स्थायी—

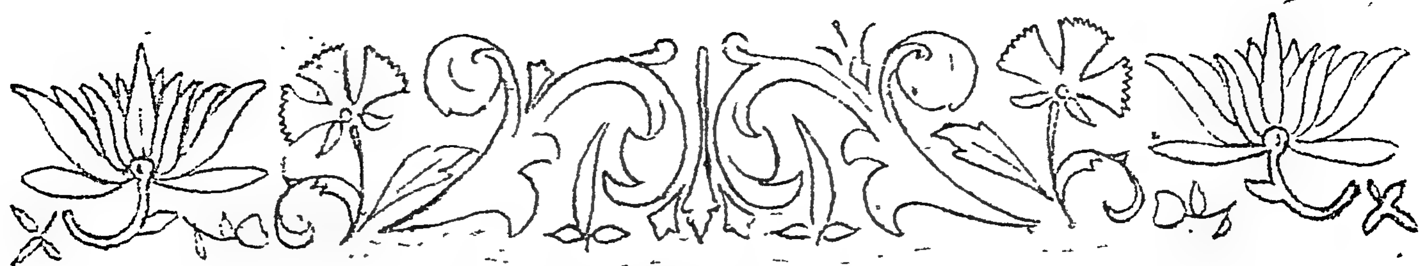
×				०				×				०			सम
स	र	स	ऩ	स	स	र	र	र	ग॒	र	स	ऩ	स	र	र
नु	ष्य	व	न	ल	गा	दौ	ड़	वि	ष	यों	से	मु	ख	मो	ड़
र	ग॒	र	स	स	–	र	स	ऩ	–	–	ऩ	स	र	र	–
भू	ऽ	ल	न	जा	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ओ	प्रा	ऽ	णी	ऽ
र	ग॒	र	स	स	–	र	ऩ	स	–	–	–	–	–	–	–
भू	ऽ	ल	न	जा	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

सर	रर	रम	मम	मप	पप	–प	प–	मध	पम	र–	सर	ऩस	स	–	–
जीऽ	वन	हैऽ	एक	लह	रसि	ऽधु	कीऽ	इत	आऽ	येऽ	उत	जाऽ	ये	ऽ	ऽ
म–	मम	–म	मग	रग	गम	गर	र–	सर	रग॒	रस	सर	ऩस	स	–	स
धऽ	र्मक	ऽर्म	कुछ	किया	ऽन	जिस	नेऽ	वह	पीऽ	छेऽ	पछ	ताऽ	ये	ऽ	न
स	र	स	ऩ	स	र	र	र	र	ग॒	र	स	ऩ	स	र	र
र	क	में	ऽ	मि	ले	ठौ	र	पा	वे	दु	ख	अ	ति	घो	र
र	ग॒	र	स	स	–	र	स	ऩ	–	–	ऩ	स	र	र	–
म	न	क	ल	पा	ऽ	ना	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ओ	प्रा	ऽ	णी	ऽ

भूल न जाना, मनुष्य वन ……… ……इत्यादि ।





मैं क्या हूँ ?

मैं न हूँ किसी तरह भी हीन,
अतल अमल आनन्द जलधि का मैं हूँ सुखिया मीन।
संसारी झंझट का चहुँ दिश बिछा हुआ है जाल,
बिछा रहे, मुझको न कभी भी होता तनिक ख़याल।
मैं तो हूँ अपने में लवलीन॥
आत्म-लक्ष्य से मुझे डिगाते हों अरबों आघात,
वज्र प्रकृति का बना हुआ हूँ, क्या डिगने की बात।
स्वप्न में भी न बनूंगा दीन॥
भवसागर से तैर रहा हूँ हुआ समझलो पार,
क्या चिंता अब खुला, खुला वह मोक्षपुरी का द्वार।
विश्व में मैं हूँ इक स्वाधीन॥
हानि लाभ हो, स्तुति निंदा, मान और अपमान,
अच्छा बुरा भले कुछ भी हो मैं सबसे बे भान।
कौन क्या देगा, लेगा छीन ?
अन्धकार विध्वस्त हुआ है बढ़ा ज्ञान-आलोक,
'अमर' शांति सन्देश सुनेगा, सकल चराचर लोक।
समुन्नत हूँ मैं नित्य नवीन॥

——*——

स्थायी (कहरवा)															स
०				×				०				×			मैं
ऩ	स	ध़	ऩ	स	ग	र	र	स	ऩ	प़	ध़	स	–	स	स
ऽ	न	हूँ	ऽ	कि	सी	ऽ	त	र	ह	भी	ऽ	हीं	ऽ	न	मैं





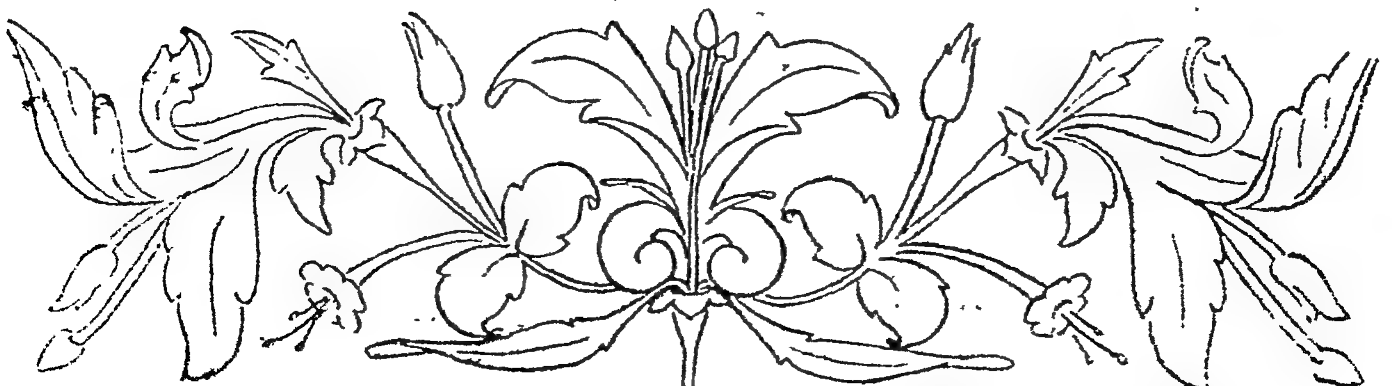
ऩ	स	ध़	ऩ	स	ग	र	र	स	ऩ	प़	ध़	स	–	–	–
ऽ	न	हूँ	ऽ	कि	सी	ऽ	त	र	ह	भी	ऽ	ही	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	स	ग	ग	र	ग	ग	ग	र	ग	प	प	ध
ऽ	ऽ	ऽ	न	अ	त	ल	अ	म	ल	आ	ऽ	नं	ऽ	द	ज
म	म	म	–	ग	–	ग	म	ग	र	स	ऩ	स	–	स	स
ल	धि	का	ऽ	मैं	ऽ	हूँ	ऽ	सु	खि	या	ऽ	मी	ऽ	न	मैं

ऽ न हूँ किसी तरह भी हीन।

अन्तरा--

स	–	स	–	ग	–	मं	–	प	प	प	मं	प	ध	प	प
सं	ऽ	सा	ऽ	री	ऽ	झं	ऽ	झ	ट	का	ऽ	च	हुँ	दि	श
प	प	ध	न	प	–	म	ग	र	म	ग	–	–	–	–	–
वि	छा	ऽ	हु	आ	ऽ	है	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल
ग	र	ग	म	ग	र	स	स	ध़	ऩ	प़	ध़	स	–	स	–
वि	छा	ऽ	र	हे	ऽ	मु	झ	को	ऽ	न	क	भी	ऽ	भी	ऽ
र	–	र	–	ग	र	प	म	ग	–	ग	र	ऩ	स	ध़	ऩ
हो	ऽ	ता	ऽ	त	नि	क	ख़	या	ऽ	ल	मैं	ऽ	तो	हूँ	ऽ
स	ग	र	–	स	ऩ	प़	ध़	स	–	स	स	ऩ	स	ध़	ऩ
अ	प	ने	ऽ	मैं	ऽ	ल	व	ली	ऽ	न	मैं	ऽ	न	हूँ	ऽ

किसी तरह भी हीन।



मनुष्य कौन ?

मनुष्य क्या, अदृष्ट की जो ठोकरें न सह सके,
मनुष्य क्या जो संकटों के वीच खुश न रह सके।
मनुष्य क्या, तूफान से जो क्षुब्ध भीम-सिन्धु में,
उठा के शीश वेग से न लहर बनके वह सके॥
मनुष्य क्या जो चमचमाते खञ्जरों की छांह में,
हां मुस्करा के गर्ज के न सत्य बात कह सके।
मनुष्य क्या जो रोते-रोते चल बसे जहान से,
दिखा प्रचण्ड आत्म-बल न भीम राह गह सके॥
मनुष्य क्या जो वासना का पुष्पहार पा 'अमर',
हिमाद्रि-श्रृङ्ग से भी ऊँचे अपने प्रण से ढह सके।

—※—

मनुष्य क्या·········· 

स्थायी (ताल दादरा)											प
×			०			×			०		म
न	–	न	सं	–	रं	न	सं	नु	ध	प	ध
नु	ऽ	ष्य	क्या	ऽ	अ	दृ	ऽ	ष्ट	की	ऽ	जो
ग	–	म	प	–	ध	न	न	रं	सं	–	प
ठो	ऽ	क	रैं	ऽ	न	स	ह	स	के	ऽ	म



प	रं	रं	रं	–	रं	रं	गं	रं	सं	रं	सं
नु	ऽ	ष्य	क्या	ऽ	जो	सं	ऽ	क	टों	ऽ	के
न	सं	न	ध	न	ध	न	न	रं	सं	–	प
वी	ऽ	च	खु	श	न	र	ह	स	के	ऽ	म

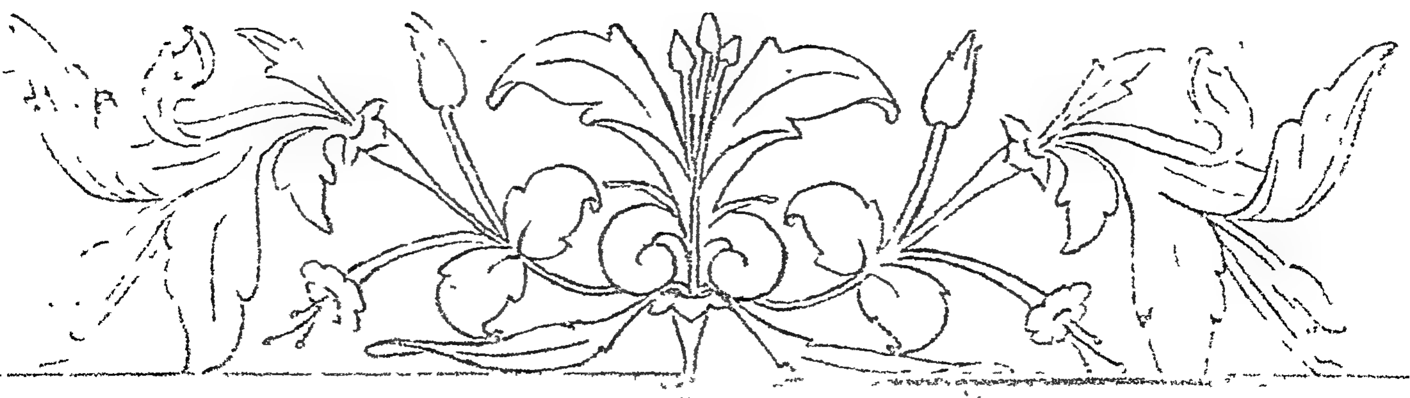
नुष्य क्या अदृष्ट की जो ठोकरें न सह सके।

अन्तरा—

सं	रं
म	ऽ

ध	सं	नु	ध	प	ध	ग	प	म	ग	–	स
नु	ऽ	ष्य	क्या	ऽ	तू	फा	ऽ	न	से	ऽ	जो
स	म	म	म	ग	म	प	सं	नु	ध	–	नु
जु	ऽ	ध्य	भी	ऽ	म	सिं	ऽ	धु	में	ऽ	जो
प	ध	प	म	ग	म	प	सं	नु	ध	–	प
जु	ऽ	ध्य	भी	ऽ	म	सिं	ऽ	धु	में	ऽ	उ
प	गं	रं	रं	–	रं	रं	गं	रं	सं	रं	सं
ठा	ऽ	के	शी	ऽ	श	वे	ऽ	ग	से	ऽ	न
न	सं	न	ध	न	ध	न	न	रं	सं	–	प
ल	ह	र	व	न	के	व	ह	स	के	ऽ	म

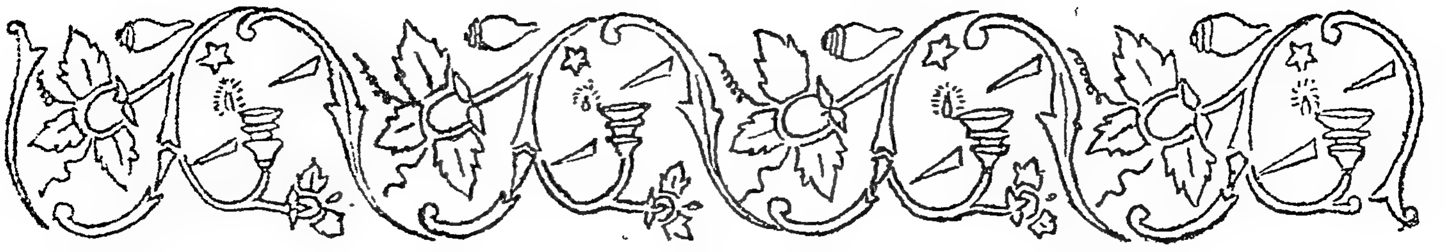
नुष्य क्या अदृष्ट की जो ठोकरें न सह सके।





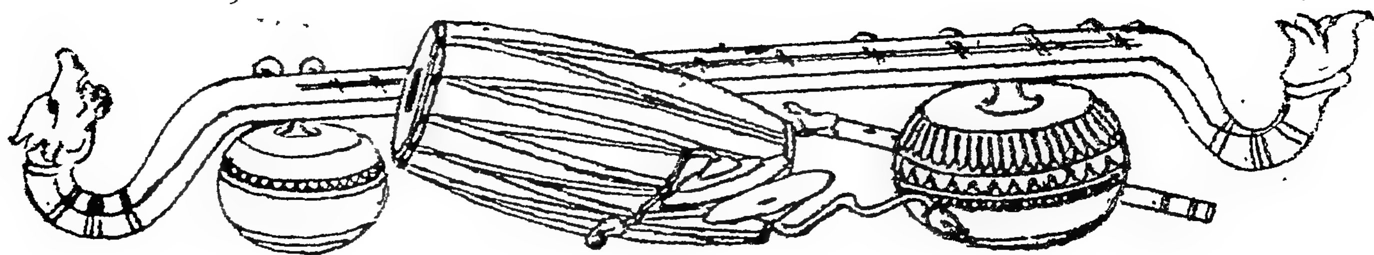




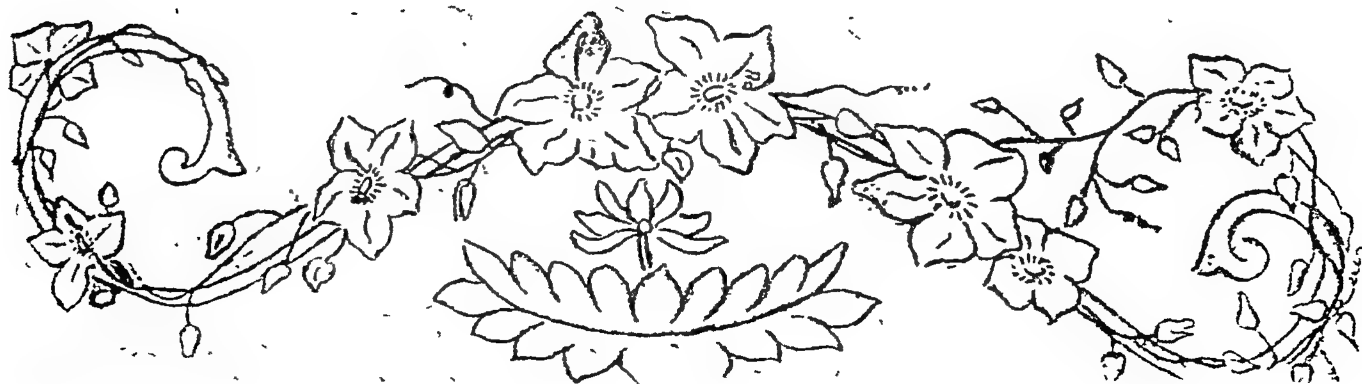


वै रा ग्य











धर्म करिये !

धर्म की पूँजी कमाले, कमाले जीवा जीवन बन जायगा।
जीवन पट बे रँग है कबसे ?

संयम रंग चढ़ाले-चढ़ाले जीवा— जीवन बन जायगा। धर्म ··।
बाग़े जहां में अपना जीवन पुष्प सुगन्ध बनाले जीवा॥
जीवन बन जायगा। धर्म ··॥

अखिल विश्व के दलित वर्ग की, सेवा भार उठाले-उठाले जीवा।
जीवन बन जायगा। धर्म ॥

सोया पड़ा है अंतर चेतन, सत्संग बैठ जगाले-जगाले जीवा॥
जीवन बन जायगा। धर्म···।

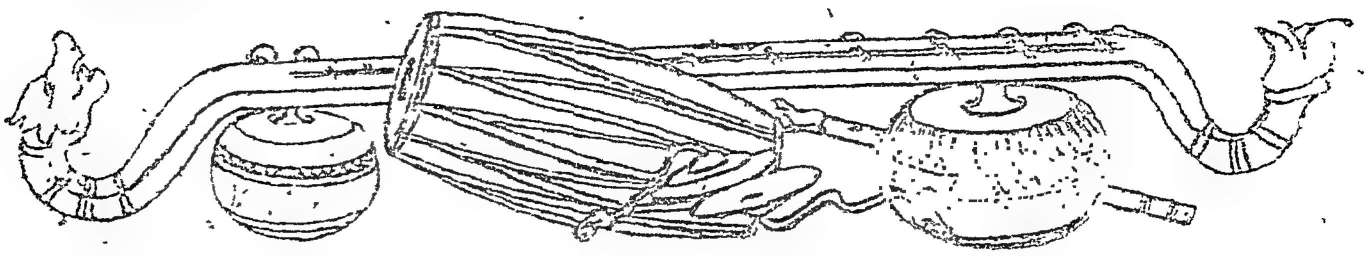
मोह-पाश के दृढ़ बन्धन से, अपना पिंड छुड़ाले-छुड़ाले जीवा।
जीवन बन जायगा॥ धर्म···॥

हो तू भला इतना कि रिपू भी, चरणों में शीश झुकाले-झुकाले जीवा।
जीवन बन जायगा। धर्म···॥

राग-द्वेष का जाल बिछा है, दूर से राह बचाले-बचाले जीवा॥
जीवन बन जायगा। धर्म ··।

'अमर' सुयश के वाद्य बजेंगे, सत्य की धूनी रमाले-रमाले जीवा॥
जीवन बन जायगा। धर्म···।





धर्म की पूँजी कमा ले......!

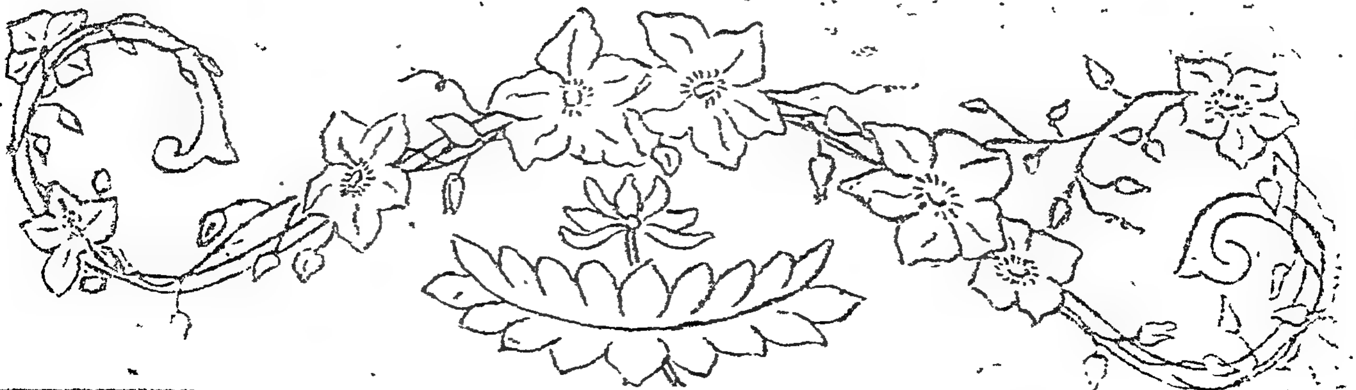
स्थायी (कहरवा)

×				०				×				०			
*	ग-	ग	ग	र	–	ग	म	रग	ग	–	स	सर	र	स	ऩ
*	धर्	म	की	पूँ	ऽ	जी	क	माऽ	ले	ऽ	क	माऽ	ले	जी	वा
*	स	र	र	र	–ग	स	–	*	ग	ग	ग	र	–	ग	म
*	जी	वन	वन	जा	ऽय	गा	ऽ	*	धर्	म	की	पूँ	ऽ	जी	क
रग	ग	–	स	सर	र	स	ऩ	*	स	र	र	र	–ग	स	–
माऽ	ले	ऽ	क	माऽ	ले	जी	वा	*	जी	वन	वन	जा	ऽय	गा	ऽ

अन्तरा—

*	स	ग	मं	प	–	प	–	*	मं	मं	प	ग	म	ग-	–
*	वा	गे	ज	हां	ऽ	में	ऽ	*	अ	प	ना	जी	ऽ	वन	ऽ
*	ग	ग	ग	र	–	ग	म	रग	ग	–	स	सर	र	स	ऩ
*	पु	ष्प	सु	गं	ऽ	ध	व	नाऽ	लेऽ	ऽ	व	नाऽ	ले	जी	वा
*	स	र	र	र	–ग	स	–								
*	जी	वन	वन	जा	ऽय	गा	ऽ								

धर्म की पूँजी कमाले–कमाले जीवा जीवन वन जायगा।





अमर जीवन !

अरे ओ बशर कुछ तो नेकी कमा जा,
जहां में सदाकत का झण्डा फहरा जा।
बने दोस्त दुनियां मिलें सब गले से,
यहां से वहां प्रेम गङ्गा बहा जा ॥
खरी-खोटी सबकी सुने जा, बढ़े जा,
ख़याले खुदा में खुदी को मिटा जा।
बुरी आदतों का न नामो—निशां हो,
सदाचार पै सारे जग को चला जा ॥
धरा क्या जहालत भरे फ़लसफे में,
बड़ा भोला-भाला तू सब से कहा जा।
उठा अपना आपा ऊँचाई पै इतना,
फरिश्तों को भी अपने क़दमों झुका जा ॥
जपे तेरी माला प्रजा लाखों वर्षों,
'अमर' नाम ऐसा अमर तू बना जा।

——*——

राग तिलककामोद मिश्र, ताल—झपताल

		स्थायी—							स
×		२			०		३		अ
र	ग	स	-	स	र	म	प	ध	मप
रे	ऽ	ओ	ऽ	ब	श	र	कु	छ	तोऽ



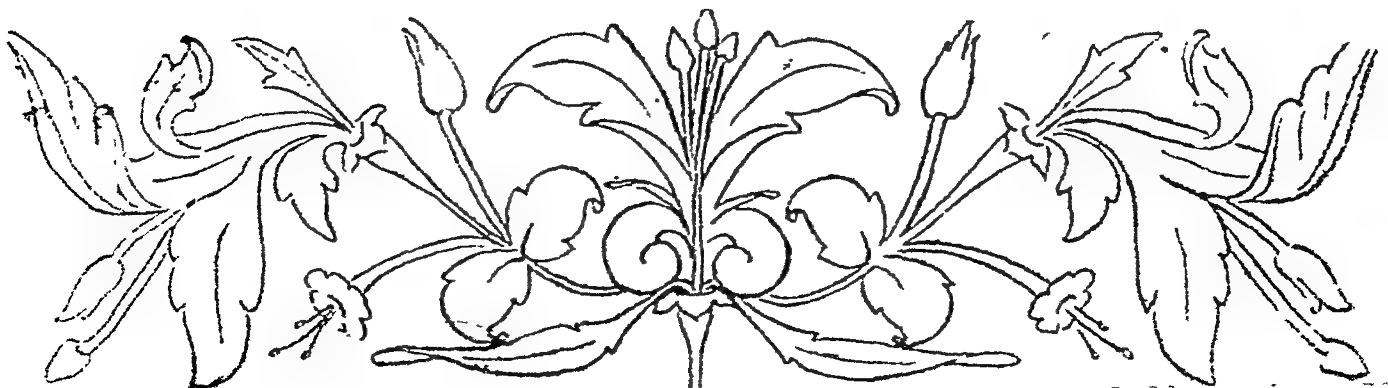


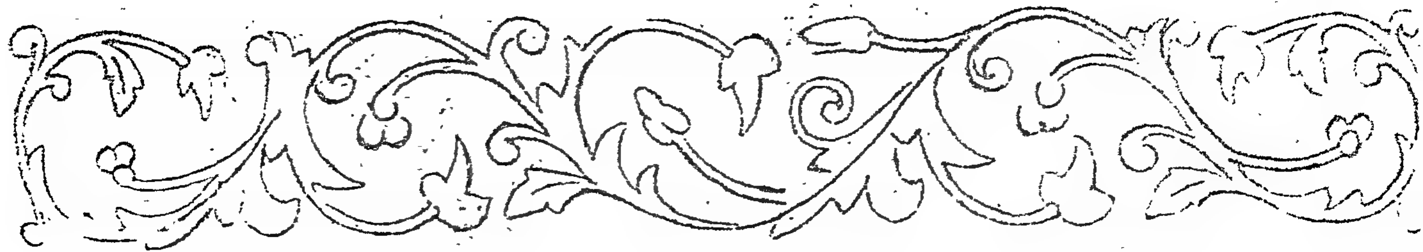
सं	–	प	–	ध	म	गर	ग	ऩ	स
ने	ऽ	की	ऽ	क	मा	ऽऽ	जा	ऽ	ज
र	ग	स	–	स	र	म	प	न	सं
हां	ऽ	में	ऽ	स	दा	ऽ	क	त	का
सं	प	प	ध	ध	म	गर	ग	ऩ	स
भं	ऽ	डा	ऽ	फ	ह	राऽ	जा	ऽ	अ

रे ओ वशर ...... ।

अन्तरा—

									म
									व
म	प	सं	–	सं	सं	सं	सं	–	सं
ने	ऽ	दो	ऽ	स्त	दु	नि	यां	ऽ	मि
रं	गं	गं	गं	सं	सं	रं	सं	प	प
लें	ऽ	स	व	ग	ले	ऽ	से	ऽ	य
प	न	न	सं	सं	रं	गं	गं	–	सं
हां	ऽ	से	ऽ	व	हां	ऽ	प्रे	ऽ	म
सं	प	ध	ध	म	म	गर	ग	ऩ	स
गं	ऽ	गा	ऽ	व	हा	ऽऽ	जा	ऽ	अ





क्या किया ?

तू ने आके जगत् में वता क्या लिया,
काम अच्छा सुयश का वता क्या किया ?

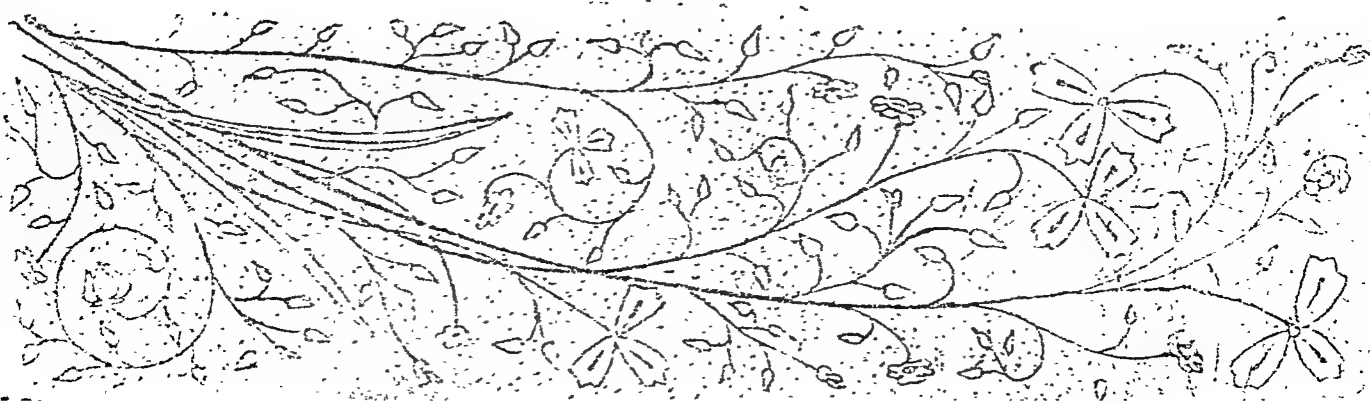
पेट दिन रात अपना ही भरता रहा,
खा-खा मेवा मिठाई अफरता रहा।
भूखे मरते न भाई को टुकड़ा दिया !

रंडी भडुओं की महफ़िल जहां भी जमी,
बाबू जी की सवारी वहां ही थमी।
वैठ सत्संग में शमरस कभी न पिया !

चाही हर्गिज़ किसी की भलाई नहीं,
छोड़ी कुछ भी जणों को बुराई नहीं !
टूटा दिल न किसी का दया से सिया !

फूल होकर न लोगों के मस्तक चढ़ा,
पाठ जीवन सफलता का कुछ ना पढ़ा।
कांटा वनके 'अमर' गर जिया क्या जिया !

—*—





तूने आके जगत में वता.........!

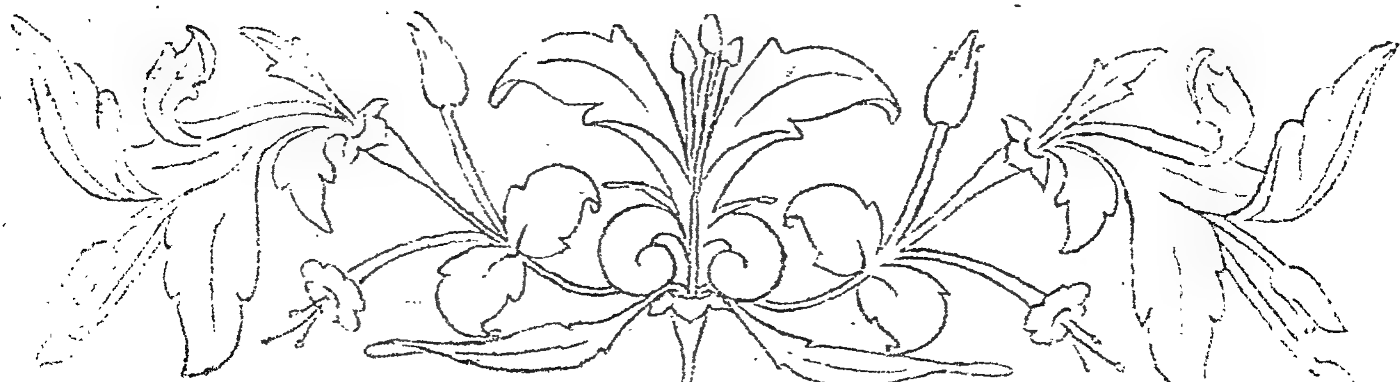
स्थायी (दादरा)										स	स
×			०			×			०	तू	ने
ग़	रे़	स	ऩ	स	स	सर	ग़	र	ग़	स	स
आ	के	ज	गत	में	व	ता ;	क्या	लि	या	का	म
ग़	रे़	स	ऩ	स	स	सर	ग़	र	ग़	स	स
अ	च्छा	सु	यश	का	व	ताऽ	क्या	कि	या,	तू	ने

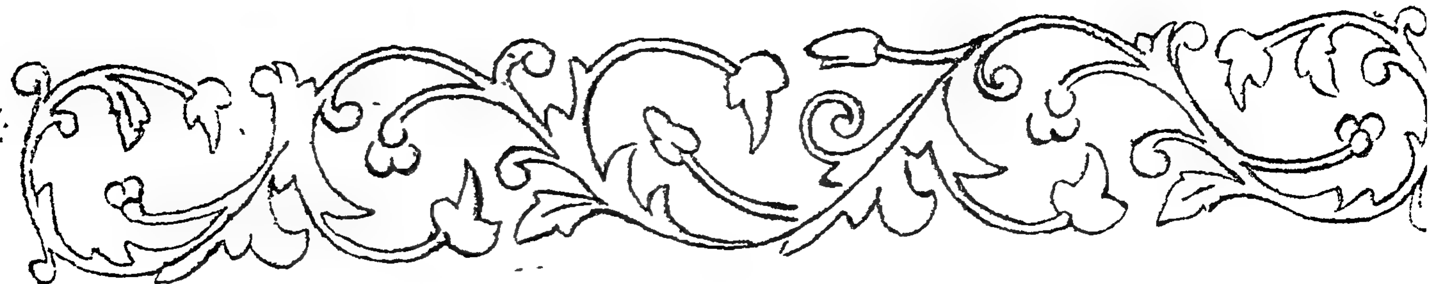
आके जगत में वता क्या लिया ।

अन्तरा—										र	ग़
										पे	ट
म	म	ग़	मप	म	ग़	र	स	र	ग़	र	ग़
दिन	रा	त	अप	ना	ही	भर	ता	र	हा	खा	खा
म	म	ग़	मप	ग़	ग़	र	स	र	ग़	स	स
मे	वा	मि	ठाऽ	ई	अ	फर	ता	र	हा,	भू	खे
सग़	रे़	स	ऩ	स	स	सर	ग़	र	ग़,	स	स
मर	ते	न	भा	ई	को	टुक	ड़ा	दि	या,	तू	ने

आके जगत में वता क्या लिया । काम अच्छा सुयश का वता क्या किया ?

———





मन की तरंग !

अद्भुत दशा कहूँ क्या, कैसी हुई है मन की ।
सारी विगाड़ डाली प्रभुता स्वयं मनन की ॥
पल भर में नर्क के और स्वर्गों के जाल बुनता ।
पल में उड़ान लेता, आशा विकल गगन की ॥
कौड़ी पै मर रहा है सब होश भूल बैठा ।
चोरों ने ली उड़ा है गठरी अमूल्य धन की ॥
क्या खाऊँ पीऊँ क्या-क्या पहनूँ रहूँ कहां मैं ।
चिन्ता में घुल रहा है सुध-बुध रही न तनकी ॥
भोगो की वासना के जंगल में घूमता है ।
मिट्टी पलीद की है जिनराज के भवन की ॥
अंदर है राक्षसों सा जीवन महा भयंकर ।
बाहर का ढोंग क्या है बस देवसी लगन की ॥
ओ भक्त देखता क्या मन पर सवार होजा ।
आशा 'अमर' उठी गर दिल में प्रभू मिलन की ॥

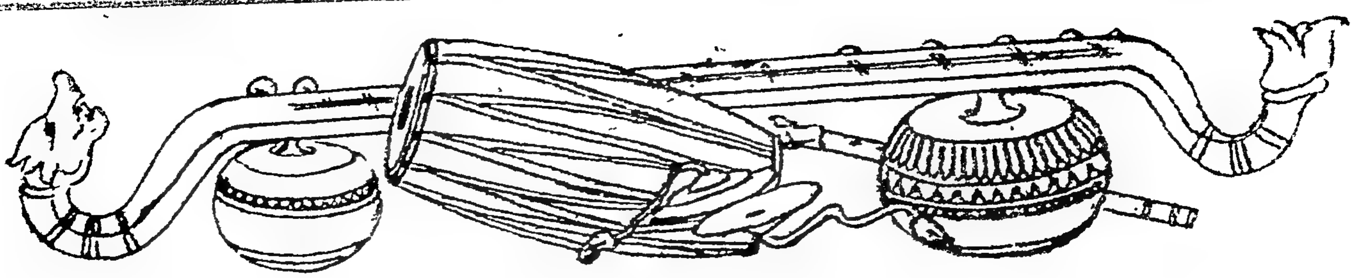
——*——

अद्भुत दशा कहूँ क्या !

स्थायी (कहरवा)

×				०				×				०			
ऩ	स	र	र	स	र	–	स	ऩ	–	स	–	–	–	–	–
अ	द्	भु	त	द	शा	ऽ	क	हूँ	ऽ	क्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ऩ	स	र	र	स	र	–	स	ऩ	–	स	–	र	ग	म	–
अ	द्	भु	त	द	शा	ऽ	क	हूँ	ऽ	क्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ





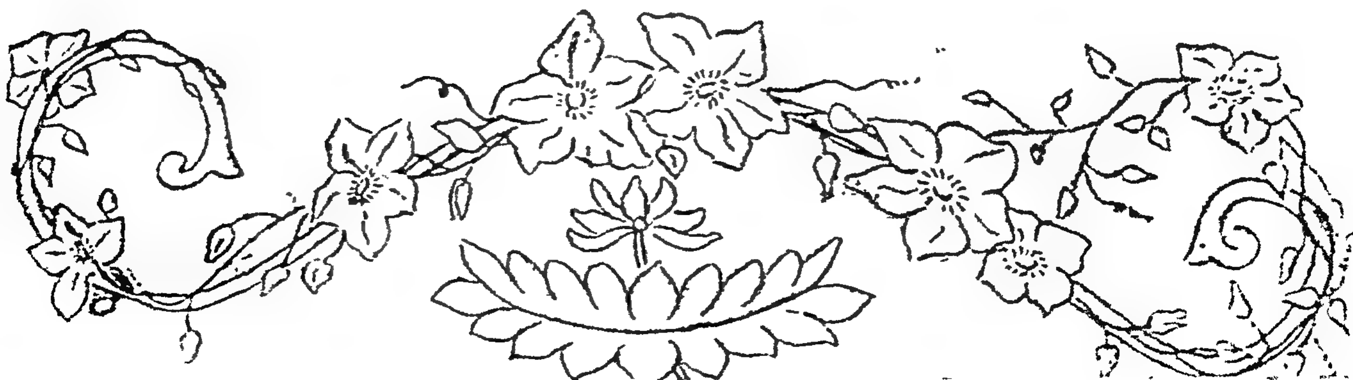
म	–	म	–	म	म	–	ग	र	ग	ग	–	र	–	स	–
कै	ऽ	सी	ऽ	हु	ई	ऽ	है	म	न	की	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
र	म	ग॒	–	र	स	–	र	ऩ	–	स	–	र	ग	म	–
सा	ऽ	री	ऽ	वि	गा	ऽ	ड़	डा	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	म	–	म	म	म	ग	र	ग	ग	–	र	–	स	–
प्र	भु	ता	ऽ	स्व	य	म्	म	न	न	की	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
र	म	ग॒	ग॒	र	स	–	र	ऩ	–	स	–	–	–	–	–
अ	द्	भु	त	द	शा	ऽ	क	हूँ	ऽ	क्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

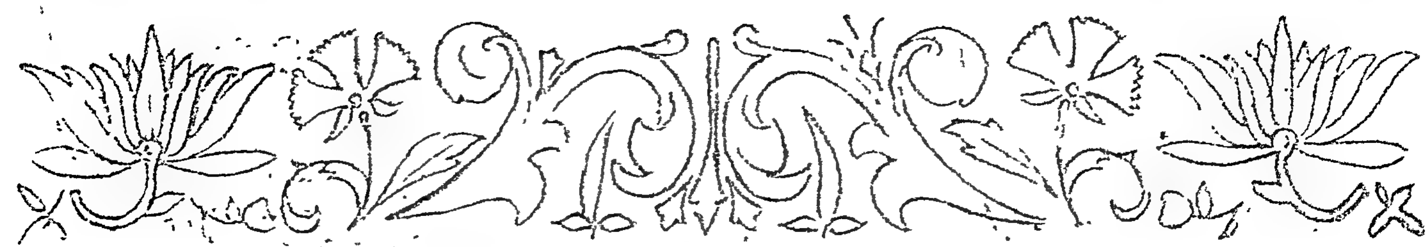
अद्भुत दशा कहूँ क्या कैसी हुई है मन की, अद्भुत दशा कहूँ क्या।

अन्तरा—

ग	प	म	म	ग	र	–	ग	म	प	प	प	–	–	–	–
प	ल	भ	र	मैं	न	ऽ	कँ	के	ऽ	औ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	ध	न॒	–	प	ध	–	म	ग	प	म	–	–	–	–	–
स्व	ऽ	गों	ऽ	के	जा	ऽ	ल	बु	न	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	ध	न॒	–	प	ध	–	म	ग	र	ग	–	–	–	–	–
प	ल	में	ऽ	उ	ड़ा	ऽ	न	ले	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
र	म	ग॒	–	र	स	स	ऩ	स	र	र	–	स	–	ऩ	–
आ	ऽ	शा	ऽ	वि	क	ल	ग	ग	न	की	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अद्भुत दशा कहूँ क्या ....।





नैतिक शिक्षा !

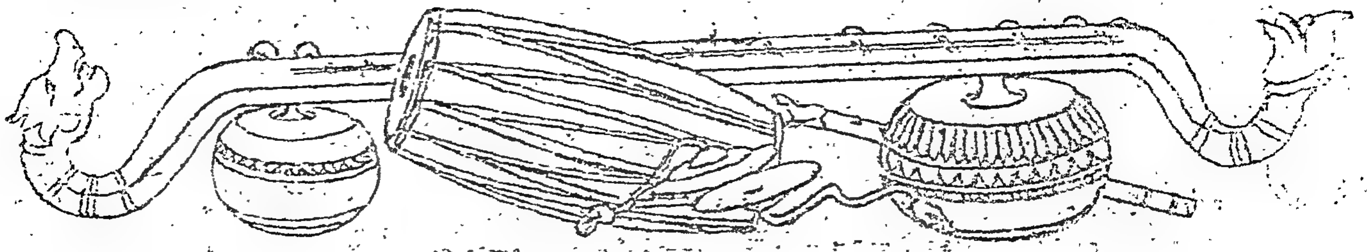
मत बोवो पेड़ बबूल ।
क्योंकि तुम्हारे पग में एकदिन चुभेंगे तीखे शूल ॥
दीन जनों का खून चूस कर, मत न बनो स्थूल ।
रो-रो अँखियां फूलेंगी जब, मारेंगे जम रूल ॥
मत ना छाती तान गर्व से, चलो अपनी सुध भूल ।
जगसे उड़ जावोगे एक दिन जैसे हवा से धूल ॥
मत ना सता-सता कर सबको, करो अपने प्रतिकूल ॥
पत्थर दिल को अबतो बनालो,अति ही सुकोमल फूल ॥
पुण्योदय से मिला यह नर-भव मतना खोवो फिजूल ।
व्याज जाय ऐसी तैसी में, रखलो केवल मूल ॥
अगर सदा सुख चाहते हो तो करलो कहन कबूल ।
पर उपकारों में ही हरदम 'अमर' रहो मशगूल ॥

———*———

मत बोवो पेड़ बबूल !

स्थायी (त्रिताल)														स	स
०				३				×				२		म	त
स	म	ग	–	ग	म॑	प	म॑	प	–	–	–	–	–	–	प
बो	ऽ	वो	ऽ	पे	ऽ	ड़	ब	बू	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल





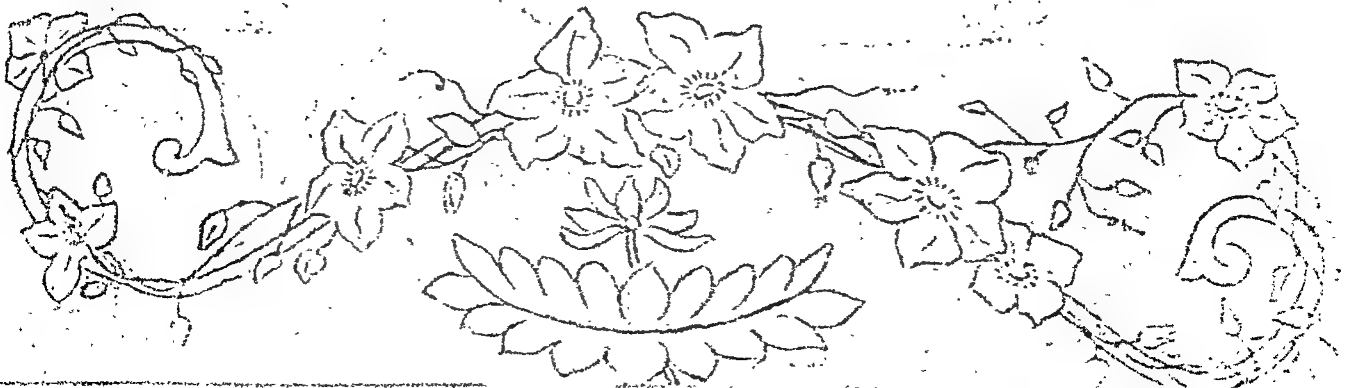
		न													
मंप	धसं	ध	ध	प	–	प	–	मंप	धप	म	–	ग	म	ग	म
क्योंऽ	ऽऽ	कि	तु	म्हा	ऽ	रे	ऽ	पऽ	ऽग	में	ऽ	ए	क	दि	न
ध	प	–	म	र	र	स	–	र	–	स	–	–	स	ऩ	स
चु	भें	ऽ	गे	ती	ऽ	खे	ऽ	शू	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	म	त

बोबो पेड़ बबूल ।

अन्तरा—

स	म	ग	प	मं	ध	प	–	सं	–	ध	प	मंप	धप	म	म
दी	ऽ	न	ज	नों	ऽ	का	ऽ	खू	ऽ	न	चू	ऽऽ	सऽ	क	र
प	प	प	प	न	ध	न	रं	सं	–	–	–	–	–	–	सं
म	त	न	व	नो	ऽ	इ	स	थू	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल
*	गं	–	मं	रं	रं	सं	–	न	सं	न	सं	ध	ऩ	ध	प
*	रो	ऽ	रो	अँ	खि	यां	ऽ	फू	ऽ	लें	ऽ	गी	ऽ	ज	ब
*	प	–	प	प	–	प	प	प	मं	प	ध	म	–	ग	म
*	मा	ऽ	रें	गे	ऽ	ज	म	रू	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ	म	त
*	ध	प	म	र	–	स	स	र	–	स	–	–	स,	स	ऩ
*	बो	ऽ	बो	पे	ऽ	ड़	ब	बू	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल,	म	त

बोबो पेड़ बबूल ।



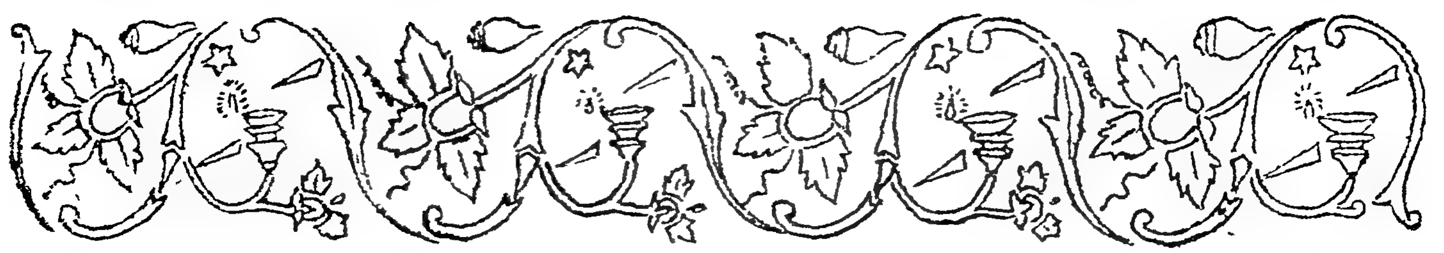


मन मूरख क्यों दीवाना है....!

मन मूरख क्यों दीवाना है,
जग सपना क्या गरवाना है?
आज खिला जो फूल चमन में,
कल उसको मुरझाना है।
आज खिली जो धूप तो कल को,
घन अँधियारा छाना है॥
प्रातः चढ़ा जो सूर्य गगन में,
शाम हुए छिप जाना है॥
अभी उठीं जो लहरें जल में,
अभी उन्हें लय पाना है
रात पड़ी जो ओस कमल पर,
हिलते ही ढल जाना है॥
यह जीवन कागज़ की पुड़िया,
बूँद लगे गल जाना है।
चन्द रोज़ की जिन्दगानी पर,
क्यों पागल मस्ताना है॥
कितना ही तू क्यों न अकड़ले,
आखिर मरघट आना है।
कौन किसी का जग में, जिस पर,
यह सब झगड़ा ठाना है॥
'अमर' सत्य पर तू बलि होजा,
नाम अमर अपनाना है।

—— * ——





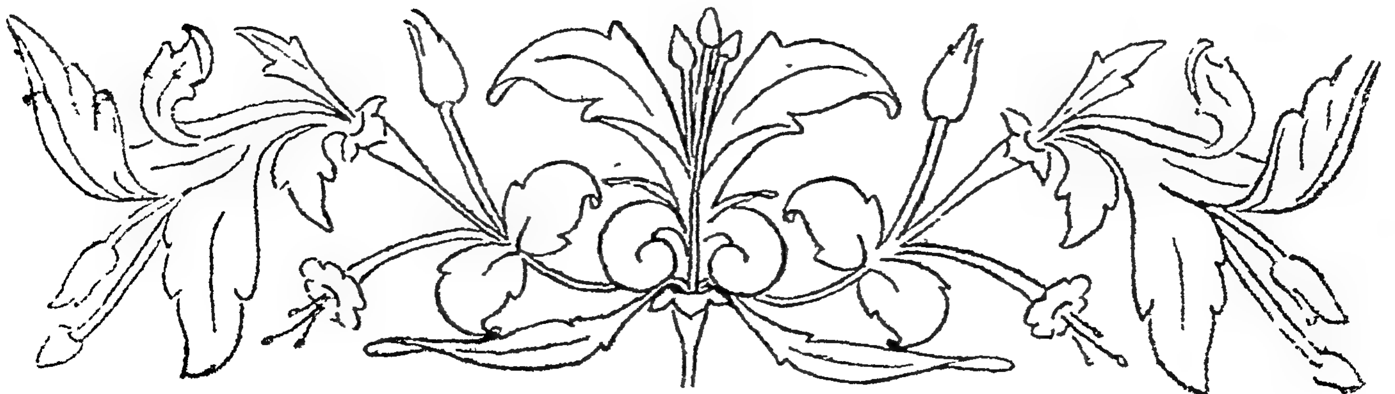
						स्थायी (कहरवा)								ग	म
×				०				×			•	०		म	न
गम	पध॒	प	म	ग॒	र	स	र	ऩ	स	ग	म	प	–	ग	म
मूऽ	ऽऽ	र	ख	क्यों	ऽ	दी	ऽ	वा	ऽ	ना	ऽ	है	ऽ	ज	ग
प	प	प	–	पध	न॒ध	प	ध	ग	म	ग	स	ग	म	ग	म
स	प	ना	ऽ	क्याऽ	ऽऽ	ग	र	वा	ऽ	ना	ऽ	है	ऽ	म	न

मूरख क्यों दीवाना है ?

अन्तरा—

ग॒	–	ग॒	ग॒	ग॒	–	ग॒	–	र	–	र	ग॒	र	ग॒	स	–
आ	ऽ	ज	खि	ला	ऽ	जो	ऽ	फू	ऽ	ल	च	म	न	में	ऽ
ग	ग	ग	ग	ग	म	गम	पध॒	पम	ग॒	र	ग॒	स	–	–	–
क	ल	उ	स	को	ऽ	मुऽ	रऽ	ऽऽ	झा	ऽ	ना	है	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	प	प	न	–	न	–	सं	–	सं	सं	सं	सं	सं	–
आ	ऽ	ज	खि	ली	ऽ	जो	ऽ	धू	ऽ	प	तो	क	ल	को	ऽ
न॒	ध	प	प	पध	संन॒	ध	प	ग	म	ग	स	ग	म,	ग	म
घ	न	अँ	धि	याऽ	ऽऽ	रा	ऽ	छा	ऽ	ना	ऽ	है	ऽ	म	न

मूरख क्यों दीवाना है ?





एक बात !

एक बात मेरी सुनले, ऐ मोक्ष जाने वाले,
तू कौन है बता तो, किस जा से आने वाले ?
माता पिता व दारा, स्वारथ का संग सारा,
आखिर करें किनारा, अपना समझने वाले।
जब आ बुढ़ापा धावे, कोई न काम आवे,
सब देख भौं चढ़ावें, जग में फँसाने वाले।
तू कौन कैसे आया, क्या संग अपने लाया ?
क्या काम करने आया, उठ जाग,जाने वाले।
संसार है विनश्वर. दुखकारि है यह कस्वर,
देखे दुखी में अक्सर, सेठी कहाने वाले।
है धर्म मोक्ष दाता, नर्कादि दुख त्राता,
तुझको 'अमर' बताता, फर मुक्ति जाने वाले।



एक बात मेरी सुनले.......!

ताल–कहरवा (मध्यलय)

														र	ग़
×				×	स्थायी—			×				×		ए	क
स	–	–	–	प़	ऩ	–	स	र	म	ग़	–	–	–	म	प
वा	ऽ	ऽ	ऽ	त	मे	ऽ	री	सु	न	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ऐ	ऽ





म	ग	म	ग	र	स	-	र	ऩ	-	स	-	-	-	र	ग
मो	ऽ	ऽ	ऽ	क्ष	जा	ऽ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	तू	ऽ
स	-	-	-	प़	ऩ	-	स	र	म	ग	-	-	-	म	प
कौ	ऽ	ऽ	ऽ	न	है	ऽ	ब	ता	ऽ	तो	ऽ	ऽ	ऽ	कि	स
म	ग	म	ग	र	स	-	र	ऩ	-	स	-	-	-	र	ग
जा	ऽ	ऽ	ऽ	से	आ	ऽ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ए	क

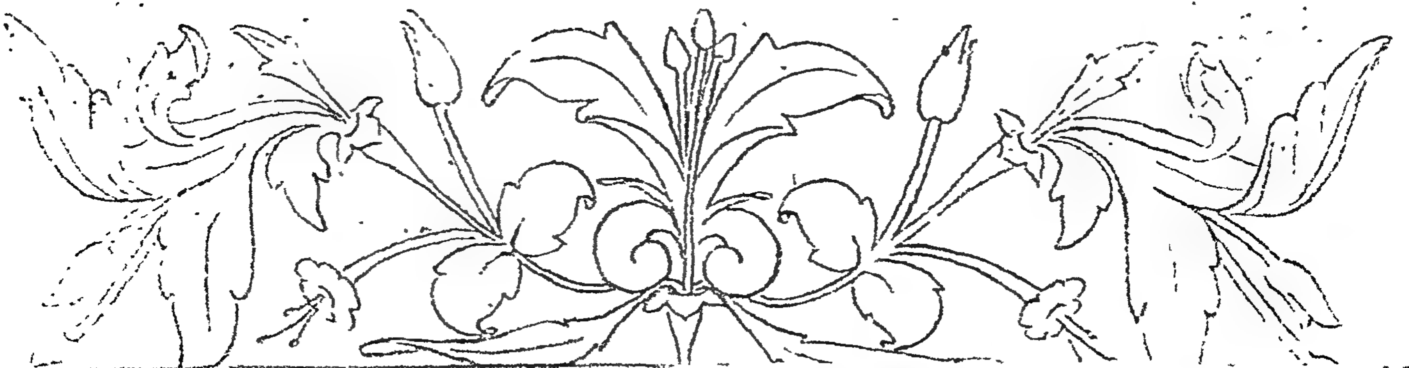
बात मेरी सुनले ऐ मोक्ष जाने वाले (इस पंक्ति को दुहराइये)

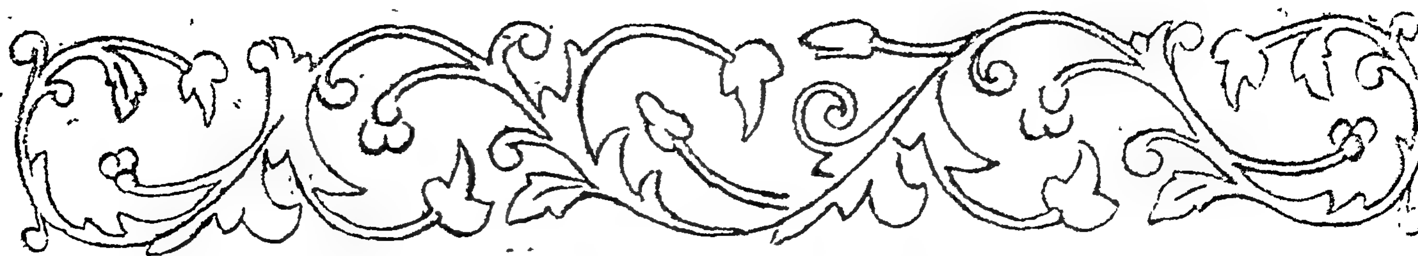
अन्तरा—		ग	म
		मा	ऽ

प	-	-	-	प	प	-	म	पध	न	ध	प	-	-	प	प
ता	ऽ	ऽ	ऽ	पि	तां	ऽ	व	दाऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	स्वा	ऽ
म	ग	-	-	ग	म	-	प	ग	र	स	-	-	-	र	ग
र	थ	ऽ	ऽ	का	सं	ऽ	ग	सा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ
स-	-	-	-	प़	ऩ	-	स	र	म	ग	-	-	-	म	प
खिर	ऽ	ऽ	ऽ	क	रें	ऽ	कि	ना	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	अ	प
म	ग	म	ग	र	स	-	र	ऩ	-	स	-	-	-	र	ग
ना	ऽ	ऽ	ऽ	स	म	झ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ए	क

बात मेरी सुनले............।

यह गीत अपने मध्यम को षड़ज मान कर गाइये ।





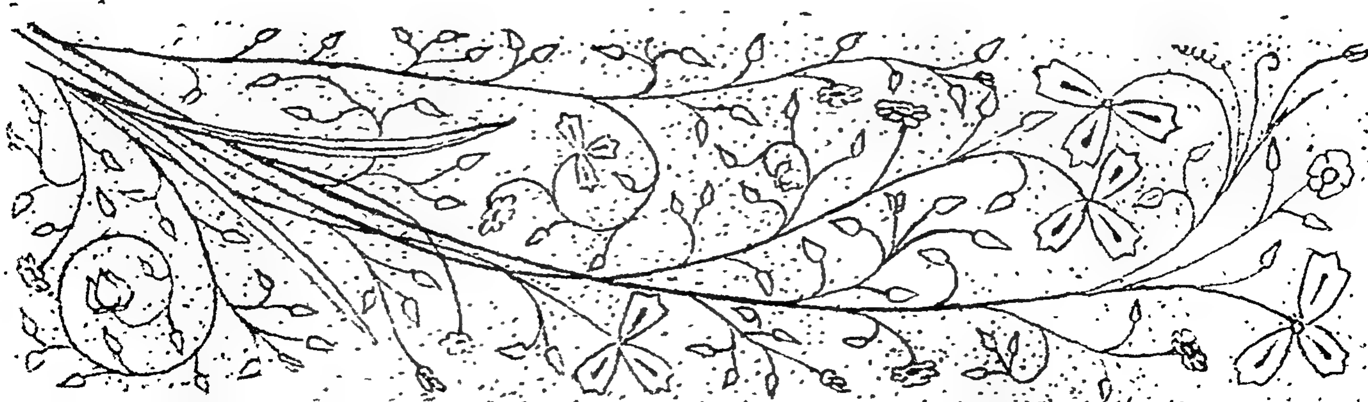
क्या करना है ?

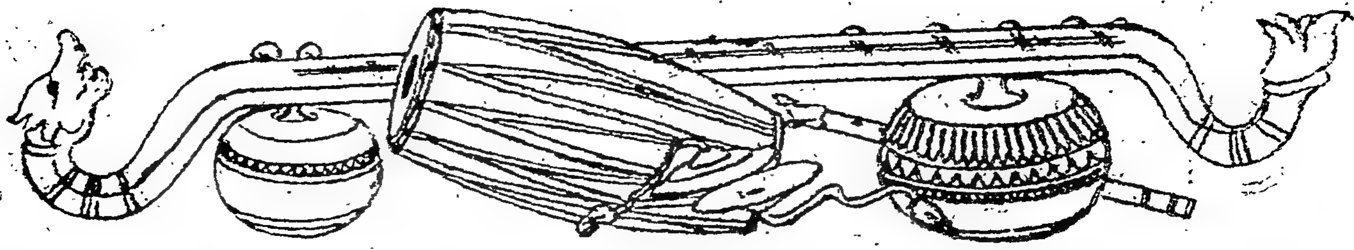
पाया नर जन्म नफ़ा खूब कमा ले तू तो,
ख्वावे ग़फलत से ज़रा, खुद को जगा ले तू तो !
द्वेष की होली में जलता है ज़माना तो जले,
प्रेम सागर की हिलोरों में नहा ले तू तो ॥
और करते या नहीं, तुझको पड़ी क्या इससे,
दीन दुखिया जो मिले हाथों उठाले तू तो।
छोड़ संकट में अगर भगने लगें सब साथी,
क्या है परवाह अटल पांव जमाले तू तो ॥
चोट कितनी ही कोई क्यों न लगाए तुझको,
मन्त्र बदले में भलाई का चला ले तू तो।
झूँठे झगड़े हैं "अमर" दुनियां के तू क्या लेगा,
वह भी अच्छा है, यही जग से कहा ले तू तो ॥

—— ※ ——

पाया नर जन्म नफ़ा........!

स्थायी (दादरा) मध्यलय											ध
०			×			०			×		पा
प	ग	स	र	–	स	स	स	–	स	ध	ध
या	न	र	ज	ऽ	न्म	न	फा	ऽ	खू	ऽ	ब





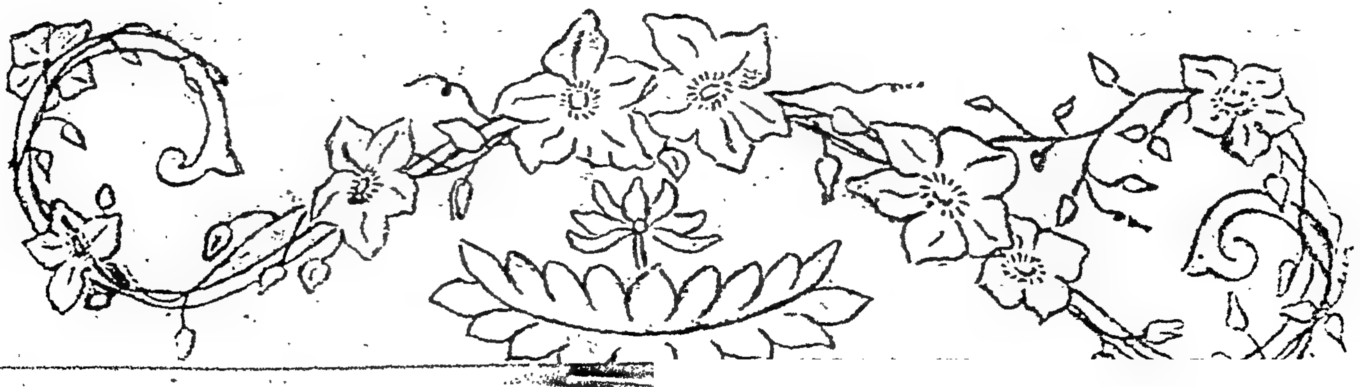
ध	ध	प	पध	न	धन	सं	ध	–	प	–	ध
क	मा	ऽ	लेऽ	ऽ	तूऽ	ऽ	तो	ऽ	ऽ	ऽ	ख्वा
प	ग	स	र	र	स	स	स	–	स	ध	ध
वे	ग़	फ	ल	त	से	ज़	रा	ऽ	खु	द	को
ध	ध	प	पध	न	धन	सं	ध	–	प	–	ध
ज	गा	ऽ	लेऽ	ऽ	तूऽ	ऽ	तो	ऽ	ऽ	ऽ	पा

या नर जन्म नफा खूब कमा, ले तू तो।

अन्तरा—

											सं
											है
सं	सं	ध	सं	–	न	रं	सं	–	न	–	न
प	की	ऽ	हो	ऽ	ली	में	ज	ल	ता	ऽ	है
रं	रं	–	नरं	गं	न	रं	सं	–	न ध	प	ध
ज़	मा	ऽ	नाऽ	ऽ	तो	ज	ले	ऽ	ऽ	ऽ	प्रे
प	ग	स	र	र	स	स	स	–	स	ध	ध
म	सा	ऽ	ग	र	की	हि	लो	ऽ	रों	ऽ	में
ध	ध	प	पध	न	धन	सं	ध	–	प	–	ध
न	हा	ऽ	लेऽ	ऽ	तूऽ	ऽ	तो	ऽ	ऽ	ऽ	पा

या नर जन्म नफा खूब कमाले तू तो, ख्वावे ग़फलत से जरा खुद को जगाले तू तो।





मन की कुलातें !

समझ मन ! मत ना हो शैतान !
होली वहुत मान वस अब तो मतना ज्यादा तान !
मैं सत्संगति करके करना चाहत निज कल्यान ।
लेकिन ले दौड़े दुर्जन के झट तू वेईमान,
मैं चाहूँ बस सेवक बनके सबका करूँ सम्मान ॥
लेकिन तू मुझसे करवाता हा उलटा अपमान,
मैं भूखे नंगों को करना चाहूँ कुछ धन-दान ।
लेकिन तू कौड़ी-कौड़ी पर मुझे करे कुर्बान,
मैं समता से करना चाहूँ अपने दिन गुजरान ॥
लेकिन लगा उपाधी नित नव तू करता हैरान,
मैं निश्चल एकान्त बैठकर सुमरूँ जब भगवान् ।
विघ्न करे, तब सब कामों का करके मेल मिलान,
तू मेरा संगी साथी है तुझे चाहिये ज्ञान ॥
आज वाज अपनी करनी से छोड़ दे उलटी वान,
'अमर चन्द्र' गुरुदेव कृपा से लीना योग महान ।
अब तो रहना दूर अन्यथा कर दूंगा अवसान !

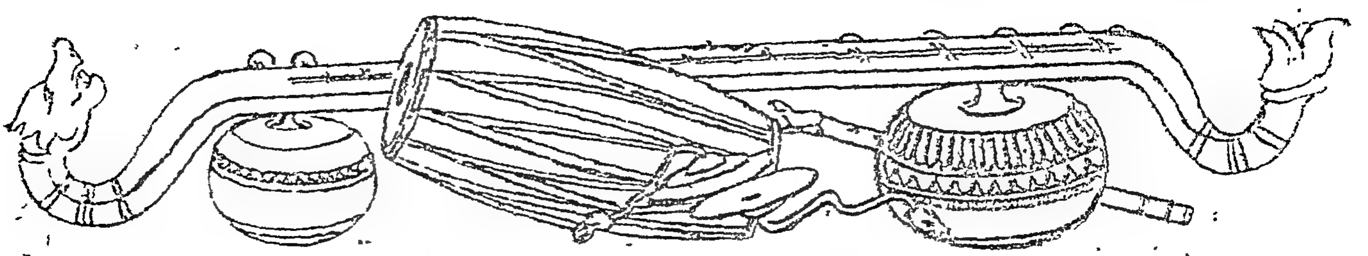
——*——

समझ मन मत ना हो............!

राग गौड़ मल्हार (त्रिताल) मध्यलय

					स्थायी										ग
२				०				३				×			स
म	प	म	ग	र	ग	र	म	ग	र	स	–	र	ग	र	ग
म	झ	म	न	म	त	ना	ऽ	हो	ऽ	शै	ऽ	ता	ऽ	न	स





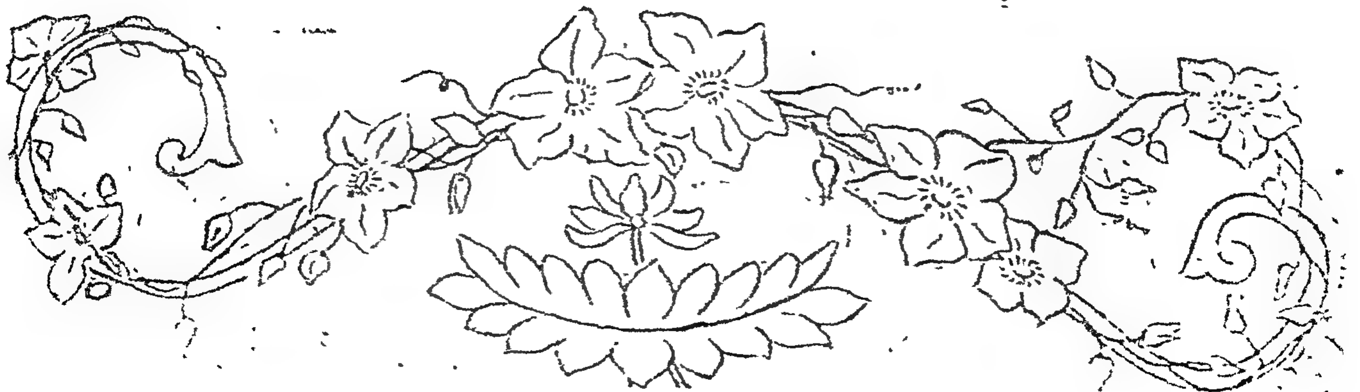
म	प	म	ग	रे	–	प	म	प	प	म	प	ध	सं	ध	प
म	झ	म	न	हो	ऽ	ली	ऽ	ब	हु	त	मा	ऽ	न	व	स
म	प	म	ग	न	ध	सं	–	ध	नु	प	–	मप	धसं	ध	प
ओ	ब	तो	ऽ	म	त	ना	ऽ	ज्या	ऽ	दा	ऽ	ताऽ	ऽऽ	न	स

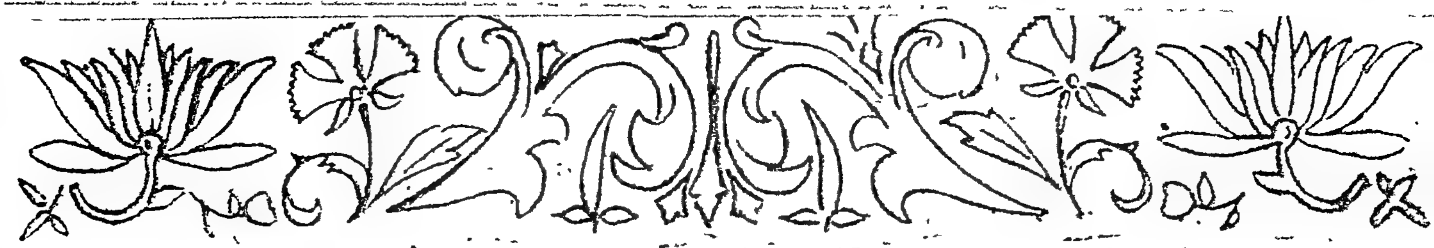
मझ मन मत ना हो शैतान।

अन्तरा--

प	–	प	प	न	ध	न	नि	सं	सं	सं	–	सं	रं	सं	–
मैं	ऽ	स	त्	सं	ऽ	ग	ति	क	र	के	ऽ	क	र	ना	ऽ
सं	–	ध	ध	सं	सं	सं	–	सं	रं	सं	–	ध	नु	प	–
चा	ऽ	ह	त	नि	ज	क	ऽ	ल्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ
म	र	प	म	प	–	म	प	ध	सं	ध	प	म	प	म	र
ले	ऽ	कि	न	ले	ऽ	दौ	ऽ	ड़े	ऽ	दु	र	ज	न	के	ऽ
सं	सं	सं	–	ध	नु	प	–	मप	धसं	ध	प	म	प	म	ग
झ	ट	तू	ऽ	बे	ऽ	ई	ऽ	माऽ	ऽऽ	न	स	म	झ	म	न

मत ना हो शैतान।





जुल्मी मन !

क्या-क्या जुल्म करे मन मीत, इस तन मिट्टी पर इतरा कर (ध्रुव)
बैठे सत की खोल दुकान, बोले झूँठ महा तूफ़ान।
ग्राहक ठग ले झट अनजान, खोटा माल खरा बतला कर ॥
लेकर सोटा पोलेदार, छाती काढ़ चले बाज़ार ।
करता बिन कारण तकरार, सौ-सौ झूँठे दोष लगा कर ॥
छाया धन यौवन अन्धकार, सूझे कुछ भी नहीं विचार ।
कूदे भांड सरे दरबार, नाचत वेश्या नित नचवा कर ॥
खाता मांस दया संहार, वन में खेले जाय शिकार ।
करता भारी अत्याचार, चंचल रसना पर ललचा कर ॥
बूढ़ा बैल बना लाचार, फिर भी मरा न काम विकार ।
बांधे मौड़ पड़ो धिक्कार, चांदी छन-छन-छन बरसा कर ॥
करले परम पिता का जाप, जिससे नष्ट होंय त्रय ताप ।
अच्छी नहीं पाप की छाप, कहता 'अमर' सही समझा कर ॥

—*—

क्या-क्या जुल्म करे !

स्थायी (कहरवा)

×				०				×				०			
स	-	स	ऩ	स	र	र	स	र	-	म	म	ग॒	-	-	ग॒
क्या	ऽ	क्या	ऽ	जु	ऽ	ल्म	क	रे	ऽ	म	न	मी	ऽ	ऽ	त





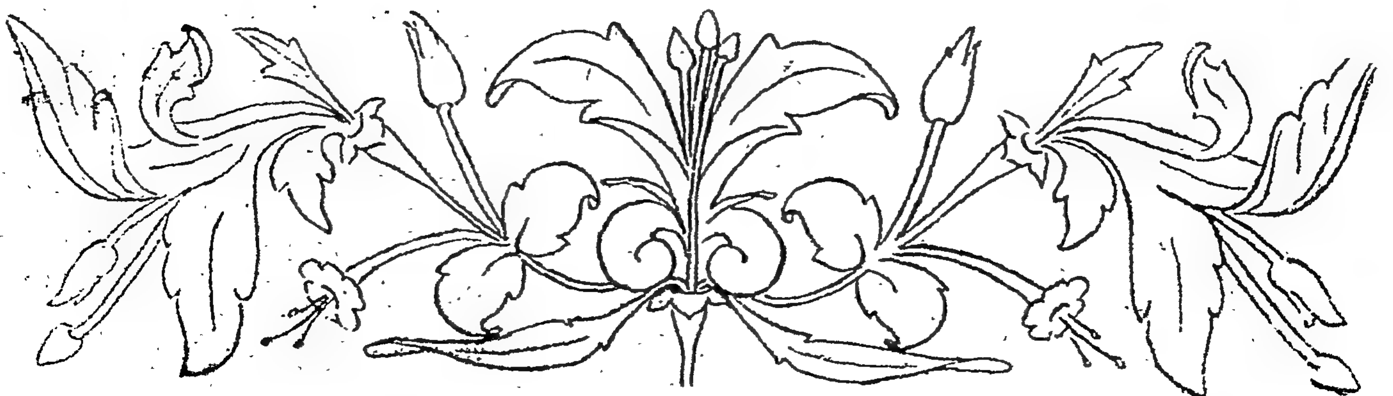
र	ग़	म	प	र	–	र	–	ग़	र	स	ऩ	स	–	स	स
इ	स	त	न	मि	ऽ	ट्टी	ऽ	प	र	इ	त	रा	ऽ	क	र

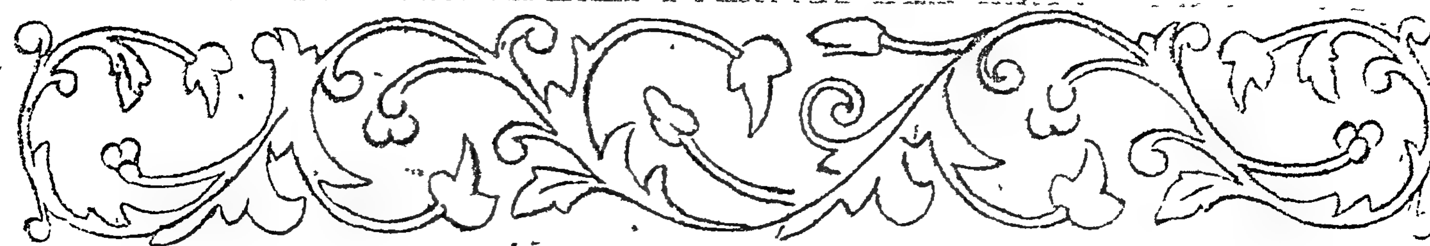
अन्तरा—

स	–	स	–	र	र	र	–	म	–	म	म	प	–	–	प
वै	ऽ	ठे	ऽ	स	त	की	ऽ	खो	ऽ	ल	ढु	का	ऽ	ऽ	न
प	–	प	–	म	–	म	म	प	ध	प	म	ग़	–	–	ग़
बो	ऽ	ले	ऽ	झूँ	ऽ	ठ	म	हा	ऽ	तू	ऽ	फ़ा	ऽ	ऽ	न
र	ग़	स	ऩ	स	र	र	स	र	र	म	म	ग़	–	–	ग़
ग्रा	ऽ	ह	क	ठ	ग	ले	ऽ	झ	ट	श्र	न	जा	ऽ	ऽ	न
र	ग़	म	प	र	–	र	र	ग़	र	स	ऩ	स	–	स	स
खो	ऽ	टा	ऽ	मा	ऽ	ल	ख	रा	ऽ	व	त	ला	ऽ	क	र

क्या–क्या जुल्म करे मन मीत इस तन मिट्टी पर इतरा कर।

———





व्यर्थ जीवन !

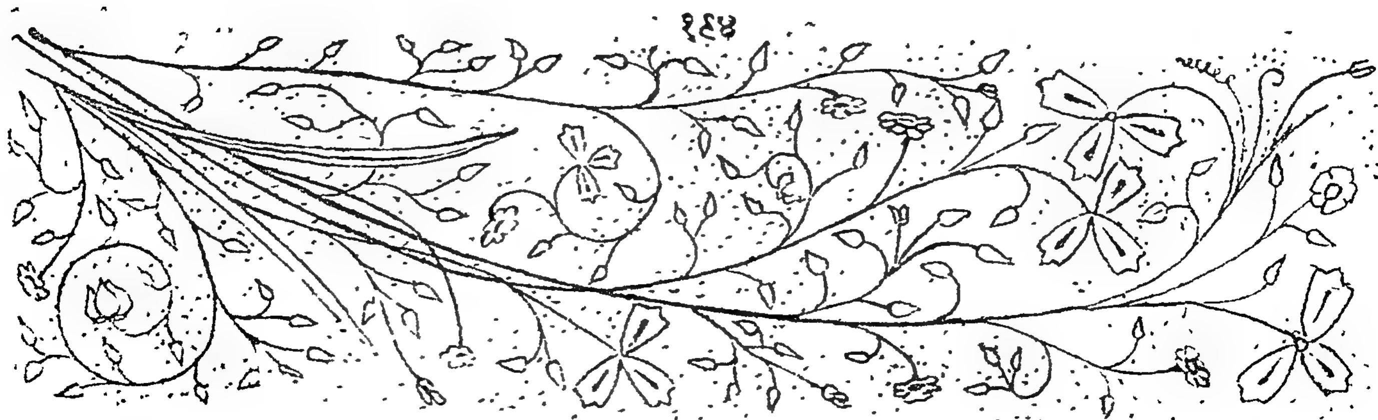
गज़ब करते हो ये भारी, वृथा जीवन गँवाते हो,
नहीं कुछ सोचते दिल में, योंहीं आफ़त उठाते हो।
किसी पुरुषार्थ के वल से, मिला है जन्म नर तुमको,
विषय भोगादि में फँसकर, क्यों सिंधू में डुबाते हो॥
ज़रासी ज़िन्दगानी पर, हुये हो क्यों दिवाने तुम,
भला छल छंद रच क्यों, दीन जीवों को सताते हो ?
हिला गर्दन विकल मुँह कर, महा वैराग्य में आकर,
वड़ा अफ़सोस शिक्षा तुम, सदा सवको सुनाते हो॥
दयामय धर्म उत्तम है, गहो इसको मेरे मित्रो,
तजो यह दुर्गती मारग, 'अमर' तुम जिसको जाते हो।



गज़ब करते हो..............!

ताल कहरवा—

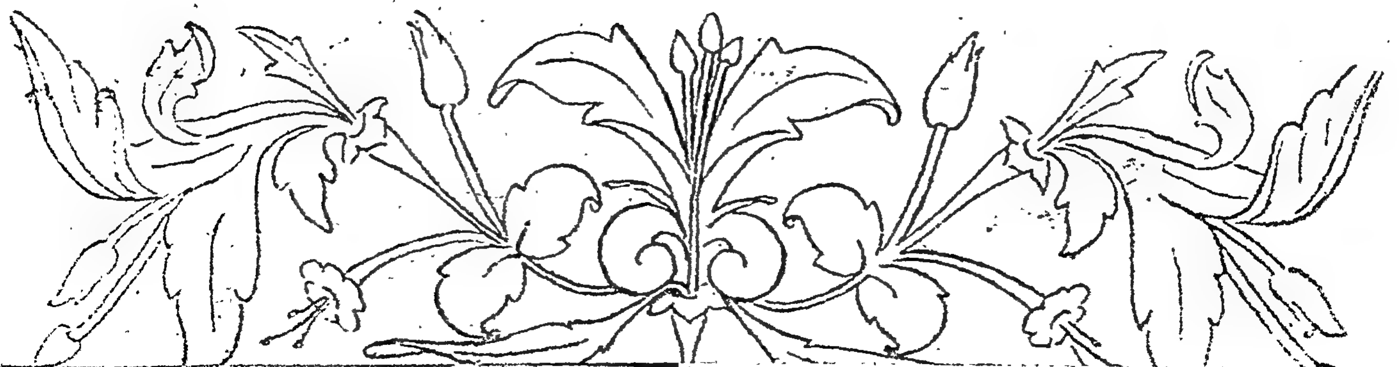
							स्थायी—									ऩ
०				×				०				×				ग
ऩ	ऩ	ऩ	स	स	र	र	म	(ग़)	र	स	ऩ	स	–	–	प	
ज़	व	क	र	ते	ऽ	हो	ऽ	ये	ऽ	भा	ऽ	री	ऽ	ऽ	वृ	

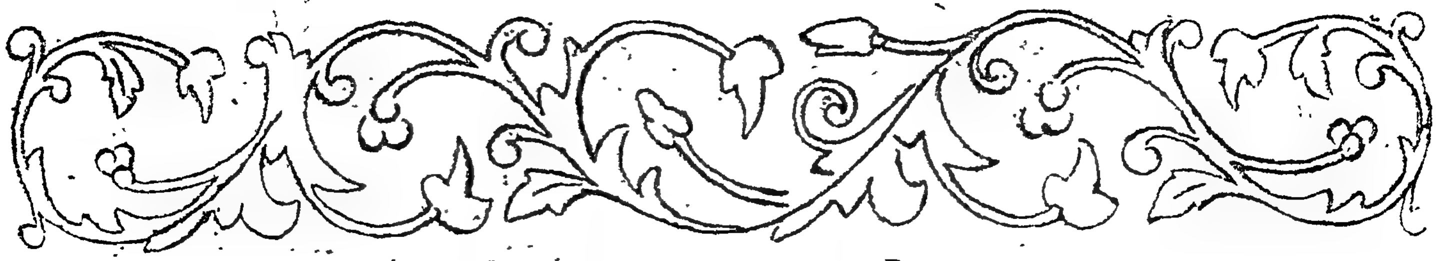




प	नु	ध	प	गु-	–	–	र	रगु	मगु	र	गु	स	–	–	प
था	ऽ	जी	व	वन	ऽ	ऽ	गँ	वाऽ	ऽऽ	ते	ऽ	हो	ऽ	ऽ	न
ध	नु	सं	(सं)	*	नु	रं	सं	नु	ध	प	प	पध	नु	–	ध
हीं	ऽ	क	छु	*	सो	ऽ	च	ते	ऽ	दि	ल	मेंऽ	ऽ	ऽ	यों
प	म	गु	र	*	र	र	र	रग	म	गु	र	स	–	–	नु
ही	ऽ	आ	ऽ	*	फ़	त	ड	ठाऽ	ऽ	ते	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ग
									अन्तरा—						प
															कि
प	–	प	प	*	प	–	ध	नु	–	ध	नु	सं	–	–	सं
सी	ऽ	धु	रु	*	पा	ऽ	थं	के	ऽ	व	ल	से	ऽ	ऽ	मि
नु	–	ध	ध	*	ध	–	नु	सं	सं	नु	ध	प	–	–	प
ला	ऽ	है	ऽ	*	ज	ऽ	न्म	न	र	तु	म	को	ऽ	ऽ	वि
ध	नु	रं	–	–	सं	–	नु	ध	प	म	गु	र	–	–	गु
प	य	भो	ऽ	ऽ	गा	ऽ	दि	में	ऽ	फॅ	स	के	ऽ	ऽ	क्यों
र	गु	स	र	*	र	–	रं	रग	म	गु	र	स	–	–	नु
सि	ऽ	न्धू	ऽ	*	में	ऽ	डु	वाऽ	ऽ	ते	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ग

जब करते ……… ।





प्यार का ज़माना है !

सबसे करिये प्यार प्यार, प्यार का ज़माना है।

शुद्ध प्रेम में दिव्य शक्ति, जिसका कछु ना पार,
प्रेमी के वश में होता है, सारा ही संसार,
वीर का यह फ़र्माना है !

पशुओं में देखा जाता है, प्रेमांकुर सुखकार,
प्रेम नहीं है जिनके दिल में, वे कैसे नरनार ?
निन्द्य का जनम बिताना है !

द्वेष भाव न रखो किसी से, द्वेष महा दुःखकार,
विना प्रेम के मिटे न हर्गिज़, भीषण पापाचार,
वैर से वैर बढ़ाना है !

दूध और पानी से सीखो, करना सच्चा प्यार,
भेद-भाव रहा नहीं कुछ भी, सहते सुख दुखलार,
विपत में प्रेम निभाना है।

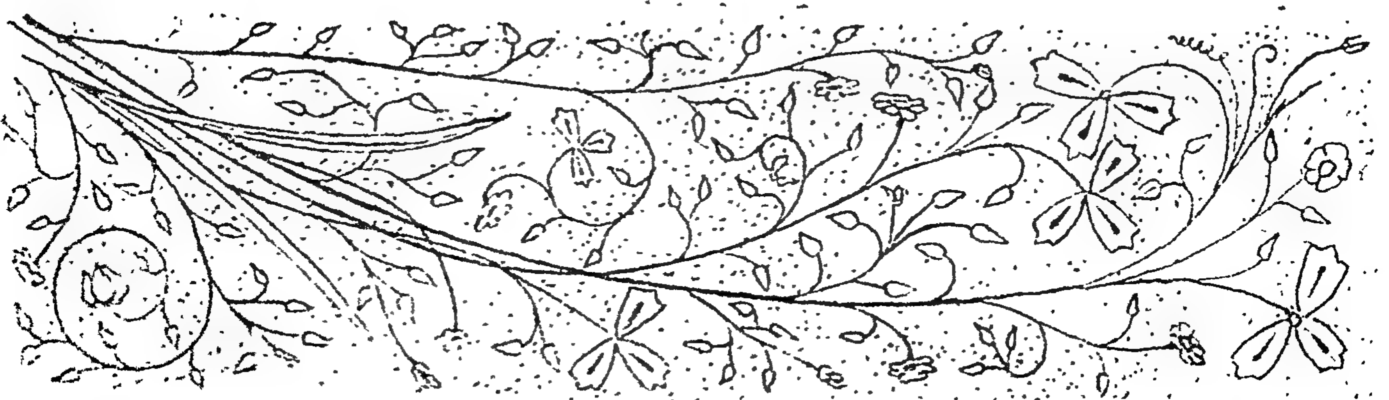
स्वार्थ रहित निष्पाप प्रेम ही, कहलाता अविकार,
'पृथ्वीचंद्र' चरण रज सेवी, कहता बीच हि सार,
प्रेम से चित्त लगाना है !

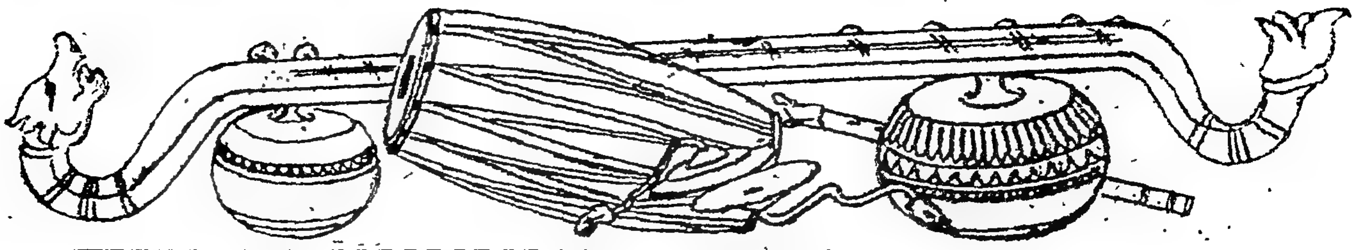
——*——

ताल—दादरा (द्रुतलय)

स्थायी—

×			०			×			०		
ध़	ऩ	स	र	ग	म	र	म	ग़	र	स	र
स	ब	से	क	रि	ये	प्या	ऽ	र	प्या	ऽ	र





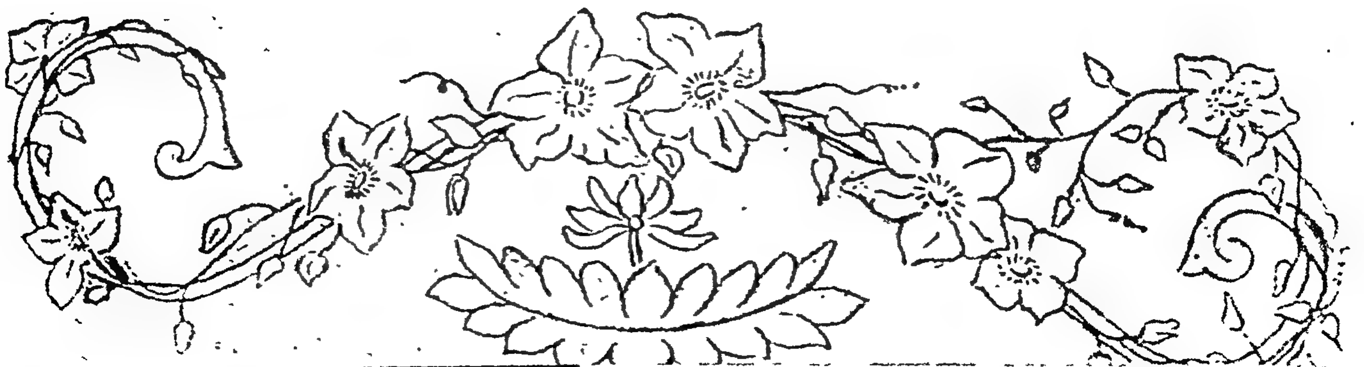
ग॒	–	र	स	र	स	ध़	ऩ॒	स	र	ग	म
प्या	ऽ	र	का	ऽ	ज़	मा	ऽ	ना	ऽ	है	ऽ
ध़	ऩ॒	स	र	ग	म						
स	व	से	क	रि	ये	प्यार ……।					

अन्तरा—

ध	ध	ध	न॒	प	–	ध	न॒	ध	न॒	सं	–
शु	द्ध	प्रे	म	में	ऽ	दि	व्य	ऽ	श	क्ति	ऽ
न॒–	रं	सं	न॒	सं	न॒	प	ध	न॒	ध	न॒	सं
जिस	का	क	छू	ऽ	ना	पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
गं॒	गं॒	–	रं	सं	रं	न॒	ध	प	ध	सं	सं
प्रे	मी	ऽ	के	व	श	में	हो	ऽ	ता	है	ऽ
न॒	रं	सं	न॒	प	ध	न॒	–	–	ध	–	–
सा	रा	ही	ऽ	सं	ऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
न॒	ध	प	म	ग	म	र	म	ग॒	र	स	र
वी	र	का	ये	फ	र	मा	ना	ऽ	है	ऽ	ऽ
ध़	ऩ॒	स	र	ग	म						
स	व	से	क	रि	ये	प्यार ……।					

(स्थायी की पंक्तियों को फिर इसके बाद कहिए)

नोट—शेष अन्तरों में भी इसी प्रकार स्थाई और अन्तरे का समन्वय होगा।





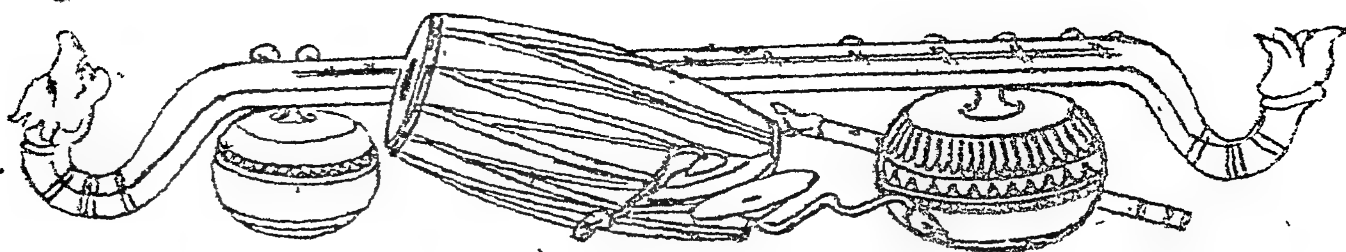
कलयुगी मित्र !

ज़माने हाल ने कैसा भयंकर फेर खाया है,
जहां में मित्रता के नाम पर अन्धेर छाया है।
जहां चांदी भवानी की छनाछन हो तिजोरी में,
वहां झट मित्र दल ने कूद, द्रढ़ आसन जमाया है॥
पड़ीं जब आफ़तें भारी, फँसा हत भाग्य गर्दिश में,
धनी के यार सब भागे, न ढूँढ़े खोज पाया है।
सुबह बाज़ार में घूमें परस्पर डाल गल बाहें,
दुपहरी में जो बिगड़ी, शाम को वारंट आया है॥
ज़रा भी गुप्त कोई बात गर निज मित्र की परखें,
करें बदनाम खुल्ला ढोल गलियों में बजाया है।
भलाई ऐसे मित्रों से 'अमर' क्या ख़ाक होवेगी,
वचन मन में कि जिनके रात्रि दिन सा भेद पाया है॥

ताल—परतो

						स्थायी—							मं
२		३		×			२		३				ज़
सं	प	प	-	ध	नु	ध	मं	-	प	-	म	-	र
मा	ऽ	ने	ऽ	हा	ऽ	ल	ने	ऽ	कै	ऽ	सा	ऽ	भ





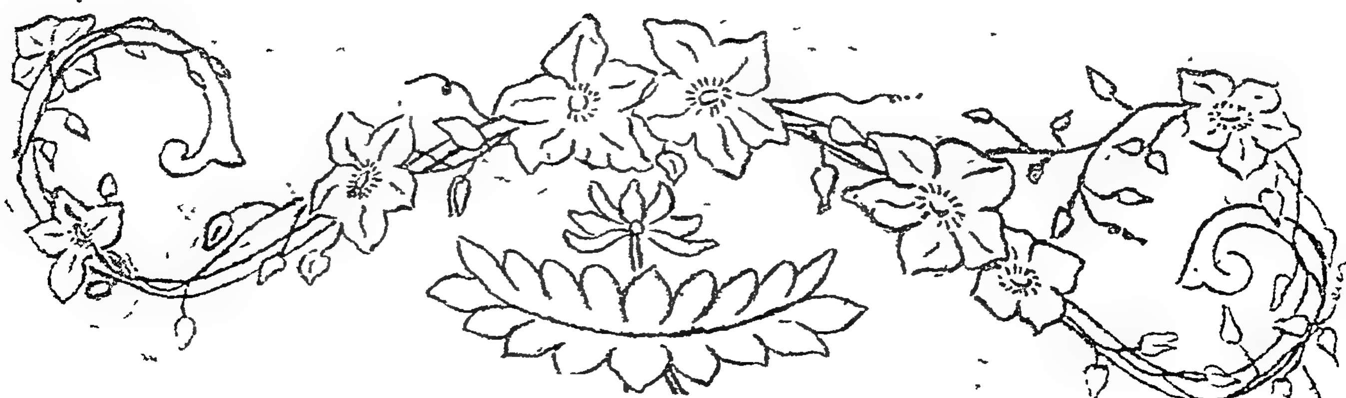
ऩ	–	स	स	र	–	र	मं	–	मं	–	प	–	प
यं	ऽ	क	र	फे	ऽ	र	खा	ऽ	या	ऽ	है	ऽ	ज
ध	नु़	ध	प	मं	–	प	म	–	र	–	ऩ	–	स़
हां	ऽ	में	ऽ	मि	ऽ	त्र	ता	ऽ	के	ऽ	ना	ऽ	म
स	स	स	–	र	–	र	मं	–	मं	–	प	–	मं
प	र	अं	ऽ	धे	ऽ	र	छा	ऽ	या	ऽ	है	ऽ	ज

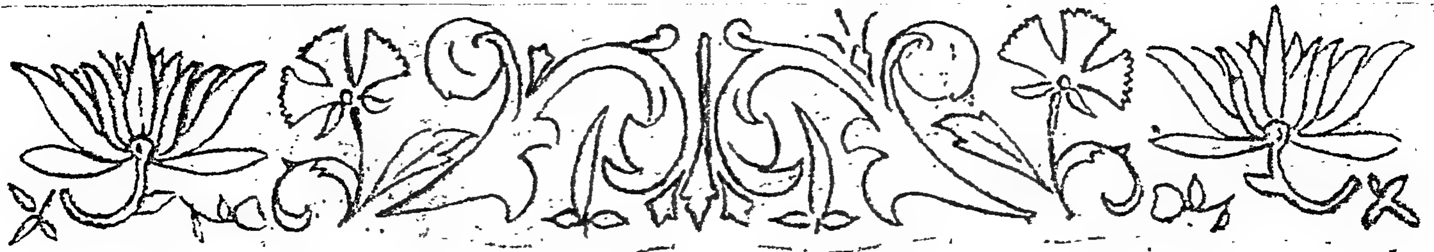
माने हाल ने कैसा…………………।

अन्तरा— प ज

मं	प	प	–	ध	–	सं	सं	–	सं	–	रं	मं	रं
हां	ऽ	चां	ऽ	दी	ऽ	भ	वा	ऽ	नी	ऽ	की	ऽ	छ
सं	–	रं	रं	रं	–	सं	ध	–	ध	–	प	–	प
ना	ऽ	छु	न	हो	ऽ	ति	जो	ऽ	री	ऽ	में	ऽ	व
मं	–	प	प	ध	नु़	ध	मं	मं	प	–	म	–	र
हां	ऽ	झ	ट	मि	ऽ	त्र	द	ल	ने	ऽ	कू	ऽ	द
ऩ	ऩ	स	–	र	र	र	मं	–	मं	–	प	–	मं
ह	ढ़	आ	ऽ	स	न	ज	मा	ऽ	या	ऽ	है	ऽ	ज

माने हाल ने कैसा……………………।





भक्त कैसा हो ?

वन, धन मूरख यों भगत भगवान का,
कर, कर मूरख यों करम कल्याण का ।
मत ना जुलम से पैसा कमावे, पैसा कमावे, पैसा कमावे,
प्रभु दीनों का जान, नहीं धनवान का ॥
मत ना किसी को दुख पहुंचावे, दुख पहुंचावे, दुख पहुँचावे,
सबको समझ समान, भक्त न हो कृपान का ।
पर दुख को दुख अपना समझ ले, अपना समझ ले, अपना समझ ले,
निज दुख को सुख मान, हितकार हो जहान का ॥
गुणी जनों का कर तू हमेशा, कर तू हमेशा, कर तू हमेशा,
शुद्ध मन से गुण गान, भूखा न हो तू मान का ।
भोगों से निज चित्त हटाकर, चित्त हटाकर, चित्त हटाकर,
निज आतम पहिचान, पुजारी बन ज्ञान का ॥
'अमर' अमर हो पक्का भगत बन, पक्का भगत बन, पक्का भगत बन,
दिखला निराली शान, वासी हो प्रभु स्थान का ।







बन, बन मूरख यों भगत भगवान का

स्थायी (कहरवा)

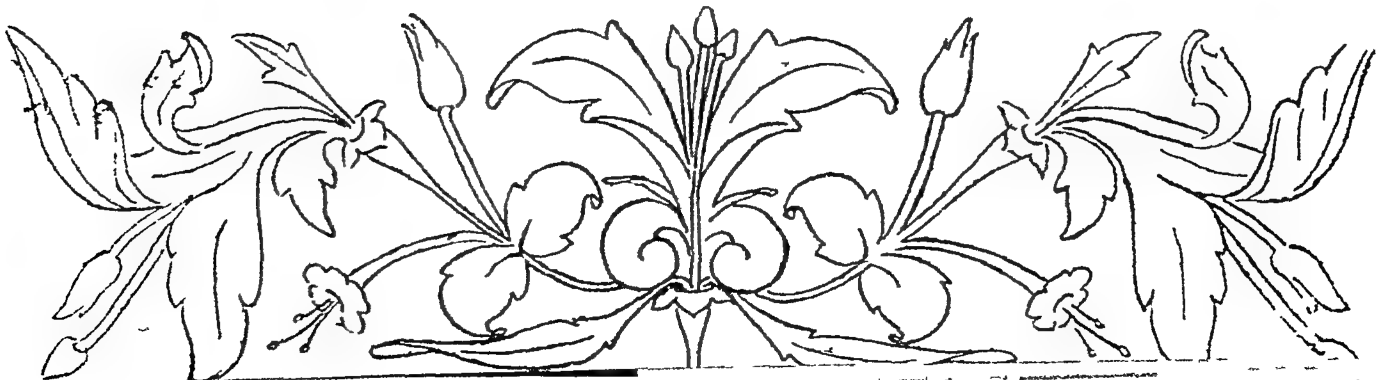
+				०				+				०			
र	र	र	र	र	स	र	ग	स	–	–	ग	र	स	ऩ	ध
ब	न	ब	न	मू	ऽ	र	ख	यों	ऽ	ऽ	भ	ग	त	भ	
ऩ	–र	स	–	र	र	र	र	र	सं	र	ग	स	–	–	ग
वा	ऽन	का	ऽ	क	र	क	र	मू	ऽ	र	ख	यों	ऽ	ऽ	क
र	स	ऩ	ध़	ऩ	–र	स	–								
र	म	क	ऽ	ल्या	ऽण	का	ऽ								

अन्तरा—

*	ग	प	प	धन	नध	न	सं	*	न	ध	प	पन	धन	प	मं
*	मत	ना	जु	लऽ	मऽ	से	ऽ	*	पै	सा	क	माऽ	ऽऽ	वे	ऽ
ग	ग	प	प	धन	नध	न	सं	*	न	ध	प	पन	धन	प	–
ऽ	पै	सा	क	माऽ	ऽऽ	वे	ऽ	*	पै	सा	क	माऽ	ऽऽ	वे	ऽ
*	ग	ग	ग	ग	र	ग	म	र	–	–	ऩ	स	गर	ऩ	ध़
*	प्रभु	दी	ऽ	नौं	ऽ	का	ऽ	जा	ऽ	न	न	हीं	ऽऽ	ध	न
ऩ	–र	स	–												
वा	ऽन	का	ऽ												

बन. बन मूरख यों भगत भगवान का ।

कर. कर मूरख यों करम कल्याण का ॥





दिन दश का मेला !

जगत में धरा क्या है दिन दश का मेला,
समझ ले ये सारा है झूठा झमेला ।
किये पाप लाखों न शर्माया बिलकुल,
चलेगा कहां पाप का लाद ठेला ?
बना क्यों है माया का चेरा अनारी,
न परलोक में साथ जाये अधेला ।
जुटा है यहां सुख में परिवार प्रेमी,
घिरा गर दुःखों से तो होगा अकेला ॥
कहो किसने दुनियां में आराम पाया,
जिसे देखा उसने सदा दुख ही झेला ।
भलाई 'अमर' करले, बन ले भला तू
न खो जन्म नर का यह है स्वर्ग वेला ॥

——*——

जगत में धरा क्या है..............!

(राग यमन कल्याण मिश्र) ताल झपताल

स्थायी—									स
×		२			०		३		ज
स	र	ग	–	र	ऩ	र	स	–	स
ग	त	में	ऽ	ध	रा	ऽ	क्या	ऽ	है



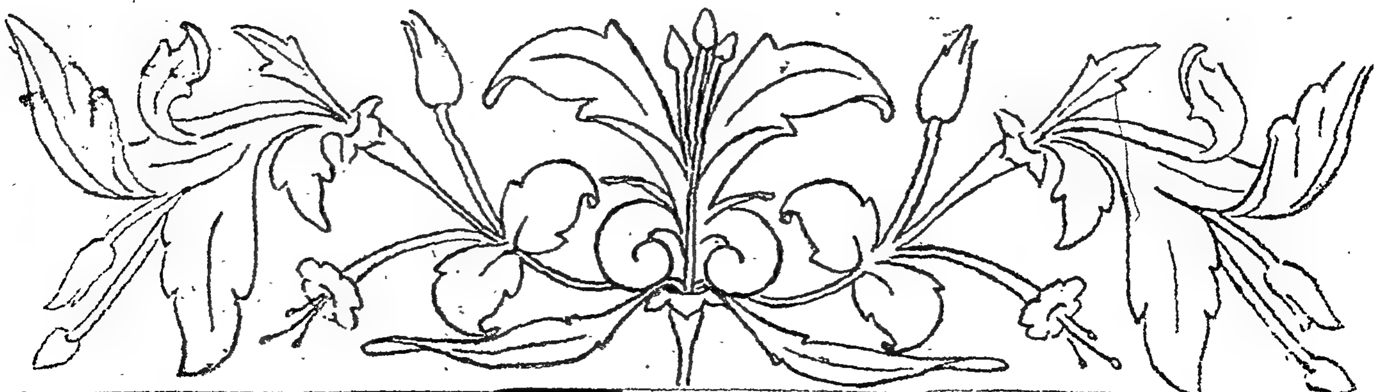


ऩ	ध़	ऩ	ऩ	र	ग	म	ग	र	स
दि	न	द	श	का	मे	ऽ	ला	ऽ	स
ग	मं	प	–	प	ध	–	प	–	प
म	झ	ले	ऽ	ये	सा	ऽ	रा	ऽ	है
न	–	प	–	र	ग	म	ग	र	स
झू	ऽ	ठा	ऽ	झ	मे	ऽ	ला	ऽ	ज

गत में .... ।

अन्तरा--									प
									कि
प	ग	मं	–	ध	सं	–	सं	–	सं
ये	ऽ	पा	ऽ	प	ला	ऽ	खों	ऽ	न
न	रं	गं	–	रं	न	रं	सं	सं	गं
श	ऽ	र्मा	ऽ	या	वि	ल	कु	ल	च
गं	रं	सं	–	रं	न	ध	प	–	प
ले	ऽ	गा	ऽ	क	हां	ऽ	पा	ऽ	प
न	–	प	–	र	ग	म	ग	र	स
का	ऽ	ला	ऽ	द	ठे	ऽ	ला	ऽ	ज

गत में .... ।





धरम बिन बावरे !

धरम बिन बावरे रे तूने नर भव व्यर्थ गमाया !

जोर जुल्म करके जो तूने, यह धन नीच कमाया,
अन्त नर्क में ले डारेगा, सोच समझ ले भाया ।

निन्द्य खान पान से जो तैं, पुष्ट करी यह काया,
सबसे पहिले उत्तर देगी, बन बादल की छाया ।

रावण से बलशाली होगये, जिनका डर जग छाया,
लेकिन काल बली ने सबको, पल में मार गिराया ।

तू फिर किस बल में है किसने, तुझे मूर्ख बहकाया ?
दुखियों को दुखिया कर तूने, पाप का कुम्भ भराया ।

यह संसार असार सार नहिं, इसमें कुछ भी पाया,
दत्त चित्त से संग्रह करले, धर्म ही सार बताया ।

धर्म बिना तिरणां नहीं होता, यह प्रभु ने फर्माया,
'पृथ्वीचन्द्र' गुरु कहें समझ क्यों विषयों चित्त लुभाया ?



धरम बिन बावरे

(राग–आसावरी; भैरव, कालिंगड़ा मिश्र)

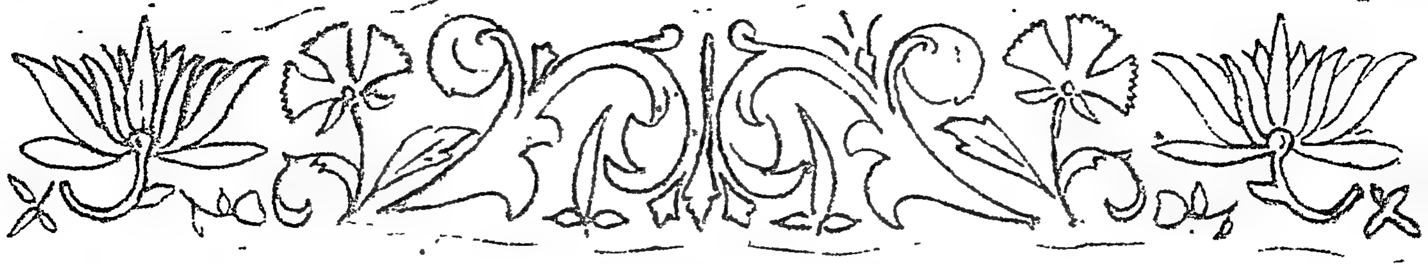
स्थायी, त्रिताल (मध्यलय)

०				३				×				२			
म	म	प	सं	ध॒	प	ध॒	म	प	–	–	–	–	–	ध	म
ध	र	म	वि	न	बा	ऽ	व	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	तै	ने
र	म	ध॒	प	ग॒	–	र	स	र	त़	स	–	–	–	–	–
न	र	भ	व	व्य	ऽ	र्थ	गँ	वा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

ध॒	–	ध॒	ध॒	प	ध॒	म	प	ग॒	–	म	ग	रे॒	–	स	–
जो	ऽ	र	जु	ल	म	क	र	के	ऽ	जो	ऽ	तू	ऽ	ने	ऽ
स	र	म	म	प	–	प	सं	ध॒	–	प	–	–	–	–	–
य	ह	ध	न	नी	ऽ	च	क	मा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	ध॒	प	ध॒	न	न	सं	–	सं	रे॒ं	सं	रे॒ं	न	–	सं	–
अ	ऽ	न्त	न	र	क	में	ऽ	ले	ऽ	डा	ऽ	रे	ऽ	गा	ऽ
ध॒	–	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	प	ध॒	म	ध॒	प	–	–	–	ध॒	म
सो	ऽ	च	स	म	झ	ले	ऽ	भा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	तै	ने
र	म	ध॒	प	ग॒	–	र	स	र	त़	स	–	–	–	–	–
न	र	भ	व	व्य	ऽ	र्थ	गँ	वा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अन्तरे पहले अन्तरे के समान ही हैं।



पाप का फल !

पाप-कृत हर्गिज न खाली जायगा,
वक्त आने पर गज़ब रँग लायगा।

क्या जवानी के नशे में भूलता,
चाम के मृदु रंग पर क्या फूलता।
फूल सा सौन्दर्य झट मुरझायगा ॥

स्वार्थ वश परिवार का मेला लगा,
कष्ट में साथी सभी देंगे दगा।
आके फिर कोई न मुख दिखलायगा ॥

मौत सर पर एक दिन मँडरायगी,
ताक़तें दुनियां की सब चकरायगी।
लाड़ला तन खाक में मिल जायगा ॥

दैत्य पति रावण तड़प कर मर गया,
अपने पापों का मज़ा वह चखगया।
बाग़ वदफ़ेली का ना सरजायगा ॥

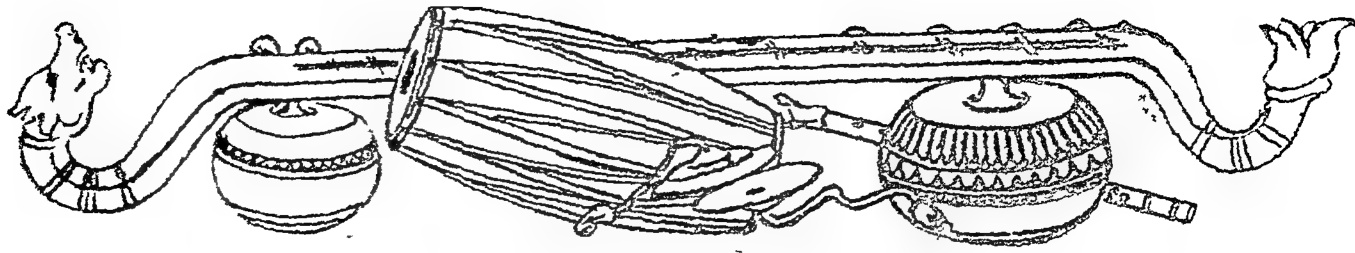
पाप की वदवू कभी छिपती नहीं,
आग रूई में कभी दवती नहीं।
ढोल अपयश का खुला पिट जायगा ॥

धर्म ही जग में 'अमर' इक सार है,
ज़िन्दगी इसके विना निःसार है।
साथ परभव में यही वस जायगा ॥

स्थायी (ताल तीव्रा) मध्यलय

×			२		३		×			२		३	
सं	–	न	रं	रं	सं	सं	न	न	ध	प	ध	म	–
पा	ऽ	प	कृ	त	ह	र	गि	ज़	न	खा	ऽ	ली	ऽ



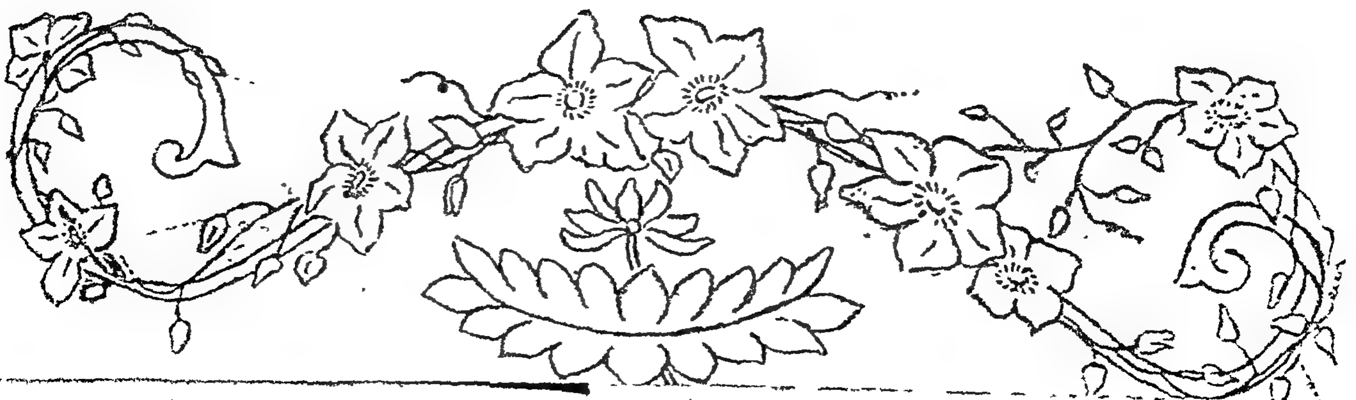


प	–	न॒	ध॒	–	प	–	स	–	र	ग॒	–	प	–
जा	ऽ	य	गा	ऽ	ऽ	ऽ	व	ऽ	क	आ	ऽ	ने	ऽ
ध॒	ध॒	प	म	म	ग॒	ग॒	र	–	ग॒	म	–	स	–
प	र	ग	ज	व	रँ	ग	ला	ऽ	य	गा	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

ग	–	प	ग	स	प	–	न	–	रं	न	ध	म	–
क्या	ऽ	ज	वा	ऽ	नी	ऽ	के	ऽ	न	शे	ऽ	में	ऽ
प	–	न॒	ध	–	प	–	प	–	ध	न॒	रं	रं	रं
भू	ऽ	ल	ता	ऽ	ऽ	ऽ	चा	ऽ	म	के	ऽ	मृ	दु
सं	–	न॒	ध	प	ग॒	–	र	–	ग॒	म	–	स	–
रं	ऽ	ग	प	र	क्या	ऽ	फू	ऽ	ल	ता	ऽ	ऽ	ऽ
सं	–	न॒	रं	रं	सं	–	न॒	–	ध	प	ध	म	म
फू	ऽ	ल	सा	ऽ	सौं	ऽ	द	ऽ	र्य	भ	ट	मु	र
प	–	न॒	ध॒	–	प	–	स	–	र	ग॒	–	प	प
भा	ऽ	य	गा	ऽ	ऽ	ऽ	पा	ऽ	प	कृ	त	ह	र

गिज़ न खाली जायगा ।





पतन !

सदा के हँसने वाले अब सतत आंसू बहाते हैं,
पशू से भी गया बीता अधम जीवन बिताते हैं।
तरसते थे कभी सुर भी कि लेवें जन्म भारत में,
यहां आने से अब तो नारकी भी जी चुराते हैं॥
हमारे शिष्य बन-बन के विदेशी सभ्यता सीखे,
हमें वे आज वनचर अर्ध सभ्यों में गिनाते हैं।
कभी दिक् चक्र गूँजे थे हमारे युद्ध नादों से,
अँधेरे में निकलते गीदड़ों से थर-थराते हैं॥
दुखी को देख रो उठते हृदय से झट लगा लेते,
अकारण आज दुखियों को हमीं हँस-हँस सताते हैं।
हमारे ज्ञान सूरज की जगत में ज्योति फैली थी,
हमें अब ग़ैर ज्ञानी अ-आ, इ-ई पढ़ाते हैं॥
वसन भोजन हमारे से कभी संसार पाता था,
बुभुक्षित नग्न अब तो रात-दिन रोरो बिताते हैं।
सदाचारी तपस्वी थे कि आते इन्द्र दर्शन को,
'अमर' अब तो अहर्निश पाप-पथ की ओर जाते हैं॥

——※——

सदा के हँसने वाले··········!

ताल-कहरवा

					स्थायी--										न
०				×				०				×			स
न	सं	सं	-	*	ध	सं	न	ध	-	प	-	*	म	ध	प
दा	ऽ	के	ऽ	*	हँ	स	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	*	अ	ब	स





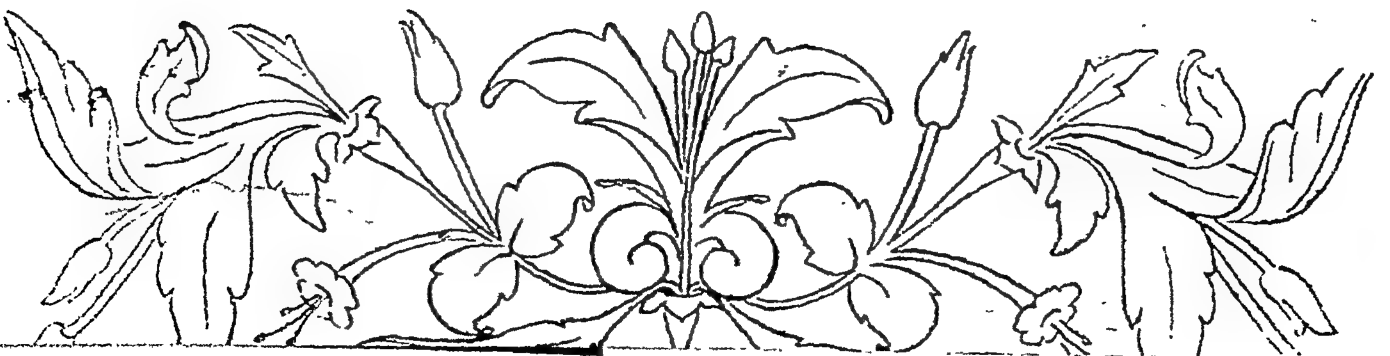
म	म	ग	-	*	म	-	ध॒	न	न	सं	रें	सं	-	-	न
त	त	आं	ऽ	*	सु	ऽ	ब	हा	ऽ	ते	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	प
ध॒	सं	सं	-	*	ध॒	सं	न	ध॒	-	प	-	म	-	-	ध॒
शू	ऽ	से	ऽ	*	भी	ऽ	ग	या	ऽ	थी	ऽ	ता	ऽ	ऽ	अ
प	म	ग	-	*	म	म	ध॒	न	-	सं	रें	सं	-	-	न
ध	म	जी	ऽ	*	व	न	वि	ता	ऽ	ते	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	स

दा ऽ के ऽ हँसने वाले ।

अन्तरा—

															न
															त
न	सं	सं	गं	-	संरं	गंरं	सं	सं	न	ध॒	प	*	म	-	प
र	स	ते	ऽ	ऽ	थेऽ	ऽऽ	क	की	ऽ	सु	र	*	भी	*	कि
म	-	ग	-	*	म	-	ध॒	न	न	सं	रें	सं	-	-	सं
ले	ऽ	वें	ऽ	*	ज	ऽ	न्म	भा	ऽ	र	त	में	ऽ	ऽ	य
ध॒	सं	सं	-	*	ध॒	सं	न	ध॒	ध॒	प	-	*	म	-	ध॒
हां	ऽ	आ	ऽ	*	ने	ऽ	से	अ	व	तो	ऽ	*	ना	ऽ	र
प	म	ग	-	*	म	-	ध॒	न	न	सं	रें	सं	-	-	न
की	ऽ	भी	ऽ	*	जी	ऽ	चु	रा	ऽ	ते	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	स

दा ऽ के ऽ ...... ।





स्वार्थ का संसार !

स्वार्थ का संसार है, स्वार्थ का संसार !
मात तात सुत बन्धु मित्रगण, और मनोहर नार,
प्यार करें सब स्वार्थपूर्ति से, बिन मतलब खूँखार।
सुख में सब जन करें प्रेम से, हां-हां जी-जी कार,
कष्ट पड़े सब होते न्यारे, देकर बहु धिक्कार।
पुष्प फलान्वित हरे वृक्ष पर, रहते खग परिवार,
शुष्क हुए सब चले छोड़ कर, करी न ढील लगार।
सूरीकन्ता ने निज पति को, दे विषयुक्त अहार,
स्वार्थ सिद्धि बिन देखो कैसा, कर दिया अत्याचार।
कौणिक और औरंगजेब ने, किया न सोच विचार,
स्वार्थ मग्न हो अपने पितु को, दिया कैद में डार।
'पृथ्वीचन्द्र' गुरु वचनामृत को, हृदय सदन में धार,
शहर भिवानी बीच 'अमर' कहें, करलो भव्य सुधार।

(ताल कहरवा)

×				०				×				०			
* ग॒	प	म		ग॒	र	र	ग॒	ग॒	स	–	–	(र)	–	(ग॒)	–
* स्वा	ऽ	र्थ		का	ऽ	सं	ऽ	सा	ऽ	ऽ	र	है	ऽ	ऽ	ऽ
म	ग॒	प	म॒	ग॒	र	र	ग॒	म	स	–	–	–	–	–	–
ऽ	स्वा	ऽ	र्थ	का	ऽ	सं	ऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ
*	प	प	प	–	प	प	प	ध॒	नि॒	–	ध॒	नि॒	ध॒	प	–
*	मा	त	ता	ऽ	त	सु	त	व	न्धु	ऽ	मि	ऽ	त्र	ग	ण



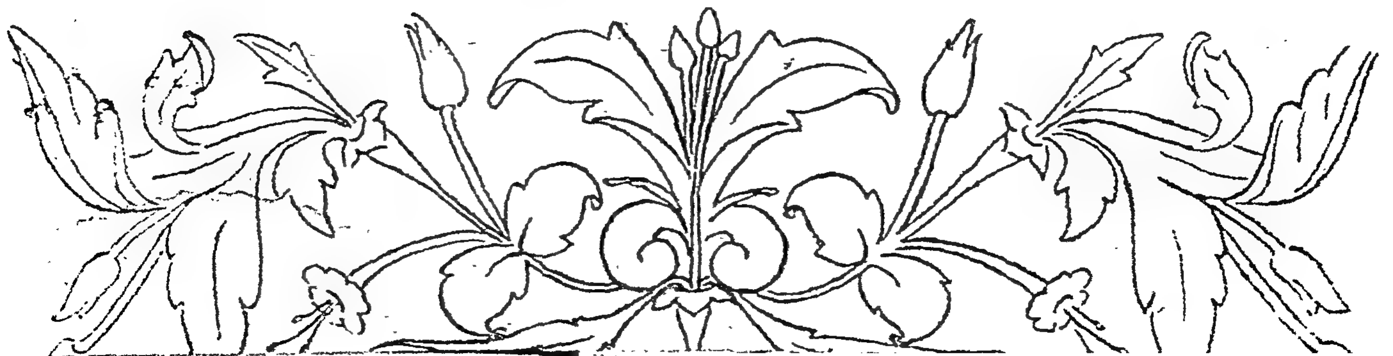


*	ध	ध	ध	ध	प	ध	न	न	ध	प	–	मं	–	प	–
*	औ	र	म	नो	ऽ	ह	र	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ
*	प	प	ध	न	न	सं	सं	न	रं	सं	न	सं	न	ध	प
*	प्या	र	क	रँ	ऽ	स	ब	स्वा	ऽ	थँ	पू	ऽ	तिं	से	ऽ
न	न	ध	प	म	ग	र	–	स	–	–	–	(र)	–	(ग)	–
वि	न	म	त	ल	व	खूँ	ऽ	खा	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	गप	म	ग	र	र	र	ग	म	स	–	–	–	–	–	–
ऽ	विन	म	त	ल	व	खूँ	ऽ	खा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ

अन्तरा—

*	ध	ध	म	ध	ध	न	न	सं	सं	–	न	सं	सं	सं	–
*	सु	ख	में	स	व	ज	न	क	रैं	ऽ	प्रे	ऽ	म	से	ऽ
*	रें	रें	रें	सं	न	सं	रें	सं	–	–	–	–	–	–	–
*	हां	ऽ	हां	जी	ऽ	जी	ऽ	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ
*	गं	गं	गं	सं	गं	रें	सं	न	रें	न	–	प	न	ध	प
*	क	ष्ट	प	ड़े	ऽ	स	ब	हो	ऽ	ते	ऽ	न्या	ऽ	रे	ऽ
न	न	ध	प	म	ग	र	र	स	–	–	स	(र)	–	(ग)	–
दे	ऽ	क	र	ब	हु	अ	धि	का	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	ग	प	म	ग	र	र	ग	म	स	–	–	–	–	–	–
ऽ	दे	क	र	ब	हु	अ	धि	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ

नोट—शेष अन्तरे इसी प्रकार बजेंगे।





क्षण भंगुरता !

भीम जैसे बली फैंके नभ में गजेन्द्र वृन्द,
पार्थ जैसे लक्षवेधी कीर्ति जग जानी है।
राम कृष्ण जैसे नर पुङ्गव जगत पति,
रावण की दैत्यता भी किसी से न छानी है।
काल के न आगे चली कुछ भी वहाना बाजी,
छिनक में छार हुए, रह गयी कहानी है॥
तेरे जैसे कीटाकार मूढ़ की बिसात क्या है,
करले सुकृत चार दिन की जिन्दगानी है।

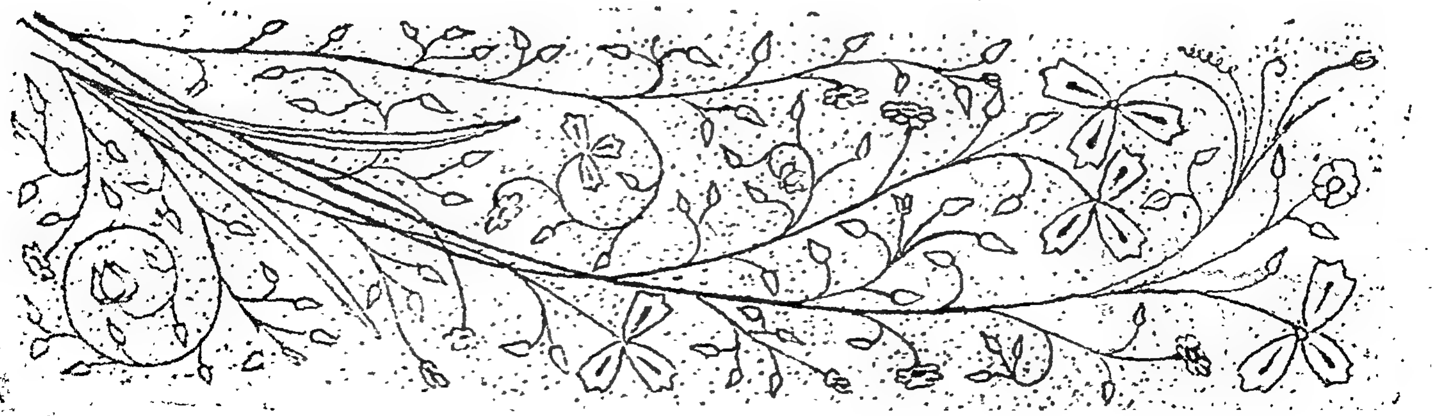
—※—

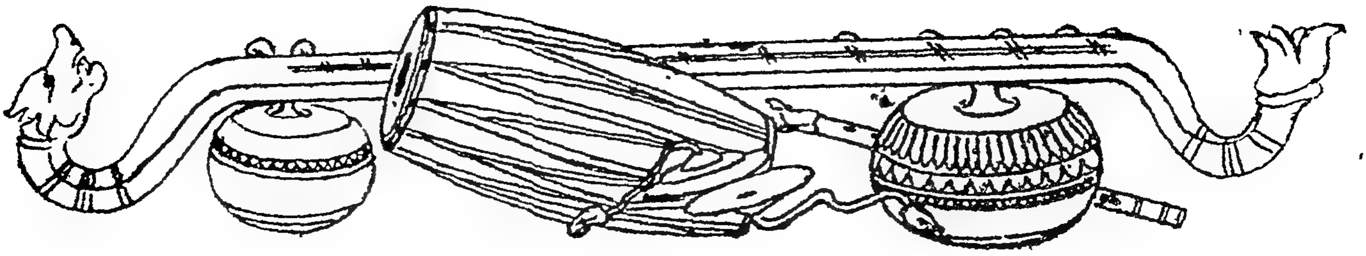
भीम जैसे बली फैंके ....!

राग--खमाज, ताल-दादरा (मध्यलय)

स्थायी—

+			०			+			०		
स	स	स	ग	–	ग	म	म	–	प	–	ध
भी	ऽ	म	जै	ऽ	से	ब	ली	ऽ	फैं	ऽ	के

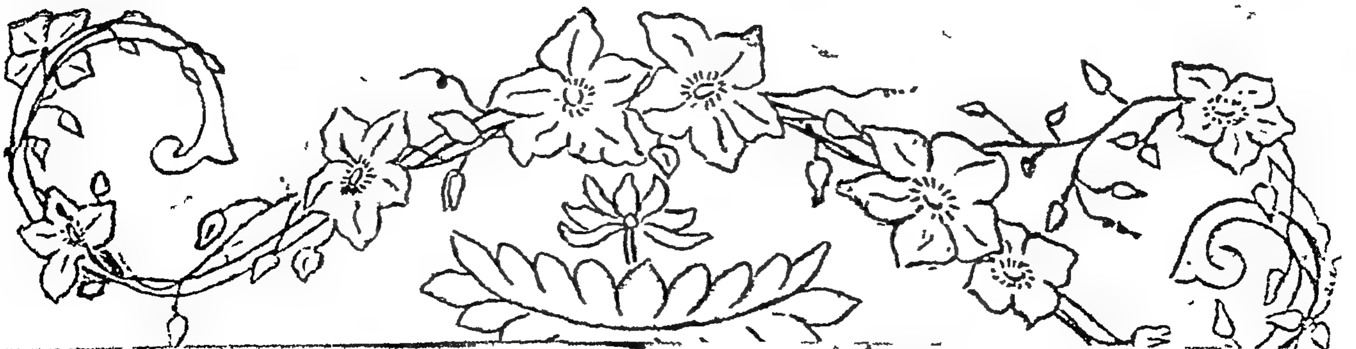


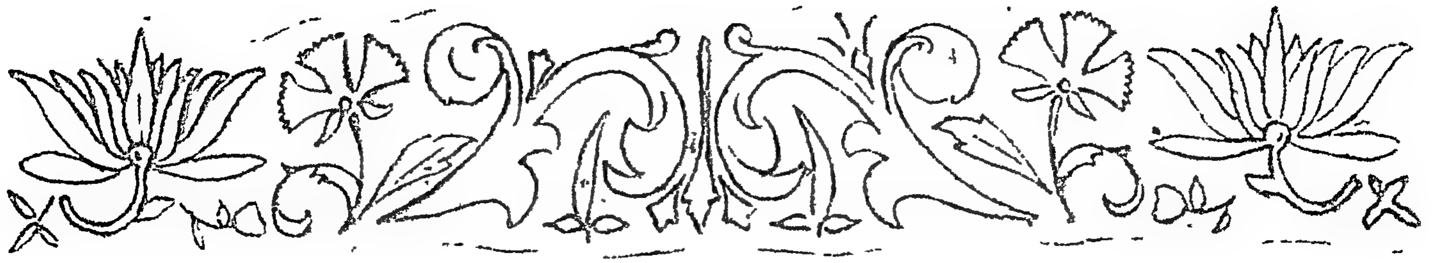


सं	सं	नृ	ध	ध	म	प	ध	म	ग	–	ग
न	भ	में	ऽ	ग	ऽ	जे	ऽ	न्द्र	वृ	ऽ	न्द
न	–	न	सं	–	न	सं	–	सं	प	–	ध
पा	ऽ	र्थ	जै	ऽ	से	ल	ऽ	च्च	वे	ऽ	धी
पध	सं	नृ	ध	–	म	गम	पध	म	ग	–	–
कीऽ	ऽ	र्ति	ज	ऽ	ग	जाऽ	ऽऽ	नी	है	ऽ	ऽ

अन्तरा—

म	ग	म	नृ	ध	न	सं	–	न	सं	–	सं
रा	ऽ	म	कृ	ऽ	ष्ण	जै	ऽ	से	न	ऽ	र
प	–	न	न	सं	सं	सं	(सं)	सं	नृ	ध	–
पु	ऽ	ग	व	ऽ	ज	ग	ऽ	त	प	ति	ऽ
स	–	स	ग	–	ग	म	–	म	प	–	ध
रा	ऽ	व	ण	ऽ	की	दै	ऽ	त्य	ता	ऽ	भी
सं	सं	नृ	ध	–	म	प	ध	म	ग	–	–
कि	सी	ऽ	से	ऽ	न	छा	ऽ	नी	है	ऽ	ऽ



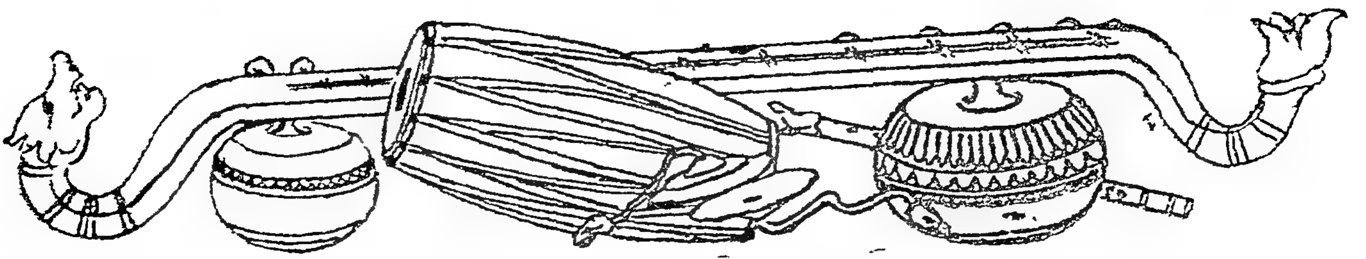


जुल्म !

जुल्मगर ! मत जुल्म पर बांधे कमर,
आखिरी अच्छा नहीं होगा समर ।
वेकसों का दिल दुखाना है गुनाह,
राख प्राणी मात्र की दिल में क़द्र ॥
एक डण्डे से सभी को हांक मत,
न्याय और अन्याय की कुछ रख खबर ।
भूखों मरना है भला, नहीं जुल्म से,
माल ताज़ा खा-खा भर लेना जठर ॥
कौरवों का देख कितना ज़ोर था,
आज ढूँढ़े भी नहीं आते नज़र ।
कर भलाई तज बुराई सर्वथा,
गर 'अमर' होना तुझे जग में अमर ॥







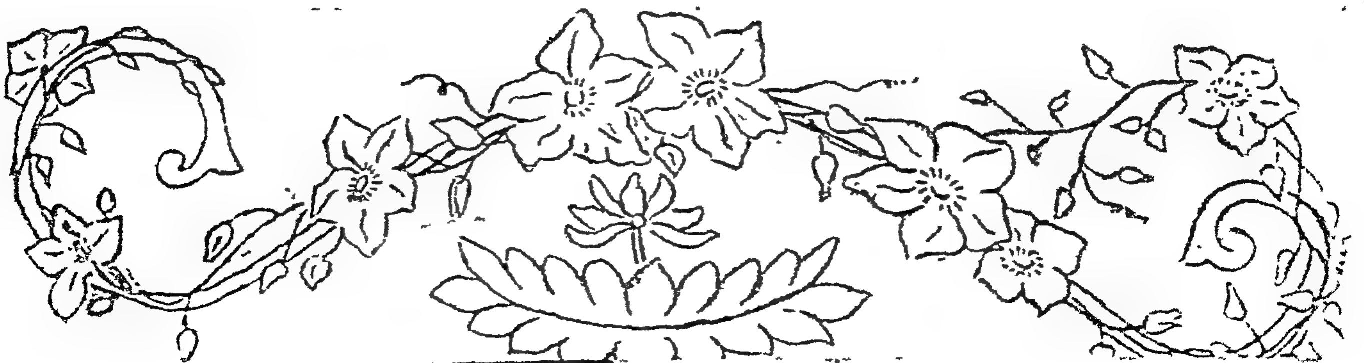
जुल्मगर ! मत जुल्म कर…… !

स्थायी (कहरवा)

×				०				×				०			
❊	मं	–	मं	मं	मंध	पं	प	❊	म	–	ग	र	ग	स	–
❊	जु	ऽ	ल्म	ग	रऽ	म	त	❊	जु	ऽ	ल्म	प	र	वां	ऽ
❊	ऩ	–	स	रग	मंप	गम़	रग	❊	मं	–	मं	मं	मंध	प	–
❊	धे	ऽ	क	मऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽर	❊	आ	ऽ	खि	री	ऽऽ	अ	ऽ
❊	म	–	ग	र	ग	स	–	❊	ऩ	–	स	रग	मंप	गम	रग
❊	च्छा	ऽ	न	हाँ	ऽ	हो	ऽ	❊	गा	ऽ	स	मऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽर

अन्तरा—

														ध	
❊	ध	–	ध	ध	–	ध	न	पध	नसं	–	न	ध	न	प	–
❊	वे	ऽ	क	सौं	ऽ	का	ऽ	दिल	ऽऽ	ऽ	दु	खा	ऽ	ना	ऽ
❊	ग	–	म	पध	नसं	धऩ	पध	❊	मं	–	मं	मं	मंध	प	–
❊	है	ऽ	गु	नाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽह	❊	रा	ऽ	ख	प्रा	ऽऽ	णी	ऽ
❊	म	–	ग	र	ग़	स	–	❊	ऩ	–	स	रग	मंप	गम	रग
❊	मा	ऽ	त्र	क़ी	ऽ	दिल	ऽ	❊	में	ऽ	क	दऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽर





आज की दशा !

चल रही, चल रही, चल रही हो,
पछवा चल रही आज जगत में।
धर्म कर्म घटता जाता है,
स्वार्थ दम्भ बढ़ता जाता है।
पाप में दुनियां ढल रही हो!
प्रेम स्नेह का नाम फ़ना है,
घर-घर में कुरु-युद्ध ठना है।
द्वेष की अग्नी जल रही हो!
भीमार्जुन से वीर कहां हैं,
मात्र शिखंडी सभी यहां हैं।
भोग में काया गल रही हो!
साधु मंडली निज पथ भूली,
संसारी झगड़ों में भूली।
भोली जनता छल रही हो!
'अमर' सर्वथा तंग हुए हैं,
सुख साधन सब भंग हुए हैं।
पाप की खेती फल रही हो!

—※—

ताल कहरवा (द्रुत)

स्थायी—

×				०				×				०			
र	र	स	स	र	र	स	स	ग	ग	मं	मं	प	–	–	–
चं	ल	र	ही	च	ल	र	ही	च	ल	र	ही	हो	ऽ	ऽ	ऽ





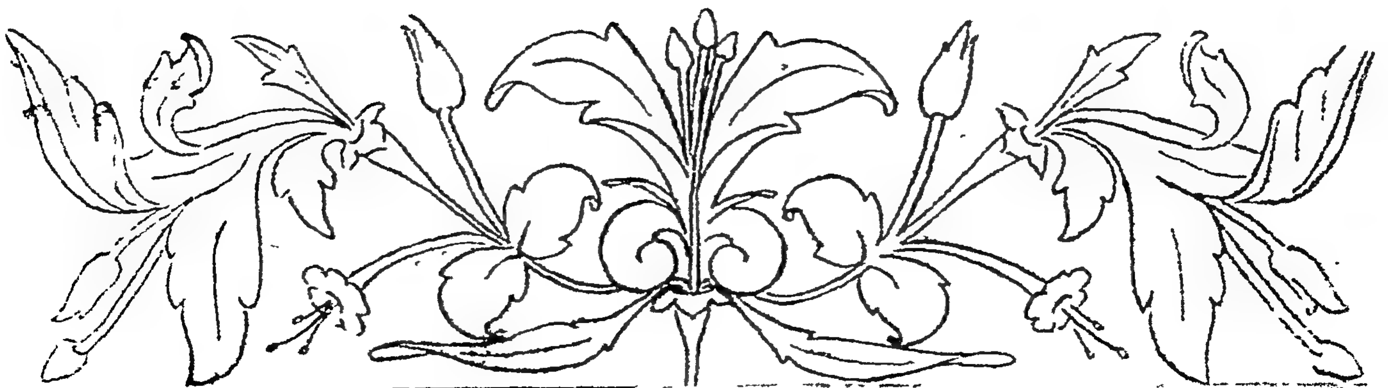
–, मंध प –	मं मं ग ग	* गम ,ग र	ऩ र स स
ऽ, पछु वा ऽ	च ल र ही	* आऽ ,ज ज	ग त में ऽ
सस सग –ग मंमं	प– मं– पप प–	प– पन –ध पप	पप धध पमं पप
धऽ मंक ऽर्म घट	ताऽ जाऽ ताऽ हैऽ	स्वाऽ र्थदं ऽभ वढ़	ताऽ जाऽ ताऽ हैऽ
* न न न	धन नध पमं पप	* पध धप मंग	गमं पप मंध प–
* पा प में	दुऽ निऽ यांऽ ऽऽ	* ढल ऽर हीऽ	होऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
– गम –ग र	ऩ र स –		
ऽ ढल ऽर ही	हो ऽ ऽ ऽ	चल रही...............।	

अन्तरा—

पप पप नन नन	सं– संसं संसं –सं	संसं गंगं रंरं संसं	नन नध मंध प–
प्रेम ऽऽ स्नेह काऽ	नाऽ मफ़ नाऽ हैऽ	घर घर मेंऽ कुरु	युऽ द्धठ नाऽ हैऽ
* न न न			
* द्वे ष की	अग्नी जल रही हो ......(इस पंक्ति को 'पाप में दुनियां ...हो'		

इस प्रकार पूरी तरह बजाइये)

———



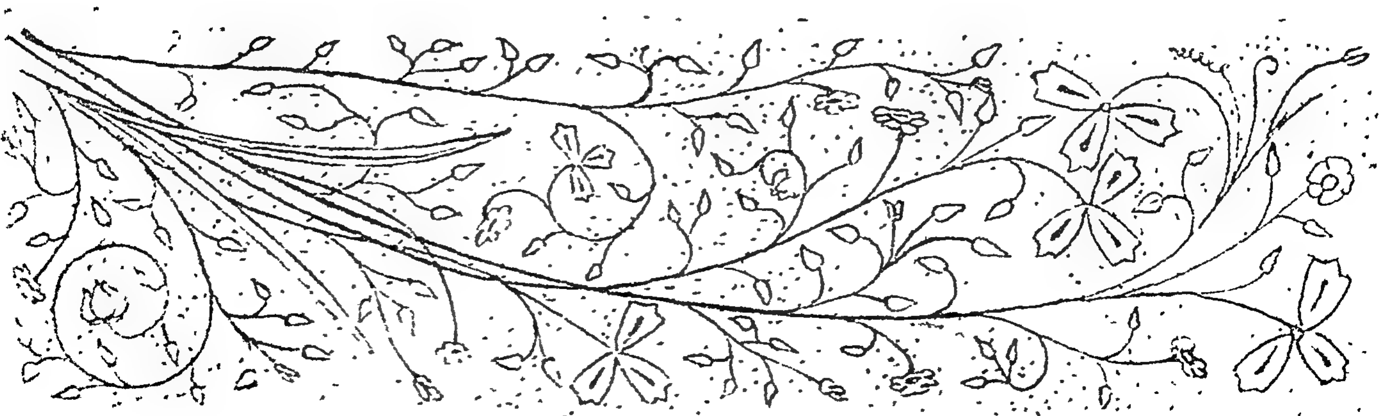
क्या फूले निज मन में !

क्या फूले निज मन में, मूरख ! क्या फूले निज मन में,
कुछ नहीं धरा फूलन में, मूरख ! क्या फूले निज मन में।
अंट-संट खा पीकर क्या-क्या शक्ति बढ़ावे तन में,
आखिर पानी का परपोटा विनस जाय पल-छिन में।
कोमल-कोमल फूल बिछा क्या सोवे सुख महलन में,
याद राख उस दिन की भी जब सोना होगा अगन में।
मोटर, बग्घी बैठे ऐंठ से पैर न धरे धरन में,
देख द्रोपदी नंगे पैरों फिरी किसी दिन वन में।
आंखें मीचे क्या धन-मद से, चांदी की छन-छन में,
देखे दर-दर भीख मांगते धनिक, न वस्त्र वदन में।
दुनियां भर की गपशप मारे बैठ मित्र परिजन में,
वेही दुर-दुर करें एक दिन नफ़रत करें मिलन में।
सीधी सादी बात बना और सीधा रहन सहन में,
और नहीं कुछ रहे 'अमर' यहां यही बस रहे रहन में।

——*——

स्थायी–कहरवा (मध्यलय)

×				×				×				×			
स़	–	ग	म	प	–	पं	म	प	न॒	ध	प	म	ग	र	स
क्या	ऽ	फू	ऽ	ले	ऽ	नि	ज	म	न	में	ऽ	मू	ऽ	र	ख
र	प	प	ध	म	ग	र	स	र	र	स	–	–	–	स	स
क्या	ऽ	फू	ऽ	ले	ऽ	नि	ज	म	न	में	ऽ	ऽ	ऽ	कु	छ



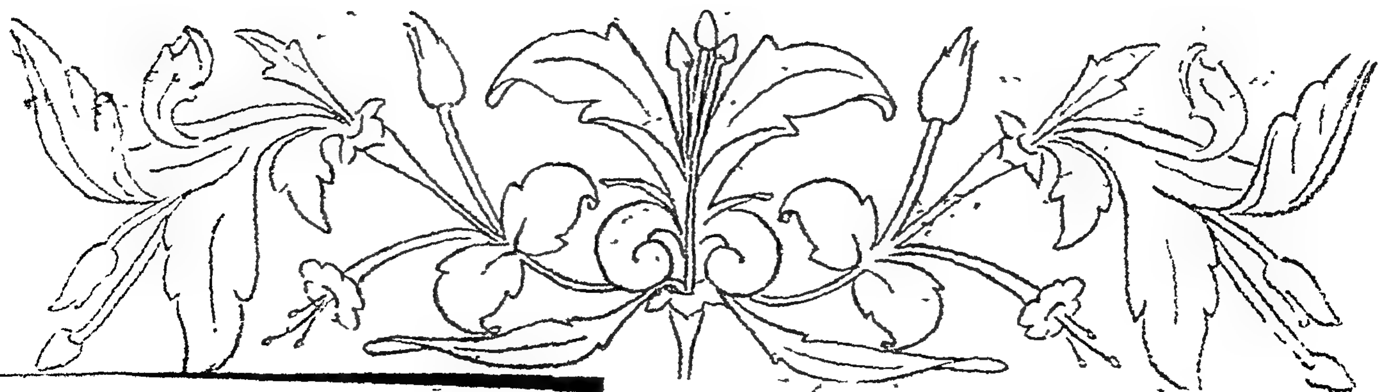


स	ग	–	म	प	–	प	म	प	नु	ध़	प	म	ग	र	स
न	हीं	ऽ	ध	रा	ऽ	फू	ऽ	ल	न	में	ऽ	मू	ऽ	र	ख
र	प	प	ध	म	ग	र	स	र	र	स	–	–	–	–	–
क्या	ऽ	फू	ऽ	ले	ऽ	नि	ज	म	न	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

सं	–	सं	सं	–	सं	सं	रें	न	–	न	सं	न	ध	प	ध
अं	ऽ	ट	सं	ऽ	ट	खा	ऽ	पी	ऽ	क	र	क्या	ऽ	क्या	ऽ
ध	रं	सं	रं	न	ध	प	ध	म	ध	प	–	–	–	–	–
श	ऽ	क्ति	च	ढ़ा	ऽ	वे	ऽ	त	न	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नु	–	नु	नु	नु	–	नु	ध	प	ध	ध	ध	प	–	म	–
आ	ऽ	खि	र	पा	ऽ	नी	ऽ	का	ऽ	प	र	पो	ऽ	टा	ऽ
र	प	प	ध	म	ग	र	स	र	र	स	–	–	–	–	–
वि	न	स	जा	ऽ	य	प	ल	छि	न	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अन्तरे भी इसी प्रकार हैं।



क्षमा !

क्षमा समान श्रेष्ठ ज्येष्ठ धर्म और कौन है,
भला सुमेरु से बड़ा महीध्र और कौन है।
क्षमा विना समग्र उग्र कर्म-कांड व्यर्थ है,
अभीष्ट स्वर्ग-मोक्ष-सौख्यदा यही समर्थ है।

निकाल लाल-लाल आंख नाक भौं सिकोड़के,
असभ्यता प्रपूर्ण भ्रष्ट-भ्रष्ट गालियां बके।
सदा प्रचण्ड क्रोध की दवाग्नि से जला मरे,
मनुष्य क्या, पिशाच है ज़रा न जो क्षमा करे।

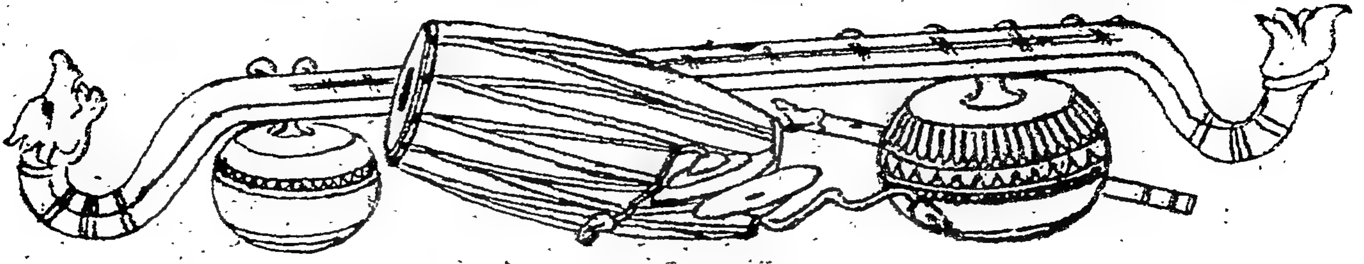
क्षमा वही स्वमित्र के समान शत्रु को लखे,
कभी किसी प्रकार की विरोधिता नहीं रखे।
प्रशान्त चित्त से सदैव स्नेह स्रोत सा वहे,
मुखार-विन्द पै कृपामयी प्रसन्नता रहे।

असह्य भर्त्सना तथा वध-प्रहार भी सहो,
अखण्ड श्रेय सर्वथा स्व-शत्रु का सदा चहो।
मसीह (ईसा) सूलि की सुतीक्ष्ण नोंक पै चढ़ा हुआ,
प्रसन्न हो, अराति-अर्थ मांगता रहा हुआ।

वलिष्ठ के समक्ष 'चूँ' करें न मौन साध लें,
परन्तु दीन-हीन पै तुरन्त तेग़ तान लें।
नपुंसकाग्रगण्य वे मनुष्य नीच निंद्य हैं,
क्षमाव्रती-समाज में नहीं कदापि वन्द्य हैं।

स्थायी (दादरा)

											प
×			०			×			०		क्ष
न	–	न	सं	–	रं	न	सं	नु	ध	प	ध
मा	ऽ	स	मा	ऽ	न	श्रे	ऽ	ष्ठ	ज्ये	ऽ	ष्ठ



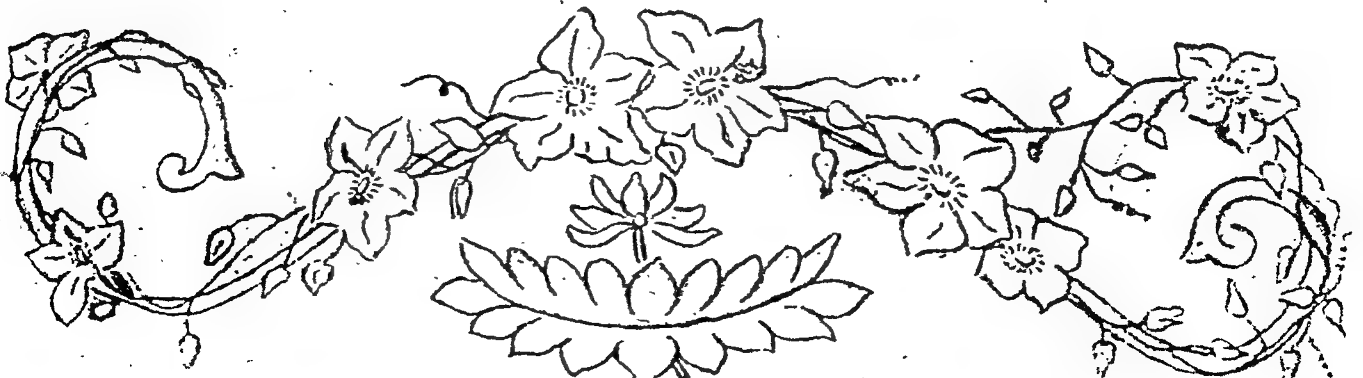
ग	–	म	प	–	ध	न	–	रं	सं	–	प
ध	ऽ	र्म	औ	ऽ	र	कौ	ऽ	न	है	ऽ	भ
प	रं	रं	रं	–	रं	रं	गं	रं	सं	रं	सं
ला	ऽ	सु	मे	ऽ	रु	से	ऽ	व	ड़ा	ऽ	म
न	सं	न	ध	न	ध	न	–	रं	सं	–	प
ही	ऽ	द्र	औ	ऽ	र	कौ	ऽ	न	है	ऽ	त्त

मा समान श्रेष्ठ ज्येष्ठ...... .... ।

अन्तरा—

										सं	रं
										त्त	ऽ
ध	सं	नु	ध	प	ध	ग	प	म	ग	–	स
मा	ऽ	वि	ना	ऽ	स	म	ऽ	ग्र	उ	ऽ	ग्र
स	म	म	म	ग	म	प	सं	नु	ध	–	नु
क	ऽ	र्म	कां	ऽ	ड	व्य	ऽ	र्थ	है	ऽ	ऽ
प	ध	प	म	ग	म	प	सं	नु	ध	–	प
क	ऽ	र्म	कां	ऽ	ड	व्य	ऽ	र्थ	है	ऽ	अ
प	गं	रं	रं	–	रं	रं	गं	रं	सं	रं	सं
भी	ऽ	ष्ट	स्व	ऽ	र्ग	मो	ऽ	त्त	सौ	ऽ	ख्य
न	सं	न	ध	न	ध	न	–	रं	सं	–	प
दा	ऽ	य	ही	ऽ	स	म	ऽ	र्थ	है	ऽ	त्त

मा समान श्रेष्ठ ज्येष्ठ .... ।





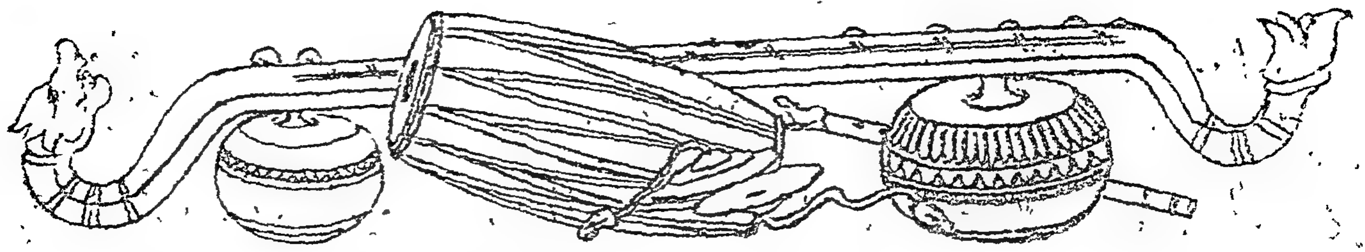
ज़रा देखो चेतनवा !

ज़रा देखो चेतनवा विचारी रे !

स्वारथ के सब मित्र तुम्हारे,
मात पिता सुत नारी रे।
यह धन किंचित साथ न जावे,
जिसपै धर्म विसारी रे !
काल वली जब आन दबावे,
जाना हो लाचारी रे ।
कित अर्जुन कित भीष्म भयंकर,
कहां भीम वलकारी रे ।
जिनके वल की कथनी अब तक,
ठौर-ठौर है जारी रे ।
तू फिर कह है किस गिनती में,
जावे हाथ पसारी रे ।
यह संसार असार जानके,
करो धर्म सुखकारी रे ।
धर्म 'अमर' है सब सुखदाता,
आगे अरजी तुम्हारी रे ।

——*——





देखो चेतनवा विचारी रे······!

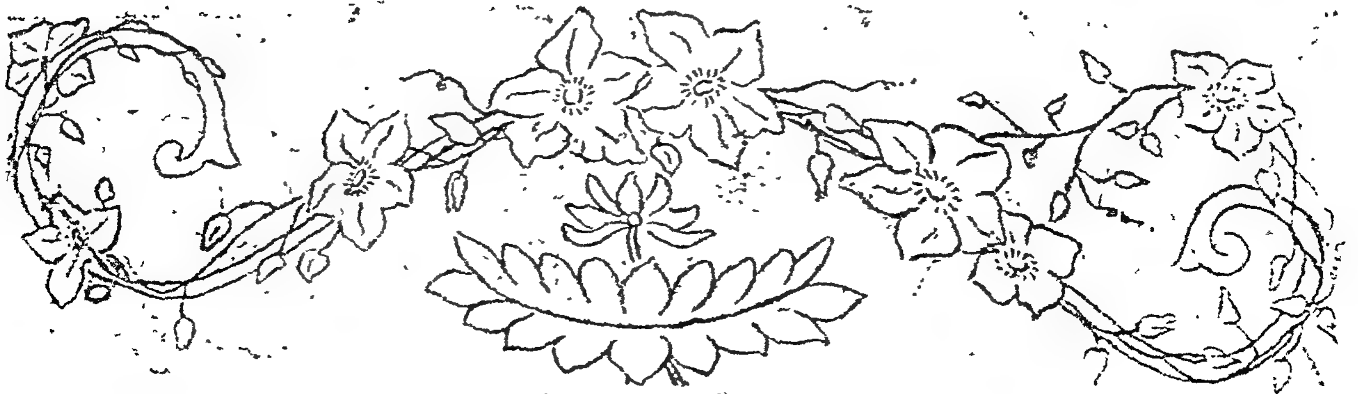
स्थाई—कहरवा

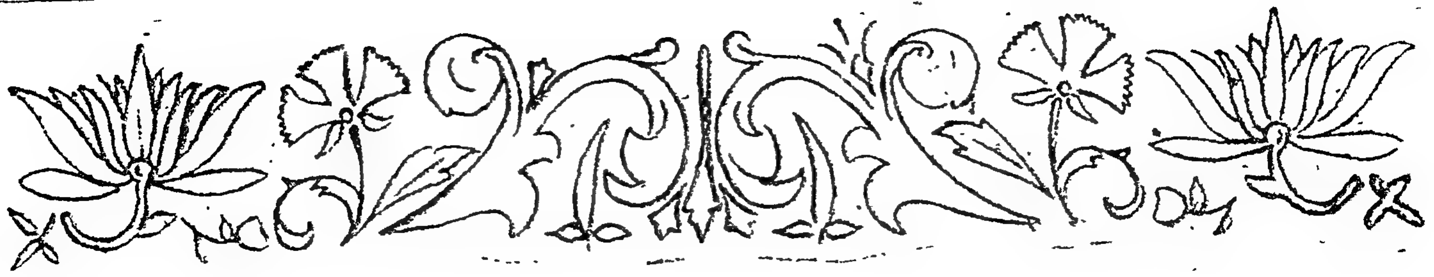
×				×				×				×			
*	म	म	म	ग-	र	-	र	स	ऩ	ऩस	र	-	-	स	ऩ
*	दे	खो	चे	तन	वा	ऽ	वि	चा	री	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज़	रा
स	र	-	र	र	ग	स	-	*	म	म	म	ग-	र	-	र
दे	खो	ऽ	चे	त	न	वा	ऽ	*	दे	खो	चे	तन	वा	ऽ	वि
स	ऩ	ऩस	र	-	-	स	ऩ	स	र	-	र	र	ग	स	-
चा	री	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज़	रा	दे	खो	ऽ	चे	त	न	वा	ऽ

अन्तरा—

*	र	म	म	प	-	प	प	*	म	प	प	मध	पध	मग	र
*	स्वा	र	थ	के	ऽ	स	व	*	मि	त्र	तु	म्हाऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽ
*	म	म	म	ग	-	र	र	स	ऩ	ऩस	र	-	-	स	ऩ
*	मा	त	पि	ता	ऽ	सु	त	ना	सी	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज़	रा

देखो चेतनवा··············।



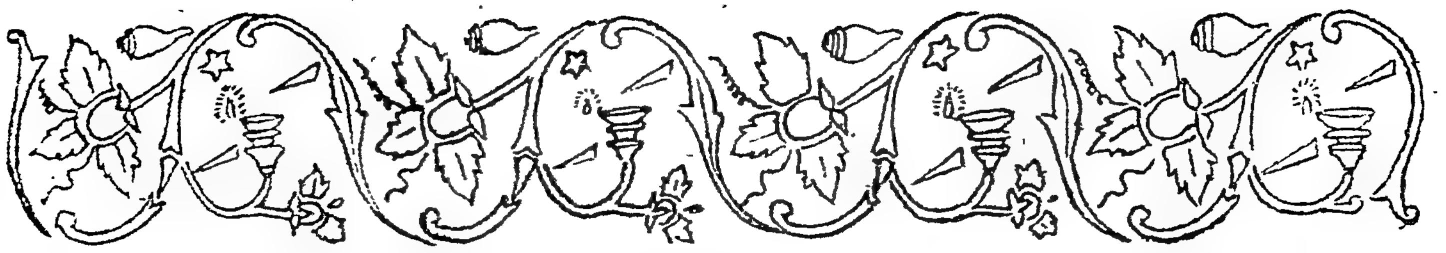


पापों में मनवा घूम रहा

पापों में मनुवा घूम रहा, तेरा मोक्ष-गमन कैसें होय ?
पामर पीड़ित दीन जनों को सता-सता खुश होय।
करुणा तो अणु मात्र भी रे मन कभी ना आवे तोय ॥
बोले झूँठ सदा बढ़-चढ़ कर खुश हो थूंक बिलोय ।
निकलै ना मुख से मन तेरे सत्य वचन कहीं कोय ॥
सब ही कामों में चोरी का करता काम छुपोय ।
झूँठे लालच से क्यों मनवा निज आत्मा डुबोय ॥
दूषित निज मानस अति करता सुन्दर नारी जोय ।
ब्रह्मचर्य व्रत खोयके रे मन, सब ही व्रत दिये खोय ॥
कौड़ी—कौड़ी जो भी जोड़े धरती दाबे सोय ।
दान पुण्य करने से क्यों तू हट जावे बस रोय ॥
खोटी संगत बैठ बढ़ावे राग-द्वेष नित दोय ।
सत्संगति में कभी न बैठे आवे लज्जा तोय ॥
फल अच्छा जो चाखा चाहे बीज भी अच्छा बोय।
मोक्ष 'अमर' तो तभी मिलेगी जब लेगा दिल धोय ॥

—*—





(कहरवा) मध्यलय

स्थाई—

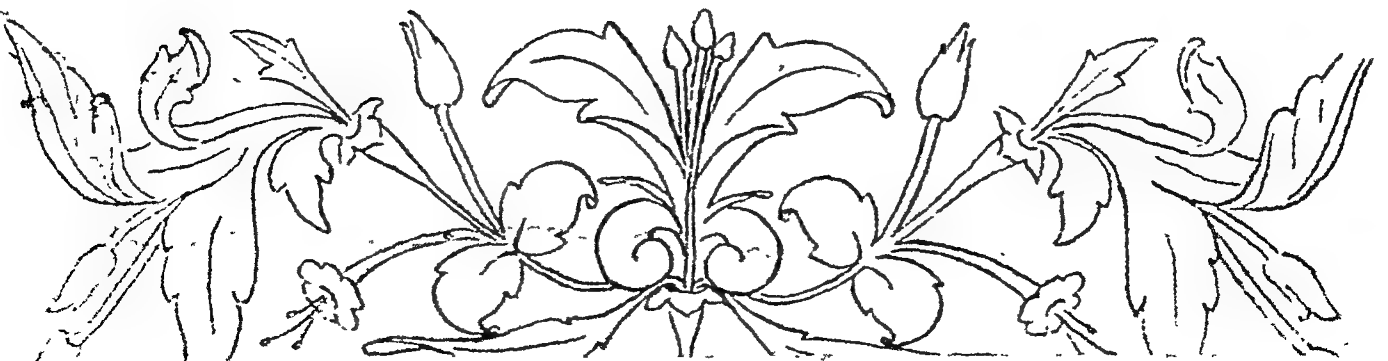
														प	म
×				०				×				०		पा	ऽ
प	ध	ध	–	प	प	म	–	ग	–	ग	म	र	–	स	स
पों	ऽ	में	ऽ	म	नु	वा	ऽ	घू	ऽ	म	र	हा	ऽ	ते	रा
र	–	म	प	प	प	धं	न̲	प	–	–	–	–	–	प	म
मो	ऽ	त्त	ग	म	न	कै	से	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य	पा	ऽ

पों में मनुवा घूम रहा तेरा मोत्त गमन कैसे होय ········।

अन्तरा—

※	गं	गं	गं	गं	–	गं	रं	सं	रं	रं	गं	रं	–	सं	–
※	पा	म	र	पी	ऽ	ड़ि	त	दी	ऽ	न	ज	नों	ऽ	को	ऽ
न	सं	न	ध	प	न̲	ध	प	म	प	–	–	–	–	–	–
स	ता	ऽ	स	ता	ऽ	खु	श	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य
न̲	न̲	न̲	–	न̲	–	न̲	ध	प	ध	ध	न̲	प	–	म	–
क	रु	णा	ऽ	तो	ऽ	अ	णु	मा	ऽ	त्र	भी	रे	ऽ	म	न̲
र	र	म	म	प	म	प	न̲	ध	प	–	–	–	–	प	म
क	भी	ऽ	न	आ	ऽ	वे	ऽ	तो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य	पा	ऽ

पों में मनुवा घूम रहा तेरा मोत्त गमन कैसे होय ?



दिव्य जीवन !

प्रतिक्षण क्षीण जीवन में अमर खुद को बना देना,
भविष्यत की प्रजा को अपने पद-चिन्हों चला देना।
दुखी-दलितों की सेवा में विनय के साथ जुट जाना,
अखिल वैभव बिना झिझके बिना-ठिठके लुटा देना॥

असत्पथ भूल करके भी कभी स्वीकार मत करना,
प्रलोभन में न फँसकर सत्य-पथ पर सर कटा देना।
क्रमागत कुप्रथाओं का भ्रमों का मूढ़ताओं का,
अधपाती निशा मानव जगत में से मिटा देना॥

जिनेश्वर बुद्ध हरिहर हो, मुहम्मद हो या ईसा हो,
सभी सत्य-व्रतों के आगे निज मस्तक झुका देना।
सहस्राधिक प्रयत्नों से मृतक-सम देश वालों में,
नया जीवन नया उत्साह नवयुग ला दिखा देना॥

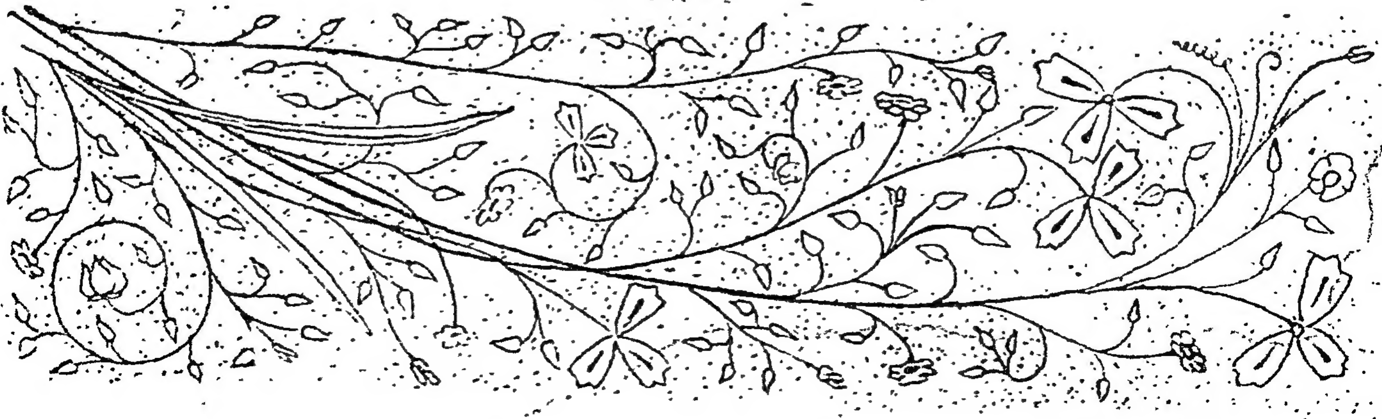
अधिक क्या, जन्म लेने का यह अन्तिम सार लेलेना,
'अमर' निज मृत्यु के दिन शत्रुओं को भी रुला देना।

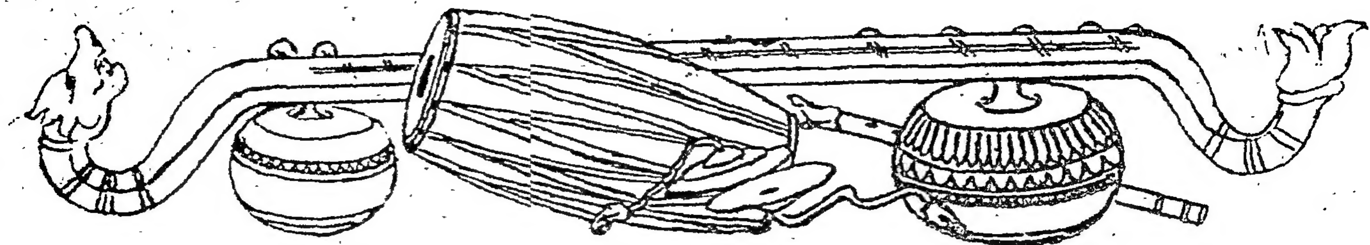
—※—

प्रतिक्षण क्षीण जीवन में········!

ताल कहरवा—

															स
				स्थायी—											
×				×				×				×			प्र
स	र	न̣	स	र	–	–	र	र	म	पध̣	मप	ग̣	–	–	म
ती	ऽ	च्छ	ण	क्षी	ऽ	ऽ	ण	जी	ऽ	वऽ	नऽ	में	ऽ	ऽ	अ





र	स	नृ	स	र	–	–	र	रगु	मगु	र	गु	स	–	–	स
म	र	खु	द	को	ऽ	ऽ	च	नाऽ	ऽऽ	दे	ऽ	ना	ऽ	ऽ	भ

विऽप्यत की प्रजा""""(इस पंक्ति को भी पहली पंक्ति के समान गाइये)

				अन्तरा—											प
															डु
प	–	ध	नु	सं	–	–	नु	ध	प	ध	नु	सं	–	–	सं
ली	ऽ	द	लि	तों	ऽ	ऽ	की	से	ऽ	वा	ऽ	में	ऽ	ऽ	वि
नु	नु	ध	ध	*	ध	–	नु	(सं)	–	नु	ध	प	–	–	प
न	य	के	ऽ	*	गी	ऽ	त	गा	ऽ	लें	ऽ	ना	ऽ	ऽ	वि
म	गु	र	र	*	र	–	गु	(म)	–	गु	र	स	–	–	स
न	य	के	ऽ	*	गी	ऽ	त	गा	ऽ	लें	ऽ	ना	ऽ	ऽ	अ

खिल वैऽभव"""" लुटा देना। यह पंक्ति भी "प्रतीक्षण क्षीण"""""""बना देना" की तरह कही जायगी। शेष अन्तरे भी इसी प्रकार कहिये।

———





वृक्षों से शिक्षा !

क्या-क्या सत्यता जीवन में वृक्ष तुम्हें सिखलाते !

अपने-अपने मौसम पर जब वृक्ष खूब फल जाते,
छोड़ कड़ापन नम्र-भाव से नीचे को झुक जाते।
मार-मार जब ढेले मानव चोट इन्हें पहुँचाते,
तो भी खुश हो प्रेम-भाव से मीठे फल बरसाते।
गर्मी सर्दी वर्षा सब कुछ हो सहिष्णु सह जाते,
पर निज आश्रित जीवों को तो हरदम सुख पहुंचाते।
सदा दूसरों को फल देते स्वयं कभी नहीं खाते,
दानवीरता और कृपणता साथ-साथ सिखलाते।
मित्रो ! यदि तुम दुनियां में कुछ गौरव रखना चाहते,
तो वृक्षों से शिक्षा ले लो 'अमर' सत्य बतलाते।

—※—

राग विन्द्रावनी सारङ्ग, ताल कहरवा

						स्थाई—								स	र
×				०				×				०		क्या	ऽ
(प)	–	–	–	–	–	–	–	※	र	म	र	स	–	स	र
क्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	※	स	ऽ	त्य	ता	ऽ	जी	ऽ





ऩ	स	स	–	–	–	–	–	प़	–	ऩ	ऩ	स	–	र	र
व	न	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वृ	ऽ	क्ष	तु	म्हें	ऽ	सि	ख
ऩ	स	र	म	प	नु	म	प								
ला	ऽ	ते	ऽ	ऽ	ऽ	क्या	ऽ	क्या सत्य ....।							

अन्तरा—

म	म	प	–	नु	प	न	–	सं	–	सं	सं	न	सं	सं	सं
अ	प	ने	ऽ	अ	प	ने	ऽ	मो	ऽ	स	म	प	र	ज	व
न	–	सं	सं	–	सं	सं	सं	न	सं	रं	सं	नु	नु	प	प
वृ	ऽ	क्ष	खू	ऽ	ब	फ	ल	जा	ऽ	ते	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	प	सं	सं	नु	प	म	नु	प	म	र	–	स	ऩ	स
छो	ऽ	ड़	क	ड़ा	ऽ	प	न	न	ऽ	अ	भा	ऽ	व	से	ऽ
प़	–	ऩ	–	स	–	र	र	ऩ	स	र	म	प	नु	म	प
नी	ऽ	चे	ऽ	को	ऽ	झु	क	जा	ऽ	ते	ऽ	ऽ	ऽ	क्या	ऽ

नोट—शेष अन्तरे भी इसी प्रकार बजेंगे।

———

